थारू लोक गित मोट्री

प्रकाशक

थारू आयोग, नेपाल

थारु लोक गित मोट्री

प्रकाशक
थारु आयोग, नेपाल
अनामनगर, काठमाडौं, नेपाल

प्रकाशक :- थारु आयोग, काठमाण्डौ नेपाल
संस्करण :- पहीनका
सर्वाधिकार :- प्रकाशकमे
साल :- २०७८
संख्या :-
कभर डिजाइन/फोटो :- बुद्धसेन चौधरी
किताब पाबैबला ठाम :- थारु आयोग नेपाल
का.म.न.पा. वडा नं.-२९, अनामनगर
फोन नं.:- ०१-५७०५११८, ५७०५११९
मुद्रण :- नमस्ते नेपाल प्रेस प्रा.लि.

यै किताब के कोनो अंस या कोनो भाग येकर लिखत स्विकरिती बेगर फेर से प्रकासन, फेर से उत्पादन, कोनो यन्त्र मे प्रयोग करनाइ या जमा कैरके राखनाइ, प्रसारन करनाइ लखा काम करै ले रोक लग्याल गेलछै ।

थारु आयोग

अनामनगर, काठमाडौं, नेपाल

शुभकामना सन्देस

नेपालके तराइ भु-भागम पुरुबसे पच्छिउँसम आदिम कालसे बसोबास कर्ती अइलक थारु जातिनके आपन मौलिक पहिचान बा । मुलतः तराइके आदिवासीके रुपम चिन जैना थारुनके आपन भासा संस्कृती बा । कृसी पेसाम आधारित जनजिबन, चाडपर्ब व नाचगानम बिसेस ध्यान देना समुदायके रुपम फे चिन जैना थारु जाती परम्परागत लोक साहित्यम बहुत धनी बाट । चाडपर्ब व मास अनुसार अलग-अलग गित गैना, नाच नच्ना ओहिम फे पहर अनुसार फरक-फरक लयम गैना नच्ना थारुहुँकनके आपन सैली बा । तर यि सब साहित्यके भन्डार आज परिवर्तित जिबनसैलीके कारन पुस्ता हस्तान्तर नम समस्या, ग्यानके स्रोत पुर्खा हुँक्र ओरैटी जैना व समयम दस्ताबेजिकरन हुइ नैसेक्ना, एवं अन्य संस्कृतीके प्रभावके कारन लोप होक जाइ सेक्ना अवस्था सृजना हुइल बा ।

थारु लोक साहित्य थारु समाजके ऐना हो । यिहिंम थारु समाजके रहन सहन रितिरिवाज से भासा संस्कृतीके हरेक पक्षके अभिव्यक्ति रहल बा । अत्र केल नाँही कैयौं पौरानिक परम्परागत साहित्यम त भ्रन ऐतिहासिक बात फे रहल अवस्था बा । यि सब हेरैना कलक थारु समुदायके पहिचान हेरैना हो । यिह बात मध्यनजर कैक थारु आयोग प्राथमिकताम ढइक थारु लोक साहित्यके संरछेन कर परठ कना बिचार लेल बा । फलस्वरुप पहिला पटक आयोगसे थारु लोक गित प्रकासन हुइटी बा । यि प्रकासनम धेर से धेर गित समेटना कोसिस कैगिल बा तर एक्कठो प्रकासनम सक्कु गित समेटना सम्भव फे नै हो । अउर बात मौखिक रुपम समाजम रहल साहित्य एक्क प्रयासम संकलन हुइसेक्ना फे सम्भव नै हो । छुटल गित साहित्यहँ आगामी दिनम फे संकलन, प्रकासन कर्ती जैना जरुरी बा । आम्हिन यि साहित्यहँ श्रब्य दृस्यम उतारक जिबन्त बनाइक पर्ना जरुरी बा । थारु समाजम रहन सहन सामाजिक मनोबिग्यानम देसभर एकरुपता रलसे फे भासा, पर्ब, रितिरिवाज आदिम कुछ बिबिधता फे बा । उहमार फे थारुहुँकनके धेर साहित्य रहल अवस्था हो । सक्कु साहित्यम हाँठ डारबेर भद्रगोल हुइना व स्वाँचल काम फे कर नैसेक्ना अवस्था हुइलक ओरसे आयोगसे निस्चित बिधा (लोकगित) ओहिम फे भ्वाज-बिवाह, अस्टिम्की, जितिया जसिन पौरानिक कथाम आधारित नम्मा

गित छोरके संकलनके काम आघ बढ़ैना सोंच गैल। योजना अनुसार कुछ गित संकलन हुइ नैसेक्लसे फे धेर से धेर थप गित संकलन होक आइल अवस्थाम लोक गित संकलन मापदन्ड अनुसार छनौट हुइल सक्कु लोक गित यि प्रकासनम सिमोटगैल बा।

यि प्रकासनले थारु लोक साहित्यके संरछेनम महत्वपुर्न काम करी कना बिस्वास बा। लौव- लौव सब्दके संरछेन व प्रयोगम अइना कामले भासिक बिकासम फे महत्वपुर्न योगदान हुइने नै बा। अत्र केल नाँही थारु समाजके बिस्तृत अध्ययन, इतिहासके खोज अनुसन्धानके लाग यि प्रकासन मद्दतगार रही कना फे बिस्वास बा। थारुहुँकनके इतिहास खोज्नाम बैग्यानिक प्रयास भर्खर-भर्खर हुइटी रलक अवस्थाम अस्टहँ लोक साहित्यके प्रकासनले सहयोगीके काम कर स्याकठ। थारु आयोगसे लेखक अनुसन्धानकर्ताहुँकन अलग-अलग बिसयम रहिके फे मिहिन पाराले खोज अनुसन्धान कैडिहक लाग अनुरोध बा। यि गित प्रकासनम बिसय धेर से धेर समेटना प्रयास हुइल बा तर छेत्रगत बिसयके गहिंर अध्ययन चाहीं हुइ नैस्याकल हो।

समाजम नुंकल अवस्थाम रलक साहित्य खोजबिन कैक बाहर लन्ना अवस्य फे कठिन काम हो। ओहिंम फे कोभिड-१९ के महामारीके बिच प्रत्यछे स्रोत व्यक्तिसे संकलन कर्नाम झन चुनौती नैहुइना बात नैहुइल। आम्हिन थारु समाजम समय अनुसार केल गित गैना चलनले थप चुनौती अवस्य हुइल हुइ। यि चुनौतीके बिच गित संकलनके महत्वपुर्न काम करुइया संकलकहुंकन आयोगके तरफसे बिसेस धन्यवाद बा। मौखिक रुपम साहित्यहँ जिबित ढर्ले रलक श्रोत व्यक्ति हुंक्र त झन आभार सहित धन्यवादके पात्र बाट। भासिक रुपम एकरुपता हुइ नैस्याकल अवस्थाम फे पुस्तक प्रकासन सम्पादनम सहयोग करुइया सम्पादक मन्डलहँ फे धेर धेर धन्यवाद बा। अन्तम थारु लोक गित संकलन व प्रकासनम बिभिन्न तवरसे सुझाव सहयोग करुइया थारु बुद्धिजिवीके साथ-साथ सिमित स्रोत साधनके बावजुद थारु लोक गित संकलन व प्रकासनके कामहँ सफल परुइया आयोगके कर्मचारी सक्कु जहन थारु आयोगके तरफसे धेर से धेर धन्यवाद व्यक्त करटुं।

माननीय विष्णु प्रसाद चौधरी

अध्यक्ष

थारु आयोग, नेपाल।

थारू आयोग

अनामनगर, काठमाडौं, नेपाल

मन्तव्य

थारू आयोगले आर्थिक वर्ष ०७७/७८ को वार्षिक कार्यक्रममा थारू समुदायका पुराना साहित्यको संकलन तथा प्रकाशन गर्ने कार्यक्रम अन्तर्गत पहिलो चरणमा लोप हुन लागेका थारू लोक गीतहरुको संकलन गरी प्रकाशन गरेको छ। हाल सम्म लिपिवद्ध नभएका, कुनै श्रव्य दृश्य माध्यमवाट प्रकाशनमा नआएका विभिन्न चाडपर्व, उत्सव, मेलामा गाईने लोप हुन लागेका लोकगीतहरुको संरक्षण गर्ने उदेश्यले त्यस्ता गीतहरु संकलन गरी प्रकाशन गरिएको हो । आयोगको उदेश्य बमोजिम लोक गीत संकलन गरी पठाउन website मा सूचना प्रकाशन गरिएको थियो । यसका अलवा थारू कल्याणकारिणी सभा, थारू वुद्धिजीवि, लेखक, साहित्यकार, पत्रकारहरुलाई यो विषयमा विभिन्न माध्यमबाट जानकारी गराईएको थियो । सबै क्षेत्रका थारू भाषाका लोक गीतहरु संकलन होस् भन्ने उदेश्यले मातृभाषामा लेखी पठाउन अनुरोध समेत गरिएको थियो ।

लोपोन्मुख अति गहन गीतहरु प्राप्त हुन भन्ने उदेश्यले आफूले संकलन गर्न चाहेको गीत र त्यसको संख्या खुलाई प्रस्ताब पेश गर्न सूचना गरिएकोमा उल्लेख्य संख्यामा प्रस्तावहरु प्राप्त भए । प्राप्त प्रस्तावहरु मध्ये संकलकको ज्ञान, क्षमता र क्षेत्रगत आधार मा निश्चित व्याक्तिहरुलाई निश्चित संख्यामा लोकगीत संकलन गर्न र त्यसको श्रोत व्याक्तिहरु पनि खुलाई पठाउन अनुरोध गरिएको थियो। लोक गीतहरु संकलन भएर मात्र हुँदैन, सोको भाव, समय सन्दर्भ पनि खुलाउनु पर्ने हुन्छ । साथै त्यसको भाषिक शुद्धता आवश्यक हुन्छ। संकलित गीतहरुको सम्पादनका लागि आयोगका माननीय सदस्य भोलाराम चौधरीज्यूको संयोजकत्वमा पूर्व झापा देखि पश्चिम कञ्चनपूर सम्मका लेखक, साहित्यकार र भाषिक ज्ञान भएका व्यक्तित्वहरुको सम्पादक समुह गठन गरिएको थियो। उहाँहरुको अथक मिहिनेत र प्रयासबाट पुस्तकले पूर्ण स्वरुप पाएको छ । यसले थारू लोकगीतको संरक्षण तथा पुस्तान्तरणमा महत्वपूर्ण भुमिका खेल्नेछ । यस कार्यमा नेतृत्वदायी भुमिका निर्वाह गर्नु हुने आयोगका माननीय अध्यक्षज्यू, माननीय

सदस्यहरुज्यू, सम्पादन समुहका सदस्यहरू, संकलकहरु तथा सम्पूर्ण कर्मचारीहरुको टिमलाई हार्दिक धन्यबाद ज्ञापन गर्दछु । यस पुस्तकमा समेट्न नसकिएका लोक गीतहरुलाई समेत समेटी आगामी संस्करण ल्याउने तर्फ आयोगले कार्य गर्ने विश्वास समेत व्यक्त गर्दछु ।

कृष्णकान्त उपाध्यय
सचिव
थारू आयोग

थारु आयोग

अनामनगर, काठमाडौं, नेपाल

सम्पादक कहव

नेपाल भौगोलिक रुपसे एकदमे सुन्दर मुलुकके रुप मे परिचित छै। येकर सुन्दर पछ यतेकर प्रकृती आर् सांस्कृतिके विविधता छेकी। विविध सँस्कृतीसे सजल सुन्दर नेपाल साँस्कृतिक पछमे धनिक मुलुकके रुपमे विस्वमे आपन पहिचान बनल छै। एकसय एकतिस जातीके विविध सँस्कृती रुपमे येते हरेक जातजातीके आ-आपने सँस्कार या सँस्कृती रहल छै। लोक सवदके प्राचिन कालसे बहुते रुपमे प्रयोग कथैं आविरहल छै। लोक सवदके सावदिक अर्थ ऋगवेदमे अर्थ जिव स्थान, अथर्ववेदमे पार्थिवलोक, नाट्यसास्त्रमे सधारन जनता, महाभारत, गिता, आर बौद्धमे समान्य जनता कहिके अर्थ लगल छै। लोकगित कहलासे लोक (मानुस) जिवनसे राँड्ल, स्वत:स्फुर्त गलागतासे सिर्जित अभिव्यक्ति छेकी। यिटामे लोक जिवनके दुख:सुख, हँसनी-कन्नी, आसा-निरासा, मिलन-बिछोड जिवनयापनके अनेक उतार चढाव, लोक परिवेस, लोकमान्याता, लोकविस्वास के सङसङे औरो चिजसव जघ पेल रहछी। आपने बिसय, आपने परिवेस आर आपने भसा लयमे आपने परम्परासे प्रयोगमे आनेके कारनसे लोकगित लोकसमुदायमे सर्वाधिक रुची या उपयोगके विसय वस्तु बनेमे सफल भेल छै।

तराइके पुरुसे ल्याके पछिम छिरियाके रहल थारुसव आपन आपन परम्परागत जातिय सँस्कृती आर् दुख:सुखके आन्तरिक भावसव सरल आर् मौखिक परम्परासे जिवन्त राखिके आपन जातिय पहिचानके खातिर लोकके सगिरदा धुकधुकी बनैमे सफल भेल छै। थारु लोकगितमे सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनितिक लगायत बहुलो परिस्थिती सङेसङे लोकके चाल चलन, विधी व्यवहार आस्था आर् मान्याताके चित्रन करल रहछै। थारु लोक समुदायसे परम्परागत रुपमे गेथै, सुन्थै आविरहल सव्हें के प्रिय लोकसाहित्य विद्या लोकगित छेकी।

थारु लोकगित मास पिच्छे, जगह पिच्छे, पहर पिच्छे या अवस्था पिच्छे फरक भावमे गेल जेछै। एकेटा भसाके लोकगितमे भी फरक जगहमे फरक फरक भाका हावे सकैछै। जेरा जगह, छेत्रके लोकभाका छेकी बेस्यारा छेत्रके पहिचान झल्कावेके काम करछी। लोकगित व्याकरनके सिमा भितर सिमित नै रहिके छुट्टे भसाके भी प्रयोग करल जेछै। यिटा मोट्रीमे बर्गिकृत लोकगितमे स्तुति गित, पौरानिक गित, ऐतिहासिक गित, संस्कार

गित, परव गित, बरमसा, चाँचर, बिरहैन, पराती, समधौन, भगैत, धुमरा, बालगित, कर नौटी, सजना संगे आर् बहौत गितसब समेटल गेलछै ।

थारु समुदायमे चारो भर छिरयाके रहल थारु लोकगित एकेठिम जरकरे लगिन थारु आयोगसे अह्वान करलाकेवाद एगार जिल्लासे १६ जन संकलकसब सरोत व्यक्ति खोझीके गित संक्लन करिके पठावेके काम पुरा करल्की । महज थारु बोलमे एक रुपता नै हावेके कारनसे माननीय भोलाराम चौधरीके संयोजकमे सम्बन्धित छेत्रके भसा बुझेवला ५ झनाके सम्पादन टोली गठन करीके जिम्मेवारी देल गेली । महज थारु भसाके मानक नै बनेके कारनसे आर निखाइ सैलीमे एकरुपता आने लगिन "मध्य-पूर्बिया थारु-नेपाली शब्दकोष" मे रहल लेखन सैली, व्याकरन आर सव्दकोसके अधार मानीके सम्पादन करेके सहमती भेली । सहमती अनुरुप जे ठिमके बोलेके लवज जे छी उटाके यथावत राखिके सम्पादन करेल गेली ।

अखनतक बहुतझन व्यक्तिगत तवरसे लोकगित संकलन करेके काममे जुटलाकेवाद भी थारु समाजमे छिरयाके रहल अथाह समुन्दरके भित्र पहुच पुगावे नै सकल छै । जकर चल्ते थारु समाजमे रहल बास्तविक ग्यान, बिद्या, धरोहर लगायत थारु समुदायके अमुल्य सम्पती समयसापेछ हरथै ज्या रहल छै । यिटा थारु मोट्री अखनकर युवापिढीसबके आपन भसाप्रती मोहित करे लगिन त सफल हेबे करतै । येकर साथसाथ लोक गित प्रेमी, पाठक बर्ग, सोध अनुसन्धानकर्ता के साथे थारु मानक भसा बनावे लगिन सहयोग करती कहिके आस कथै गित प्रकासन मे सहयोग करैवला सरोत व्यक्ती, संकलककर्ता, सम्पादक टोली, थारू आयोगके कर्मचारी लगायत प्रत्यछ-अप्रत्यछ रुपमे सहयोग करेवला सव्हैके हृदयसे धन्यवाद देथै आवेवला दिनमे भरपुर सहयोगके आस करैचियै ।

संयोजक

माननीय भोलाराम चौधरी

सदस्य

थारू आयोग

सम्पादक मन्डल

बुद्धसेन चौधरी (सप्तरी)

शान्ती चौधरी (बारा)

लक्ष्मण चौधरी (चितवन)

डा. कृष्णराज सर्वहारी (दाङ)

लक्की चौधरी (कैलाली)

थारु आयोगका पदाधिकारीहरु

माननीय विष्णु प्रसाद चौधरी
अध्यक्ष

माननीय भोलाराम चौधरी
सदस्य

माननीय सुबोध सिंह थारु
सदस्य

माननीय डा. उमाशंकर प्रसाद चौधरी
सदस्य

माननीय शान्ती मोदी थारु
सदस्य

विषय सूची

क्र.सं	कोन गित	कत्ते
१.	होरी धरनपेती गानिया गित	१
२.	सावनकी गित	२
३.	बैरासु गित (कठरिया)	३
४.	चुन्नी (छोट) होरी गित(कठरिया)	४
५.	बन्ना होरी (कठरिया)	५
६.	बन्ना नाच (कठरिया)	६
७.	दुलरु (सजना) गित (कठरिया)	६
८.	करनौटी	७ - ४१
९.	बैठौवा गित	४१
१०.	बैठौवा गित (धान बैठाइबेर मेहारुनके गैना गित)	४२
११.	सुमरौती	४३
१२.	हुर्डुग्वा नाचमा गैना गित (दिन नच्वा/बर्मासा)	४४
१३.	कठ्मलिया	४४
१४.	विदा बिदौनी (सक्कारे गैना गित)	४५
१५.	बालम बेक्ला	४६
१६.	कहरा (दिन नच्वा)	४७
१७.	जौं महरनिया	४८
१८.	बुँदिया गिरना लागे	४८
१९.	करनौटी गित	४८-५९
२०.	छोटकी फुलवार	५९-६५
२१.	सिंग्रो गित	६५
२२.	डफके गित	६६
२३.	सजना	६७
२४.	रौनक गित	६८-७४
२५.	माघ मनैना गित	७४
२६.	माघ संक्रातिम गैना गित	७५

२७. माघ बखेरीक गित ७६
२८. सजना (क) ७६
२९. सजना (ख) ७७
३०. गैया बेहर्ना सजना ७८
३१. ढुमरु (क) ७९
३२. ढुमरु (ख) ८०
३३. होरी पहर्ना गित ८१
३४. लर्का सुफ्लैना गित (क) ८२
३५. लर्का सुफ्लैना गित (ख) ८३
३६. मैना (क) ८४
३७. मैना (ख) ८५
३८. उडासी गित ८५
३९. पचरा मन्टर (क) ८६
४०. पचरा मन्टर (ख) ८८
४१. पैया गित ९०
४२. हन्सा बैठैना मन्टर ९०
४३. महुटिया गित ९१
४४. बनगिट्वा गित (क) ९२
४५. बनगिट्वा गित (ख) ९३
४६. महिरावन गित ९४
४७. बरमस्या सजना ९५
४८. मुरला सजना ९६
४९. लडाइ सजना (क) ९८
५०. लडाइ सजना (ख) १००
५१. जोगिया सजना १००
५२. किस्न औटार सजना १०३
५३. सजना (क) १०४
५४. सजना (ख) १०५
५५. सजना (ग) १०५
५६. सजना (घ) १०६
५७. सजना (ङ) १०७

५८. सजना (च)	१०८
५९. सजना (छ)	१०८
६०. सजना (ज)	१०९
६१. सजना (झ)	१०९
६२. सजना (ञ)	११०
६३. सजना (ट)	१११
६४. सजना (ठ)	११२
६५. सजना (ड)	११३
६६. सजना (ढ)	११४
६७. सजना (ण)	११५
६८. सजना (त)	११५
६९. सजना (थ)	११६
७०. सजना (द)	११७
७१. गैया बेंढ्ना सजना	११९
७२. बुढनी-बटसिया सजना (क)	११९
७३. बुढनी-बटसिया सजना (ख)	१२०
७४. सिंगरु सजना (क)	१२०
७५. सिंगरु सजना (ख)	१२२
७६. चढी उट्रा सजना	१२४
७७. मुरिलबा सजना	१२५
७८. हरिनिया जलम सजना	१२६
७९. बरमासा सजना	१२८
८०. मैना	१२९-१३५
८१. बिया-बैठौनी गित	१३५
८२. झर्रा गित (क)	१३६
८३. झर्रा गित (ख)	१३६
८४. उलारा गित	१३७
८५. झुमरा गित	१३७
८६. नरसिंह जेठवा-बिया बैठौनी गित	१३७
८७. रावल जोगिया साउनी गित	१४०
८८. बिपतल ननदी - निरौनी गित	१४३

८९. करैलादह १४६
९०. चाँचर लोकगित १४७
९१. पटेवा (चौपाइ) १४७
९२. झिझिया (चौपाइ) १४८
९३. खेलनी १४९
९४. बिरहनी १५१
९५. भादा (बरहमासा) १५१
९६. चिरइ : हेना १५५
९७. सावन बलहा गित १५६
९८. मेडरी नाचक गित (भवरा) १५७
९९. ललनारी गित १५८
१००. लाला गित १५९
१०१. मघौ गित १६०
१०२. फगुनहटी गित १६१
१०३. झुमरा गित १६३
१०४. खेतगायिन झुमरा १६४
१०५. खेतगायिन १६५
१०६. जोगेडा नाचक गित १६६
१०७. रसधारी नाचक गित १६७
१०८.सोहरायिकी बयिठकी गित (क) १६९
१०९. सोहरायिकी बयिठकी बिरहुनी गित (ख) १७०
११०. बारहमासा गित १७१
१११. कवल दयिया फगुवाक झडझडिया गित १७२
११२.यमोसाक बयिठकी गित बिरहुनी १७४
११३. लगनी- बिरहनी १७६
११४. पराती १७७
११५. जँत सारी बिरहनी १७७
११६. गोसाइ के गित (सैबसे पैहने) १७८
११७. स्तुती गित (साँखी) १७९
११८. स्तुती गित १७९
११९. महादेवी गित १८०

१२०. रासलिला गित १८०
१२१. दलसिंह धामी के गित १८१
१२२. भागिरथ बिरहैन गित १८१
१२३. जय स्याम नटा गित १८२
१२४. मेजुरा बखान गित १८२
१२५. पराती (क) १८३
१२६. पराती गित (ख) १८४
१२७. पराती गित (ग) १८४
१२८. पराती गित (घ) १८५
१२९. पराती गित (ङ) १८५
१३०. बृसकुट गित १८६
१३१. साँझ गित (साँझु पहर मे गवैवला गित) १८६
१३२. चौमासा लम्पट गित १८६
१३३. एकादसी ब्रत गित १८७
१३४. गौरा के गित १८८
१३५. मेघ मलार गित १८८
१३६. सिता के बरियाती येलहा गित १८९
१३७. सिताहरन के गित १८९
१३८. वेटी के बिदाइ करैत चित्त भरोस गित १९०
१३९. झुलन बाह्रमासा गित १९१
१४०. जगरनाथी बाह्रमासा गित १९२
१४१. साँची बाह्रमासा गित १९६
१४२. खेत रोपनी गित (छमासा) २००
१४३. सितल चनन (बाह्रमासा गित) २०१
१४४. हरवाहा गित २०२
१४५. भिभास गित २०३
१४६. हाँजीपुर हटिया हे ननदो के गित २०३
१४७. गोरना के गित २०४
१४८. बिरहैन गित २०४
१४९. पहु मोरा गेलै कुन्ज बोन गित २०५
१५०. बिछुरन गित २०५

१५१. सलहेस के गित	२०६
१५२. चन्द्राबती के गित	२०६
१५३. पृथ्वी नारायण शाह के गित	२०७
१५४. महुथिया या बठनिया के गित	२०७
१५५. खेतरोपनी बिरहैन गित	२०८
१५६. बिरहैन गित (क)	२०८
१५७. बिरहैन गित (ख)	२०९
१५८. बिरहैन गित (ग)	२१०
१५९. बिरहैन (घ)	२१०
१६०. वसन्त ऋतु गित	२१०
१६१. मधवा लाल के गित	२११
१६२. मेघा स्तुती गित	२११
१६३. किरवा राजा के गित	२१२
१६४. नङ्ग के बनिज गित	२१२
१६५. मालिन के गित	२१३
१६६. चाँचैर गित (क)	२१४
१६७. चाँचैर गित (ख)	२१४
१६८. मुखवन माधव लाल के गित	२१५
१६९. सामा के गित	२१७
१७०. मधबालाल के गित	२१७
१७१. सलहेस के गित	२१८
१७२. भजन	२१९
१७३. संझा गित	२२०
१७४. चोरखेली गित	२२०
१७५. बराह जी के गित	२२०
१७६. बन्हैन गित	२२१
१७७. झुमैर गित	२२१
१७८. साँझ दियरा गित	२२२
१७९. भगैत गित	२२२
१८०. भगैत गित (क)	२२३
१८१. भगैत गित (ख)	२२३

१८२. बच्चा के सुतौना गित (क) २२४
१८३. बच्चा के सुतौना गित (ख) २२४
१८४. बाल गित २२५
१८५. होरी के गित २२६
१८६. जोगिरा (क) २२७
१८७. जोगिरा (ख) २२७
१८८. हरी सरन गहुं प्रभु जलम उबारो २२८
१८९. राखी लिये रघुराइ २२८
१९०. साख गित (क) २३०
१९१. साख गित (ख) २३०
१९२. साख गित (ग) २३२
१९३. साख गित (घ) २३२
१९४. बिरहैन गित २३४
१९५. निरगुन गित २३४
१९६. भोग गित २३५
१९७. महादेवी गित (क) २३५
१९८. महादेवी गित (क) २३६
१९९. महादेवी गित (ख) २३७
२००. गोहार गित २३८
२०१. गजपुकार २३८
२०२. मंगल गित २३९
२०३. उत्सव गित २४०
२०४. आरती गित २४१
२०५. एकादसी के गित २४१
२०६. अर्घ ढारे के गित २४२
२०७. जगरनाथ गित २४२
२०८. सारंग गित २४३
२०९. सीता हरन गित २४४
२१०. मोहन मुरली गित २४४
२११. बच्छा सिखावे के गित २४५
२१२. गुरुबन्ही गित २४६

२१३. गोचर गित	२४७
२१४. उचारन (क)	२४७
२१५. उचारन (ख)	२४८
२१६. मंगल गित	२४९
२१७. रामायन गित (क)	२४९
२१८. रामायन गित (ख)	२५०
२१९. हरिन गोहार गित	२५१
२२०. गज गोहार	२५१
२२१. परिछन गित	२५२
२२२. धुजा हनुमानी गित	२५३
२२३. चौजुगिया गित	२५३
२२४. परनादी गित	२५४
२२५. जग सुसार गित	२५५
२२६. भोग गित	२५५
२२७. महेसवानी गित (क)	२५६
२२८. महेसबानी गित (ख)	२५७
२२९. महेसबानी गित (ग)	२५७
२३०. समापन गित	२५८
२३१. दधी मंगल गित	२५८
२३२. दसौं अवतार (क)	२५९
२३३. दसौं अवतार (ख)	२६०
२३४. गौबधी	२६०
२३५. बालिछरन गित	२६१
२३६. उलकिच गित	२६२
२३७. सोहर गित	२६३
२३८. चुटिमुड़न गित (क)	२६३
२३९. चुटी मुड़न गित (ख)	२६४
२४०. सारङ गित	२६५
२४१. तुलसी चलितर गित	२६६
२४२. सिता समर गित	२६६
२४३. धुजा चुमोन गित	२६८

२४४. निरगुन गित (क) २६८
२४५. निरगुन गित (ख) २६९
२४६. मरकी गित २६९
२४७. करु काली असुर संहार २७०
२४८. बिरहैन गित (क) २७०
२४९. बिरहैन गित (ख) २७१
२५०. चाँचैर गित (क) २७२
२५१. चाँचैर गित (ख) २७२
२५२. पराती गित २७३
२५३. धुमरा नाच के गित २७३

थारु लोक गित मोट्री

(१) होरी धरनपेती गानिया गित (राना)

संकलकः कमल सिं राना,
उपाध्यक्ष, नेपाल रानाथारु समाज
केन्द्रीय समिति
कैलाली-कन्चनपुर

राना थारुको प्रमुख पर्व होरी ३८ दिन तक मनान चलन हए । होरीको पहिलो दिन गावँको भलमन्सा अउर भर्रा सहिंत पुजाको समान भेंट सहिंत गाउँक दखिन पुजा करके होरी धरन चलन हए । जा गित होरी धरन पेती गात हएँ । जा गितमे मथुरामे पौरानिक कालमे कनहैया, राधा, अउर ग्वालको होरी खेलतको एक दृस्य प्रस्तुत करो गओ हए । जामे गोपी गित गाबए, राधा नाचए, कन्हैया ढोल बजाबए अउर रङ् लगाबए जैसे दृस्य गित मार्फत प्रस्तुत भओ हए ।

मथुरासे होरी उतरी लाल
मथुरासे होरी उतरी लाल
अरे खेलत गोपी ग्वाल लालरे
मथुरासे होरी उतरी लाल
कौन नाचए कौन गाबए
राधी नाचए गोपी गाबए
अरे किसन बजाबए ढोल लालरे
मथुरासे होरी उतरी लाल
कौनको चलो अचला
कौनको चलो अचला
अरे कौनेको हाला लालरे
मथुरासे होरी उतरी लाल
राधिको चलो अचला
राधिको चलो अचला
अरे किसनको चलो लालरे
मथुरासे होरी उतरी लाल

२. सावनकी गित (राना)

राना थारुको दुसरो महत्वपुर्ण तिउहार तिज हए। जा सामनके महिनामे पडत हए। जामे दिदी बहिनिया लगायत सबए डोला डारके डोलत हएँ। अउर जा तिजके दिन तमान किसिमके पक्वान बनात हएँ। अउर अपन ददा, भैयाको लम्बो आयुके ताहीं बरत रहत हएँ। तिजमे गानियाँ तमान गित मैसे जा एक गित हए। जामे सामन महिना भर मेहैं बरसके आँगनमे किंच हुइजात हए। अइसी तमान चिज समेटो गओ हए। संगए जा गितमे बारहौं मासको रानाथारुको परिबेस उल्लेख करो गओ हए।

रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए सावन मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए भादौंको मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए क्वाँरको मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए कातिक मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए अगहन मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए पुसको मास सखिना मएरे

अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए माहको मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ कींचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए फागुन मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए चैतको मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए बैशाख मास सखि लगन उचारे
सोचैय लगन बियाहे कुमार
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए जेठको मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......
आओ हए असाढको मास सखिना मएरे
अँगनामे करिगओ किंचए रे
रिमझिम रिमझिम मेघ जो बरसए रे
अँगनामे करिगओ किंचए रे.......

३. बैरासु गित (कठरिया)

विष्णु प्रसाद कठरिया
बर्दगोरिया गा.पा.-६ ,कोटातुल्सीपुर,कैलाली

दिउरुवा भौजी केहे भगाइक तहन अपन घर ति भौजीक रंगमहल चल देहल । महल पुगके भौजी केहे पित्तर, सोनक सिकरी देहल जौन भौजी पैंधल । जब भौजी पैंधल तब दिउरुवक मन बहुत खुसी हुइगेल । लेकिन पुरा सिंगार नाइ हुइके भौजीक जिउ (मन) उदास रहे । भौजी केहे भगाके उत्तर नाइ की बल्की दखिन लैगेल । भौजी दिउरुवा कहे रंगमहल ति लैके पुरा धन सम्पत्ती सउप दिहने ।

हियासे चलल दिउरा रे रंगाता महलिया रे मोरे हे
खोलला दिउरा काचिया पितारे काही रे बाहुवा गरिलो रे दिउरा
काची रे सुनारा मोर सिकारी रे गुदाइ
जउने तो बाहुवा रे पंइधे रे जेठा भाउजाइ ।
बाहुवा तो पइधल भौजी रे मान चित्रा लगइलो रे मोरिहे
कारल भौजी साबदा सिंगार सोरजे मुखा चोरिला कोन जियारा रे उदास ।
हियासे चलल दिउरा रे रंगाता महलिया रे मोर सामुन्द्र रे पिटर
खाइची तो लिहला दिउरा मोर दाखिने काचिर ।
पैधे तो पैधे भौजी रे मान चित्रा लगइलो रे मोरे हे
करल भौजी साबादा सिंगार
सोरजा मुखा दिन चिरिला दिन जियारा रे उदास ।
हियासे चलल दिउरा रे रागता महलिया रे मोरे
खिलल दिउरा मोर समुन्द्रा रे पिटर
खाइची ता लिहला दिउरा उतारे काचिर ।

४. चुन्नी (छोट) होरी गित (कठरिया)

पिया प्रदेस कमाइ गैल बखत पिया चलल प्रदेस गोरी (श्रीमति) कहे घरमे सम्झाके र खयो । गोरी कहे लगने साउनमे बरसे लागल रिमझिम बुंदा, भादौमे भमरा रातभर गुंजरे लगने । तब फेन मोर पिया नाइ अइनै । अबकी चोटी पिया घर अइही छातीमे लहामु लागइ । कौंर कार्तिकसम असरा लगइनै । तब फेन नाइ अइनै । अबकी चोटी पिया घर अइही छातीमे लहामु लगाइ ।

पिया चाले प्रदेस गोरी समुझाइ रखियो
एक तो गोरिया बारा भैंसिया दुजे पिया प्रदेस
तिजे मेघा झमाझम बरसे कामिल बाहुत आदेस ।
गोरी समुझाइ...

पिया चाले प्रदेस गोरी समुझाइ रखियो
साउन साजनी बरस झिन बुदे पिया नाही आवात मोरे
अबकी चोटी पिया घरे अइही लेहामु रे छतिया लगाइ ।
गोरी समुझाइ...

पिया चाले प्रदेस गोरी समुझाइ रखियो
भादौ भामरा गुंजरने से राते पिया नही आवत मोरे
अबकी चोटी पिया घर आइही लेहमु रे छतिया लगाइ ।
गोरी समुझाइ...

पिया चाले प्रदेस गोरी समुझाइ रखियो
कौंरा असिनी आसा प्ररगे हेरे पिया कांही आसे
अबकी चोटी पिया घर आइही लेहमु रे छतिया लगाइ ।
गोरी समुझाइ...

पिया चाले प्रदेस गोरी समुझाइ रखियो ।

५. बन्ना होरी (कठरिया)

राम, लछमन बनवास जाइ लग्ने तब अयोध्या सुन हुइगेल । आगे आगे राम, पिछे पिछे लछमन भाइ, तौके पिछे सिता जानकी मधुबन लेहने तकाइ । तब राम, केहे कहे लग्ने किहके बिना मोर सुने अयोध्या किहके बिना चौपाइ । किहके बिना मोर खिचरी रे सुइया काहनु मोरे भोजना सुझाइ-कौन मोर भन्सा बनाइ ।

हरे अयोध्या सुन परो हैं रे
बिना लछमन बिना राम अयोध्या सुन परो है रे
आगे आगे राम चलत हें पिछे लछमना भाइ
तौके पिछे सिता जानकी मधुबन लेहते तकाइ ।
हरे अयोध्या सुन परो हैं रे
बिना लछमना बिना राम अयोध्या सुन परो हैं रे
किहके बिना मोर सुन अयोध्या किहके बिना चौपाइ
किहके बिना मोर खिचरी रे सुइया
काहनु मोरे भोजना सुझाइ ।
हरे अयोध्या सुन परो है रे
बिना लछमन बिना राम अयोध्या सुन परो है रे

राम बिना मोर सुन अयोध्या लछमना बिना चौपाइ
सिता बिना मोरे खिचरी रे सुइया ओही मोरे भोजना सिभ्काइ।
हरे अयोध्या सुन परो हैं रे
बिना लछमन बिना राम अयोध्या सुन परो हैं रे।

६. बन्ना नाच (कठरिया)

गोलनी जब दही बेचे निकरता तब कन्हैया देखके मानामोहित हुइजिता। गोलिनके मिटकी कन्हैया फोर देहता। गोलनी निगते निगते अपन सखी तिर पुगता। अपने और सखी सिंगार करतियां। तब कन्हैया और मानामोहित हुइजिता। गोलनी जब दही बेचे निकरता, तब कन्हैया देखके माना मोहित होके डगर गिस्ता, डगर गेसेबेर गोलिनके मिटकी गिरके फुट जइता। गोलिन कहे प्रेममे दारके घर लैंजिता। तब कन्हैया के घरमे अनेक भगरा हुइ लगता।

दहिया बेचन निकारे बिचके गोलनी ना देखी कन्हैया मानामोही रहे
हरे छोटी छोटी पैराहका कदाम घाना छाहिया रहे हो
जही तार कारता सिंगार साखी रे
हारी हो जाही काराता सिंगार साखी हो
हरे घिसा घिसा चन्दन माथे लगावे
राताना पाटकाही बानाता इरुलिया
हरे सिर धारे मिटुकी रे, सिर धारे मिटुकी रे
बेचना जावे हो देखे कन्हैया मानमोही रहे।

दहिया बेचन निकारे बिचके गोलनी ना देखी कन्हैया मानामोही रहे
हारे लैइ दरपना मुखा हेरे गोलनी हो
बेद बिपाता लिलर साखी हो, हारे हो गोलनी हो
बेद बिपाता लिलार साखी हो हारे हो
बेदा बिपाता लिलार साखी हो
मानो रे मारथी आग्गारे हो तिल्का
उनाके नाइन भारसुरामा हो सोहे
हरे नाकान बिचारे
भौरा मिरा रामे हो देखो कान्हैया मानामोही रहे।

७. दुलरु (सजना) गित (कठरिया)

दुलरु जब बाँस काटके बाँसके बिच्चेक भागके रामालु -बाँसुरी, बसिया) बनाके बसियामे

आलाफु (प्रेम) के गित गाइ लगने तब लखिया (लौरिया) कहल दुलरु तुम कब अइलो । और कैसे बालो बहुत आलाफु गित सुनइलो । तुम मोर घर जरुर चलो । तब दुलरु कहने जइमु ते जइम कैसे जइम कुत्ता भुकही । पहारु (गेट) पाले जाग जैही । तब लखिया कहने कुत्ता कहे दही, दुध भात दै दिहमु । और पहारु कहे मादिया (दारु) दिहमु चिखाइ ।

बासन काही रे थानमारे देबिन जिकारे हो
फुलवा देबिन फुलवा जिकरे फुलवा
जाही काठ दुलारु मोरे रामालु बनाइ हो
जर तो छाटे दुलरु रे पालाइया माली रे
हो छाटालो पालाइया माली हो छाटलो
बिचके गिरलावा दुलरु रामालु बनाइ हो
रामालु रे बजावे दुलरु रे गितारे हो
गयिलो आलाफु गिता रे हो
हमारे पाघारिया दुलरु कबाहुन आइलो हो
तुमरे पघारिया लखिया हो हम कैसे हो
जाइबा हम कैसे हो जाईबा
कुकारुन ना भुखी हे पाहारु जागी जैही हो
कुकारुन रे देहमु दुलारु रे दाहिया दुधा हो
भातिया दाहिया दुधा रे भातिया
पाहारुन देहमु मै मादिया चिखाइ हो ।

८. करनौटी

संकलन : लालबहादुर चौधरी (बहादुर बैरागी) बारबर्दिया ९ कर्तनिया बर्दिया,
रामसोहन चौधरी (सागर) बारबर्दिया ११ फच्कहबा बर्दिया

राजा गुर्बाबाके छावा रहथैं । ओकर नाउं करने रहथ् । उ एकथो भारी बिद्वान नाउं चलल राजा रहथ् । उहिन सिटिमिटिम् कोइ भेटे नाइ सेकथ् । ओकर ठन कोइ जाइफे नाइ सेकथ् । ओस्तहीं के राजा हैंबत् ओ रानी माइ मदागिन के छाइ गावर ढियरी रहथी । तब ऊ अप्ने बिदया सिखेक लाग बरा बरा देउतन जुटाइक लाग नाचके आयोजना कर्ली । नाचमे अप्ने सिंगार पटार कैके ढाल तरबार भन्जती नाचे लग्ली । उ नाचमे बरे बरे देउता लोग अइनै । ओ गावर ढियरिहन आसिर्वाद ओ उपहार फेर देहनै । तब गावरढियरी सारा देउतनके आसिर्वाद पाके बिलास होगैली । ओ करने राजासे भेट करे निकर पर्ली । भेटे जैना कममे अनेक बाधा अबरोधसे जुझती ओ केहिनो आसिस देहती

गैलेक् यी कर्नौती गितमे उजागर कैगइल बा । यि गित बेरी जुनके हुर्डुङ्वा नाचमे गै ना गित हो । यी गितहे ढकेहेरवै ओ गुरुवै फेर गुरै करेबेर अपन अपन लयमे गैथै ।।

चौपाइ १

हाँ हाँ रे राजा तो गुरु बाबक बेटी ढरम धियान,
हरे पिरती देखन ढियरी रे चलिआए ।
हाँ हाँ रे ढाल तो भाँजै भवानी भाँजै सिर माथ,
हरे अबिरङ्ग कैलो हो गवरी सपट रे सिङ्गार ।
हाँ हाँ रे झालर बोले मान्दर बोले बोले करतार,
हरे नाचे लागल गवरी हो छतन रे बिछोर ।
हाँ हाँ रे मुनिया महेस्वर भैया चली न भए,
हरे छत्तिस कोठेक देउता देखन रे चली आए ।
हाँ हाँ रे कोइ देवै अङ्गुठी मुन्दरिया सहना भराए,
हरे बरहो बरदिया देहन रै धेनु गाइ ।
हाँ हाँ रे छत्तिस कोठेक देउता देहनै आसिस,
हरे जाइ बुझाइल गवरी हरीरे क बिलास ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लग्ली गावर ढियरी सुनो सुनो हो माइ मडागिन ओही गुरु बाबाकै चारी महिनवा बरसकाल, चारी महिनवा धुपकाल चारी महिनवा जाडकाल अतना बचनवा मांगल बातैं गावर धियरी रे निकासे हाँ हरि निकासे । अरी हो कजरिक बनवा गवरी चलिन भए ।

चौपाइ २

हाँ हाँ रे घमकी घमासल गवरी गैनै अलसाइ,
हरे छिन एक गवरी हो लेहोरे बिसराम ।
हाँ हाँ रे नाही मै पाढा ओ पन्डित चतुर सुझान,
हरे कौने गुन लइके जइबु हरीरे क बिलास ।
हाँ हाँ रे मैतो मदागिन कोखिया लेहनु औतार,
हरे सुमिरल गवरी हो देउता रे कै पाउं ।
हाँ हाँ रे खेलती हाँसती हो गवरी भइनै सरपुन,
हरे जाइ पहुँचल गवरी कमरुकै देस ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लग्ली गवर ढियरी आजुक बारा बरसकै आगे बारा बरसकै पाछे कमरु

देसकै बिदिया सिखिरे भैनै तयार, हाँ हरि भैनै तयार ।
अरी हो गावर ढियरी भैनै रे तयार ।
हाँ हाँ रे अढाइ अछरवा हो गवरी पढै अध्कार,
हरे बार बरसके मुवल गबरिक सुधिरे हुइजाए ।
हाँ हाँ रे उतरेक संभु हो गवरी बाँधिरे बैठाइ,
हरे उतरेक संभुरे गवरी पलटी रे पठाइ ।
हाँ हाँ रे दखिनेक संभु हो गवरी बाँधिरे बैठाइ,
हरे दखिनेक संभुरे गवरी पलटी रे पठाइ ।
हाँ हाँ रे पुरबेक संभु हो गवरी बाँधिरे बैठाइ,
हरे पुरबेक संभुरे गवरी पलटी रे पठाइ ।
हाँ हाँ रे पछिवैक संभुहो गवरी बाँधिरे बैठाइ,
हरे पछिवैक संभुरे गवरी पलटी रे पठाइ ।
हाँ हाँ रे कमरु देसक बिदिया हो गवरी लेवैं परगाँस,
हरे पर्सक पतिया हो गवरी देहनै उराइ ।
हाँ हाँ रे आछत चाउर गवरी डरनै छिरकाइ,
हरे पर्सक पतियाहो गवरी लेहनैरे बलाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहै कमरु देसक बिदिया छोरत बातैं गावर धियरी कुन्जिल बनवा चलि भल जाए । हाँ हरि चलिभल जाए ।
अरी हो गावर धियरी हो चलिन भए ।

चौपाइ ३

हाँ हाँ रे चारुवर देखल गवरी खँखरे उजार ।
हरे ढुरिया ओ मटिया हो गबारी देखैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे कौने कौने जिनिसवा हो चरै बन माँझ ।
हरे तौने जिनिसवा हो गवरी खोडेरे भललाग ।
हाँ हाँ रे दुरहिसे देखल दनुवा गवरिक आइत ।
हरे रकसाव दनवा दुनु कैनै रे बारु मार ।
हाँ हाँ रे काहेक रकसा ओ दनुवा कईलो रे बारु मार ।
हररे तैने तो बातरे भइयो कहो र समुझाइ ।
हाँ हाँ रे रकसा ओ दनुवा हो बोले भललाग ।

हरे तुहरे करनिया हो गवारी कइली रे बारु मार ।
हाँ हाँ रे मोरेतो बहिनिया हो बातै कुइया इनार ।
हरे जाइ भइयो हो लेहोर निकार ।
हाँ हाँ रे रकसा ओ दनुवा ओ गवरी हो तिनु चलिन भए ।
हरे कुइया इनार हो गवारी भईरे गईनै थार ।
हाँ हाँ काइ रे कुइया इनारम गवरी देहनै देखाइ ।
हरे मोरे बहिनिया हो भइयो लेवरे निकार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे देखे लगनै रकसा ओ दनुवा कुँइया इनारेम । पैठत बातै गावर धियरिक छोट् की बहिनिया लवैरे निकार "हाँ हाँ रे निकार" अरी हो बजरा पिरहिया गवरी देनै धर

चौपाइ ४

हाँ हाँ रे चारुतो कोनेम गवरी किलिया गराए ।
हरे रकसा ओ दनुवा दुनु भईनै रे जरछार ।
हाँ हाँ रे सतजुग करनी हो देउजुग बँचा ।
हरे देवभुत हो गवरी ठोकै रे अधकार ।
हाँ हाँ रे कइया इनारेसे गवरी चलिन भए ।
हरे रहजुल बलाहै गवरी देखैरे सिपार ।
हाँ हाँ रे रहजुल बलाहै गवरी पनिया पियावै ।
हरे रामराम कै रहजुल बलाहा उठै नै रे हहराइ ।
हाँ हाँ रे रहजुल बलाहा रे गवरीक पाउ परिजाए ।
हरे भुँखे भोजनवा हो गवरी महिन रे कुछु देउ ।
हाँहाँ रे झाली मकुनियक गवरी भतवा निधाँए ।
हरे उरदा मुँगलियक गवरी दलवारे निधाय ।
हाँ हाँ रे सेखुवा पातकै गवारी पटरी लगाए ।
हरे रहजुल बलाहै हो गवरी जेवना रे जेवार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहेलग्ली गावर धियरी सुनो सुनो हो तुँहु । रहजल बलाहा मोरेतो झाँझर कुरिया देहोरे बनाइ । "हाँ हाँ रे बनाइ" अरी हो राजपात भइया तोहिका बैठांउ ।

चौपाइ ५

हाँ हाँ रे इहे सेतिन रहजुल बलाहा चलिन भए ।
हरे कुन्जिल बनवारे भइया नेगिरे चली आए ।

हाँ हाँ रे चदना व पंदना हो भइया खोजेव अधिकार ।
हरे खोजती खोजती हो भइया भइनै रे हैरान ।
हाँ हाँ रे सुन हुन गावर माइ बिनती हमार ।
हरे चदना ओ पंदना हो गवारी कहुँरे नही पाए ।
हाँ हाँ रे सेमरा काठकै हो गवारी नइया रे बनाइ ।
हरे उकठा काठकै हो गवारी बहना रे बनाए ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहेलग्ली गवारी धियरी सुनो सुनो हो रहजुल बहाला पाँच पैसवा पाँच गाँठ हरदी लइके भइया थरियाव । "हाँ हाँ रे थरियाव" । अरी हो गारिगुरी रहजुल बलाहा भईनै रे तयार ।

चौपाइ ६

हाँ हाँ रे कुसवा कातिरे बरहै भितवा बनाए ।
हरे काठ कोरइया हो भइयो दारोरे चढाइ ।
हाँ हाँ रे बँसवा कती रे ब्ररहै बतिया बनाए ।
हरे भफही कातिरे बरहै करैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे भाँभर कुरिया हो बरहै छाँय भललाग ।
हरे गावर धियरिक मन्डफ भईनै रे तयार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन गावर माइ बिनती एक मोर ।
हरे गिरहे मन्डफ हो गवरी कइनु रे तयार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन सौर हेनौता बिनती एक मोर ।
हरे रहजुल बलाहैं हो भइया राजा रे बैठाव ।
हाँ हाँ रे चदना ओ पंदना हो बरहै देखै अधकार ।
हरे देवभुत ओ भइया बातैरे अधकार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहलग्ली गावर धियरी सुनो सुनो हो तुँहँ रहजुल बलाहा सतजुगजाइ कलिजुग आइ । कलिजुग जाइ मनपती मनुवा लेहीँ रे औतार । आज जैसे कतबौ अनधन सोनवा सुरुपवासे बैठी जैबोरी जैसे कतबौ खनधनसे कैंठिजैबो जियाना परापत होइही तुँहार । "हाँ हाँ रे तुहाँर " अरी हो इहे सिटन गावर धियरी चलिना भए ।

चौपाइ ७

हाँ हाँ रे कजरिक बनवासे गवरी चलिना भए ।

हरे रहिया तो पकरल गवरी करने राजाके दुवार ।
हाँ हाँ रे पहिले तो देखल गवरी पयियनकै लोग ।
हरे पास पसेनिया दुनु सुवरिरे चराए ।
हाँ हाँ रे सौंरा ओ हेनोता दुनु एकमत फिन ।
हरे सुनहुन गावर हो मइ बिनती रे हमार ।
हाँ हाँ रे कौने तो बात हो भइयो दारो बटुवाइ ।
हरे सोरहे बात हो भइयो कहोरे समुझाइ ।
हाँ हाँ रे भुखकी भुँखासल बाटी पनकी पियासल ।
हरे दुइ चार छउनवा हो गवरी देबरे मगाई ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगली गावर धियरी सुनो सुनो हो सौंरा तुँहुँ पास पसिनियाकै लोग, आज जइसे दुइचार छवनवा देहुन भइया मोरेतो पुता भुखकी भुँखासल बाटै मोरे पुता आग बिनाके करही रे अहार, "हाँ हाँ रे अहार" अरी हो पास पसिनिया दुनु गइनै पतियाइ ।

चौपाइ ८

हाँ हाँ रे दुइ चार छयनवा हेनौता दारै भलमाग ।
हरे बत्तिसो छउनवा हनौता करनै आहार ।
हाँ हाँ रे पास ओ पसिनिया हो दुनु भइनै जरछार ।
हरे बत्तिसो छउनवा हो गवरी देबुरे मगाइ ।
हाँ हाँ रे दिहबु सरापी पास पसिनिया हुइबो रे जरछार ।
हरे पास पसिनिया नौना जइहिरे बुताइ ।
हाँ हाँ रे सुनिकै पास पसिनिया हो हुइनै रे उदास ।
हरे पपिसिनिया हो गवरिक पाँउ रे परिजाय ।
हाँ हाँ रे कौने करनिया हो गवरी देहबो सराप ।
हरे देउ भुतन हो मनुवा एकोरे ना बलाए ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहलगली गावर माइ सुनो सुनो हो तुँहुँ पास ससिनिया सुवरी लइके आब, सुवरी लेके अइबो तो तुहरे इहे कलिजुगमे रहबो सहिदाने, हाँ हाँ रे "सहिदाने" अरी हो इहे सेतिन गावर धियरी चलिन भए ।

चौपाइ ९

हाँ हाँ रे मधसुर नगरिया हो गवरी दरनै भेटाइ ।
हरे मधसुर नगरिया हो । गवरी करनै रे पैठार ।

हाँ हाँ रे चारुवर देखल गवरी मदमहुवाकै काम ।
हरे मदमहुवा चुवइनै रे अधकार ।
हाँ हाँ रे सौरा व हेनाता दुनु एक मतकिन ।
हरे बत्तिसो कुरबा हेनौता फोरिरे भहराइ ।
हाँ हाँ रे मेतिया तो सौरा हेनौता दिहनै बगाइ ।
हरे मदमहुवा हो एको चुवहिन पाय ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगनै कलवारिनके लोग सुनो सुनो हो । जोगिन माइरे जइसे तुँहारे तो पुता मधसुर नगरिया करनै रे खैखान, "हाँ हाँ रे खैखान" अरी हो सुनिकै जोगिन बहिनी भइनै जरछार ।

चौपाइ १०

हाँ हाँ रे सुनहुनु कलवारिकै लोग बिनती हमार ।
हरे देहबु सरापी रे भइयो हुइबो रे जरछार ।
हाँ हाँ रे कौन करनिया हो गवरी दिहबो सराप ।
हरे भुलचुक हो बहिनी करेउ रे गुनामाफ ।
हाँ हाँ रे सुनहुन गावर माइ बिनती हमार ।
हरे जियना परापत बहिनी महिरे कुछु देउ ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगली गावर धियरी सुनो सुनो हो कलवारिनकै लोग कलजुग माझरे जैसे, आज जइसे कहे लगली छत्तिस कोठेक देवता छाँकी चुवैही दानपती मनुवा कर ही सखार तबहुन रहही रे मनुवा सहिदान -हाँ हाँ रे सहिदान) अरी हो माधसुर नगरिया गवरी छोरी चलिजाए ।

चौपाइ ११

हाँ हाँ रे कजरिक बनबम गवरी दौरी चलिजाए ।
हरे देखितो दरनै हो गवारी हाथी चरवाह ।
हाँ हाँ रे केकरे तो हुइतो रे भइयो हाथी चरवहा ।
हरे तुहरे तो राजा हो भइया कइसिन बातै ।
हाँ हाँ रे करने राजाकै हुइतो हाथी चरवहा ।
हरे सोन सरुपवा गवरी राजारे बतै हमार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन भइयो र बिनती हमार ।
हरे सोने सरुपवा हो करने बातै र अधकार ।

हाँ हाँ रे सुनहुन भइयो हो बिनती एक मोर ।
हरे करने रजवइ हो भइयो देहो रे बताइ ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहेलगनै नान्हा गोपाल सुनोसुनो हो गावर धियरी आगेरे जइबो हो जइसे आगे बातै भैसी चरवाह, वही भैसी चरवाहनसे पुछेउरे जइसे हाँ हाँ रे भैसी चरवाह) अरी हो इसे सेतिन गावर धियरी चलिना भए ।

चौपाइ १२

हाँ हाँ रे कजरिक बनवा हो गवरी छोरी चलिजाए ।
हरे देखितो दरनै हो गवरी भैसी रे चरवाह ।
हाँ हाँ रे केकरे तो हुइतो रे भइयो भैसी रे चरवाह ।
हरे करने राजक रहियारे भइयो देवरे बताइ ।
हाँ हाँ रे करने राजारे के हुइलो भैसी चरवाह ।
हरे आगे जाइके पुछेय हो गवारी गाइ रे चरवाह ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे गावर धियरी कजरिक बनवा छोरत बातै गावर धियरी बनकै कछारे-कछारे कोयलकै बिचेबिचे चलत बातै -हाँ हाँ रे चलत बातै)अरी हो गाई चरवाह गवारी दरनै भेटाइ ।

चौपाइ १३

हाँ हाँ रे सुनहुन अहिरवारे भइया बिनती हमार ।
हरे केकरे तो हुइतो रे गइया रे चरुवाह ।
हाँ हाँ रे करने राजा रे कै हुइतो गाई चरुवाह ।
हरे सोरहे बात हो गवरी कहोरे समुझाइ ।
हाँ हाँ रे सुनहुन अहिरवा रे भइया बिनती हमार ।
हरे करने राजाकै रहिया देवरे बताइ ।
हाँ हाँ रे बरहे बरसकै रहिया देवरे बताइ ।
हरे इहे रहिया जायोरे गवरी कुइया इनार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे गावर धियरी गाई चरवहियक चौकी छोरत् बातै गावर धियरिया कुइया इनारेम जाइत बातै जइसे रे (हाँ हाँ रे कुइया इनार) अरी हो इहे सेतिन गावर धियरी चलिनभए ।

चौपाइ १४

हाँ हाँ रे कुंइना इनारेम गवरी चलिना भए ।
हरे बुंदा एक बहिनी हो पनिया रे पियाव ।
हाँ हाँ रे जात नही जन्नु हो बहिनी पनिया बिचार ।
हरे कैसिक देबुरे बहिनी गंगाजल पानी ।
हाँ हाँ रे जाततो हेवतवारे बहिनी बही मोर बाप ।
हरे माइ मदागिन कोखिया ले हनुरे औतार ।
हाँ हाँ रे जतिया तो जन्नुरे बहिनी पटिया बिचार ।
हरे अब तोही देहबुरे बहिनी गंगारे जुरपानी ।
हाँ हाँ रे राजा हेंवत बाबा हमार बहिनी पटिया बिचार ।
हरे माइ मडागिन कोखिया लेहनुरे अवतार ।
हाँ हाँ रे सोनके गरुवा सपना लागे बहिनी पटिया बिचार ।
हरे पिलेओ बह्निनी हो गंगारे जुरपानी ।
हाँ हाँ रे पनिवा पिबाइल बहिनी हिच्छा भरपुर ।
हरे जुगजग जिओ बहिनी लखहो बरस ।
हाँ हाँ रे सुनहुन बहिनी बिनती हमार ।
हरे करने राजक बख्खारी देहो रे बनाइ ।
हाँ हाँ रे सोर सौ बहिनी चौकी बैठाइ ।
हरे कैसिके जैबौं करने दुवार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लग्ली गावर बहिनी सुनो सुनो हो सोरा सौ पनिहारिन करने राजक् बाग(
बगैचा धन रे अमार सुधिन फुलबारिन बहिनी देहो रे बताइ, हाँ हाँ रे बताइ ।
अरी हो बाग बगैचा सुध्घर फुलवार ।

चौपाइ १५

हाँ हाँ रे अलखा मलिनियक उकठल फुलवार ।
हरे जाउ बहिनी लेउ बिसराम ।
हाँ हाँ रे यिहे सेतिन गावर धियरी चलिना भए ।
हरे जाइ फुलबरियारे गवरी भइरे गैनै ठाव्ह ।
हाँ हाँ रे बरहे बरसके उकठल फुलबारी ।
हरे जाइके देखल गवरी खंखरे उजार ।
हाँ हाँ रे कुंइया इन्दर आइल गवरी भइगैनै ठाव्ह ।
हरे सुखल पाखल देखत गवरी कुंइया इनार ।

हाँ हाँ रे डेव्ह अछेरवा गवरी लेउ परगास ।
हरे कमरु देसके बिदिया रे गवरी देहनै चलाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे डेव्ह अछेरवा आउ गुन बिदिया लइपरगासत बाती गावर ढियरी आछत चाउर ओ साजत बाती, येही लैरे पल्हुवाइत बाती कुँइया इनार । कि पाउँ उठाइत बाती यिहे कुँइया इनारे अब भरत निरजुल पानी हाँ हाँ रे निरजुल पानी ।
अरी हो देखी डरनै गवरी लेवैं पल्हुवाइ ।

चौपाइ १६

हाँ हाँ रे पहिले पल्हुवाइल गवरी आइल रे मकान ।
हरे दोसरे सिरजाइल गवरी धनसरा ।
हाँ हाँ रे तिसरे पल्हुवाइल गवरी घन अमार ।
हरे फुलल फुलवा गवरी लैगैरे फुलवा ।
हाँ हाँ रे फरी गैनै बागबगैचा घन अमार ।
हरे सोरा सौ भौंरा हो छोरनै गुंजार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे सपना सपनाकै पल बाल बातैं अलखा मलिनिया मुँरे लेह्ले बाती सुबरन डेलवा हाँथे लेहत बाती रोडना लोकसिया हेरे चलो फुलवार हाँ हाँ रे फुलवार ।
अरी हो अलखा मलिनिया चलै हो फुलबार ।

चौपाइ १७

हाँ हाँ रे अलखा मलिनिया करै सपना विचार ।
हरे जाइ पहुँचल माली बहिरे फुलबार ।
हाँ हाँ रे चारिकोना हेरै माली फुलवार ।
हरे कौने जहना अब लेवैं अवतार ।
हाँ हाँ रे दुरहिसे देखो माली जोगिनी फकिर ।
हरे जोगिनी फकिरिक मालिन पाएँ परिजाए ।
हाँ हाँ रे सुनहुन जोगिनी माइ विनती एक मोरे ।
हरे जिवन परापत मोहियाइ रे हमार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहेलग्नै अलखा मलिनिया सुनो सुनोहो जोगिन माइ एक डेलवा फुल्वामै देवौं राजा करनेक पठाइ । हाँ हाँ रे पठाइ ।

अरी हो सौ मन हो मालिन जौने लैजाओ।

चौपाइ १८

हाँ हाँ रे जौ तै मालिन जैबो करने दुवार।
हरे मोरे तो निदिया मालिन जिन बतुवाउ।
हाँ हाँ रे जौ मालिन जैबो करने दुवार।
हरे नाउँ तो निदिया मालिन हुन जैही हमार।
हाँ हाँ रे फुलवा जैही मालिन डेलवा भराइ।
हरे जाइ पहुँचल मालिन करने दुवार।
हाँ हाँ रे उठहुन राज करने फुला लैलेबै।
हरे छत्तिस कोठेक देउतन फुलवा चढाबै।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लग्ली अल्खा मलिनिया सुनो सुनो हो करने राजा सुरज देउतन डरनै मनाइ, पहिले पुजल धुप धुँगार आज जै कहे लग्ली अलखा मलिनिया करने राजा फुलवा चढाइ। माइ मडागिन करने छाकी रे चढाइ।

चौपाइ १९

हाँ हाँ रे लैकै फुलवा करने भैनै रे तयार
हरे सुरज देउतन डरनै मनाइ।
हाँ हाँ रे पहिले तो पुजल करने धुप धुँगार
हरे छत्तिस कोठेक देउतन फुलवा चढाए।
हाँ हाँ रे सुरही गइयवक दुधरे चढाइ,
हरे माइ मदागिन करने छाकी चढाए।
हाँ हाँ रे छत्तिस कोठेक देउता देहनै आसिस,
हरे जुगजुग जियौरे करने लखहों बरस।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लग्नै राजा करने सुनोरे अलखा मलिनिया वही फुलवा काम लागी मोरे तन देउ बताइ हाँ हाँ रे बताइ।
अरी हो यिहे सेतिन मालिन चलिन भए।

चौपाइ २०

हाँ हाँ रे सुनहुन जोगिनी माइ बिनती एक मोर,
हरे राजा करने तुरन्ते हो बलाइ।

हाँ हाँ रे वहिमाइ माली चोररे चन्डाल ।
हरे न मै जैबु हो मालिन करने दुवार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन अलखा मलिनिया बिनती हमार ।
हरे अतरा बतवाहो करने डरहीं सँवार ।
हाँ हाँ रे अतरा बचन मालिन कहै समुझाइ ।
हरे अपने पुरखाके धन लेहुरे सँवार ।
हाँ हाँ रे अतरा वचन सुनी करने आइ डगुरी ।
हरे समुझी समुझी करने भैनैरे उदास ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे करने राजा मनमन झंखत बातैं मनमन झुकत बातैं मनमन करहीं तिवाने
हाँ हाँ रे तिवाने ।
अरी हो सरौं हो पताल पुरी चली जाओ ।

चौपाइ २१

हाँ हाँ रे यिहे सेतिन गावर धियरी चलिना भए ।
हरे करने दुवरिया गवरी भइरे गै नै ठाऱ्ह ।
हाँ हाँ रे पहिले तो चौकी हाँथिरे बैठाइ ।
हरे देखिके हँथिया गवरी डरनै चिघार ।
हाँ हाँ रे काहेक हँथिया हो डरलो चिघार ।
हरे मैतो जैबुं रे बहिनी करने दुवार ।
हाँ हाँ रे मै तो बहिनी हो चौकी बैठाइ ।
हरे जाइ नाही देबुं रे बहिनी करने दुवार ।
हाँ हाँ रे जौं मै लौट्यौं रे भैया करने दुवार ।
हरे पिपरवक् पतिया रे भैया देबुं रे अहार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लग्ली घनेपात चौकी बैठत बाती कैसिक मै जैबुं करने दुवार हाँ हाँ रे दुवार ।
अरी हो यिहे सेतिन गावर धियरी चलिन भए ।

चौपाइ २२

हाँ हाँ रे दोसरे चौकी देखल गवरी बघिनी बैठाइ ।
हरे देखिके बघिनी हो डरनै चिघार ।
हाँ हाँ रे काहेक बघिनी हो डरलो चिघार ।
हरे मैतो जैबुं रे बहिनी करने दुवार ।

हाँ हाँ रे मै तो बहिनी हो चौकी बैठाइ ।
हरे जाइ नाहीं देबुं रे बहिनी करने दुवार ।
हाँ हाँ रे जौ मै लौट्यौं रे बहिने करने दुवार ।
हरे आँसमास रे बहिनी करबों अहार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे गावर ढियरी दुधी बघिनिया चौकी छोरत बाती सुखली कुकरिया चौकी डरले भेटाइ हाँ हाँ रे भेटाइ ।
अरी हो सुखली कुकरिया उठल मनसाइ ।

चौपाइ २३

हाँ हाँ रे सुखली कुकरिया हो डरनै भुंकाइ ।
हरे कौने मनुखवा चोरी रे चोराइ ।
हाँ हाँ रे नाहीं मै सुखली कुकरिया चोर रे चन्डाल ।
हरे राजा करनेक बहिनी मिलनेका जाउ ।
हाँ हाँ रे राजा करनेक चौकी बैठाइ ।
हरे जाइ नहीं देबुंरे बहिनी करने दुवार ।
हाँ हाँ रे सेखुली कुकरिया हो बहिनी बेग चलिआए ।
हरे दुधभात रे बहिनी करोरे आहार ।
हाँ हाँ रे दुधितो बघिनिया हो बहिनी मोछ मिलकाए ।
हरे औंसल मसवा रे बहिनी करोरे आहार ।
हाँ हाँ रे आजमै लौटी अइनु रे हथीया तुहुं चलि आव ।
हरे पिपरक पतिया रे हँथिया करो रे आहार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे सपने सपने हेवत राजा लै बलाइत बातै करने राजाकै असथानेम, -हाँ हाँ रे असथानेम। अरी हो सपने सपने करने राजा उठी भलजाय ॥

चौपाइ २४

हाँ हाँ रे पास पसिनिया हो बेग चली आए ।
हरे नितउठी पसिया हो करहुं रे पुकार ।
हाँ हाँ रे गलिए गलिए पास पसिनिया दरनै बलाइ ।
हरे करने राजा हो तोहिका जलदिरे बलावै ।
हाँ हाँ रे सपरु सपरु हो मोर भोगल पठान ।
हरे सुकला तेबरिए रे भइया बइठो रे अरठांइ ।

हाँ हाँ रे सुनहुन सुकलती बरिया बिनती हमार ।
हरे मोरे सपनवा हो भइया करहो रे बिचार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन सुकल तेवरिया पोठियो बिचार ।
हरे पोठियो बिचारी रे भइया दे हो रे बताइ ।
हाँ हाँ रे पोठिया बिचारी तेवरिया दरनै सुनाइ ।
हरे बरे आकठ बातै हो राजा सपना तुँहार ।
हाँ हाँ रे सुनसुन करने हो राजा बिनती एक मोर ।
हरे तहरे सपनवा हो राजा नाउ रे नाही आवै ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लगनै करने राजा सुनोसुनो हो कचेहरीक लोग । अपने अँचला लेहोरे बलाइ हाँ हाँ रे बलाइ अरी हो हली हाली पसिया बेग चली आओ ।

चौपाइ २५

हाँ हाँ रे सुनहुन पास पसिनिया चलो अँचला दुबार ।
हरे अँचला गुरबै रे पसिया नानो रे बलाइ ।
हाँ हाँ रे इसे सेतिन पसिया हो चलिन भए ।
हरे जाइ पँहुचल पसिया अँचला रे दुवार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन अँचला हो बिनती एक मोर ।
हरे करने राजा हो अँचला तोहिकारे बोलावै ।
हाँ हाँ रे हाथ तो जोरी हो पसिया अरजी करे लाग ।
हरे चलहुन अँचला हो राजा दरबार ।
हाँ हाँ रे अनधनकै बात हो अँचला नाही बतुवावै ।
हरे पन्चो सखियवा रे अँचला दारोरे बतवाइ ।
हाँ हाँ रे अतना बात हो अँचला दारै कतवाइ ।
हरे गराह परही हो । अँचला तो हिकारे सताइ ।

॥ दोहा ॥

आज नइसे सिरकै मातल सोरासय कहार बनकै लोग दोलिदारी नानो रे बनाइ हाँ हाँ रे बनाइ अरी हो इहे सेतिन अँचला हो चलिना भए ।

चौपाइ २६

हाँ हाँ रे जाइके पहुचल हो अँचला राजाके दुबार ।
हरे देवरी दुवरिया हो अँचला भइ रे गइनै थार ।
हाँ हाँ रे माभेतो कचेहरीम अँचला बइठी भलजाए ।

हरे सौ हाथ तोरंगन हो अँचला दरनै रे फहराए ।
हाँ हाँ रे इहे सेतिन गावर धियरी चलिना भए ।
हरे करने राजा दुवरिया हो गवारी भई रे गइनै थार ।
हाँ हाँ रे उठहुन पुता हो मोर मनचित लगाए ।
हरे माछी कै रुपमे गवरी रहनै रे छिपाइ ।
हाँ हाँ रे सुनहुन अँचला हो बिनती हमार ।
हरे मोरे तो राजाके हो अँचला कर होरे बिचार ।
हाँ हाँ रे कौने कौने सपनवा हो करने देहोरे बताइ ।
हरे सपनवाके बात हो राजा करहो बिचार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लगनै सोनेक् पिचदानी माथे पगरिया राजा करनेक असथानम अँचला देहनै धराइ रे जइसे जइसे, आज जइसे कहे लगनै अँचला सुनो सुनो हो करने राजाके होइ अलखा पतोरिया की कोइ फुलवारिनकै लोग आज जैसे करने राजा की भुलचुक हुइतो करेउ गुनमाफ हाँ हाँ रे करेउ गुनामाफ अरी हो उठिके कचेहरी हो गइनै बिराइ ।

चौपाइ २७

हाँ हाँ रे जौमै जनतु हो भैया नातरे नियाउं ।
हरे चलहुन भइयो देवी रे दुवार ।
हाँ हाँ रे चलितो भइनै हो राजा अपने दुवार ।
हरे चोर छिनारी के हो अँचला तुँहार रे जियाँउ ।
हाँ हाँ रे रिसकै मातल सौंरा अगिन होइ जाइ ।
हरे मारेपिटी हो अँचला माटिऐ मिलाए ।
हाँ हाँ रे कलजुगम हो अँचला रहबो सहिदाने ।
हरे निकेकरै हो मनुवा नाही रे कोइ माने ।
हाँ हाँ रे जरजुरी ऐही हो ऐही बराजोर ।
हरे निहुं लागी हो दुनिए गिरहिरे सबकोइ ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे पहिलेतो छोरत बाटी गावर धियरी आँधी बौखा पाछे तो छोरत बातै काँकर पत्थर रे जइसे, आज जइसे गावर धियरी गइबातै सातसय कहरबनकै लोक लइके, तब कहे लगली गावर धियरी सुनो सुनो मोर सौंरा हेनौता रे जइसे, आज जैसे जाव जाव सौंरा हेनौता त अँचला जरी जाए । हाँ हाँ रे जरी जाय अरी हो मनेमने गवरी हो जोरनै उपाइ ।

चौपाइ २८

हाँ हाँ रे पहिले तो सिरजाइल गवरी जोगिकै पुत ।
हरे कलजुगम रे भइयो यहा पुजेरु रे बलाए ।
हाँ हाँ रे दोसरे तो सिरजाइल गवरी गनएका दुलरु ।
हरे कलजुगम रे भइयो लेहो रे औतार ।
हाँ हाँ रे गुनिया तो गुरुवा हो गवरी दारै सिरजाइ ।
हरे चौरङ्ग बतिया हो भइया दरही बिचार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे करे लगली गावर धियरी सुनो सुनो हो घनपट गुर्वा बिरा न लेहो बिचार हाँ हाँ रे बिचार अरी हो लरसुन गुरवै गवरी दारै सिरिजाइ ।

चौपाइ २९

हाँ हाँ रे गुरिया पकरी हो गुरवा गरै नेउताइ ।
हरे देबभुत हो गुरवा दारै रे बिचार ।
हाँ हाँ रे पिठा तो गुरवै हो । गवरी दरनै सिरिजाइ ।
हरे कैन पकरी हो गुरवा करे उ रे नेउताइ ।
हाँ हाँ रे गुन्नी तो गुरवा हो गवरी दारै सिरिजाइ ।
हरे दुधी बघिनिऐ हो भइयो दरहो बिचार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कह लगली गवर धियरी सुनो सुनो हो मोर सातगुन्नी । सातौ गुन्नी सातौ गुरुवा सतजुग जइही कलजुग । अइही कलजुगम मनपट मनुवा लेहिरे औतार हाँ हाँ रे औतार आज जैसे लइके अइही मदमहुवाके छाँकी बही छाँकी चुवैही कलजुगम सातो गुरुवा । नौलाख गुरैन जियना परापत पइबो रे जइसे हरे रहलो रे भइयो सहिदान । अरी हो खबहे गुरवान गवरी दरनै सिरिजाइ ।

चौपाइ ३०

हाँ हाँ रे इहे सेतिन अँचला गुरवा चलिन भए ।
हरे जाइ पहुचाल हो, अँचला मह तिन रे दुवार ।
हाँ हाँ रे रोइ लागल सोन महतिनिया गिरहे गिलाप ।
हरे करा लिखनवा हो मनुवक् कवो रे नाही तरे ।
हाँ हाँ रे सेज ओ दुलैचा हो महातिन दरनै बिछाइ ।
हरे अँचलै उठाइ रे महतिन दरनै सुटाइ ।

हाँ हाँ रे सुमिरल महतिन हो चाँडौ ओ सुरज ।
हरे अबकी कलेसवा कतही रे भगवान ।

॥ **दोहा** ॥

आज जइसे कहे लगली सोन महतिनिया सुनो सुनो हो तुँहु अँचला गुरवा तुहरे हुइतो गिरहे मन्दफ हेरदेख करुइया, आज जइसे कहलगली सुन महतिनिया लेहुना गुरवा आछत चाउर मन्डफके छाँकी बासन मुरगा लै रे बुझायो लै रे समुझायो । हाँ हाँ रे समुझायो अरी हो इहे सेतिन सोन महतिनिया चलिना भए ।

चौपाइ ३१

हाँ हाँ रे गुरुवा दुवारे हो महतिनिया भै गैइनै थार ।
हरे सुनहुन गुनिया हो गुरुवा बिनती रे हमार ।
हाँ हाँ रे आछत तेल हो महतिन धरै गुरवक आगे ।
हरे मोरे पिर बेदनवा हो । गुर वा सहिरे नाही जाए ।
हाँ हाँ रे आछत तेल हो गुरवा करनै बिचार ।
हरे पिर बेदनवा हो गुरवा मारैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे तेल ओ आछत गुरवा दरनै बिचार ।
हरे जरजुरी ताप ओ गुरवा मारैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे बरे आकठ बातै हो महतिन भुतवा तुहार ।
हरे मोरे बुते हो महतिन से किरे नहिजाए ।
हाँ हाँ रे इह सेतिन सोन महतिनिया चलिना भए ।
हरे जाइ पहुँचल महतिन गवरी रे दुवार ।
हाँ हाँ रे देउ दुवरिया हो महतिन भइ गइनै थार ।
हरे मोरे बेदनवा देवरी आउर आकठ ओए ।

॥ **दोहा** ॥

आज जइसे सोन महतिनिया लिहले बाती तेलपाती आछत चाउर मदकै छाँकी झालर मुर्गा लइ चलत बाती सहदेब महा धनपट गुरवा, लरसुन गुरुवा धागा गुरवा पिठा गुर वा, सबके दुवारे, महतिन, देहनै पहुचाइ हाँ हाँ रे पहुचाइ ।

चौपाइ ३२

हाँ हाँ रे बिरा हेरती हो गुरवा दरनै भेटाइ ।
हरे तुहरे बेदनवा हो महतिन मनुवा मरैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे बरे आकठ बातै हो महित भुत बैताल ।

हरे मोरे तो बुते हो महतिन से किरे नाही जाए ।
हाँ हाँ रे इहे सेतिन सोन महतिनिया चलिना भए ।
हरे जाइ पहुँचल हो महतिन अपने दुवार ।
हाँ हाँ रे देवरी दुवरिया हो महतिन चलिना भए ।
हरे पिरा वेदनवा हो मोरे सहिरे नाही जाए ।
हाँ हाँ रे अपने सोंचकै महतिन करनै रे तिवान ।
हरे भुख भोजनवा हो महिला कुछुना सधाए ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे सोन महतिनिया लेहत बाती आछत चाउर मदके छाँकी झँखत झँखत लैचत बाटी धागा गुरवाके पास, हाँ हाँ रे गुरवाके पास हरी हो चौमुख दियना गुरइना दरनै जराइ ।

चौपाइ ३३

हाँ हाँ रे धागा गुरवा बिरा रे बिचार ।
हरे एक पातिम दरनै भुतवा रे भेटाइ ।
हाँ हाँ रे पिठा तो गुरवा हो मागै रे विस्वास ।
हरे आर अरौती हो गुरवा दरनै चलाई ।
हाँ हाँ रे जाउ तुँहु सोन महतिनीया हो अपने दुवार ।
हरे निकेनिके अँचलै हो देखबो रे जाईत ।
हाँ हाँ रे तेकुनी पकरी हो ।
अँचला नेगे झललाग हरे भुखे भोजनवा हो अँचला करल आहार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगनै सोन महतिनिया अपने दुवरिया अँचलै सोर हो भोजनवा बरहो परकार दरनै जेवार हाँ हाँ रे जेवार अरी हो घर अँगना अँचला नेङ्गे भलललाग ।

चौपाइ ३४

हाँ हाँ रे करनिसे उठल भतवा पछारी भारी देवै ।
हरे जरजुरी हो । अँचलक देहियारे पिराइ ।
हाँ हाँ रे आछत चाउर सोन महतिनिया लेहनै उठाइ ।
हरे मदमुवाके छाँकी हो महातिन लेहनै उठाइ ।
हाँ हाँ रे यिहे सेतिन सुन महतिनिया चलिन भए ।
हरे गुरवा दुवरिया हो महातिन भइ रे गैनै धार ।
हाँ हाँ रे यिहे लेबा धागा गुरवा आछत ओ तेल ।

हरे जरजुरी हो अँचलक देहिया रे पिराइ ।
हाँ हाँ रे आछत पाती हो गुरवा दारैं सुलगाइ ।
हरे मदमहुवाके छाँकी हो गुरवा दरनै चुवाइ ।
हाँ हाँ रे आछत चाउर हो गुरवा दरनै बिचार ।
हरे गुरइ करती हो गुरवा दारैरे समझाइ ।
हाँ हाँ रे एकहे दिनकै हो करनी दरनै कराइ ।
हरे भोर होवती हो तोहिका देबुरे बुझाइ ।
हाँ हाँ रे धागा गुरुवक् थन महितन चलिन भए ।
हरे गुरवा दुवरीया हो महतिन भइ रे गैनै थार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लग्नै धागा गुरवा सुनो सुनो हो । सुन महतिनिया । पाँचौ देउतन देउरे पुजा आज जैसे कहे लग्नै सुन महनितिया तुहरे तो बातो गुरुबारे भइयो । तुँहुरे तो बातो गावर ढियरी, जेबातै आउर बातै सौंरा हेनौता, देहो रे समझाइ, हाँ हाँ रे सम्झाइ अरी हो मदमदुवाके छाँकी महतिन दरनै चुवाइ ।

चौपाइ २५

हाँ हाँ रे चारुबर देखल गवरी खँखरे उजार ।
हरे ढुरिया ओ मटिया हो गवरी देखैरेअधकार ।
हाँ हाँ रे कौने कौने जिनिसवा हो चरै बन माँझ ।
हरे तौने जिनिसवा हो गवरी खोडेरे भललाग ।
हाँ हाँ रे दुरहिसे देखल दनुवा गवरिक् आइल् ।
हरे रकसावा दनवा दुनु कैनै रे बारु मार ।
हाँ हाँ रे काहेक् रकसा ओ दनुवा कइलो रे बारु मार ।
हरे तैने तो बातरे भइयो कहोर समुझाइ ।
हाँ हाँ रे रकसा ओ दनुवा हो बोले भललाग ।
हरे तोहरे करनिया हो गवरी कइली रे बारु मार ।
हाँ हाँ रे मोरेलो बहिनिया हो बातै कुइया इनार ।
हरे जाउ भइयो हो लेहो निकार ।
हाँ हाँ रे रकसा, दनुवा ओ गवरी हो तिनु चलिन भए ।
हरे कुइया इनार हो गवारी भइरे गइनै थार ।
हाँ हाँ रे कुइया इनारम गवरी देहनै देखाइ ।
हरे मोरे बहिनिया हो भइयो लेओरे निकार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगनै रकसा ओ दनुवा कुंइया इनारेम् । पैठल बातै गावर धियरिक छोट् की बहिनिया लेवैरे निकार हाँ हाँ रे निकार अरी हो बजारा पिरहिया गवरी देनै धरकाइ ।

चौपाइ ३६

हाँ हाँ रे चारु तो कोनेम् गवरी किलिया गराए ।
हरे रकसा ओ दनुवा दुनु भइनै रे जरछार ।
हाँ हाँ रे सतजुग करनी हो देउजुग बँचा ।
हरे देवभुत हो गवरी ठोकै रे अधकार ।
हाँ हाँ रे कइया इनारेसे गवरी चलिन भए ।
हरे रहजुल बलाहै गवरी देखैरे सिपार ।
हाँ हाँ रे रहजुल बलाहै गवरी पनिया पियावै ।
हरे रामराम कै रहजुल बलाहा उठै नै रे हहराइ ।
हाँ हाँ रे रहजुल बहला रे गवरिक् पाउ परिजाए ।
हरे भुँखे भोजनवा हो गवरी महिनरे कुछु देउ ।
हाँहाँ रे झाली मकुनियक् गवरी भतवा निधाँए ।
हरे उरदा मुँगलियक गवरी दलवारे निधाए ।
हाँ हाँ रे सेखुवा पातकै गवरी पटरी लगाए ।
हरे रहजुल बलाहै हो गवरी जेबनारे जेवार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहेलग्ली गावर धियरी सुनो सुनो हो तुँहुं । रहजल बलाहा मोरे तो झाँझर कुरिया देहो रे बनाइ हाँ हाँ रे बनाइ अरी हो राजपात भीया तोहिका बैठाउँ ।

चौपाइ ३७

हाँ हाँ रे इहे सेतिन् रहजुल बलाहा चलिन भए ।
हरे कुन्जिल बनवारे भइया नेगिरे चली आए ।
हाँ हाँ रे चदना ओ पंदना हो भइया खोजेउ अन्धकार ।
हरे खोजती खोजती हो भइया भइनै रे हैरान ।
हाँ हाँ रे सुन हुन गावर माइ बिनती हमार ।
हरे चदना ओ पंदना हो गवरी कहुँरे नही पाए ।
हाँ हाँ रे सेमरा काठकै हो गवरी नईयारे बनाइ ।
हरे उकठा काठके हो गवरी बहना रे बनाए ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहेलग्ली गवरी धियरी सुनो सुनो हो रहजुल बलाहा पाँच पैसवा पाँच गाँठ हरदी लइके भइया थरियाब । हाँ हाँ रे थरियाब अरी हो गारिगुरी रहजुल बलाहा भइनै रे तयार ।

चौपाइ ३८

हाँ हाँ रे कुसवा कातिरे बरहै भितवा बनाए ।
हरे काठ कोरइया हो भइयो दारोरे चढाइ ।
हाँ हाँ रे बँसवा काती रे बरहै बतिया बनाए ।
हरे भभ्कही काती रे बरहै करैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे भ्फाँभ्कर कुरिया हो बरहै छाँय भललाग ।
हरे गावर धियरिक् मन्डफ भइनै रे तयार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन गावर माइ बिनती एक मोर ।
हरे गिरहे मन्डफ हो गवरी कइनु रे तयार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन सौर हेनौता बिनती एक मोर ।
हरे रहजुल बलाहै हो भइया राजा रे बैठाव ।
हाँ हाँ रे चदना ब पंदना हो बरहै देखै अधकार।
हरे देबभुत ओ भइया बातै रे अधकार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहलग्ली गावर धियरी सुनो सुनो हो तुहँ रहजुल बलाहा सतजुगजाइ कलिजुग आइ, कलिजुग जाइ मनपती मनुवा लेहिरे औतार आज जैसे कतबौ अनधन सोनवा सुरुपवासे बैठी जैबोरी जैसे कतबौ खनधनसे कैठिजैबो जियाना परापत होइही तुँहार । हाँ हाँ रे तुहाँर अरी हो इहे सिटन गावर धियरी चलिना भए ।

चौपाइ ३९

हाँ हाँ रे कजरिक् बनवासे गवरी चलिना भए ।
हरे रहिया तो पकरल गवरी करने राजाके दुवार ।
हाँ हाँ रे पहिले तो देखल गवरी पइयनकै लोग ।
हरे पासपसेनिया दुनु सुवरी रे चराए ।
हाँ हाँ रे सौंरा ओ हेनोता दुनु एकमत किन ।
हरे सुनहुन गावर हो मइ बिनती रे हमार ।
हाँ हाँ रे कौनेतो बात हो भइयो दारो बटुवाइ ।
हरे सोरहे बात हो भइयो कहोरे समुभ्काइ ।

हाँ हाँ रे भुखकी भुँखासल बाटी पनकी पियासल ।
हरे दुइ चार छउनवा हो गवरी देउरे मगाइ ।

॥ **दोहा** ॥

आज जइसे कहे लगली गावर धियरी सुनो सुनो हो सौंरा तुहुँ पास पसिनिया कैलोग, आज जइसे दुइचार छवनवा देहुन भइया मोरेतो पुता भुखकी भुँखासल बाटै मोरे पुता आग बिनाके करहिरे अहार, हाँ हाँ रे अहार अरी हो पास पसिनिया दुनु गईनै पतियाइ ।

चौपाइ ४०

हाँ हाँ रे दुइ चार छयनबा हेनौता दौरै भलमाग ।
हरे बत्तिसो छउनवा हेनौता करनै आहार ।
हाँ हाँ रे पास ओ पसिनिया हो दुनु भइनै जरछार ।
हरे बत्तिसो छउनवा हो गवरी देबुरे मंगाइ ।
हाँ हाँ रे दिहबु सरापी पास पसिनिया हुइबो रे जरछार ।
हरे सास पसिनिया नौना जइहिरे बुताइ ।
हाँ हाँ रे सुनिकै पास पसिनिया हो हुइनै रे उदस ।
हरे पास पसिनिया हो गवरिक पाँउरे परिजाय ।
हाँ हाँ रे कौने करनिया हो गवरी देहबो सराप ।
हरे देउ भुतनहो मनुवा एकोरे ना बलाए ।

॥ **दोहा** ॥

आज जइसे कह लगली गावर माइ सुनो सुनो हो तुहुँ पास पसिनिया सुवरी लइके आव, सुवरी लेके अइबो तो तुहरे इहे कलिजुगमे रहबो सहिदाने, हाँ हाँ रे सहिदाने अरी हो इहे सेतिन गावर धियरी चलिन भए ।

चौपाइ ४१

हाँ हाँ रे मधसुर नगरिया हो गवरी दरनै भेटाइ ।
हरे मधसुर नगरिया हो । गवरी करनैरे पैठार ।
हाँ हाँ रे चारुओर देखल गवरी मदमहुवाकै काम ।
हरे मदमहुवा चुवइनैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे सौरा ओ हेनाता दुनु एक मतकिन ।
हरे बत्तिसो कुरवा हेनौता फोरी रे भहराइ ।
हाँ हाँ रे मेतिया तो सौंरा हेनौता दिहनै बगाइ ।
हरे मदमहुवा हो एको चुवहिन पाय ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगनै कलवारिनके लोग सुनो सुनो हो । जोगिन माइरे जइसे तुहारे तो पुता मधसुर नगरिया करनै रे खैखान, हाँ हाँ रे खैखान अरी हो सुनिकै जोगिन बहिनी भइनै जरछार ।

चौपाइ ४२

हाँ हाँ रे सुन हुनु कलवारिकै लोग बिनती हमार ।
हरे देहबु सरापिरे भइयो हुइबोरे जरछार ।
हाँ हाँ रे कौन करनिया हो गबरी दिहवो सराफ ।
हरे भुलचुक हो बहिनी करेउरे गुनामाफ ।
हाँ हाँ रे सुनहुन गावर माइ बिनती हमार ।
हरे जियना परापत बहिनी महिरे कुछु देउ ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगली गावर धियरी सुनो सुनो हो कलवारिनकै लोग कलजुग माझरे जैसे, आज जइसे कहे लगली छत्तिस कोठेक् देवता छाँकी चुवैही मानपती मनुवा करही सखार तवहुन रहहिरे मनुवा सहिदान हाँ हाँ रे सहिदान अरी हो माधसुर नगरिया गवरी छोरी चलिजाए ॥

चौपाइ ४३

हाँ हाँ रे कजरिक वनवाम् गवरी दौरी चलिजाए ।
हरे देखितो दरनै हो गवरी हाथी चरवाह ।
हाँ हाँ रे केकरेतो हुइतोरे भइयो हाथी चरवहा ।
हरे तुहरे तो राजा हो भइया कइसिन बातै ।
हाँ हाँ रे करने राजा कै हुइतो हाथी चरवहा ।
हरे सोन सरुपवा गवरी राजारे बतै हमार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन भइयो बिनती हमार ।
हरे सोने सरुपवा हो करने बातै अधकार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन भइयो हो बिनती एक मोर ।
हरे करने रजवइ हो भइयो देहोरे बताइ ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगनै नान्हा गोपाल सुनो सुनो हो गावर धियरी आगेरे जइबो हो जइसे आगे वातै भैसी चरवाह, ओही भैसी चरवाहनसे पुछेउरे जइसे हाँ हाँ रे भैसी चरवाह अरी हो इसे सेतिन गावर धियरी चलिना भए ।

चौपाइ ४४

हाँ हाँ रे कजरिक बनवा हो गवरी छोरी चलिजाए ।
हरे देखितो दरनै हो गवरी भैसी रे चरवाह ।
हाँ हाँ रे केकरे तो हुइतोरे भइयो भैसी रे चरवाह ।
हरे करने राजक् रहियारे भइयो देउरे बताइ ।
हाँ हाँ रे करने राजारे के हुइतो भैसी चरवाह ।
हरे आगे जाईके पुछेउ हो गवरी गाइ रे चरवाह ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे गावर धियरी कजरिक बनवा छोरत् बातै गावर धियरी बनकै कछारे-कछारे कोयलकै बिचेबिचे चलत् बातै हाँ हाँ रे चलत बातै अरी हो गाइ चरवाह गवरी दरनै भेटाइ ।

चौपाइ ४५

हाँ हाँ रे सुनहुन अहिरवारे भइया बिनती हमार ।
हरे केकरे तो हुइतोरे गइयारे चरुवाह ।
हाँ हाँ रे करने राजारे कै हुइतो गाइ चरुवाह ।
हरे सोरहे बात हो गवरी कहोरे समुझाइ ।
हाँ हाँ रे सुनहुन अहिरवारे भइया बिनती हमार ।
हरे करने राजाकै रहिया देवरे बताइ ।
हाँ हाँ रे बरहे बरसकै रहिया देवरे बताइ ।
हरे इहे रहिया जायोरे गवरी कुइया इनार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे गावर धियरी गाइ चरवहियक् चौकी छोरत् बातै गावर धियरिया कुँइया इनारेम जाइत् बातै जइसे रे हाँ हाँ रे कुँइया इनार अरी हो इहे सेतिन गावर धियरी चलिन भए ।

चौपाइ ४६

हाँ हाँ रे कुँइना इनारेम गवरी चलिना भए ।
हरे बुँदा एक बहिनी हो पनियारे पियाब ।
हाँ हाँ रे जात नही जननु हो बहिनी पनिया बिचार ।
हरे कैसिक जैबुरे बहिनी गंगाजल पानी ।
हाँ हाँ रे जाततो हेबतवारे बहिनी ओही मोर बाप ।

हरे माइ मदागिन कोखिया लेहनुरे औतार ।
हाँ हाँ रे जतिया तो जन्नुरे बहिनी पतिया बिचार ।
हरे अब तोही देहबुरे बहिनी गंगारें जुरपानी ।

चौपाइ ४७

हाँ हाँ रे सेखुली कुकरिया हो बहिनी बेग चली आए ।
हरे दुधभातरे बहिनी करोरें आहनाही बार ।
हाँ हाँ रे दुधितो बघिनिया हो बहिनी मोछ्र किलकाए ।
हरे औंसल मसबारे बहिनी करोरे आहार ।
हाँ हाँ रे आजमै लौटी ऐनुरे हथिया तुं हुं चली आव ।
हरे पिपरक् पतियारे हथियो करोरे आहार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे सपने सपने हेबत राजा लै बलाइत् बातै करने राजाकै स्थानेम, हाँ हाँ रे स्थानेम अरी हो सपने सपने करने राजा उठी भलजाय ।

चौपाइ ४८

हाँ हाँ रे पास पसिनिया हो बेग चली आए ।
हरे नितउठी पसिया हो करहुँ रे पुकार ।
हाँ हाँ रे गलिये गलिये पास पसिनिया दरनै बलाइ ।
हरे करने राजा हो तोहिका जलदिरे बलावै ।
हाँ हाँ रे सपरु सपरु हो मोर भोगल पठान ।
हरे सुकला तेवरियारे भइया बइठो रे अरठांइ ।
हाँ हाँ रे सुनहुन सुकलतिबरिया बिनती हमार ।
हरे मोरे सपनवा हो भइया कर हो रे बिचार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन सुकल तेवरिया पोठिया बिचार ।
हरे पोठियो बिचारी रे भइया दे हो रे बताइ ।
हाँ हाँ रे पोठिया बिचारी तेवरिया दरनै सुनाइ ।
हरे बरे आकठ बातै हो राजा सपना तुंहार ।
हाँ हाँ रे सुनसुन करने हो राजा बिनती एक मोर ।
हरे तुहरे सपनवा हो राजा नाउरे नाही आवै ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लगनै करने राजा सुनो सुनो हो कचेहरीक् लोग अपने अँचला लेहोरे बलाइ हाँ हाँ रे बलाइ अरी हो हली हली पसिया बेग चली आव ।

चौपाइ ४९

हाँ हाँ रे सुनहुन पास पसिनिया चलो अँचला दुवार ।
हरे अँचला गुरबैरे पसिया नानो रे बलाइ ।
हाँ हाँ रे इसे सेतिन पसिया हो चलिन भए ।
हरे जाइ पहुँचल पसिया अँचला रे दुवार ।
हाँ हाँ रे सुनहुन अँचला हो बिनती एक मोर ।
हरे करने राजा हो अँचला तोहिकारे बोलावै ।
हाँ हाँ रे हाथतो जोरी हो पसिया अरजी करे लाग ।
हरे चलहुन अँचला हो राजा दरबार ।
हाँ हाँ रे अनधनकै बात हो अँचला नाही बुतुवावै ।
हरे पन्चो सखियब्रारे अँचला दारोरे बतवाइ ।
हाँ हाँ रे अतना बात हो अँचला दारै बतबाइ ।
हरे गराह परही हो । अँचला तो हिकारे सताइ ।

॥ दोहा ॥

आज नइसे सिरकै मातल सोरासय कहार बनकै लोग दोलिदारी नानो रे बनाइ हाँ हाँ रे बनाइ अरी हो इहे सेतिन अँचला हो चलिना भए ।

चौपाइ ५०

हाँ हाँ रे जाइके पहुँचल हो अँचला राजक् दुवार ।
हरे देवरी दुवरिया हो अँचला भइरे गइनै थार ।
हाँ हाँ रे माझेतो कचेहरीम अँचला बइठी भलजाए ।
हरे सौ हाथ तोरंगन हो अँचला दरनै रे फहराए ।
हाँ हाँ रे ईहे सेतिन गावर धियरी चलिना भए ।
हरे करने राजा दुवरिया हो गवारी भइरे गइनै थार ।
हाँ हाँ रे उठहुन पुता हो मोर मनचित लगाए ।
हरे माछिकै रुपमे गवरी रहनै रे छिपाइ ।
हाँ हाँ रे सुनहुन अँचला हो विनती हमार ।
हरे मोरेतो राजा के हो अँचला करहो रे विचार ।
हाँ हाँ रे कौने कौने सपनवा हो करने देहोरे बताइ ।
हरे सपनवाके बात हो राजा करहो बिचार ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लगनै सोनेक् पिचदानी माथे पगरिया राजा करनेक् असथानम अँचला दे हनै धराइ रे जइरे जइसे, आज जइसे कहे लगनै अँचला सुनो सुनो हो करने राजाके हो इ अलखा पतोरिया की कोइ फुलवारिनकै लोग आज जैसे करने राजा की भुलचुक हुइतो करेब गुनामाफ हाँ हाँ रे करेव गुनमाफ अरी हो उठिके कचेहरी हो गइनै बिरराइ ।

चौपाइ ५१

हाँ हाँ रे जौमै जनतुं हो भैया नातरे नियाउं ।
हरे चलहुन भइयो देवी रे दुवार ।
हाँ हाँ रे चलितो भइनै हो राजा अपने दुवार ।
हरे चोर छिनारिके हो अँचला तुँहार रे जियाँउ ।
हाँ हाँ रे रिसकै मातल सौंरा अगिन होइ जाइ ।
हरे मारेपिटी हो अँचला माटिऐ मिलाए ।
हाँ हाँ रे कलजुगम हो अंचला रहबो सहिदाने ।
हरे निके करै हो मनुवा नाही रे कोइ माने ।
हाँ हाँ रे जरजुरी ऐही हो ऐही बरा जोर ।
हरे निहुं लागी हो । दुनिऐ गिरही रे सबकोइ ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे पहिलेतो छोरत् बाटी गावर धियरी आँधिबौखा पाछेतो छोरत् बातै काँकर पल्थररे जइसे, आज जइसे गावर धियरी गइबातै सात सय कहरवनकै लोक लइके, तव कहेलगली गावर धियरी सुनो सुनो मोर सौंरा हेनौता रे जइसे, आज जैसे जाव जाव सौंरा हेनौता त अँचला जरी जाए । हाँ हाँ रे जरी जाए अरी हो मनेमने गवरी हो जोरनै उपाइ ।

चौपाइ ५२

हाँ हाँ रे पहिले तो सिरजाइल गवरी जोगिकै पुत ।
हरे कलजुगम रे भइयो यहा पुजेरु रे बलाए ।
हाँ हाँ रे दोसरे तो सिरजाइल गवरी गनएका दुलरु ।
हरे कलेजगम रे भइयो ले होरे औतार ।
हाँ हाँ रे गुनिया तो गुरुबा हो गवरी दारैसिरजाइ ।
हरे चौरङ्ग बतिया हो भइया दरही बिचार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे करे लगली गावर धियरी सुनो सुनो हो घनपट गुरवा बिरा न लेहो बिचार

हाँ हाँ रे बिचार अरी हो लरसुन गुरवै गवरी दारै सिरिजाइ ॥

चौपाइ ५३

हाँ हाँ रे गुरिया पकरी हो गुरवा गरै नेउताइ ।
हरे देबभुत हो गुरवा दारैरे बिचार ।
हाँ हाँ रे पिठातो गुरवै हो । गवरी दरनै सिरिजाइ ।
हरे कौन पकरी हो गुरवा करेउ रे नेउताइ ।
हाँ हाँ रे गुन्नितो गुरवा हो गवरी दारै सिरिजाइ ।
हरे दुधी बधिनिऐ हो भइयो दर हो बिचार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कह लगली गवर धियरी सुनो सुनो हो मोर सातगुन्नी सातौ गुन्नी सातौ गुरुवा सतजुग जइही कलजुग अइही कलजुगम मनपटमनुवा लेहिरे औतार हाँ हाँ रे औतार आज जइसे लइके अइही मदमहुवाके छाँकी वही छाँकी चुवैही कलजुगम सातो गुरुवा । नौलाख गुरइन् जियना परापत पइबोरे जइसे हरे रहलो रे भइयो सहिदान । अरी हो खवहे गुरवन गवरी दरनै सिरिजाइ ।

चौपाइ ५४

हाँ हाँ रे इहे सेतिन अँचला गुरवा चलिन भए ।
हरे जाइ पहुचल हो अँचला महतिन रे दुवार ।
हाँ हाँ रे रोइ लागल सोन महतिनिया गिरहे गिलाप ।
हरे करा लिखनवा हो मनुवक कवोरे नाही तरे ।
हाँ हाँ रे सेज ओ दुलैचा हो महातिन दरनै बिछाइ ।
हरे अँचलै उठाइ रे महतिन दरनै सुटाइ ।
हाँ हाँ रे सुमिरल महतिन हो चाँडी ओ सुरज ।
हरे अबकी कलेसवा कतही रे भगवान ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगली सोन महतिनिया सुनो सुनो हो तुँहु अँचला गुरवा तुहरे हुइतो गिरहे मन्दफ हेरदेख करुइया, आज जइसे कह लगली सुन महतिनिया लेहुना गुरवा आछत चाउर मन्डफके छाँकी बासन मुरगा लैरे बुझायो लैरे समुझायो । हाँ हाँ रे समुझायो अरी हो ईहे सेतिन सोन महतिनिया चलिना भए ।

चौपाइ ५५

हाँ हाँ रे गुरुवा दुवारे हो महतिनिया भैगैइनै थार ।

हरे सुनहुन गुनिया हो गुरुवा बिनती रे हमार ।
हाँ हाँ रे आछत तेल हो महतिन धरै गुरवक् आगे ।
हरे मोरे पिर बेदनवा हो । गुर वा सहिरे नाही जाए ।
हाँ हाँ रे आछत तेल हो गुरवा करनै बिचार ।
हरे पिर बेदनवा हो गुरवा मारैरे अधकार ॥
हाँ हाँ रे तेल ओ आछत गुरवा दरनै विचार ।
हरे जरजुरी ताप ओ गुरवा मारैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे बरे आकठ बातै हो महतिन भुतवा तुहार ।
हरे मोरे बुते हो महतिन से किरे नहिजाए ।
हाँ हाँ रे इह सेतिन सोनमहतिनिया चलिना भए ।
हरे जाइ पहुचल महतिन गवरी रे दुवार ।
हाँ हाँ रे देउ दुवरिया हो महतिन भइ गइनै थार ।
हरे मोरे बेदनवा देवरी आउर आकठ होए ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे सोनमहतिनिया लिहले बाती तेलपाती आछत चाउर मदकै छाँकीभालर मुर्गा लइ चलत बाती सहदेव महाघनपट गुरवा, लरसुन गुरुवा धागा गुरवा पिठा गुरवा, सबके दुवारे, महतिन, देहनै पहुचाइ । -हाँ हाँ रे पहुचाइ

चौपाई ५६

हाँ हाँ रे बिरा हेरती हो गुरवा दरनै भेटाइ ।
हरे तुहरे बेदनवा हो महतिन मनुवा मरैरे अधकार ।
हाँ हाँ रे बरे आकठ बातै हो महित भुत बैताल ।
हरे मोरे तो बुते हो महतिन से किरे नाही जाए ।
हाँ हाँ रे इहे सेतिन सोनमहतिनिया चलिना भए ।
हरे जाइ पहुँचल हो महतिन अपने दुवार ।
हाँ हाँ रे देवरी दुवरिया हो महतिन चलिना भए ।
हरे पिरा बेदनवा हो मोरे सहिरे नाही जाए ।
हाँ हाँ रे अपने सोंचकै महतिन करनै रे तिवान ।
हरे भुख भोजनवा हो महिला कुछुना सघाए ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे सोनमहतिनिया लेहत बाती आछत चाउर मदके छाँकी भँखत भँखत लैचत बाटी धागा गुरवाके पास, हाँ हाँ रे गुरवाके पास हरी हो चौमुख दियना गुरइना दरनै जराइ ।

चौपाइ ५७

हाँ हाँ रे धागा गुरवा बिरा रे बिचार ।
हरे एक पातिम दरनै भुतवा रे भेटाइ ।
हाँ हाँ रे पिठातो गुरवा हो मागै रे बिस्वास ।
हरे आरअरौती हो गुरवा दरनै चलाइ ।
हाँ हाँ रे जब तुहुं सोनमहतिनीया हो अपने दुवार ।
हरे निकेनिके अँचलै हो देखबो रे जाइत ।
हाँ हाँ रे टेकुनी पकरी हो ।
अँचला नेगे झललाग हरे भुखे भोजनवा हो अँचला करल आहार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कह लगनै सोनमहतिनिया अपने दुवरिया अँचलै सोरहो भोजनवा बरहो पर कार दरनै जेवार हाँ हाँ रे जेवार अरी हो घर अँगना अँचला नेगे भललाग ।

चौपाइ ५८

हाँ हाँ रे करनिसे उठल भुतवा पछारी भारी देवै ।
हरे जरजुरी हो । अँचलक देहिया रे पिराइ ।
हाँ हाँ रे आछत चाउर सोनमहतिनिया लेहनै उठाइ ।
हरे मदमुवा कै छांकी हो महातिन लेहनै उठाइ ।
हाँ हाँ रे इहे सेतिन सुनमहतिनिया चलिन भए ।
हरे गुरवा दुवरिया हो महतिन भइ रे गइने थार ।
हाँ हाँ रे इहे लेवा धागा गुरवा आछत ओ तेल ।
हरे जरजुरी हो अँचलक् देहिया रे पिराइ ।
हाँ हाँ रे आछतपाती हो गुरवा दारै सुलगाइ ।
हरे मदमहुवाके छांकी हो गुरवा दरनै चुवाइ ।
हाँ हाँ रे आछत चाउर हो गुरवा दरनै बिचार ।
हरे गुरै करती हो गुरवा दारै रे समझाइ ।
हाँ हाँ रे एकहे दिनकै हो करनी दरनै कराइ ।
हरे भोर होवती हो तोहिका देवुरे बुझाइ ।
हाँ हाँ रे धागा गुरुवक धन महितन चलिन भए ।
हरे गुरवा दुवरिया हो महतिन भई रे गइनै थार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लग्नै धागा गुरवा सुनो सुनो हो । सुन महतिनिया । पाँचौ देउतन

देउरे पुजा आज जैसे कह लागे सुन महतिनिया तुहरे तो बाटो गुरुवारे भइयो । तुँहुरे तो बातो गावर धियरी, जेबातै आउर बातै सौंरा हेनौता, देहोरे समभ्काइ, हाँ हाँ रे सम्भ्काइ, अरी हो मदमदुवाकै छाकी महतिन दरनै चुवाइ ।

चौपाइ ५९

हाँ हाँ रे रोग छोरी हो गुरवा करनी पर बैठाए ।
हरे कार्तिक करनी हो गुरवा पहनै बनाइ ॥
हाँ हाँ रे एक तो महिनवा रे बितै दुइ चार ।
हरे पाँच महिना हो बिती रे भल जाए ॥
हाँ हाँ रे छ हे महिनवा बितैं बितै भल सात ।
हरे आठ महिनवा हो बिती रे भल जाए ॥
हाँ हाँ रे इहे सेतिन सोनमहतिनिया चलिन भए ।
हरे जाइ पहुचल हो महतिन गुर बाकै पास ॥
हाँ हाँ रे सुनहुन गुरवा हो बिनती हमार ।
हरे सबहे सामान हो महतिन दरहो रे बनाइ ॥
हाँ हाँ रे सुनहुन महतिनिया बिनती हमार ।
हरे अंगरा छेगरा हो महतिन दरहो बितोर ॥
हाँ हाँ रे मदमहुवाकै छाँकी हो महतिन दरहो बनाइ ।
हरे भ्कालर मुर्गा हो महतिन दरहो रे बितोर ॥
हाँ हाँ रे पतिया तो टुरत् महतिन लागी गइनै बेर ।
हरे पुजा पुजती हो महतिन लागी बरा बेर ॥
हाँ हाँ रे सबहे चिज हो महातिन दरनै जुटाइ ।
हरे चलितो भईनै हो महतिन अँचलारे दुवार ॥

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगनै सोनमहतिनिया मुरेमका बोभ्क सोनेक् धैलाजल भरन नलिजाए, हाँ हाँ रे चली जाए अरी हो ठाँतबात भौंरा दरनै बनाइ ।

चौपाइ ५९

हाँ हाँ रे तिनतो तिकठी हो गुरवा दरनै बताइ ।
हरे भ्कन्डी निसाना हो गुरवा दारै रे थरहियाइ ।
हाँ हाँ रे गुनिया तो गुरवा हो दरनै बनाइ ।
हरे दुइ दुइ पैसा हो गुरवा मरिऐ चढाए ।
हाँ हाँ रे दाहिने ओर बैठी रे गइनै पिठा रे गुरैन ।
हरे वाय ओर बैठितो गइनै केसौकारे हाथजोर ।

हाँ हाँ रे पहिले तो चरहाइल हो गुरवा पाँचोरे भुइयार ।
हरे सतजुग रहेव हो देवता मोर दाहिने देवाल ।
हाँ हाँ रे पाँचो अगिवन हो गुरुवा देहनै रे चरहाइ ।
हरे गावर धियरी हो गुरवा देहनै रे चरहाइ ।
हाँ हाँ रे खेलती हाँसती हो गवारी पसिनाकै धार ।
हरे मुहे मुहे गवारी हो दारै रे बतुवाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जरसे गावर भवानी कहे लगनै सुनोसुनो हो अजगज अँचला गिरहे मन्डफ देहो रे बनाइ, आज जइजे कहे लगनै पिठा गुरवा देहत् बातै गावर धियरी भालर मुर्गा मदमहुवाके छाँकी दरनै चुवाइ, हाँ हाँ रे चुवाइ अरी हो बाँकी ओ बुँदी गुरवा दरनै चुवाइ ।

चौपाइ ६१

हाँ हाँ रे दुइ दुइ पैसा हो गुरवा मुरियै चढाए ।
हरे दख पंख हो गुरवा उपर रे चढाए ।
हाँ हाँ रे माँगे सेन्दुर हो देहनै जइने कजलवा ।
हरे कौने कौने हो गुरवा छनता रे चढाए ।
हाँ हाँ रे खेलती हँस्ती ओ गवरी गइनै भुँसियाइ ।
हरे मै तोही अँचला हो दरबौ रे मनर ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे गली गावर धियरी आँचला राजै उहहे खानके जरजुरी भरे मतावन दिहनु, हाँ हाँ रे दिहनु ।

चौपाइ ६२

हाँ हाँ रे आठे महिनवा हो अँचला मरबौं तयार ।
हरे नाही तो अँचला हो तोहिका दरबौरे मार ।
हाँ हाँ रे बेसुवा पतुरिया हो अँचला दरहो नचाइ ।
हरे नाहितो अँचला हो तुँहार नौनारे बुभाइ ।
हाँ हाँ रे माँगेतो सेन्दुरा हो देहबु नइने रे बजलवा ।
हरे दोसरे तो गुरवै हो छवनारे चरहाए ।
हाँ हाँ रे हाथ जोरी हो अँचला निती करे लाग ।
हरे भुलचुक हो भइयो करेब रे गुनामाफ ।
हाँ हाँ रे धुप धुगारे हो गुरवा दुबे अधकार ।
हेर बहिया पकरी हो गुरवा दारै रे समुभाइ ।

हाँ हाँ रे राइल अँचला हो पसिना रे अरधान ।
हरे जाइ पहुँचल अँचला गवरी रे दुवार ।
हाँ हाँ रे जाउँ महिन जाइक देहबो करने दुवार ।
हरे गिरहे मन्डफ हो गवरी दिहवुरे बनाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे अँचला झालर मुर्गा मदकै छाँकी गंगाजल पानी धुप धुंगार गुरवै दरनै चढाइ ।
हाँ हाँ रे दरनै चढाइ ।

चौपाइ ६३

हाँ हाँ रे दुइ दुइ पैसा ओ गुरवा मुरिए चढाए ।
हरे दख पंख हो गुरवा उपहार रे चढाए ।
हाँ हाँ रे कोइ भाइ गुरवा हो भुर मिलोरे ।
हरे काँचिल पाकल गुरवै दारै रे उतार ।
हाँ हाँ रे कारी तो कमरिया हो अँचला दरै रे बिछाइ ।
हरे हरीयर दोमवै हो देहनै रे चलाइ ।
हाँ हाँ रे काँचिल पाकल दोमनजा देहनै चलाइ ।
हरे करैक् मदिया हो अँचला देहनै चलाइ ।
हाँ हाँ रे हार ओ मास हो दोमना दरनै चलाइ ।
हरे जेउना जेवारु हो गुरवा भइनै रे तयार ।
हाँ हाँ रे सबहु लाग मिलिके हो खाइ खाइ सेकै ।
हरे गंगा जमुना कैजल दरनैरे चलाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे पिठा गुरवा लेहत् बातै आछत चाउर, देआयो अछेरवा आउर गुन विदिया लैपर गाँसत बातै गंगा जमुनाकै धिके देहनै उराइ हाँ हाँ रे उराइ ।

चौपाइ ६४

हाँ हाँ रे खपने दुवारे अँचला भइ गइने थार ।
हरे पालपतिङ्ग हो अँचला देहनै रे उराइ ।
हाँ हाँ रे हरीयर दोमवा हो अँचला देहनै बिछाइ ।
हरे करैक् मदिया हो दोमवा दरनै चलाइ ।
हाँ हाँ रे तुहुं तोरे महतिन हो रचहो सृङ्गार ।

हरे सय करकुलियनके हो महतिन् मसवा निधाए ।
हाँ हाँ रे करैक मदिया हो दोमवा दारोरे चलाइ ।
हरे भनकी भनकी हो गुरवा करनै रे आहार ।
हाँ हाँ रे साँझ भइनै दिन बिते रात होइजाए ।
हरे अकुस बिरहा हो गुरवनकै होवै ।
हाँ हाँ रे कौने कौने गुरवनके बान होइ लागे ।
हरे कौने कौने हो गुरवान् भुँररे निकारै ॥

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहे लगनै अँचला गुरवा सुनोसुनो हो सातो गुरवौ अपने अपने गुन बिदिया लेहोरे परगाँस । आज जइसे कहे लगनै धागा गुरवा सुनो सुनो सातो गुरवा सतजुग जइही कलजुग ऐही बही कलजुगमे रहबो रे सहिदान हाँ हाँ रे सहिदान ।

चौपाइ ६५

हाँ हाँ रे हाथ तो धोइक् हो गुरवा भइनै रे तयार ।
हरे चनना पिरहिम हो महतिन आगे धैदेवै ।
हाँ हाँ रे सोनेक् तथिया हो महतिन आगे धैदेवै ।
अरे झाली मकुनियक् महतिन दलवा चलावै ।
हाँ हाँ रे उरदा मुगलियक् महतिन दलवा चलावै ।
हरे गंगाजमुनाकै हो अँचला पनियारे पितावै ।
हाँ हाँ रे सोनकी खराउ हो अँचला दै देवै ।
हरे सुरही गइ हो अँचला कलरे देवै ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे कहे लगनै अँचला गुरवा सुनोसुनो हो पिठा गुरवा मइ तो लिहबु करैक् मदिया झालर मुर्गा देवतनके पहुरवा अतना समानमै दिहनु रे पुगाइ । हाँ हाँ रे पुगाइ अरी हो बान धुपके दम हो अँचला दरनै चुहाइ ।

चौपाइ ६६

हाँ हाँ रे पाउँ तो लागी हो अँचला गुरवौ लेवै आसिस ।
हरे जुगजुग जियो भइया ओ अँचला लखहे बरस ।
हाँ हाँ रे गावर धियरिक् हो पसिया बेग चलिआ ।
हरे सहरेक् लोगन हो पसिया देहो रे बलाइ ।
हाँ हाँ रे गलियै गलियै हो पसिया करनै पुकार ।

हरे अँचला दुवारे हो पसिया बेगिर अलिआए ।
हाँ हाँ रे जौ मइ नाइ रे जइबु अँचला दुवार ।
हरे अँचलाके नाँउवा हो गवरी जइही रे बुताइ ।
हाँ हाँ रे पँचहे कहरवा हो चलिना भए ।
हरे चली तो भइनै कहरना अँचला रे दुवार ।
हाँ हाँ रे छोट बरा भइयो हो चलिना भए ।
हरे दारिदाली हो अँचला दुरही रे धराए ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे कहत् बातै खंचला सवालाख परघत् आयो, चलत् बातै सवा लाख पाछेवत्मै पछी चलत बातै मन अँचला सोनकी पगरिया बदरी बिजुलिया अस चमकत् बातै ओइसे चमके सचभच अँचलाके तरवाल हाँ हाँ रे तरवाल ।

चौपाइ ६७

हाँ हाँ रे करने राजक दुवारे हो अँचला चलिना भइ ।
हरे करने दुवारे हो अँचला भइ रे गइनै थार ।
हाँ हाँ रे कौने काजे हो अँचला ऐलोरे मोर पास ।
हरे सोरहे बात हो अँचला कहोरे समुझाइ ।
हाँ हाँ रे गिरहे मन्डफ हो अँचला देहोरे बनाइ ।
हरे खाल मन्डफ हो करने देवुरे बनाइ ।
हाँ हाँ रे मोरे सपनवा कै हो करने करहो बिचार ।
हरे जुगजुग जियो हो अँचला लख हो रे बरस ।

स्रोत : बमबहादुर कनकट्वा थारु बारबर्दिया ११ फट्कहवा बर्दिया

९.बैठौवा गित

यी गित मेहारुइ (जन्नी) धान बैठाइबेर गैना गित हो । यी गितमे देवर्वा भौजिहिन छेंड् खानी कैलेक सम्वाद बा । भौजी ओ देवर्वामे मजाक चल्ना, लैलिना, हाँसिमजा कर्ना सामान्य मान जाइथ् । यी गितमे भौजी ओं देवर्वाके संवाद देखागिल बा ।

बाहु बहनै पुरवैया झिझकोरै देवर भौजी नाइ, सोवौ अपने अंगना देवर भौजी नाइ ।
बँहिया पकड्के उठावै मोरे देवरा चलो हो भौजी नाइ, मोरे रङ्गी महलिया चलो भौजी नाइ ।
नाहीं जैबु देवरा रङ्गी महलियै धुमिल हुइही नाइ, मोरी चटकी चुंदरिया धुमिल हुंइही नाइ ।
धुमिल हुंइही चटकी चुंदरिया धोवइ देवु नाइ, बैसे धोयिबाक पटियै धोवइ देवु नाइ ।
धोवइ देवो देवरा चटकी चुंदरिया उजिला हुंइहीं नाइ, बैसे बगुलीका पंखा उजिला हुंइही नाइ ।

उजिला हुंइही भौजी चटकी चुंदरिया रङ्गाइ देबुं नाइ, अंगरेजवा दुकनियै रङ्गाइ देबुं नाइ ।
लाली लाली घोड्वा देवर सवरिया बजारे बिचे नाइ, अंगरेजवा दुकनिया बजारे बिचे नाइ ।
लेउ लेउ लड्कोरे भुजवा बतसवा बताइ देओ नाइ, अंगरेजवा दुकनिया बताइ देओ नाइ ।
उंची हैं दुवरियारे निचहे मरैया उहेरे होवै नाइ, अंगरेजवा दुकनिया उहेरे होवै नाइ ।
कौने रङ्ग बातै तोर पतरी भवजिया कौने रङ्ग नाइ, सोहै चटकी चुंदरिया कौने रङ्ग नाइ ।
सौरे रङ्ग वातैमोरे पतरी भवजिया कुसिमा रङ्ग नाइ, सोहै चटकी चुंदरिया कुसिमा रङ्ग नाइ ।
कौने अंच्ला लिख्यौं मैं चारुरे चिरैया कौने अंचला नाइ, लिख्यौं हन्सा दुनु मोरहवा कौने अंचला नाइ ।
आगे अंचला लिख्यौं मैं चारुरे चिरैया पाछे अंचला नाइ, लिख्यौं हन्सा दुनु मोरहवा मछेरे अंचला नाइ ।
कौने जून बोलिहैरे चारुरे चिरैया कौने जून नाइ, बोलै हन्सा दुनु मोरहावा कौने जून नाइ ।
आधी रात बोलै रे चारुरे चिरैया भोरहे बोलै नाइ, मोरे हन्सा दुनु मोरहवा भोरहे बोले नाइ ।

स्रोत : किस्नी थरुनी बारबर्दिया न.पा.५ कतर्निया बर्दिया

१०. बैठौवा गित (धान बैठाइबेर मेहारुनके गैना गित)

धान बैठाइ बेर मेहारुन (जन्नी) के गैना गित हो । यी गितमे ससुइयक साजिसपुर्न यो जनासे सँपवक सिकार खवाके अपन पटोहियै मुवैलेक दासतान बावै । यिहिनसे पहिले ससुइया अपन पटोहियैसे कैसिन व्यवहार करी । मने जब पटोहियै मुवैना साजिस रच्थी तब कौन मेरके व्यवहार कर्थी कैहिके यी गितमे दर्साइल बा । पटोहिया मूलेक बाद पुतुवक दर्द भरल बिलौना बा यी गितमे ।

सासु नन्द मिली पनिया कजावै रामा यैं हो नाइ,
उतो कारिरे नगिनिया राम यै हो लगाइ ।
तब तो देवैं सासु मुरिया ओ पुंछिबै राम आजुइ सासु नाइ,
देवै बिचके गेंरियै रामा आजुइ सासु नाइ ।
तब तो देवैं सासु अंकरारे पठरवक दलवा राम आजुइ सासु नाइ,
देवै उरुदरे मुंगियक दलवा आजुइ सासु नाइ ।
तब तो देवैं सासु फुट्ही डोकनियैमा आजुइ सासु नाइ,
देवै सैंयाके ठरिवामा आजुइ सासु नाइ ।
तब तो देवैं सासु फुट्ही रे भुरकियै रामा आजुइ सासु नाइ,
देवै सैयाके गिलसवै रामा आजुइ सासु नाइ ।
तब तो देवैं सासु टुटली रे झोंपडियै रामा आजुइ सासु नाइ,
देवैं रङ्गी रे महलियै रामा आजुइ सासु नाइ ।
तब तो देवैं सासु टुटली रे खटोल्ना राम आजुइ सासु नाइ,
देवै लाली रे पलंगरी रामा आजुइ सासु नाइ ।
तब तो देवैं सासु टुटली रे झोंगतियै रामा आजुइ सासु नाइ,

देवै सैंयाके गलैचा रामा आजुइ सासु नाइ ।
हर जोती आवै कोदर मारी आवै रामा नाहीं देख्यौं नाइ,
अपन सुन्दर अस धनियै रामा नाहीं देख्यौं नाइ ।
मैया मै देख्यौं बहिन मै देख्यौं रामा नाहीं देख्यौं नाइ,
जब देख्यौं अपन धनियै सोवती देख्यौं नाइ ।
एक बन नाइघ्यौं दुइ बन नाइघ्यौं तिस्रे बन नाइ,
उ तो ऐलुके सपकिया राम काटी लायौं राम ।
एक सुट्कुन मार्‍यौं दुइ सुट्कुन मार्‍यौं राम तिसरे सुट्कुन नाइ,
मोरे सुन्दर अस धनिया राम नाही जागै नाइ ।
देहुना मैया मोर टुँमरी टकरिया राम बनिजैबु नाइ,
उ तो जोगीरे फकिरवा राम बनिजैबु नाइ ।
चाँद सुरुज अस धनिया मोर छुट्नै छुटी गैनै नाइ,
उ तो बगुली रे बरन ससुररिया राम छुटी गैनै नाइ ।

स्रोत : बमबहादुर कनकट्वा थारू बारबर्दिया न.पा.११ बर्दिया ।

११. सुमरौती

सुमरौती कहलेक सुम्रना देवी देउतन सम्झना हो । देवी देउतनसे रछाके लाग अर्जी कर्ना हो । सुमरौती गितमे जहाँसम सक्कु देवी देउतनके नाउँ लेके सुमेर जाइथ् । हुर्डुइग्वा नाच करे जाइबेर सबसे शुरुम् यी गित अनिवार्य गा जाइथ् ।

हरे सदा भवानी दाहिन रे, श्रीधन करे गणेश । है रे पन्चो देउता रछा करहीं, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
हरे सरन गुरु सरस्वती मत गुरु चतुर सुजान । है रे तोर गुरु बातै पाक्का पन्डित हम गुरु चतुर सुजान ।
हरे उतरेक पर्वत एक आम एक महुँवा रे । है रे एक ओर बैठे सिता सुहेल्ली एक ओर लछमन भाइ ।
हरे बिना पाउँके पर्वत चह्रे, बिना जीभके खर खाइ । है रे बिना सोतनके दुध न दुहे, लोग नहीं पतियाए ।
हरे खेत बिगारे डुडरा रे कुँवा बिगारे पिपरा, है रे गाउँ बिगारे चुग्लीसे माता बिगारे नाउँ ।
हरे जित देउ जनली नाउँ हम्रे लेह्ली रे, हैरे सबहु देउता मिलीके सेवा लेउ हमार ।
हरे चिरैं चुरुइगन सब सोइगैनै जाउ सरस्वती तुँहु सोइ रह्यो मोरे कन्ठम लेहो बसेरा ।
हरे चाँद बाँधु सुरज बाँधु, बाँधु चारु चौदिश । है रे डिठ मुठ बाँधके बैठुँ कपुवा टिनाके मुह मारी ।

(हरे पहिले मै बाँधु हाँ गुरुवा गियान, हरे बन्धबु रे मैतो गुरुवा गियान । हरे दोसरे मै बाँधु हाँ खैरा डहान, हरे बन्धबु रे मैतो दयनी गियान, तिसरे मै बाँधु हाँ गाउकी गोसे लिया । बन्धबु रे मैतो चारु चौंदिसा ।।

१२. हुर्दुंग्वा नाचम गैना गित (दिन नच्वा/बरमासा)

ए असारे मास दयु बदरिन घेरा, हरे बरसत मेघ हो चौदिसा घेरा ।
ए भरी गइनै नदी नाला इसरु न धारे, हरे बयरी चढ्त आवै मासे असारे ।
ए सावन सजनी बरसे झिन बुंद, हरे सामिक् तिलक भिजे मागे लिलहारे ।
ए भादौं मासे वरात एक आए, हरे नैना कजला सिर सेंदुर पहिरे ।
ए कुंवारे मार विप्र लेहल औतारे, हरे सब सखिया मिली देखन जावै ।

१३. कठ्मलिया

कठ्कधैया गित सुन्दरी गिलापके बाँकी अँस दुस्रा भाग हो । मधैया कहलेक सुन्दरिक पिया माधौ हो । कठ्मधैयाके मतलब कठोर मधौ यानिकी निस्ठुरी माधौ । सुन्दरी गिलापके अन्त्यमे जब सुन्दरी मधौ हे बडा मुस्किलसे खोजके भेटाके विदेससे लौटाइ खोज्थी । तब माधौ कहलै बारा बरस सतली गोरस राख्यौ । बारा बरसके बाद लौटना जवाफ देहलै । तो एकर मतलब काहो की माधौ बारा बरसके बाद जब घरे वापस आइथ् । तो ऊ समय जो नयाँ दम्पती बिचमे जौन आकर्सन हुइपर्ना हो, जौन मेरके जवानिक रती रस छल्केक पर्नाहो, ऊ अब नाइ हो । हरेक चाहना मलिन हो सेकलबा । पती/पत्नी बिच हुइना सम्भोगसे लैके सँवरना संपर्ना इच्छा । सेंदुर टिकुली कजरा, चुरिया, गुरिया सोहाय नाइ लागल यी अधरेन बैसमे । बादमे सुन्दरी कहली यी गितमे आब जौन हुइल तौन हुइल मने अब जौं पिया फेरसे जैबो ऊ दुर देस तो मै रिसियाइ जैबुं । दुरहीसे बोल्यो तबसे दँह मोर छुए नाइ पैबो । कहना अभिब्यक्ति यी गितमे बा । यि गित बैसाख महिनामे हुर्दंग्वा नाचेम गाजाइथ् ।

रची रची पिया तो मोर हे खात बनावै हो ।
हरे दुनु परानी सुतै एक खाते, खात गइनै टुट, रामा खात मोर हुइनै पुराने ।
पिया मोर गइनै हे बहिरे पुर पाटन हो, हरे मोर पिया लानै सिरके सेंदुर ।
सेंदुर भइनै मलिने, रामा सेंदुर मोर रहनै पुराने ।
मोर पिया गइनै टिकुली बजरिया हो, हरे माथेकी टिकुली माथे नाहीं बैठै ।
टिकुली गइनै हो छुट, रामा टिकुली मोर रहनै पुराने ।
पिया मोर गइनै कजुलक बजरिया हो, हरे आँखिक कजुला अँखिया नाही सोहै ।
कजुला भइनै मलिने, रामा कजुला मोर रहनै पुराने ।
पिया मोर लानी देहनै हे, हाँतके चुरिया हो, हरे हाँतकी चुरिया हाँत नाहीं जावै ।
चुरिया गैनै टुट, रामा चुरिया मोर रहनै पराने ।

चौपाइ

दुरहींसे बात कऱ्यो पिया हमसे न बोल्यो, छुयौं नाहीं देहिंया हमारे ।
जाउ पिया तुँह जइबो बहिरे दुर देस, अरे हम धानी जइबौं रिसियाइ,
पिया हमसे न बोल्यो, छुयौं नाहीं बहिंया हमार ।
मोरे कहनारे जो नाहीं मनबो हो पिया,
हरे अलफा बैस कइसे कटहीं पिया दुरहींसे बोल्यो छुयौ नाहीं देहिया हमार ।

१४. विदा विदौनी (सक्कारे गैना गित)

यी गित खासकैके बिगर्ला बिगर्लिनके हो । बिगर्ली अपन ठरुवै छोड्के बाहर कहुँ बिगर्लक संगे रात बितैथी । जब भोर विहान हुइ लागथ् तो विगर्ली आपन बिगर्लासे बिदा मांगे बेरिक सम्बाद हो ।

दाहादुला विदा करो मोर सैंया उदासे जाय ।
हरे कहँवै बोले कारी कोइलिया, कँहवै ब्रोले बनमोर रे हाँ ।
हरे कँहवै बोले सांवरी तिरियबा ऊठो पिया होइ गइनै भोर विहान,
दाहादुला विदा करो मोर सैंया उदासे जाय ।
बगियामे बोले बोले कारी कोइलिया बनवामा बोले बन मोररे हाँ ।
हरे लाली सेज पर बोलै सांवर तिरिया उठो पिया भइगइनै भोर विहान ।
दाहादुला विदा करो मोर सैंया उदासे जाय ।

चौपाइ

घुंघरवा घुंघरवा तुँह न बोल्यो हो मोर सैंयाके आजुइ बहार घंघरवा ।
हरे मोर पिछ्वरिया ठठेरवा भैया मितवा, ठठेरवै लानो बलाइरे हाँ ।
हरे आधी रातमे फुटी गइनै घुंघरुक् भैंठी, राती सैंया बेजार ।
घुंघरवा घुंघरवा तुँह न बोल्यो हो मोर सैंया के आजुइ बहार ।
हरे मोर पिछ्वरिया दर्जी भैया मितवा, दर्जीबै लानो बलाइरे हाँ ।
हरे आधी रातमे टुटी गइनै चोलियक टेनी, राती सैंया बेजार ।
तुँह न बोल्यो हो मोर सैयाके आजुइ बहार ।
हरे मोर पिछ्वरिया बरहैया भैया पितवा बरहैयै लानो बलाइरे हाँ ।
हरे आधी रातमे टुटी गइनै पलङ्गके पाटी ।
राती सैंया बेजार तुँह न बोल्यो हो मोर सैयाके आजुइ बहार ।
हरे मोर पिछ्वरिया सोलरवा भैया मितवा, सोलरवै लानो बलाइरे हाँ ।

हरे आधी रातमे टुटी गइनै नाकेक नठुनी, राती सैंया बेजार ।
तुँह न बोल्यो हो मोर सैंयाके आजुइ बहार ।

चौपाइ

नजर मिलौनी कइलेउ हो छैला घरे जवती है ।

१५.बालम बेक्ला

यी गित मनरख्नी मनरख्ना बिचके घटल घट्ना हो । आपन मनरख्नीसे रातके मिले अइलेक् मनरख्ना चोर बन्लेक अवस्था दर्साँगिल बा । आउर आगे बेक्लाह बालमके चर्तिकला उजागर कैगैलबा । यी बिहानके गैना गित हो ।

चोरवा चोरवा भागे अँसरवा हो मोर सारी निंदमे ।
चोरवा छतिया चुइगे हो मोर सारी निदमे ।
हरे खरखर टाँटी काटे छुटे भित्तक माटी, मोर सारी निंदमे,
हरे चोरवा चोरवा भागे अँसरवा हो मोर सारी निंदमे ।
हरे जौं मैं जनतौं घरहिंक चोरवा,
हरे काहेक मै करतौं गोहार हो मोर सारी निंदमे,
चोरवा चोरवा भागे अँसरवा हो मोर सारी निंदमे ।

चौपाइ

केकर मतबुध लागे होलरंगवा दहिजरा केकर ।
हरे जोतेक पठैनु मै निके निके खेतवा ।
हरे जोलेबेर कुसुही गरहिया हो होलरंगवा दहिजरा ।
केकर मतबुध लागे होलरंगवा दहिजरा केकर ।
हरे काटेक पठैनु मै बनके लकडिया ।
हरे काटेबेर घरहिंक लकडिया हो होलरंगवा हिजरा ।
केकर मतबुध लागे होलरंगवा दहिजरा केकर ।

चौपाइ

हिरा लुटावै बजरिया बालम मै नाहीं जानु हिरा।
हरे सबकोइ लुटै अनधन सोनवा ।
हरे मोर पिया लुटै पटुरिया पटुरिया बालम मै ।
नाहीं जानु हिरा लुटावै बजरिया बालम मै नाहीं जानु ।
हरे सबकोइ लुटै हाँथी ओ घोड्वा ।

हरे मोर सैंया लुटै गदहवा गदहवा ।
बालम मै नाहीं जानु हिरा लुटावै बजरिया, बालम मै नाहीं जानुँ ।

१६. कहरा (दिन नच्वा)

हैरे-२, बुँदना भिजे-२, चुँदरी पहेरवा रस बुँदना भिजे चुँदरी । गुरु तो गोबिन्द जी के भिजे लाली तो चुँदरिया हो,

हैरे-२, रामजी के भिजत फुन्ना अरी हो फुन्ना । हरे तन झोंपडी मन बसेरे महलवा हो । हरे झन्झरिक नदिया करै बहे अति जोर हो ।

हैरे-२, कोइ आरके अविया कोइ पारके जविया हो, तन झोंपडी मन बसेरे महलवा हो ।

हैरे-२, नैयारे खेवैया बिना रे डोलतिया आवै मोरओर । हरे झाझर नैया खेवैया मतवाले हो,

हैरे-२, कोइ आरके अविया कोइ पारके जविया, नैयारे खेवैया बिना रे डोलती आवै मोर ओर ।

हैरे-२, दर्जी बाले लौंडे बिगारे मोर चोलिया । हरे तरे काटे काटकटौ उँप्पर काटे बखिया हो । हैरे-२, अंगुरीक पोधे पोधे नापे नापे मोर छतिया, हरे साँकिर साँकिर चोलिया चाकर मोर छतिया, दर्जी बाले लौंडे बिगारे मोर चोलिया ।

हैरे-२, छैला मुसुक्यानी रे छैला मुसुक्यानी रस भइनै मोर अंगिया । हरे लालु बाँधे लाल पगरी हाँ उज्जर मनिहार हो । हैरे-२, अँइठा पगरी गन्डा बाँधे ताके माल बिरान हो, छैला मुसुक्यानी रे छैला मुसुक्यानी रस भइनै मोर अंगिया ।

हैरे-२, चढ् गइनै अतरिया खुलीगै केंवरिया हो । हरे चरन पकडी झक्का झुलना आरी हो, झुलना भिजे । हैरे-२, झुलन भीजे चुँदरी पहेरवा रस बुँदान भिजे ।

चौपाइ

हरे खेतवक मेर पर बोयौं अरहरीया, हाँ हाँ सासु हमरो बैठे अखवरिया ।
सासु तो हमरो बातैं मन चिक्नी, हाँ हाँ हमहुँ तो बाती छैला मनरुचनी ।
आधी रात छैला नचवा कछावै, हाँ हाँ भोर होवत छैला लइगे रे निकार हो ।
कौने जावै हसनपुर कौने जावै पतना, हाँ हाँ कौने जावै हो मोर दखिने बनेजिया ।
सासु जावै हसनपुर देवर जावै पतना, हाँ हाँ सैंया जावै हो मोर दखिने बनेजिया ।
कौने लावै बाजुबन्द कौने लावै कंगना, हाँ हाँ कौने लावै हो मोर काँसीदार पनवा ।
सासु लावै बाजुबन्द देवर लावै कंगना, हाँ हाँ सैंया लावै हो मोर काँसीदार पनवा ।
कौने लावै झिनवा साडी कौने लावै झुलनी, हाँ हाँ कौने लावै हो मोर झुमकुदार झुलनी ।
सासु लावै झिनवा साडी देबर लावै झुलनी, हाँ हाँ सैया लावै हो मोर झुमकुदार झुलनी ।
साँकिरी गलरियामे लागत बजरिया, हाँ हाँ लागी गइनै हो मोर दोहरी बजरिया ।

मै तोही पुंछुं भइया बिसतिया, हाँ हाँ भुलनी मोल कही देवरे बिसतिया ।
एक एक भुलनीक लखहे रुपैया, हाँ हाँ तुंहरे भुलनी अनमोल रे बिसतिया ।
चाहे मोर लागी खलीत भर रुपैया, हाँ हाँ लेहबु हो मइतो नाच बिहरीया ।

१७. जौं महरनिया

यी गित पती पत्नी (ठर्वा मेन्धर्वा) बिचके हँसी मजाक ठट्ठा हो । महरयिा ओ महरजवा एक दोसरहे बोल्कना सब्द हो । यी गित प्राय दिनके हुर्डुड्वा नाचेम गा जाइथ् । उहेमारे यी गितहे दिननच्वा कैहके कही जाइथ् ।

जौं महरनिया कुकरैसे भौरी खवैबो, हाँ हाँ तोहार उप्पर सवतिया चरहैबुं महरनिया ।
जौं महरजवा मोर उप्पर सवतिया चढैबो, हाँ हाँ अलगे बंगला छँवैबुं महरजवा ।
जौं महरजिया अलगे बंगला छँवैबो, हाँ हाँ बंगलामा लुक्री लगवैबुं महरनिया ।
जौं महरजवा बंगलामु लुक्री लगवैबो, हाँ हाँ अलगे तमुवा तमुवा गरैबुं महरजवा ।
जौं महरनिया अलगे तमुवा गरैबो, हाँ हाँ छुरी कटारीले कटैबुं नम्मी डोरी हो ।
कौने रङ्ग बेनिया कौने रङ्ग डँरिया, हाँ हाँ कौने रङ्ग धनिया डलावैं मोर बेनियाँ ।
सोने रङ्ग बेनिया रुपन रङ्ग डँरिया, हाँ हाँ साँवरे रङ्ग धनिया डोलावै तोहार बेजिया ।
सुरहुर सुरहुर धानी अंगना बहारै हो, हाँ हाँ धानी जीके छुटनै अँचलवा हो नाइ गोरिया ।
अंगना बहारत छुटनै अँचलवा, हाँ हाँ देखि छैला मुरभावै हो नाइ गोरिया ।
दुनु जोबन मोरे घुँघटके नेरे, हाँ हाँ खेल करे जैसे बनके मन्जोर हो ।
तोहारे पास गोरी दुइ फल लरङ्गी, हाँ हाँ दुइ मका एक चिखाओ हो नाइ गोरिया ।
तोहारे पास गोरी बिखकै घरिया, हाँ हाँ छुवती छैला महुँरावै नाइ गोरिया ।
तोहारे बातैं छैली बिखकै घरिया, हाँ हाँ मोर ठन बातैं गरुल अस मितवा ।

१८. बुँदिया गिरना लागे

यी गितमे छाइ अपन बाबासे अर्जी चिरौरी कर्थी कि गौना (अगहन) न कराए कैके । गौना कराइक डरे अनेक अनेक अनौठा बहाना लगैथी । यी गित पिट्ठरुवक साँभजुन गा जाइथ् ।

केकरे छँवाइल उँची तो बंगलवा, हरे केकरे छँवाइल चौपाला बुँदिया गिरना लागे रे दैया ।
देबरक् छँवाइल ऊँची तो बंगलवा, हरे पियवक छँवाइल चौपाला बुँदिया गिरना लागे रे दैया ।
केकरे खोदाइल ताल पोखरवा, हरे केकरे बनाइल उँचि घाट बुँदिया गिरना लागे रे दैया ।
देबरक खोदाइल ताल पोखरवा, हरे पियावक बनाइल उचि घाट बुँदिया गिरना लागे रे दैया ।
हमका गवन नाहिदे बाबा येही फुल गेंडवा, हरे मोरे ससुररिया ससुरा बहूत बातैं हरे पैंया लागत लागत दिन जाए बाबा एही फुल गेंड्वा, हमका गवन नाहिदे बाबा येही

फुल गेंड्वा ।

हरे मोर ससुररिया जेठहु बहुत बातैं हरे घुँघट पारत पारत दिन जाए बाबा एही फुल गेंड्वा, हमका गवन नाहींदे बाबा येही फुल गेंड्वा ।

१९. करनौटी गित

करनौटी गित राजा करनेके खिस्सामे आढारिट बा । यि गित भाडो महिनाके हरीया गुरै पाछे डस्यासम गैटी नाच जाइठ । इ गित थारु (पुरुस) किल गइठैं । गित गइनासे पहिले सुमेरके मडके छाँकी ढर्काइ परठ ।

हाँ हाँ रे राजा टो गुर्बाबक् बेटी ढरम ढियान..२
हरे पुठी डेखान, ढियरी रे चली जाए ।
हाँ हाँ रे ढल टोर भाँजे भवानी, भाँजे टोरे माँठ..२
हरे अभिरल कैले हो गवरी साट रे सिंगार ।
हाँ हाँ रे झालर बोलै माँडर बोलै, बोलै करटार
हरे अपने टो नाचल गवरी छुंडा रे बिछान ।
हाँ हाँ रे मुनि टो महासिर सभा चली आए
हरे पुठी डेखान, ढियरी रे ढेंनु गाइ ।
हाँ हाँ रे कोइ डेवइ अडगुठी मन्डरिया सहना भराए
हरे बरहो बरडिया हो, डेहनै रे ढेंनु गाइ ।
हाँ हाँ रे छट्टिस कोठके डेउटा, डेहनै आसिस
हरे जुग जुग जियोह रे भइया लाख रे बयस ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली नभए...
हरे रहिया टो पकरल गवरी करने कइ जाए ।
हाँ हाँ रे घमकी घमासल गवरी गइनै अकुलाए
हरे छिन एक गवरी हो लेहु रे बिसराम ।
हाँ हाँ रे नहि मइ पाइ पन्डिल, चटुर सुजान
हरे कौने गुन लैके हो जइबुँ, कमरुक डेस ।

गित संकलक : फग्गुव थारु
बाँसगढी नगरपालिका-४, लक्ष्मणपुर, बर्दिया

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब काहे लगनै गावर ढियरी
सुनो सुनो हो माइ मडागिन

चार महिना पाकल बाटैं चार महिना बरस काल बाटैं,
आठ महिना मइ माँगट बाटुँ डेहु हो भला निके ।

चौपाइ १

हाँ हाँ रे माइ टो मडागिन कोखिन, लेहलो अवटार
हरे सुमिरौं गवरी हो, उटरे के पार ।
हाँ हाँ रे कमरुक डेसके बिड्या, रहही मँगाइ
हरे बाह्र बरसक मसँवल गवरीक, सुढी रे होइ जाए ।
हाँ हाँ रे आछट चाउर गवरी, डेहनै बगाइ
हरे पैंसा से पाठर गवरी, लेहनै रे बलाइ ।
हाँ हाँ रे उटरेक सम्मु गवरी, ठाम्ही भला लेओ
हरे डखनेक सयर गवरी पलाटी रे पठाए ।
हाँ हाँ रे पुर्बेक जाडु गवरी, ठाम्ही भला लेओ
हरे पछिवक टोना हो गवरी, ठाम्हीले रे बइठाए ।
हाँ हाँ रे कमरुक डेसक बिड्या लेबइ पर गाँस
हरे पैसा से पाठर गवरी, डेबइ रे अरीवाइ ।
हाँ हाँ रे इहँ सेटिन गावर ढियरी, चली न भए
हरे कुन्जिल बनवा राजुल बलहैह, बेगी रे चली आए ।
हाँ हाँ रे कुन्जिल टो बनवम गावर ढियरी भइनै ठाह्र
हरे राजुल बल्हेह गवरी डेखनै रे निकास ।
हाँ हाँ रे राजुल टो बल्हा गवरिक पया परी जाए
हरे बुँडा एक गावर डाइ, पनियां रे पियाउ ।
हाँ हाँ रे पनिया पियल गवरी, इच्छा भर पुर
हरे राम रामकै राजुल बल्हा उठै रे हहराए ।
हाँ हाँ रे सुन हुन गावर डाइ, बिनटी हमार
हरे भुँखकी भोजन गावर डाइ महिन कुछु डेउ ।
हाँ हाँ रे झाली हो मकुनियक गवरी भाट बनाए
हरे उरुडा मुइगियक डाल रे बनाए ।
हाँ हाँ रे सेखुवक पाटक गवरी पटरि लगाए
हरे राजुल बल्हैह गवरी जौंना रे जेंवाए ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे, जब काहे लगनै राजुल बल्हा सुनो सुनो हो गावर डाइ

सवा हाँठ कै झाझर कुरिया डेहु रे बनवाइ । हाँ हाँ रे बनवाइ...।
अरी हो रनपाट भाव हो वैठेक डे ।

चौपाइ २

हाँ हाँ रे चनन पानन कइ भवन बनाउ
हरे काठ कोरै बाटी करो रे अधिकार ।
हाँ हाँ रे कुस काटि भइया, भिटा रे बनाउ
हरे भरुवा काटी रे भइया करो रे अधिकार ।
हाँ हाँ रे चनन पनन अब खोजे भला लाग
हरे खोज्टी ढुरटी वहा भइनै रे हैरान ।
हाँ हाँ रे चनन पनन अब डेखै रे अँढेर
हरे चनन पनन राजुल बल्हा कहुँ न भेटाए ।
हाँ हाँ रे सुन हुन गावर ढियरी, बिनटी हमार
हरे चनन पनन गावर ढियरी कहुँ न भेटाउँ ।
हाँ हाँ रे सेखुवक काठ कइ, भवन बनाउ
हरे काठ कोरइ भइया डरो रे चढ़ाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे, जब काहे लगनै गावर ढियरी सुनो सुनो हो राजुल बल्हा
चुरकिक बढ़नी पाँच गाँठ हर्डि, पाँच पैसा व लइके अरे नेइया डारो ठढ़िवाए ।
हाँ हाँ रे ठढ़िवाए...
अरी गारी गुरी राजुल बल्हा कइनै रे टयार ।

चौपाइ ३

हाँ हाँ रे काठ कोरै बाटी डरनै चढ़ाइ
हरे राजुल बल्हक मण्डफ छाए रे भला लाग
हाँ हाँ रे राजुल बल्हक मन्डफ, छाए भला लाग
हरे राजुल बल्हक मन्डफ, भइनै रे टयार ।
हाँ हाँ रे सुन हुन गावर डाइ बिनटी हमार
हरे जिया न परायट गावर डाइ महिन कुछु डेउ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे, जब काहे लगनै राजुल बल्हा

सट जुग जाइ कल जुग आइ मन पति मनुवा औटार लिही
टुहरे डुढ पुटन्के हुइही जिबन हो जगाए। हाँ हाँ रे जगाए...।
अरी हो कल जुग म राजुल बल्हा, सहबो सही नाम

चौपाइ ४

हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी, चली नभए
हरे रहिया टो पकरल गवरी, करने का जाए।
हाँ हाँ रे सवा कोस कै गिरडा नर रे खगार
हरे ढुरिया मटिया गवरी, डेखैं रे अधिकार
हाँ हाँ रे कौने जनावर चरै यहीं बनमा
हरे टौने जनावर गवरी खोजै रे भला लाग।
हाँ हाँ रे डुरहीं से डेखल गवरी डनुवा आइट
हरे रक्सा-डनुवा डुनु करइ रे बरा मार।
हाँ हाँ रे काहे का टँइ रक्सा डनुवा कैलो बरा मार
हरे टौने बाट हो भइया कहो रे समुझाए।
हाँ हाँ रे रक्सा टो कहनै महीं लइ लिउँ
हरे डनुवा कहनै हो भइं रे लइ लिउँ।
हाँ हाँ रे महिन लैके सुग्घरी बहिनिया बाटैं कुइयाँ रे इन्डार
हरे जौने टो कहो भइया टौंने रे लइ लेओ।
हाँ हाँ रे रक्सा ओ डनुवा गवरी टिनुँ चलिन भए
हरे कुइयै इनारे हो गवरी भए रे गइनै ठाढ़।

॥ दोहा ॥

आज जैसे, जब कहे लगनै गावर ढियरी सुनो सुनो हो रक्सा-डनुवा
महिन लैके सुग्घरि बहिनिया बाटैं कुइयाँ इनारे। हाँ हाँ रे इनारे...।
आज जैसे जब रक्सा-डनुवा कुँइया झाके लगनै पैढे लगनै,
जब गावर ढियरी डेहनै ढकेल। हाँ हाँ रे ढकेल...।
अरी बजरा पिरहिया गवरी, डेवइ ढरकाए।

चौपाइ ५

हाँ हाँ रे चारु कोने गवरी किलिय जराए
हरे रक्सा-डनुवा डुनु हो भैनै रे जरछाए।
हाँ हाँ रे सट जुग करने, डेब जुग आए

हरे डेव भुटन काँटा ठोकइ रे अधिकार ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए
हरे रहिया टो पकरल गवरी, करने का जाए ।
हाँ हाँ रे मधसुर नगरी गवरी चली नभए
हरे पसिया पसिनिया हो डुनु सुवर रे चराए ।
हाँ हाँ रे सौंरा व हेनवट एक मट टिन
हरे डुइ चार छौंना गावर डाइ डेहो रे मरवाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब काहे लगनै गावर ढियरी सुनो सुनो पसिया पसिनिया
मोर पुटक रहिया जेउना डुइ चार छौंना डेहु हो चलाए । हाँ हाँ रे चलाए...
अरी हो पसिना पसिनिया डुनु गइनै पटियाइ ।

चौपाइ ६

हाँ हाँ रे डुइ चार छौंरा हेनवट डरनै मराइ
हरे बट्टिस छौंनक हेनवट करइ रे आहार ।
हाँ हाँ रे पसिया पसिनिया डुनु भइनै रे किरोढ
हरे बत्तिस छौंना गावर डाइ डेवुँ रे बेहोर ।
हाँ हाँ रे सुन हुन पसिया पसिनिया बिनटी हमार
हरे डेवुँ सरापी पसिया पसिनिया हुइबो रे जरछाए ।
हाँ हाँ रे डेब लोग मनुवा कोइ नहीं पलुहाए
हरे पसिया पसिनियक नेउंना जैंही रे बुटाए ।
हाँ हाँ रे सुन हुन गावर डाइ बिनटी हमार
हरे बत्तीस छौंना गावर डाइ डेहु रे बेहोर ।

॥ दोहा ॥

आज जैबु जब कहे लगनै गावर ढियरी
सुनो सुनो पसिया पसिनिया हाँक लैजा सुबरी चराए जाओ
अन धन सोनवा से बरहीं जइबो
टुहरे डुढ पुटक के हुइहिं जिवन जगारे । हाँ हाँ रे हुइहीं जगारे... ।
अरी हो डेहनै आसिस गवरी चली न भए ।

चौपाइ ७

हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए

हरे मधसुर नगरी हो गवरी भए र गइनै ठाढ़ ।
हाँ हाँ रे चारु टो कोने डेखै मडनकै कार
हरे मड महुवा उठनै अरघान ।
हाँ हाँ रे सौंरा व हेनवट, एक मट किन
हरे बट्‌टिस छौंना हेनवट, करइ रे भहरवाइ ।
हाँ हाँ रे मेंटिया व बहरा हो भइनै चकाचुर
हरे मँड मँहुवा हो, चुवाही रे नाही पाए

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब कही लगनै कलवारिन कै लोग
टुहारे पुट भटार मोर मधसुर नगरी कैनै हो खड्खारे ।
हाँ हाँ रे कइनै खड्खारे ।

चौपाइ ८

अरी हो सुनिके बाट गवरी भइनै रे जरछाए ।
हाँ हाँ रे सुन हुँन बाट मोर कलवारिन के लोग
हरे डेँबु सरापी कलवारिन, हुइबो रे जरछाए ।
हाँ हाँ रे डेव लोग मनहा कोइ नही पलहाए
हरे मधसुर नगरीक नौना, जैहीं रे बुटाइ ।
हाँ हाँ रे हांठ जोरी कलवारिन विनटी करे लाग
हरे ढुक चुक गावर डाइ करो रे गुन माफ ।
हाँ हाँ रे सुन हुनँ गावर डाइ बिनटी हमार
हरे जिया न परायट गावर डाइ महिन रे कुछु डेव ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे, जब काहे कहे लगनै गावर ढियरी
सुनो सुनो कलवारिन कइ लोग
टुहरे मड महुँवा छट्‌टिसे हो कोठेक डेउटन छकिया डरही हो चुवाए ।
हाँ हाँ रे चुवाए...।
अरी कल जुग मैहा, रहवो सही नाम ।

चौपाइ ९

हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए
हरे रहिया टो पकरल गवरी, करने कइ जाए ।

हाँ हाँ रे कजरिक बनवा गवरी, भइ गइनै ठाढ़
हरे डेखी टो डारल गवरी हाँठी रे चरवाह ।
हाँ हाँ रे केकरे टो हो भइया हाँठी रे चरवाह
हरे करने राजक रहिया भइया डेहु रे बटाए ।
हाँ हाँ रे करनेक राजक हुइ हाँठी चरवाह
हरे सोनवा रुपवा हो बहिनी डेखो रे अधिकार ।
हाँ हाँ रे सोनके अँकुसिया बाटै, हाँठी चरवाह
हरे सोनके पिलौना बाटै, हाँठी रे चरवाह ।
हाँ हाँ रे इहे गोरचरवा बहिनी लेहु रे डबाए
हरे आगे जाइ पुँछो हो बहिनी, भंइसी रे चरवाह ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए
हरे डेखी टो डारल गवरी भंइसी रे चरवाह ।
हाँ हाँ रे केकरे टो होउ भइया भंइसी चरवाह
हरे करनेक राजक रहिया हो भइया, डेहु रे बटाए ।
हाँ हाँ रे करनेक राजक हुइ, भंइसी चरवाह
हरे सोनवा रुपवा हो बहिनी डेखो रे अधिकार
हाँ हाँ रे इहे गोरचरवा हो बहिनी लेओ रे डबाए
हरे आगे जाइ पुँछो रे बहिनी गइया रे चरवाह ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब गावर ढियरी बनके कछारे छोरट बाटै
गाउँक गौहाने भइ हो गइनै ठाढ़े । हाँ हाँ रे भइ गइनै ठाढ़े...।
अरी हो गाउँके गयरवन, डरनै भेटाइ

चौपाइ १०

हाँ हाँ रे केकरे टो होउ भइया, गइया चरवाह
हरे करनेक राजक रहिया भइया डेहो रे बटाए ।
हाँ हाँ रे करनेक राजक हुइ गइया चरवाह
हरे सोनवा रुपवा रे बहिनी डेखो रे अधिकार ।
हाँ हाँ रे इहे गोरचरवा बहिनी, लेओ रे डबाए
हरे इहे रहिया जइबो हो बहिनी, कुइया रे इनार ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए
हरे जाइ पहुँचल गवरी कुइया रे इनार ।

हाँ हाँ रे सुन हुँन बहिनी मोरे पनिहारिन के लोग
हरे बुँडा एक बहिनी हो, पनिया रे पियाओ ।
हाँ हाँ रे जाट नाही जनली बहिनी खट हो विचार
हरे कयसे पियाइ रे बहिनी, गँगा रे जुर पानी ।
हाँ हाँ रे राजा टो हेँवट होवेहँ बाप रे हमार
हरे माइ मड़ागिनके कोखिन, लेहनु रे अवटार ।
हाँ हाँ रे जात अब जनली बहिनी खट हो विचार
हरे अब मइ पियइबु हो बहिनी गंगा हो जुर पानी ।
हाँ हाँ रे सोनके गरुवम रुपना लागे डोर
हरे पियाहुन बहिनी हो, गंगा रे जुर पानी ।
हाँ हाँ रे पनिया पियइलो बहिनी इच्छा भर पुर
हरे जुग जुग जियोह रे बहिनी लाख रे बयस ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब कहे लगनै गावर छियरी
सुनो सुनो हो पनिहारिन बहिनी,
करने राजक बखरी सोह्रा सय बाग बगैंचा
सुग्घर फुलवा रे डेहु हो बटाए, हाँ हाँ रे बटाए...।
अरी हो याहाँ नाही बाग बगैंचा, सुग्घर फुलबार ।

चौपाइ ११

हाँ हाँ रे बारहे बरसके बाटै, उकठल फुलबार
हरे जेहीं मन भौंरा हो लेहनै रे बसेर ।
हाँ हाँ रे सोह्र सय पहरु बाटैं चौकी बइठ
हरे कैसेक जइबो हो बहिनी, करने डुवार ।
हाँ हाँ रे ढुढी टो बहिनिया बाटैं चौकी बइठ
हरे नाही जाए पइबो हो बहिनी, करने डुवार ।
हाँ हाँ रे सेखुली कुकरिया बाटैं चौकी बइठ
हरे नाही जाए पइबो हो बहिनी करने डुवार ।
हाँ हाँ रे कुइया इन्डर गवरी, भइनै ठाढ़
हरे सुखल पाखल डेखल गवरी, कुइया रे इन्डार ।
हाँ हाँ रे पहिले पलुहाइल गवरी, अइल मकुर
हरे डोसरे पलुहाइल गवरी घन बाँसवार ।

हाँ हाँ रे टिसरे पलुहाइल गवरी, घन अमरिट
हरे फुला टो फुली गइनै ओहि रे फुलबार ।
हाँ हाँ रे चारु टो कोना गवरी, फलै फुलवार
हरे सोह्र सय भौंरा हो छोरनै रे गुन्जार ।

॥ दोहा ॥

आज जइसे जब अल्खा मलिनिया सपना सरुपे उठट् बाटैं
मुँरे लेबैं सुबरन डेलरी, हाँठ लेबैं रुडली लोकसिया
चली न भइ नै मालिन ओही फुलबारे । हाँ हाँ रे फुलवारे...।
अरी हो अलखा मलिनिया करै सपनक बिचार ।

चौपाइ १२

हाँ हाँ रे इह सेटिन अलखा मलिनिया चली नभए
हरे जाइ पहुँचल मालिन ओही रे फुलबार ।
हाँ हाँ रे चारु टो कोने डेखै, फुलै फुलवार
हरे कउने जहन लेहनै रे अवटारे ।
हाँ हाँ रे डुरहे से डेखल मालिन, जोगिनी फकिर
हरे जोगिनी फकिरवक मालिन पैंया रे परी जाए ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब कहें लगनै अलखा मलिनिया,
सुनो सुनो हो जोगिन माइ, जौं मै पयटुँ इ फुलवा डेलरी भरैटुँ,
करने राजक डुँह्री डुवारे डेहटुँ पठाए । हाँ हाँ रे...पठाए ।
अरी हो जो मन होए मालिन, सो लइ लेओ ।

चौपाइ १३

हाँ हाँ रे फुलवा टो टुरी मालिन, डेलरी भराए
हरे चली न भइनै हो मालिन, करने रे डुवार ।
हाँ हाँ रे जौ टुँह जैबो मालिन, करने डुवार
हरे मोरे टो नाउँ मालिन जिन रे बटुबाउ ।
हाँ हाँ रे मोरे टो नाउँ मलिन डेब्रो बटुबाइ
हरे नाउँ निन्डिया मालिन हुइही रे हमार ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन अलखा मलिनिया चली नभए
हरे जाइ पहुँचल मालिन, करने रे डुवार ।

हाँ हाँ रे उठ हुन करने राजा फुल लइ लेओ
हरे सुरजा डेबटवैह करने, फुलवा रे चह्राउ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब कहे लगनै करने राजा सुनो सुनो अलखा मलिनिया
कि टइ फुलवा हेराइल पैले, कि टइ फुलवा झरल पैले,
कि टइ फुलवा सरल पैले, कब्बैक फुलवा टइ नन्ले डेलरी हो भराए ।
हाँ हाँ रे भराए...।
आज जैसे जब कहे लगनै अलखा मलिनिया सुनो सुनो हो करने राजा,
न भइ पयनुँ फुलवा झरल, न भइ पैनुँ फुलवा सरल,
न भइ पयनुँ फुलवा परल, एक सर जोगिन मैया डेहनै हो पलुहाए ।
हाँ हाँ रे पलुहाए... ।
अरी हो फुला जोगिन मैया, डेहनै पठाए ।

चौपाइ १४

हाँ हाँ रे लइ कइ फुलवा करने राजा, भइनै रे टयार
हरे सुरजा डेबटवैह करने, फुलवै रे चह्राए ।
हाँ हाँ रे पहिले टो पुजइ करने, ढुप रे ढुङ्गार
हरे छट्टिस कोठके डेउटन, फुला रे चह्राए ।
हाँ हाँ रे सुन हुँन अलखा मलिनिया बिनटी हमार
हरे जोगिन मैयैंह हो मालिन, नानो रे बलाए ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन अलखा मलिनिया चली नभए
हरे जाइ पहुँचल मालिन ओही रे फुलवार
हाँ हाँ रे सुन हुँन जोगिन माइ बिनटी हमार
हरे करने राजा हो माइ, टुँहिका रे बलाए ।
हाँ हाँ रे नही मइ हुँ रे मालिन, चोरी रे चन्डाल
हरे नही मइ जैवुँ मालिन, करने रे डुवार ।
हाँ हाँ रे जौ टुँहु जैबो मालिन, करने डुवार
हरे अरबर हो मालिन डेहेयोंह रे बटुवाइ ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए
हरे सोह्र सय पहरुन टिर गइनै रे ठाह्र ।
हाँ हाँ रे सुन हुँन सोह्र सय पहरु बिनटी हमार

हरे मइ टो जैबुं भइया करने डुवार ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए
हरे डुढी बघिनियक टिरे भए रे गइनै ठाढ़ ।
हाँ हाँ रे सुन हुँन डुढ बघिनिया विनटी हमार
हरे मइ टो जैबुं रे बघनी, करने रे डुवार ।
हाँ हाँ रे जौ मइ लौटबुं बघनी करने डुवार
हरे पकवा मसुवा बघनी, टुहिका मै डेम ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए
हरे करने राजक डुंढी, भए रे गइनै ठाढ़ ।
हाँ हाँ रे सेखुली कुकरी अब डरनै भला भुंक
हरे नही जाइ डेबुं रे टुहिंका करने रे डुवार ।
हाँ हाँ रे जौ मइ लौटबुं मइ सेखुली कुकरी करने डुवार
हरे डुढ-भाट सेखुली कुकरी टुहिंका मइ डेम ।
हाँ हाँ रे जौ टइ हुइबे करने राजा मरड जलम
हरे जलम जुगुट न मेंटि रे भला जाउ ।
हाँ हाँ रे अटन बचन करने राजा सुनी भलाले
हरे सम्झि सम्झि रे करने राजा गइनै रे उडास ।

स्रोत : बुझावन थारु
बाँसगढी नगरपालिका-४, लक्ष्मणपुर, बर्दिया

२०. छोटकी फुलवार

फुलवार गित गुर्वावा, मयरी मडागिन, महाडेउ ओ गवरी (गौरी) पार्वतीके खिस्सामे आढारिट बा । यि गित भदौ महिनाके हरीया गुरै पाछे गैटी नाच्र जाइठ । यि गित थारु (पुरुस) किल गइठैं । गित गइनासे पहिले सुमेरके मडके छाँकी ढर्काइ परठ ।

हाँ हाँ रे इन्दर राजा व रानी डेहनै आसिस
हरे चली न भइ नै हो गवरी, हरी रे कविलास ।
हाँ हाँ रे टम्मु कइ नारा गवरी, लाडी भला लेएँ
हरे टिन भवनके जियरी हो गवरी, लाडी रे भला ले ।
हाँ हाँ रे चेन्डुली कोडरिया गवरी, लाडी भला ले
हरे गजहे भुडगरवा हो गवरी, लडी रे भला ले ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गवर ढियरीन, चली न भए
हरे मनसी सरिवरके रहिया हो गवरी, लेहनइ टकाए ।

हाँ हाँ रे ओही टो अढागिन खोला गवरी, भइ गइ नै ठाढ़
हरे ओही अढागिन खोला हो गवरी, लेहनै रे पइठार ।
हाँ हाँ रे उंपरे टो डेखल गवरी, ढुन्ढी रे कुहिर
हरे टरही टो डेखल गवरी, निस् अन्धियार ।
हाँ हाँ रे हाँठके झिझरिया डइके हेरल गवरी, नही डेखै डिसा हो डुबार ।
हरे रोएल गवरी हो आँसकै ढार ।
हाँ हाँ रे काहेक टइ गवरी ढियरी रोइले, अँसन कइ ढार
हरे कौने गट हो बहिनी, परले रे सुसकार ।
हाँ हाँ रे कौने टो बरियामा, अब चली आउँ
हरे गवर ढियरी के नौना, जैही रे बुटाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब काहे लगनै गवर ढियरी, सुनो सुनो हो, डुढी बघिनिया बहिनी, पहिले पनिया पियैबु, टव हियरा जैही जुराइ । हाँ हाँ रे जुराए अरी हो डुढी बघिनिया बहिनी जोरनइ उपाइ ।

चौपाइ १

हाँ हाँ रे टुहरे कोंछ हो बाटैं, अगनी बान
हरे जौने टो बान गवर ढियरी, छोरी रे भला डेउ ।
हाँ हाँ रे अगनी बान गवरी, छोरी भला डेए
हरे ओही ढुन्ढी कुहिर हो, गवरी गइ नै रे फटियाइ ।
हाँ हाँ रे कहुँ टो गवरी अमवल बारी, लइ जाए
हरे अमवल बारी हो गवरी, फरी रे डेखाए ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गवर ढियरी, चली न भए
हरे अमवल बारी हो गवरी भए रे गइनै ठाढ़ ।
हाँ हाँ रे अमवल बारी गवरी, लेहनै पैठार
हरे सेटा कोयलिया हो, छोरनै रे टुहकार ।
हाँ हाँ रे किया महिन डेखले कोयली नाँड्गर न लुल
हरे काहेक कोयली, छोरले रे टुहकार ।
हाँ हाँ रे टब हुन बोलै कोयली, बोलै रे भिना बोल
हरे सुनके गवर ढियरी, भइनै रे जर छाए ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे,जब हारकै गुरटा, माचिकार कै फट्का सिसा कै गोली गवरी, डरनै चलाए ।
हाँ हाँ रे चलाए ।
अरी हो काँधे गुरटा गवरी, लेहनै उठाए ।

॥ चौपाइ २

हाँ हाँ रे उंचे कइ मारे गवरी, निंचे हुइ जाए
हरे माइ मडागिन पाछे, गोली रे गिरी जाए ।
हाँ हाँ रे सिसा कइ गोली मडागिन, लेहनै उठाए
हरे मोँरे टो गवर ढियरी, कइलो रे बरामार ।
हाँ हाँ रे डोसरे टो गोली गवरी, डरनै चलाए
हरे भुकल गोली हो गिरै, बासुडेव कइ पास ।
हाँ हाँ रे सिसा कइ गोली बासुडेउ, लेहनै उठाए
हरे मोँरे टो गावर भइने कइलो रे बरामार ।
हाँ हाँ रे औढा नगरियक फुलवा, मारी रे गिराए
हरे मिठा असा कोइलिह, डेहनै भुकाए ।
हाँ हाँ रे टिस्रा टो गोलिया गवरी, डरनै चलाए
हरे भिठा अस कोइली परनै रे खहराइ ।
हाँ हाँ रे भाँगी पाट टुरल गवरी, टोपी भला डे
हरे बिस्टरा गुवा हो, भए रे गइनै मोर ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब काहे लगनै गवर ढियरी, सुनो सुनो हो, कारिक चिमटिया, कारिक कौवा, कारी गिढिनिया, सियरी सिड्घिनिया, जिन जायोह मसुवा भछाने डुठी बघिनिया बहिनी अरी चौकी हो बइठे । हाँ हाँ रे चौकी बइठे । अरी हो कानिक खभा गवरी लेहनै उठाए ।

चौपाइ ३

हाँ हाँ रे इह सेटिन गवर ढियरी, चली न भए
हरे जाइ पहुँचल गवरी बासडेउ कइ पास ।
हाँ हाँ रे कौने काज गवरी अइलो रे मोरे पास
हरे सोहे बाट गवर भइने, कहो रे अरठाए ।
हाँ हाँ रे अमरिट घरिया मामा, महिन डइ डेओ
हरी वेंटुक डन्डा मामा, महिना रे डइ डेओ ।
हाँ हाँ रे सेंट टो डुलैचा मामा, महिन रे डइ डेओ ।

हरे बाओन बेनिया हो मामा, महिन रे डइ डेओ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब काहे लगनै बासुडेउ सुनो सुनो हो गबर भइने, घमकी घमासल, पनकी पियासाल भुखकी भुखासल अइलो मोरे डुंह्री डुवारे पर अरे करो निरहो अहार । हाँ हाँ रे अहार ।

चौपाइ ४

हाँ हाँ रे भाली टो मकुनियक बासडेउ भाट बनाए
हरे उरुड मुँगिवक बासडेउ, डलवा रे बनाए ।
हाँ हाँ रे अगली टो छेगरवक बासडेउ मसुवा बनाए
हरे रोहुवा मछरियक बासडेउ मुरिया रे बनाए ।
हाँ हाँ रे सेम टो टोरैयक बासडेउ टिनवा बनाए
हरे साग चिचरवक बासडेउ, टिनवा बनाए ।
हाँ हाँ रे सेटा हो करकुल के बासडेउ मसुवा बनाए
हरे घुटरु परेउनक बासडेउ, मसुवा रे बनाए ।
हाँ हाँ रे अट्ना चिज बासडेउ कइनै रे टयार
हरे उठहु न गावर भइने, जौना रे जेइ लेओ ।
हाँ हाँ रे सोनकी खराउ बासडेउ आगे ढइ डे
हरे सोनकी गरुवामा बासडेउ पानी डइ डे ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे, जब बासडेउ सोनकी ठरियामा सोरहो भोजन, बरहो कलवा, परोसै, जेइ ले ओ गावर भइने जौना रे हमारे । हाँ हाँ रे हमारे ।
अरी हो आठ कौरा गौरी करे रे अहार ।

चौपाइ ५

हाँ हाँ रे सोनकी किरोचिया लइके डाँटवा किरौचै
हरे गंगा जमुनक पानी लइके, कुल्ला रे कइ ले ।
हाँ हाँ रे सेट टो डुलैचा बासडेउ लेहनै बिछाए
हरे छिन एक गावर भइने करो रे सेउनार ।
हाँ हाँ रे बहु टो बहिया गइनै ओहे पछियाउ
हरे छिन एक गावर ढियरी, गइनै रे भकाए ।
हाँ हाँ रे डुढी टो बघिनिया बहिनी रोइनै आँसुके ढार

हरे अँसुवा चुवल गवरिक, पयल परी जाए ।

॥ **दोहा** ॥

आज जैसे जब कहे लगनै गावर ढियरी सुनो सुनो बासडेउ मामा, टुहरे लवरी बचरि यक अनुठा पानी परल मोर पिठे । हाँ हाँ रे मोरे पिठे ।

आज जैसे, जब कहे लगनै बासडेउ सुनो सुनो हो गावर भइने अपने डस अङगुरी बिस घन गाँठ गुरिया लइके अरी डरहो बिचारे ।

हाँ हाँ रे डरहो बिचारे ।

अरी हो डस गुन गुरिया गवरी डरनै बिचार ।

चौपाइ ६

हाँ हाँ रे सेट टो डुलैचा गावर भइनै, लेउ रे उठाए
हरे बावन बेनिया हो भइने, सिर हे चह्राव ।
हाँ हाँ रे अमरिट डरिया हो भइने कोंछे लइ लेओ
हरे बेँटुक डन्डा भइने, हाँठे लइ लेओ ।
हाँ हाँ रे इह सेटिन गावर ढियरी चली न भए
हरे अमवल बारी हो गवरी भए रे गइनै ठाह्र ।
हाँ हाँ रे सेट टो डुलैचा कोइलिह डेहनै अह्राए
हरे बेँटुक डन्डा लैके, ठोकी रे जगाए ।
हाँ हाँ रे अमरिट घरिया गवरी, मुँखहे लगाए
हरे बावन बेनिया हो लैके, डेव्रै रे झिंझकोर ।
हाँ हाँ रे पावन सारिके जिउ गइनै रे पुलह
हरे सेट कोयलिया हो उठनै रे हहराइ ।

॥ **दोहा** ॥

आज जैसे जब कहे लगनै गावर ढियरी, सुनो सुनो हो कारी कोइलिया सात जुग जाइ, कल जुग आइ, मनपती मनुवा अवटार जब लिंही, टुहारे आँरा कौवा घोरी, कौवा फोरहीं । टुहरे चुगलन कौवा डरही हो उराए । अरी हो कल जुग मा कोइली रहबो सही नाम ।

चौपाइ ७

हाँ हाँ रे कानी टो खभा हो गवरी भइ गइनै ठाह्र
हरे सोह्र सय भौंरा हो, छोरनै र गुन्जार ।
हाँ हाँ रे किया महिन डेखले भौंरा, नाइगर न लुल

हरे काहेक भौंरा हो, छोरलो रे गुन्जार ।
हाँ हाँ रे सुन हुन भौंरा हो, बिनती हमार
हरे मनकी सरिवरके रहिया हो भैया, डेहो रे बटाए ।
हाँ हाँ रे कैठा भिट्टर सार मै नाही जानु
हरे मै नही जानु मनसी सरिवरकै राह ।
हाँ हाँ रे सुन हुन भौंरा हो, बिनती हमार
हरे डेबुं सरापी हो भौंरा, हुइबो रे जर छाए ।
हाँ हाँ रे काहेक टंइ गावर ढियरी डेबे रे सराप
हरे जिया न परापट गावर ढियरी, महिन कुछु डेओ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब कहे लगनै गावर ढियरी सुनो सुनो हो, सोह्र सय भौंरा, छट्टिस फुला लोह्रबो, काठ कोरैमा भौंरा लेबो हो, बसेर । हाँ हाँ रे बसेर ।
अरी हो डेहनै आसिस गवरी चली न भए ।

चौपाइ ८

हाँ हाँ रे कजरी बनवा गवरी, भइ गइनै ठाढ़
हरे सिहबल मंजोरवा हो नाच रे करे लागै ।
हाँ हाँ रे काहेक टंइ सिहबल मजोरवा नचले झिझकोर
हरे मनसी सरिवरके रहिया भैया डेहो रे बटाए ।
हाँ हाँ रे नारा टो खगरबा हो, चरे गरुल डुइ चार
हरे मनसी सरिवल के बिचम बाटै, केबला कै फुल
हाँ हाँ रे मनसी सरिवरके घाटे पर बाटै, चनन कै बिरिछ
हरे जेही टर महादेव हो, दुनी रे लगाए ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब कहे लगनै गावर ढियरी सुनो सुनो सिहबल मंजोरवा टुहरे गोर छोर...करिय आठो अङ्ग सिंगार हुइ, जैसे सोनवा लौके ओइसे लौके डेहिया टुहारे, हाँ हाँ रे टुहारे ।
अरी हो कली जुग मा, रहबो सही नाम

चौपाइ ९

हाँ हाँ रे नर टो खगरवामा गवरी भइ गइनै ठाढ़
हरे सेट गरुलबा हो, छोरनै रे गुजार ।
हाँ हाँ रे किया महिन डेखलो सेट गरुलबा, नाँगर लुल

हरे मनसी सरिहवाके रहिया हो भैया, डेबो रे बटाए ।
हाँ हाँ रे मनसी सरिहवाके बिचमा बाटै, केँवलके फुल
हरे मनसी सरिवरके घाटे पर बाटै, चनन कै बिरिछ ।
हाँ हाँ रे चनन बिरिछ टर महाडेव ढुँनिया लगाए ।
हरे बाघ मारी महाडेव, आसन लगाए ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब कहे लगनै गावर ढियरी सुनो सुनो हो सेट गुरुलवा टुहरे माइ चनन पनन विरिछा करिका अंग काटै टो ओकर गरहा भुराए टौने भुनागन सपनके करबो निरहे अहारे । हाँ हाँ रे अहारे ।
अरी हो डेहनै आसिस गवरी, चली न भए ।

चौपाइ १०

हाँ हाँ रे मनसी सरिवर गवरी भइ गइनै ठाड़
हरे लागल डेखल गवरी केवलकै फुल ।
हाँ हाँ रे मन टो अगुन गवरी मन रे छगुन
हरे कैसे कैसे भइ फुल रे लोढ़ी लिउ ।
हाँ हाँ रे मनसी सरिवरके बिचमा बाटै केवलकै फुल
हरे कौने उपाय रे कइ के फुल रे लोढ़ी लिउ ।
हाँ हाँ रे अचला छोरी गवरी नैया रे बनाए
हरे जेंही पर बैठी गवरी नैया रे चलाए ।
हाँ हाँ रे केवल कै फुल गवरी लोढ़ी जब ले
हरे जौने टो फुलवा गवरी सिर रे चढ़ाए ।
हाँ हाँ रे मनसी सरिवरके घाटे गौरी नैया हो लगाए
हरे सिहवल घोरवक पर फुल रे लडाए ।
हाँ हाँ रे चनना विरिछ टर गवरी भइ नै ठाड़
हरे अपन समियौह हो गवरी लेहनै भेटाइ ।

॥ दोहा ॥

आज जैसे जब कहे लगनै गावर ढियरी सुनो सुनो हो समिया महाडेव गावन डुलारु हुनु हुनु ढुप चुक हुइटो टेकर करे उह गुन माफ, हाँ हाँ रे गुन माफे ।

स्रोत : बुझावन थारु
बाँसगढी नपा-४, लक्ष्मणपुर, बर्दिया

२१. सिंग्रो गित

सङ्कलक: पवनकुमार थारु

सिंगारु पानी बर्साइक लग ठारु (मरड) मनै खेटवा जोटेवेर गैना गित हो । यम्ने एक ठरि या गंगा लहाइ जाइक लग अपन डाइसे खराउ, छुरिया, लट्ठी, ढोटी मंग्ले बा । ऐसेबेर घरहीं लहैना मनै आब काजे गंगा लहाइ जाइ परल कहेबेर उ कहठ, 'पहिले टे मै छोट रहुँ, आब टे गबरु जवान हो गैनुँ ।' इ कहाइके अर्ठ जवानीम डेस डुन्या खाने परल, टब ना अक्किल आइ कना बा ।

डेहुन मायारी रे चनन खराउवा, मै चली जैबु गंगा रे असनान २
डेहुन मायारी रे सोनके टेनिवा मै चली जैबु गंगा रे असनान २
डेहुन मायारी सोनमुख छुरिया मै चली जैबु गंगा रे असनान २
डेहुन मायारी रे पियरे ढोटिवा मै चली जैबु गंगा रे असनान २
सब डिन रे पुट घरही लहैलो, कौने टो करनवा जैबो रे गंगा असनान २
नाडे मै रहनु रे मैया ढुरी माटी मै खेलनु, अब टो हुइनी गभरु मै जवान २
भिटरेसे निकरल चेपवा बहरी भइलै ठारे, चली टो डेहनै गंगा रे असनान २
गोरवै टो घालल चेपवा छनन खरौवा, सोनकी टेनिवा हाँठवै डेहल चेपवा सोनमुख छुरिया २
पिरे ढोटिवा काँढे रे ढइ डे, डरही टो सिंगारु रे मुरिया मिसहै २
उपरे टो चेपवा करै गंगा रे असनान, काहे काटै चेपवा करै गंगा रे असनान २
काहेक टै चेपुवा रे पानी ढिंगुलैले, असके सरप्पु हुइबे रै जरछार २
नाही मइ सिंगारु पानी ढिंगुलैलु, हेनुवा कुमहारुक भुरी भैसिना पानीय रे ढिंगुलाइल २

स्रोत: बजारही थारु/बजन्दैया थारु/बहादुर थारु/सन्तु थारु
बैजनाथ गाउँपालिका-८, गुरदयालपुर, बाँके

२२. डफके गित

डफक गित माघ लगायट जार मैन्हम गैना गित हो । यि गित भजन हस लागठ ।

न हिजे हिरे धर्ती २
टोहर नमो पियारे २
जैसे पुराने बारा हो २
टोहर नमे पियारे २
उता बल्की जसै पसरे २
बाला पराब उनको नही धर्ती पसरे २
बाला जगमे टोह नमक २
रमा न बाला सोह नमके २

जैसे पुराने जलमे उपटेह गरही २
वाला टोहर नमे पियारे पराब उनके नही धर्ती फेहबाय २
जिनके रहपय टोहर नामा पियारे २
जैसे पुरैना जलमे उपडेहे गरही २
माना पाटा उनको नही लेवे धर्तीक लेब पराए २
सोहन नमा पराए २
जिने रहुवा पारा पराए, सन्त पारे नामा जगमा पियरा २
धर्ती समुन्द्र एक्कै वहै २
उनके वारा उटरके पापी उनके डारा खटके सरा २
जिन रहन पारा सन्तो जगमे पियरा २
जिनके समुन्द्र एक्कै बहै लर्कै सरै रहे रे २
साधु सन्त सब परा उटरकै कापी उटरके जन टोहर रमा पियारे २
जिनकै रहना हे परा टोहर रामा पियरा धर्ती समुन्द्र एक्कै बहब लगता रहैं २
साधु सन्त सब परा उटरकै कापी उटरके जन टोहर रमा पियारे २
जिनकै रहन है परा साधु सन्त २
हरे सारा मानी कि मैया कहिके अटी बना रे पियरा २
पवन रहे टुहर सारे समुन्द्र पियरा टोहर रामा पियरा २
जिनकै रहना है पारा टोहर रामा पियरा २
सारा साटी टोरे मैया बच गया टरिया टोहर २
पवन रहे टुहर सारे २
जिनके रहना है पारा टोहर रामा पियरा २
सारा सानी मैया चर गया टरिया टोहर बच गया टोहर पियरा २
पवन रहे टुहर सारे कनका पियरा, रामा पियरा २
अपन टरै हु रहे टोहर रामा पियरा २
जिनकै रहना है पारा टोहर रामा पियरा २
सारा साटी मैया चर गया टरिया टोहर पियरा २
पवन रहे टुहर सारे कलका पियरा रामा पियरा २
जिन है रहना है टोहर रामा पियरा २
जिनको रहना है सन्तो रामा पियरा २

स्रोत: महेश थारु/बिहारी थारु
बैजनाथ गाउँपालिका-८, गुरदयालपुर, बाँके

२३. सजना

यि सजनामे सिताहे ओकर सखिन अजोद्या नगरके जनकपुर गाउँ ओ कोसिल्या अस सासु, राजा दसरथ हस ससुरा पैम कना मागन करे कले बटिस । का कैलो टे राम हस पिहवा पैलो कहबेर माघ लहैनु, अटवारिक ब्रत बैठनु टब भेटैलुँ कजना जवाफ डेहठ ।

पहिले मगन सिता मागै रे कौने विढा पुरावै हो २
अरी मागै अजोध्या नगरी जनकपुर गाउँ हो २
डोसरे मगन सिता मागै रे कौने विढा पुरावै हो अरे २
मागै कोसिल्या अस सासु ससुर राजा दसरथ हो २
टिसरे मागन सिता मागै रे कौने विढा पुरावै रे २
अरी मागै राम अस सैंया लछमन अस डेबर हो २
हरे गाउँके सखिया सब पुछै रे २
पुछै जनकी कुवरियै हो २
अरे कौने ब्रत सिता रहलो २
राम बर पइलो हो २
हरे माघेक मघनी लहैनु रे २
ब्रत एक रहनु हो हरीब्रत रहनु अटवरिया
राम वर पइनु हो २ ।

स्रोतः ठग्गु थारु
बैजनाथ गाउँपालिका-८, गुरदयालपुर, बाँके

२४. रौनक गित

सङ्कलकः मानबहादुर चौधरी "पन्ना'
वीरेन्द्रनगर-२, लौवस्ता, सुर्खेत

सख्या नाचेम पैया लागेबेर गा जैना रौनक गितमे राम, सिता, लछमन, रावनके खिस्सा बा । मिरगाके रुप लेके आइल रावनहे राम, लछमन मारेगैल बेला रौना सिताहे हरन कैके लैगैले बा । डिक्याइल राम अपन भइवा लछमनहे कि टुँ भौजिक संग लागल रहो कहीके संका कर्ठा । रिसाइल राम लछमनहे अपन भौजीहे मारके लानो, मै भोजन बनैम कहठाँ । मने लछमन हरना मारके ओकर करजा लैजैठाँ ।

केही कहुँ झाँरी केही कहुँ टोंटी
ए हो ऽऽऽ के भरी लावै गंगाजल पानी ।१॥
सोन कही झाँरी रुपन लागल टोंटी
ए हो ऽऽऽ सिता भवजी लावै गंगाजल पानी ।२॥

पनिया जइटी सिता सोन कही मिरगा डेख
ए हो ऽऽऽ सोन कही मिरगा चुंडल बारी फुलवार ।३॥
पानी भरटी सिता सोन कही मिरगा डेख
ए हो ऽऽऽ सोन कही मिरगा पानी ढिंगुला ।४॥
कट्हु न गैलो राम ओ लछुमन
ए हो ऽऽऽ जाओ र भाइ सोन कही मिरगा न मार ।५॥
आघ आघ रावन, पाछ भाइ लछुमन हो
ए हो ऽऽऽ डुइ भाइ चलल सोन कही मिरगा न मार ।६॥
मारू ट मिरगा बिडसल फुलबारी
ए हो ऽऽऽ उचहीसे टाकल मिरगा खलही चली जा ।७॥
उचहीसे टाकल मिरगा खलही चली जा
ए हो ऽऽऽ खलहीसे ताकल मिरगा उचही चली जा ।८॥
सोन कही मिरगा बिडसल फुलबारी
ए हो ऽऽऽ मारू ट मिरगा बचाउ फुलबारी ।९॥
सोन कही मिरगा मारी जे अनहो
ए हो ऽऽऽ जेकर खोलही चोलिया सिया ।१०॥
सोन कही कारी रुप न लागल ढनुखा
ए हो ऽऽऽ चली भइल राम सोन कही मिरगा मार ।११॥
कट्हु न गइल सोन कही मिरगा न मार हो
ए हो ऽऽऽ सोन कही मिरगा ढरल जोगियाके भेख ।१२॥
हिचहिक टानल राम हुच होइजा
ए हो ऽऽऽ हुचहिक टानल राम उच होइजा ।१३॥
हिचभर टानल राम बल भर फाँकल
ए हो ऽऽऽ सोन कही मिरगा मारी गिरा ।१४॥
सोन कही मिरगा मारी गिराइल
ए हो ऽऽऽ चली भइल राम अपनी महल ।१५॥
एरिया न नेंगल परगा न डारल
ए हो ऽऽऽ ठाउँ ठाउँ राम परगा न डार ।१६॥
परगा न डारल राम एक सुर नेंगल
ए हो ऽऽऽ पुगी गैल राम अपनी महल ।१७॥
जनकी भवजिह बाहरसे गोहरैल हो

ए हो ऽऽऽ गभुरा सुनसान सिता भवजी नही बोल ।१८॥
लेंरियाले मारल राम बजरा केंवार
ए हो ऽऽऽ नही रि उपकल मोरे बजरा केंवार ।१९॥
बहियाले मारल राम बजरा केंवरिया
ए हो ऽऽऽ उभकी ट गैल मोरे बजरा केंवार ।२०॥
पैठल राम अपनी महल
ए हो ऽऽऽ चुल्ही नही आगी, गगर नहि पानी ।२१॥
चुल्ही नही आगी, गगर नही पानी
ए हो ऽऽऽ बँढल चुरुइगन घोर नही घाँस ।२२॥
बँढल चुरुइगन घोर नही घाँस
ए हो ऽऽऽ चुल्ही नही आगी, गगर नही पानी ।२३॥
चुल्ही नही आगी, गगर नही पानी
ए हो ऽऽऽ कहोर गैली जनकी कुवाँर ।२४॥
आओ आओ लछुमन भाइ फुँको एजुरार
ए हो ऽऽऽ सोनकी मन्डिल घुमी घुमी हेरो भइया लछुमन ।२५॥
सोन कही मन्डिल घुमी अइनु राम
ए हो ऽऽऽ नही हुइटी जनकी कुवाँर ।२६॥
आओ आओ लछुमन भइया फुँको एजुरार
ए हो ऽऽऽ सोनकी नगरिया घुमी हेरो भइया लछुमन ।२७॥
सोन कही नगरिया घुमी हेरी अइनु राम
ए हो ऽऽऽ नही हुइटी जनकी कुवाँर ।२८॥
आओ आओ लछुमन भाइ फुको एजुरार
ए हो ऽऽऽ सोन कही सहरीया घुमी हेरो भइया लछुमन ।२९॥
सोन कही सहरीया घुमी हेरी अइनु राम
ए हो ऽऽऽ नहि हुइटी जनकी कुवाँर ।३०॥
आओ आओ लछुमन भाइ फुको एजुरार
ए हो ऽऽऽ सँकिरी गलिया घुमी हेरी भइया लछुमन ।३१।
सँकिरी गलिया घुमी अइनु राम
ए हो ऽऽऽ नही हुइटी जनकी कुवाँर ।३२॥
\+ + + + +
एक फल अमरुट डार कइस लागी

ए हो ऽऽऽ मुवल मनुखा कइस बहुरी ।३३॥
कि भाइ खइल बनकी सियरिया
ए हो ऽऽऽ कि भाइ लगलो अपनी भवजिक सँग ।३४॥
ना कुइ खइल बनकी सियरिया
ए हो ऽऽऽ ना मै लगनु अपनी भवजिक सँग ।३५॥
कौन भवनसे जोगिया एक आइल हो
ए हो ऽऽऽ कौन भवनसे जोगिया चली जा ।३६॥
पुरुब भवनसे जोगिया एक आइल हो
ए हो ऽऽऽ पच्छिउ भवनसे जोगिया चली जा ।३७॥
टर ढरल सोनवा ओ रुपवा उपर टिल चाउर
ए हो ऽऽऽ इह लेओ जोगिया ढरमका भिछिया ।३८॥
भिख नही लेहल जोगी मुख नही बोलल्
ए हो ऽऽऽ यघटिक हेरल जोगी नयन हमार ।३९॥
हाँठ पसारी सिता भिछिया न डेहली
ए हो ऽऽऽ टवहु न लेहल जोगी भिछिया हमार ।४०॥
घुरा टरकी सिता भिछिया न डेहली
ए हो ऽऽऽ सिता हारी लैगैल लंकापती रावन ।४१॥
लिहल रावन जोगियक भेख हो
ए हो ऽऽऽ सिता भवजिहन करल हरन ।४२।
\+ + + + +
चुल्ही नही आगी गगर नहि पानी
ए हो ऽऽऽ केहोर गयली जनकी कुवाँर ।४३॥
आओ आओ लछुमन भाइ फुँको एजुरार
ए हो ऽऽऽ सोनकी महलिया घुमी घुमी हेरो भइया लछुमन ।४४॥
सोन कही महलिया घुमी अइनु राम हो
ए हो ऽऽऽ नहि हुइटी जनकी कुवाँर ।४५॥
आओ आओ लछुमन भइया फुँको एजुरार
ए हो ऽऽऽ सोनकी नगरिया घुमी हेरो भइया लछुमन ।४६॥
सोन कही नगरिया घुमी हेरी अइनु राम
ए हो ऽऽऽ नही हुइटी जनकी कुवाँर ।४७॥
आओ आओ लछुमन भाइ फुँको एजुरार

ए हो ऽऽऽ सोन कही सहरीया घुमी हेरो भइया लछुमन ।४८॥
सोन कही सहरीया घुमी हेरी अइनु राम
ए हो ऽऽऽ नही हुइटी जनकी कुवाँर ।४९॥
आओ आओ लछुमन भाइ फुंको एजुरार
ए हो ऽऽऽ सकिरी गलिया घुमी हेरो भइया लछुमन ।५०॥
सकिरी गलिया घुमी अइनु राम
ए हो ऽऽऽ नही हुइटी जनकी कुवाँर ।५१॥
कि भाइ खइल बनकी सियरिया
ए हो ऽऽऽ कि भाइ लगल अपनी भवजिक सँग ।५२॥
ना कुइ खइल बनकी सियरिया
ए हो ऽऽऽ ना मै लगनु अपनी भवजिक सँग ।५३॥
ना मै लगनु अपनी भवजिकसँग
ए हो ऽऽऽ सिता हरी लैगैल लंकापती रावन ।५४॥
कौन भवनसे जोगिया एक आइल हो
ए हो ऽऽऽकौन भवनसे जोगिया चली जा ।५५॥
पुरुब भवनसे जोगिया एक आइल हो
ए हो ऽऽऽ पच्छिउ भवनसे जोगिया चली जा ।५६॥
एगली डुवरिया ढुनि जगाइल हो
ए हो ऽऽऽ पछली डुवरिया भिछिया मंगाइल हो ।५७॥
पछली डुवरिया भिछिया मंगाइल हो
ए हो ऽऽऽ रथही चढी लइगैल सिता हमार ।५८॥
उठो हनुमान खखौरा हाँक पारे हो
ए हो ऽऽऽ चारकोन्वा सबडा ओना ।५९॥
\+ + + + +
कटहुन गैलो लछुमन भाइ हो
ए हो ऽऽऽ जाउ र भाइ सिता भवजिक करजा न ले ।६०॥
सिता भवजिक करजा मारी जे अनहो
ए हो ऽऽऽ जेकर करजा भोजना लगा ।६१॥
सिता जनकी बाटी गरभ भास्टी हो
ए हो ऽऽऽ मै कसिक मरबु आपन भवजी ।६२॥
टु भवजी हुइटो नकटी छिनारी हो

ए हो ऽऽऽ टुहिन भवजी मरबु मै ढनुखा चह्रा ।६३॥
रुइ लागल सिता नैना आँसु डारे हो
ए हो ऽऽऽ मै ट जे हुइटु रौखा पती आ ।६४॥
के करी ढनुखा के करी फौजा हो
ए हो ऽऽऽ कौन सुट डोरिया फटका भङ्गा ।६५॥
सोन कही कारी रुप न लागल ढनुखा
ए हो ऽऽऽ झिनसुट डोरिया फटका भङ्गा ।६६॥
हाँठ लेहल लछुमन सोन कही ढनुखा
ए हो ऽऽऽ काख सुटी भिरल लछुमन रुप न कारी ।६७॥
काख सुटी भिरल लछुमन रुप न कारी हो
ए हो ऽऽऽ चली भइल लछुमन कजरिक बन ।६८॥
आघ आघ डिउरा बटिया सवारे हो
ए हो ऽऽऽ पाछ पाछ सिता भवजी छिरिकट जा ।६९॥
रुइ लागल सिता नैंना आँसु डार हो
ए हो ऽऽऽ मै ट जे हुइटु रौखा पती आ ७०॥
काठ मै कटबु गभुर बनैबु हो
ए हो ऽऽऽ जिही मन सिता भवजी लेहहो बसेर ।७१॥
जिहिम सिता भवजी लेहहो बसेर हो
ए हो ऽऽऽ मै ट जे मरबुं बनकी हरनिया ।७२॥
बनकी हरनिया मारी गिरैबुं हो
ए हो ऽऽऽ जेकर करजा झिकी लैयान ।७३॥
हिचभर टानल लछुमन बलभर फाँकल हो
ए हो ऽऽऽ बन की मिरगा मारी गिरा ।७४॥
बन की हरनिया मारी गिराइल हो
ए हो ऽऽऽ जेकर करजा झिकी लैयान ।७५॥
एरिया न नेंगल लछुमन परगा न डारल हो
ए हो ऽऽऽ ठाउं ठाउं लछुमन परगा न डार ।७६॥
परगा मारी लछमन एकसुर नेंगल हो

ए हो ऽऽऽ अपनी महलिया भइगल ठाइ ।७७॥
अनन्तु राम डाडु सिता भवजिक करजा हो
ए हो ऽऽऽ लेओ र डाडु भोजना लगा ।७८॥
अनलो र लछमन भाइ सितक करजा
ए हो ऽऽऽ लेओ र भाइ भोजन लगाइ ७९॥
वाइ पाछ बिछैहो भइयो एररा ओ खररा हो
ए हो ऽऽऽ माभ्क ठाउँ बिछैहो सटरङ्ग गोंडरी ।८०॥
वाइ पाछ बैठही गँवकी गँवलिया हो
ए हो ऽऽऽ माभ्क ठाउँम बैठही राम ओ लछुमन ।८१॥
माभ्क बैठही राम ओ लछमन
ए हो ऽऽऽ सितक करजा भोजन लगा ।८२॥

स्रोत : छेदिया चौधरी
विनपा-५, तिलपुर, सुर्खेत
अन्य सहयोगी : ठुच्या चौधरी विनपा-२, जयपुर, सुर्खेत
दुर्गा चौधरी विनपा-२, ठौरी, सुर्खेत

२५.माघ मनैना गित

सङ्कलक: मानबहादुर चौधरी
वीरेन्द्रनगर-१०, बुदबुदी, सुर्खेत

थारुन्‌के लाबा बरस माघ (माघी) । यि माघ लहैनासे पहिले पुस मसान्तमे गैना गित हो । जन्नी-ठारु डुन्जाने इ गित गैठाँ ।

बाबा कि सगरवा मुरिया लहान गैनुं हाँ-२
सखिए हो काल्हिक डिनम बिपटी लहान जैना बा
बिपटी लहाए जैवुं हाँ बाबा कि सगरवा,
सखिए हो महादेवसे मँगवुं पुट र बरडान- २
डुमुहनियाँ लहान जैवुं हाँ महादेव पुकरवुं,
सखिए हो महादेव जे डिहही छाबा छाइ बरडान ।
माघ लहैवी डुमुहनियाँ सगरवा रे हाँ-२,
सखिए हो महादेव डिहही मागन बरदान ।
डुमुहनियाँ लहान जैटुं हाँ चाँद सुरुज साँची,

सखिए हो चाँद सुरुज पुराकहिसे मगलुँ बरडान ।

स्रोत: सङ्कलक स्वयम्

२६. माघ संक्रातिम गैना गित

माघ टिउहारमे यि १ गटे गैना गित हो । यि गित डोहरी हस एक फेरा मर्डाना, डोसर फेरा जन्नी मनै गैठाँ ।

मर्डाना– बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो टोपिया छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो सिन्डुरा छुटल पानी घाट ।
मर्डाना– बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो छरकी छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरबा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो टिकुली छुटल पानी घाट ।
मर्डाना– बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो झुलवा छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरबा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो नठिया छुटल पानी घाट ।
मर्डाना– बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो कनठी छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो झिल्मिलिया छुटल पानी घाट ।
मर्डाना– बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो मुन्डरी छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो सुटिया छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो गुरिया छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो टँरिया छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरबा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो चुरिया छुटल पानी घाट ।

जलाना–बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो चुरुवा छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो पैरी छुटल पानी घाट ।
जलाना–बाबा कि सगरवा मैरी मुरिया लहैनु रे हाँ-२
सखिए हो भिछिया छुटल पानी घाट ।
मर्दाना– लडिया लहान गैनु हाँ, चाँद-सुरुज साँचि-२
सखिए हो चाँद-सुरुज डिहहीं माँगल बरडान ।
जलाना– डुमुहनिया लहान गैनु हाँ, चाँद-सुरुज साँची-२
सखिए हो चाँद-सुरुज डिहहीं माँगल बरडान ।

स्रोत: सङ्कलक स्वयम्

२७. माघ बखेरीक गित

माघक् डुवासर बिहान लौवा कार्ययोजना बनाइक लग महटौंक अंग्नम् छलफल बैठक करवेर यि गित गा जाइठ ।

महटौंक अँगनाम खररा बिछाइ रे हाँ
महटौंक अँगनाम गोंडरी बिछाइ रे हाँ
सखिए हो महटौंक अँगनाम बैसना बखेर
महटौंक अँगनाम हँसली ओ खेलली रे हाँ
सखिए हो इह रि अँगनवा छुटटी मैयाँ लाग
महटौंक अँगनाम हँसली ओ खेलली रे हाँ
सखिए हो इह रि बहरीया छुटटी मैयाँ लाग
महटौंक अँगनाम हँसली ओ खेलली रे हाँ
सखिए हो इह रि अँगनाम सोन फुला फुल
महटौंक बहरीयाम डरिया बिछाइ रे हाँ
सखिए हो महटौं जे डरहीं हजार रुपडान
आभुक डिनम हँसबी ओ खेलबी रे हाँ
सखिए हो काल्हिक डिनबाम हुइबी जोरा फुट ॥

स्रोत: सङ्कलक स्वयम्

२८. सजना (क)

सङ्कलक: भुवन चौधरी
घोराही-१६, भगवानपुर, दाङ

सजना खेटिपाटी करेबेर गा जाइठ। यि सजनामे खाल्ह ठाउँमे कसिन, उँच ठाउँमे कसिन राइरब्वि लगैना कना भोजहिक चिन्टा बा।

हरी, कहाँमन बुअइबु मेठी सगवा रे
कहाँमन बुअइबु लौरङ बिरवा
कहाँमन बुअइबु लौरङ बिरवा, सजन घर जयबु
हरी डुमना बुअइबु मेठी सगवा रे
मेररा बुअइबु लौरङ बिरवा
मेररा बुअइबु लौरङ बिरवा, सजन घर जयबु
हरी, कहाँमन बुअइबु लाही टेलवा रे
कहाँमन बुअइबु मसरी फुलवा
कहाँमन बुअइबु मसरी फुलवा, सजन घर जयबु
हरी बारी रि बुअइबु लाही टेलवा रे
खेटवा बुअइबु मसरी फुलवा
खेटवा बुअइबु मसरी फुलवा, सजन घर जयबु
हरी, कहाँमन बुअइबु उरुङ सिल्टुङ्वा रे
कहाँमन बुअइबु हरडी बेसरवा
कहाँमन बुअइबु हरडी बेसरवा, सजन घर जयबु
हरी आरी रि बुअइबु उरुङ सिल्टुङ्वा रे
पखुवा बुअइबु हरडी बेसरवा
पखुवा बुअइबु हरडी बेसरवा, सजन घर जयबु

स्रोत: छविलाल चौधरी
घोराही-१७, गुलरिया, दाङ

२९. सजना (ख)

यि सजनामे मन नै परल घर डेहलमे बाबक्प्रटि भोजहिक गुनासो बा। अपन मजा घर रहलमे पिहवक् घर खाल्ही उचा कोनटीले लौलीक रिट नै कट्ठिन।

हरी, काही रि डेहल्या र बाबा खाल्ही रि उचा कोनटी २
खोरियक मार भुइया ढरठु उलटी भुइया गइल।
हरी, काही रि डेहल्या र बाबा खाल्ही रि उचा कोनटी २
गोलरक मड भुइया ढरठु उलटी भुइया गइल।
हरी, काही रि डेहल्या र बाबा खाल्ही रि उचा कोनटी २
टेपरक पक्वा भुइया ढरठु उलटी भुइया गइल।

हरी, काही रि डेहल्या र बाबा खाल्ही रि उचा कोनटी २
डोनियक टिना भुइया ढरठु उलटी भुइया गइल ।
हरी, काही रि डेहल्या र बाबा खाल्ही रि उचा कोनटी २
टठियक भाट भुइया ढरठु उलटी भुइया गइल ।

स्रोत: जित बहादुर चौधरी
घोराही-१७, गुलरिया, दाङ

३०. गैया बेहर्ना सजना

पानी नै बर्सलेसे गैया/गोरु बेंह्रे जैना पस्चिउँहा थारुन्के पुरान चलन बा । गैया बेहर्ना सजनामे काजे गैया बेहर्ना, गैया बेह्रे जाइबेर के का लेना लगायटके बर्नन बा ।

अरी, आगी लागल बन जरल रै
जरल चारी कोन
जरी गइलै बनकी लकुरिया
गैया रे बेर जाइ ॥
अरी, चिरै चुरुङ्गन सबु रै
पानी रे बिना मुअल
ढरटी म फाट रै चिरार
गैया रे बेर जाइ ॥
अरी, सुखी गइलै
नडी नरायन टाल टलैया रै
मछुरी मरी गइलै
गलिय गलिय ढुर उरल
गैया रे बेर जाइ ॥
अरी, अलही बाँस काटी
कमवा सिटैबु रै
मै छटुरी बिनैबु
डिउरक झलुरिया
गैया रे बेर जाइ ॥
अरी, कुइ लेओ
झलुरी छटुरिया रै

कुइ लेओ छाटा
कुइ लेओ छिजनी कटोरना
गैया रे बेर जाइ ॥
अरी, भौजी लिहली
झलुरी छटुरिया रै
ननडी लिहली छाटा
मुन्सी लिहली छिजनी कटोरना
गैया रे बेर जाइ ॥
अरी, कुइ लेओ ढाल टरवाल रै
कुइ लेओ गोला
कुइ लेओ कारी ट बन्डुकिया
गैया रे बेर जाइ ॥
अरी, रजवा लिहल ढाल टरवाल रै
सिपह्वा लिहल गोला
मुन्सी लिहली कारी ट बन्डुकिया
गैया रे बेर जाइ ।

स्रोत: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

२१. ढुमरु (क)

यि गितमे जिउजार जोगियाहे रुच-रुच भिख मागन करलमे किस्निन्या डम्कैले बटि । पाछे जोगिया उहे ढुनी जगैले बा ।

बार पाछ काछल जोगी झोरी मन्टरा २
चली भैल जोगी किसनी डुवार रै हो
बार पाछ काछल जोगी झोरी मन्टरा ।
बैठल जोगी किसनी डुवार रै हो २
डइ डेब किसनी भिछिया हमार हो
बैठल जोगी किसनी डुवार ।
टर ढर सोनवा उपर टिल चावर २
डिहट जोगी भिछिया नहि लिहल
टर ढर सोनवा उपर टिल चावर ।
डिहट भिछिया जोगी नहि लिहल २

जाओ टुह जोगी नहक्रा बाहर हो
डिहट भिछिया जोगी नहि लिहल ।
नै जैबु जोगी नहक्रा बाहर हो २
डै डेव किसान भिछिया हमार हो
नै जैबु जोगी नहक्रा बाहर ।
अगली डुवार जोगी ढुनिया जगइलै हो २
पछली डुवार जोगी अलखा जगइलै हो
अगली डुवार जोगी ढुनिया जगइलै ।
झोरियासे काह्रल जोगी सजला पेंगरिया २
फुकल जोगी पेंगरिया सुनटी सुहावन
झोरियासे काह्रल जोगी सजला पेंगरिया ।

गितके स्रोट: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

३२. ढुमरु (ख)

यि गितमे भगवान् राम लछमनके टिटरा, हरना, मिरगा लगायट सवाज मारके भुज-भुज खैलक खिस्सा बा ।

एक बाँर नाँघल राम डुइ बाँर चाँपै,
डुइ बाँर नाँघल राम टिन बाँर चाँपै,
टिन बाँर नाँघल राम चार बाँर चाँपै,
चार बाँर नाँघल राम पाँच बाँर चाँपै,
उठी ट गइलै टिटरा सवार
हरी, उठी ट गइलै टिटरा सवार
मारो मारो भइया लछुमन टिटरा सवार २
हरी, ज्याकर मसवा भुजी भुजी खावै ॥
एक बाँर नाँघल राम डुइ बाँर चाँपै,
डुइ बाँर नाँघल राम टिन बाँर चाँपै,
टिन बाँर नाँघल राम चार बाँर चाँपै,
चार बाँर नाँघल राम पाँच बाँर चाँपै,
उठी ट गइलै हरीन सवार
हरी, उठी ट गइलै हरीन सवार

मारो मारो भइया लछुमन हरीन सवार २
हरी, ज्याकर मसवा भुजी भुजी खावै ॥
एक बाँर नाँघल राम डुइ बाँर चाँपै,
डुइ बाँर नाँघल राम टिन बाँर चाँपै,
टिन बाँर नाँघल राम चार बाँर चाँपै,
चार बाँर नाँघल राम पाँच बाँर चाँपै,
उठी ट गइलै मिरगा सवार
हरी, उठी ट गइलै मिरगा सवार
मारो मारो भइया लछुमन मिरगा सवार २
हरी, ज्याकर मसवा भुजी भुजी खावै ॥
एक बाँर नाँघल राम डुइ बाँर चाँपै,
डुइ बाँर नाँघल राम टिन बाँर चाँपै,
टिन बाँर नाँघल राम चार बाँर चाँपै,
चार बाँर नाँघल राम पाँच बाँर चाँपै,
उठी ट गइलै नम्महवा सवार
हरी, उठी ट गइलै नम्महवा सवार
मारो मारो भइया लछुमन नम्महवा सवार २
हरी, ज्याकर मसवा भुजी भुजी खावै ॥
उच कही टाकल लछुमन निच हुइ जावै २
हरी, उच कही टाकल लछुमन निच हुइ जावै ॥

स्रोत: छविलाल चौधरी, जित बहादुर चौधरी
घोराही-१७, गुलरिया, दाङ

२३. होरी पहर्ना गित

होरी/ढुरहेरीमे गाउंमे फाग पह्रटी गित गा जाइठ । यि गितमे कोनो खिस्सा नै रहठ । यिअवसरमे छिहर फुहर फेन गित गा जाइठ ।

होरी होरी
छिर फोरी
सेमरक ढोटा फुले रै
उपर टेमरी झुले रै
मटान अंगना खुडी बुसी
मटावा ह्वाय बरा खुसी

सै रि सै फुलही
हौ बठिन्या डुलही
सैफुल फुल आरु
झंग्यक टर कुड्ग थारु
कर्‍या भोक्टिक टिर पानी
बठिन्या मुट रड पानी
उप्परसे गिर बाला रै
सक्कु म्वार साला रै
रगंचल बौरी रगंचल
लाल बिटौला रगंचल
चम्पक फुला बारी म
होरी खेल्ना घारी म
उज्जर गोन्यम खेल्ना रड
साली भाट्क एक्क मन ।

स्रोतः बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

३४. लर्का सुफ्लैना गित (क)

ल्र्कापर्कनके लग थारु गित बहुट कम बा । इ गितमे कौरा भेटाइल लर्का जिहीटिहि बाँटके चिंगन्या पाइलसम खिस्सा बिनल बा ।

अगंना बहर्नं
कौरी भेटैनु
कौरी मै किही डिउं ?
घँसकट्वा ह डिउँ
घँसकट्वा महि का डे
घाँस डे
घाँस मै का करु ?
गैयाह डिउं
गैया महि का डे ?
डुढ डे
डुढ मै का करु ?
बिलर्‍या ह डिउँ

बिलर्‍या महि का डे ?
मुस्वा डे
मुस्वा मै का करु ?
चिलर्‍या ह डिउँ
चिलर्‍त्या महि का डे ?
चिंगन्या डे
चिंगन्या मै का करु ?
भुटी भुटी खाउं ।

स्रोत: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

३५. लर्का सुफ्लैना गित (ख)

यि गितमे लर्का सुफ्लैना गितमे लर्कक् लग डाइ बाबा चिची भाट लेहे, मच्छी मारे गैलक बर्नन बा ।

होलो रंगी रि
होलो रंगी रि
ट्वार डाइ बाबा
कहाँ गइलै रि ?
होलो रंगी रि
होलो रंगी रि
ट्वार डाइ बाबा
डोंगरक चिची भाटी लिह गइलै
चुपी चुपी रहो रि नानी, चुपी रहो रि ॥
+ + +
होलो रंगी रि
होलो रंगी रि
ट्वार डाइ बाबा
कहाँ गइलै रि ?
होलो रंगी रि
होलो रंगी रि
ट्वार डाइ बाबा
चिची भाटी खाय गइलै रि
मास मास खैहीं, हार हार लानडेहिं

निन्डा रहो रि नानी निन्डा रहो रि ।

\+ + +

होलो रंगी रि

होलो रंगी रि

ट्वार डाइ बाबा

मच्छी मार गइलै रि

डुडु भाटी खवाकन

सुटा डेबी रि ।

स्रोतः स्यानी चौधरी
घोराही-१६, भगवानपुर, दाङ

३६. मैना (क)

बन्वा काठी, पाटा टुरे गइलमे खास कैके जन्नी मनै मैना गना चलन बा । यि मैना गितमे लँवऱ्या अपनहे मौरड डेस भगाके लैजना अर्जी कर्ले बटी ।

अरी मैना, गाँवकी पुरु बाट बारी फुलवरिया रि मैना ।
मैना, बारी फुलवरिया छैला, खेलमास करबी रि मैना ॥
अरी मैना, काख भिर जबिया, हाँठ लिहल गुरटा रि मैना ।
मैना, चली भइल छैला, बारी फुलवरिया रि मैना ॥
अरी मैना, न्वान पिप्पर कुचल छैली पटियापर ढरल रि मैना ।
मैना, चली भइली छैली, बारी फुलवरिया रि मैना ॥
अरी मैना, एक ओर छैला एक ओर छैली रि मैना ।
मैना, जाँघ जोर बैठल छैला ओ छैली रि मैना ॥
अरी मैना, खैना ट खैल रे छैला अमियाक चटनी रि मैना ।
मैना, कैह्या ट पुगैबो छैला मौरड ड्यास रि मैना ॥
अरी मैना, जैना-जैना कलो छैला आस केल लगइलो रि मैना ।
मैना, खोखरिक मकरा ढुनिया लागी गइलै रि मैना ॥
अरी मैना, जैना-जैना कलो छैला आस केल लगइलो रि मैना ।
मैना, ठैलीक सिढा छैला डुकरी कटैलो रि मैना ॥
अरी मैना, मकना हँठिया मै बिजुला महुटिया रि मैना ।
मैना, आब ट पुगैबु छैली मौरड ड्यास रि मैना ॥
अरी मैना, इह हुइट छैली मोर मौरड ड्यास रि मैना ।
मैना, आब ट हुइली छैली जरमक जोरिया रि मैना ॥

स्रोतः बेभलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

३७. मैना (ख)

यि गितमे गोहिन सँगे डख्नक बन्वा गैलक, रुख्वक लहराले डगर भुलैलक बाट बा। अरी मैना, कटहुन गइलो मैना गाउँ गाउँ ट गाउँ ल्यान्हो मैना ।

मैना, आव जाइ गोही मोर, डखिनक बनवा हो मैना ॥
आव जाइ गोही मोर, डखिनक बनवा हो मैना ॥
अरी मैना, आरी आरी नेडली मैना, परगा न डरली हो मैना
मैना, ठाउँ ठाउँ गोही मोर परगा नमैली हो मैना
ठाउँ ठाउँ गोही मोर परगा नमैली हो मैना ॥
अरी मैना, आढा गोही मठवा, आढा गोही टेडिया हो मैना
मैना, अस्या लागो गोही मोर संग चली जइबी हो मैना
अस्या लागो गोही मोर संग चली जइबी हो मैना ॥
अरी मैना, मठवाक डिउटा टुहिन पैयाँ लागु हो मैना
मैना, रुख्वक लहरा गोही डगुरी भुलाइल हो मैना
रुख्वक लहरा गोही डगुरी भुलाइल हो मैना ॥

स्रोत: मन्धरी चौधरी
घोराही-१७, गुलरिया, दाङ

३८. उडासी गित

लैहर छोरके सैंयक घर जाइक किही मन लागी । यि गितमे एक लौली अपन सेन्डुर, टिकली, कजुला, नठनी, झिल्मिल्या समझके उडास हुइल बटी ।

मै ट रि मयरी रै हरी लहिरक उमहल बाटु
छुटी गइलै मयरी मोर माँग कही सेन्डुरा मोर
उह ट करनिया रि मयरी मै हुइनु उडासी
कसिकन जैबु रि मयरी मै सैयाँ डुरु डेस २ ।
मै ट रि मयरी रै हरी लहिरक उमहल बाटु
छुटी गइलै मयरी मोर माठ कही टिकुली मोर
उह ट करनिया रि मयरी मै हुइनु उडासी
कसिकन जैबु रि मयरी मै सैयाँ डुरु डेस २ ।
मै ट रि मयरी रै हरी लहिरक उमहल बाटु
छुटी गइलै मयरी मोर आँख कही कजुला मोर

उह ट करनिया रि मयरी मै हुइनु उडासी
कसिकन जैबु रि मयरी मै सैयाँ डुरु डेस २ ।
मै ट रि मयरी रै हरी लहिरक उमहल बाटु
छुटी गइलै मयरी मोर नाक कही नठुनी मोर
उह ट करनिया रि मयरी मै हुइनु उडासी
कसिकन जैबु रि मयरी मै सैयाँ डुरु डेस २ ।
मै ट रि मयरी रै हरी लहिरक उमहल बाटु
छुटी गइलै मयरी मोर कान कही झिमलिया मोर
उह ट करनिया रि मयरी मै हुइनु उडासी
कसिकन जैबु रि मयरी मै सैयाँ डुरु डेस २ ।

स्रोट: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

३९. पचरा मन्टर (क)

इस्यक टिकक् रोज अखरिया खेल्के लावा गुरुवा बनैना चलन बा । पचरा मन्टर गैलेसे गुरुवा बनक चहुइयनमे गुरै चहठिन कना कहाइ बा ।

अरी, छिटी मिटी रह मोर बेबुरिक रुखवा रै
डारी भुइया लोटी जाइ
रिमी झिमी रि रिमी झिमी रि पानी
बरस न लाग
मैया रि भिजन लाग
बैठी रहलो मैया बेबुरिक रुखवा रै
सौरा करी यखबार
हाँठ लेलो रि मैया बेट बसवार
सोइ रहलो मैया ओइ पुरुपाटन रै
मन्डरा सबड सुनी आइ गइलो रै
हेर लेउ रि मैया हेर लेउ
आपन डेस डुबार हेर लेउ रि
जैसा भल चरकी छिमिया
ओइस रि नचल मैया मोर ॥

अरी, छिटी मिटी रह मोर बेलुवक रुखवा रै
डारी भुइया लोटी जाइ
रिमी झिमी रि रिमी झिमी रि पानी
बरस न लाग
मैया रि भिजन लाग
बैठी रहलो मैया बेलुवक रुखवा रै
सौरा करी यखवार
हाँठ लेलो रि मैया बेट बसवार
सोइ रहलो मैया ओइ पुरुपाटन रै
मन्डरा सबड सुनी आइ गइलो रै
हेर लेउ रि मैया हेर लेउ
आपंन डेस डुवार हेर लेउ रि
जैसा भल चरकी छिमिया
ओइस रि नचल मैया मोर ॥
अरी, छिटी मिटी रह मोर टुलसीक रुखवा रै
डारी भुइया लोटी जाइ
रिमी झिमी रि रिमी झिमी रि पानी
बरस न लाग
मैया रि भिजन लाग
बैठी रहलो मैया टुलसीक रुखवा रै
सौरा करी यखवार
हाँठ लेलो रि मैया बेट बसवार
सोइ रहलो मैया ओइ पुरुपाटन रै
मडरा सबड सुनी आइ गइलो रै
हेर लेउ रि मैया हेर लेउ
आपंन डेस डुवार हेर लेउ रि
जैसा भल चरकी छिमिया
ओइस रि नचल मैया मोर ॥
अरी, छिटी मिटी रह मोर डौनक रुखवा रै
डारी भुइया लोटी जाइ
रिमी झिमी रि रिमी झिमी रि पानी

बरस न लाग
मैया रि भिजन लाग
बैठी रहलो मैया डौनक रुखवा रै
सौरा करि यखवार
हाँठ लेलो रि मैया बेट बसवार
सोइ रहलो मैया ओइ पुरुपाटन रै
मन्डरा सबड सुनी आइ गइलो रै
हेर लेउ रि मैया हेर लेउ
आपंन डेस डुवार हेर लेउ रि
जैसा भल चरकी छिमिया
ओइस रि नचल मैया मोर ॥
अरी, छिट मिट रह मोर चम्पक रुखवा रै
डारी भुइया लोटी जाइ
रिमी झिमी रि रिमी झिमी रि पानी
बरस न लाग
मैया रि भिजन लाग
बैठी रहलो मैया चम्पक रुखवा रै
सौरा करी यखवार
हाँठ लेलो रि मैया बेट बसवार
सोइ रहलो मैया ओइ पुरुपाटन रै
मन्डरा सबड सुनी आइ गइलो रै
हेर लेउ रि मैया हेर लेउ
आपंन डेस डुवार हेर लेउ रि
जैसा भल चरकी छिमिया
ओइस रि नचल मैया मोर ॥

स्रोत: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

४०. पचरा मन्टर (ख)

डस्यक टीकक् रोज अखरिया खेल्के लावा गुरुवा बनैना चलन बा । पचरा मन्टर गैलेसे गुरुवा बनक चहइयनमे गुरै चहठिन कना कहाइ बा । गितमे मैंया -डेबी) हे हाली खेलो, टुहिन वजारा केंबार मारडेबी कहिगैल बा ।

मै ट कनु मैया रि सउ डिन राट
मै ट कनु मैया रि कौन रुपवा
मै ट कनु मैया रि कौन रुपवा
हली खेलो रि मैया हली खेलो रि
टाल कुन्जी मारडेबी बजारा केंवार ॥
उपरसे उमरल कारी रि बडरिया
जैस भल उमरल मैया रि हमार २
हली खेलो रि मैया हली खेलो रि
आपन सपना भरार
टाल कुन्जी मारडेबी बजारा केंवार ॥
उइ पुरु पाटन मैया उइ पुरु पाटन
पाटन से लानी डेबु सेन्डुरा बजार
पाटन से लानी डेबु सेन्डुरा बजार २
आपन सपना भरार
टाल कुन्जी मारडेबी बजारा केंवार ॥
जाइट रनहु मैया उइ पुरु पाटन हो
मन्डरा सबड सुन्नु घुम गइनु हो २
हली खेलो रि मैया हली खेलो रि
आपन सपना भरार
टाल कुन्जी मारडेबी बजारा केंवार ॥
जाइट रनहु मैया गइया बनिवास हो
मै ट बाटु हो मैया भुखल पियास २
हली खेलो रि मैया हली खेलो रि
आपन सपना भरार
टाल कुन्जी मारडेबी बजारा केंवार ॥
जिनी लजायो मैया जिनी सर्मायो
आइ पुगल हमार पुजाके डिन २
हली खेलो रि मैया हली खेलो रि
आपन सपना भरार
टाल कुन्जी मारडेबी बजारा केंवार ॥

स्रोतः छविलाल चौधरी, जित बहादुर चौधरी
घोराही-१७, गुलरिया, दाङ

४१. पैया गित

यि पैंया गितमे सिता अपन फुलवारमे बिगार कर्ना सोनक् मिरगा मारक् डेउरा लछमनहे अर्जि कर्ले बटी ।

केकर हुइट, केकर हुइट जे बारी फुलवार रै हो
ए हो केकर हुइट जे सोन कही मिरिगा २
सिता रानीक हुइट जे, सिता रानीक हुइट जे
बारी फुलवार रै हो
ए हो रावनके हुइट जे सोन कही मिरिगा २
सिता रानीक हुइट जे, सिता रानीक हुइट जे
बारी फुलवार रै हो
ए हो सोन कही मिरिगा फँडल फुलवार २
सिता रानी गइली हो, सिता रानी गइली हो
बारी फुलवार रै हो
ए हो सिता रानी डेखली सोनकही मिरिगा २
जोरो डिउरा लछुमन, जोरो डिउरा लछुमन
टिरठ ढनुखी हो
ए हो जोरो डिउरा लछुमन राजा जिउके बाँर २
टिरठ ढनुखी डिउरा, टिरठ ढनुखी डिउरा
अगनी जरैबु हो
ए हो राज जिउके बाँर कैसाके जरी २
अंगुठिक भेल राम, अंगुठिक भेल राम
ढनुखी जरैल हो
ए हो मारु मै मिरिगा बचाउ फुलवार २ ।

स्रोट: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, डाङ

४२. हन्सा बैठैना मन्टर

मनैननके हन्सा (आत्मा) उरके डरभुटके बेमार पर्लेसे गुरुवन् हन्सा बैठैना मन्टर बाचन कर्ठा । यहाँ चुट्टीसे लेके घुट्ठीसमके हन्सा जहाँ बा, उहे बैठ कना कामना कइगैल बा ।

हाँ हाँ रै चुटियक हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, चुटियक हनसा रै चुटी बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै आँख कही हनसा रै बैगुन चली जाइ

अरी, आँख कही हनसा रै आँख बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै नाक कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, नाक कही हनसा रै नाक बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै कान कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, कान कही हनसा रै कान बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै मुह कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, मुह कही हनसा रै मुह बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै घेंच कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, घेंच कही हनसा रै घेंच बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै काँढ कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, काँढ कही हनसा रै काँढ बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै छाटी कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, छाटी कही हनसा रै छाटी बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै पुठ कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, पुठ कही हनसा रै पुठ बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै जाँघ कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, जाँघ कही हनसा रै जाँघ बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै घुठी कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, घुठी कही हनसा रै घुठी बैठी जा ॥
हाँ हाँ रै पाउ कही हनसा रै बैगुन चली जाइ
अरी, पाउ कही हनसा रै पाउ बैठी जा ॥

स्रोत: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

४३. महुथिया गित

मेरमेरिक नाचमद्ध्ये महुटिया नाच फेन एक हो । यि गित महुटिया नाचे बेर गा जाइठ ।

अरी हेरी सिल पठरा रि मै गभुरा बनैबु
जिहीमन बैठैबु रि मयरी मै बिजुला महुटिया ॥
अरी हेरी काठ पाठ रि काटि मै खमिया गरैबु
जिही मन बँद्‌बु रि मयरी मै मौरङ हँठिया ॥
अरी हेरी लस-लस मटिया सनैबु मै लाहास बनैबु
जिही मन बँद्‌बु रि मयरी मै घोरनी सवार ॥

अरी हेरी टाल टलैया मै खोडबु मै पानी टलैबु
जिही मन पलबु मयरी मै राहुट मछरिया ॥
अरी हेरी बेह्नवा मै बेरबु मै बगिया लगैबु
जिही मन कारी कुइलरिया मरल टुकार ॥
अरी हेरी अलरी बाँस मै कटबु मै पिंजरा बुनैबु
सारी सुगा पलबु रे हो मै पिंजरा बैठबु ॥

स्रोत: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

४४. बनगित्वा गित (क)

ठँरिया ओ बठिन्या गैना इ गितेम ठँरिया कहठ, मै गरिब बटुँ । सोनके महलमे रना मनै मोर टुटल झोपरीम डुख किल पैबो । मने प्यार आँढर रहठ, बठिन्या कहठी, टोहार टुटल झोपरीम जो मै सुख निंड सुटम ।

ठँरिया: टुहरी ट बाट हो सावरी हे रि सोनकी महलिया
सोनकी महिलया सावर अटी सुख हुइठा हे ॥
मोर ट बाट सावरी हे रि टुटली झोपरिया
टुटली झोपरिया सावर अटी डुख हुइठा हे ॥
बठिन्या: टुँहरी ट बाट हो रउटा हो रि टुटली झोपरिया
टुटली झोपरिया रउटा मै सुटबु सुख निंड हे ॥
ठँरिया : टुँहरी ट बाट हो सावरी हे रि सोनकी पलगिंया
सोनकी पलगिंया सावर सुटबो सुख निंड हे ॥
मोर ट बाट हो सावरी हे रि फटली पटुकिया
फटली पटुकिया सावर अटी डुख हुइठा हे ॥
बठिन्या: टुँहरी ट बाट हो रउटा हो रि फटली पटुकिया
फटली पटुकिया रउटा मै सुटबु सुख निंड हे ॥
ठँरिया : टुँहरी ट बाट हो सावरी हे रि सोनकी मचिया
सोनकी मचिया सावर बैठबो सुख निंड हे ॥
मोर ट बाट हो सावरी हे रि भुवरी चुटरिया
भुवरी चुटरिया सावर अटी डुख हुइठा हे ॥
ठँरिया : टुँहरी ट बाट हो सावरी हे रि सोनकी गगुरिया
सोनकी गगुरिया सावर लिहबो सुख निंड हे ॥
मोर ट बाट हो सावरी हे रि खोंरी ट गगुरिया

खोंरी ट गगुरिया सावर अटी डुख हुइठा हे ॥
बठिन्या: टुँहरी ट बाट हो रउटा हो रि खोंरी ट गगुरिया
खोंरी ट गगुरिया रउटा मै लिहबु सुख निंड हे ॥

स्रोत: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

४५. बनगित्वा गित (ख)

यि गितेम एक बठिन्या अपन एलपा बइस (भर्भराइल जवानी) मे पिया समझके सारा डेंहके गहना-गुरिया पहिरल परिकल्पना कर्ले बटी ।

पिया कही डिहल हुइट, माग कही सेन्डुरा
माग कही हो सेन्डुरा
जटुन ट रे पहिरल ढनी मोर
अगुन कहो समझे
राम राम पिया मोर बाट कि
एलपा हो बइस ॥
पिया कही डिहल हुइट, माठ कही टिकुली
माठ कही हो टिकुली
जटुन ट रे पहिरल ढनी मोर
अगुन कहो समझे
राम राम पिया मोर बाट कि
एलपा हो बइस ॥
पिया कही डिहल हुइट, नाक कही नठुनी
नाक कही हो नठुनी
जटुन ट रे पहिरल ढनी मोर
अगुन कहो समझे
राम राम पिया मोर बाट कि
एलपा हो बइस ॥
पिया कही डिहल हुइट, आँख कही कजुला
आँख कही हो कजुला
जटुन ट रे पहिरल ढनी मोर
अगुन कहो समझे
राम राम पिया मोर बाट कि

एलपा हो बइस ॥
पिया कही डिहल हुइट, कान कही झिमलिया
कान कही हो झिमलिया
जटुन ट रे पहिरल ढनी मोर
अगुन कहो समझे
राम राम पिया मोर बाट कि
एलपा हो बइस ॥
पिया कही डिहल हुइट, घ्याँच कही गुरिया
घ्याँच कही हो गुरिया
जटुन ट रे पहिरल ढनी मोर
अगुन कहो समझे
राम राम पिया मोर बाट की
एलपा हो बइस ॥
पिया कही डिहल हुइट, हाँठ कही टँरिया
हाँठ कही हो टँरिया
जटुन ट रे पहिरल ढनी मोर
अगुन कहो समझे
राम राम पिया मोर बाट कि
एलपा हो बइस ॥
पिया कही डिहल हुइट, पाउ कही पाउजु
पाउ कही हो पाउजु
जटुन ट रे पहिरल ढनी मोर
अगुन कहो समझे
राम राम पिया मोर बाट कि
एलपा हो बइस ॥

स्रोट: जित बहादुर चौधरी
घोराही-१७, गुलरिया, ढाङ

४६. महिरावन गित

यि गितेम महिरावन झुमुक्कसे बिल्गाके कबु चम्पा, कबु बेल, कबु बेबरी, कबु डौना फुला लोढ्ल खिस्सा बा ।

ए महिरावन घनी पर घनी उर घनी परे

झुमुक्क परल डेखल महिरावन
चम्पा कही फुला
चम्पा कही फुला रै डिउटा लोह्व जब सेकल ॥
ए महिरावन घनी उर घनी पर घनी उरे
झुमुक्क परल डेखल महिरावन
बेलु कही पाटा
बेलु कही पाटा रै डिउटा टुरी जब सेकल ॥
ए महिरावन घनी उर घनी पर घनी उरे
झुमुक्क परल डेखल महिरावन
बेबुरी कही फुला
बेबुरी कही फुला रै डिउटा लोह्व जब सेकल ॥
ए महिरावन घनी उर घनी पर घनी उरे
झुमुक्क परल डेखल महिरावन
टुलसी कही फुला
टुलसी कही फुला रै डिउटा लोह्व जब सेकल ॥
ए महिरावन घनी उर घनी पर घनी उरे
झुमुक्क परल डेखल महिरावन
डौना कही फुला
डौना कही फुला रै डिउटा लोर जब सेकल ॥
ए महिरावन घनी उर घनी पर घनी उरे
झुमुक्क परल डेखल महिरावन
लोड्ग कही फुला
लोड्ग कही फुला रै डिउटा लोह्व जब सेकल ॥

स्रोत: बेझलाल चौधरी
घोराही-७, सिसहनिया, दाङ

४७. बरमस्या सजना

यि गित खास कैके बसन्ट पन्चमीके डिनसे सुरु होके पुरे खेटिपाटीके सममे गा-जाइठ। थारु गित गइनासे पहिले सुम्हरौटीसे ओंरी टारके यकर विसयबस्टुमे परगा नापठ।

बरमस्या सजनामे बार मास (महिना) के बखान बा।
सुमी रहुं गुरुके गोसाइ रे, सिरी रे भगवान हो।

सुमी रहुं कालिका महाडेउ, कन्ठा रे बरु डेउ हो ॥१॥
सावन सजनी बरस डिन बुँडिया रे, टुटे बजरा केवरिया ।
रानी भिजे रंगि महलिया, पिहा रे परुडेस ॥२॥
भाडो मास कही रटिया रे, निसु टे अँढियार ।
पिहा रे भुले अरुसन कि, कुम्हरा अवरिया ॥३॥
काट्टिक-कुवाँर कन्हैया रे, बिपरा एक जन्मे ।
माटा पिटा गुरु साढु, कि सेवा लेउ हमार ॥४॥
काट्टिक कन्ठ करेवा रे, डेंउटा करैं असनान ।
घर-घर डिया न जलावैं, डेंउटा करैं असनान ॥५॥
अगहन मास कइ महिना रे, सखी गँवना के जावैं ।
ओकरे पिहा जो रहटैं, गँवना लेह अइटैं ॥६॥
पुस मास पुस मान्ट्री रे, सुगा बाला लेके जावैं ।
आजु पिहा रे जो रहटैं, महुर लेके मरटाँ ॥७॥
परी गइल माघक महिना रे, पाला परटा ढुसाल ।
आजु पिहा मोर रहटैं, कोना रे लेके सोइटाँ ॥८॥
फागुन मास कइ महिना रे, सखि रंग न घोरैं ।
मोरे पिहा जो रहटाँ, अबिर रंग खेलटुं ॥९॥
चैट मास चैट्रा नारी रे, बन फुली गैल टेंसु ।
मोरे पिहा जो हुइटाँ, चुंडरी रे गैटुं ॥१०॥
परी गइल बैसाख कइ महिना रे, भुम्हुर ढिके रे आगिन ।
आज पिहा जो रहटाँ, नंगला लेके सोइटाँ ॥११॥
परी गइल जेठ कइ महिना रे, डैबा गर्जे न लागे ।
चारु टरफ बिजली टरपे, पिहा रे परुडेस ॥१२॥
परी गैला असार कइ महिना रे, मेघ रे एक गर्जे ।
चारु टरफ मेघ गर्जैं, पिहा रे परुडेस ॥१३॥
बार पुगल बारुमास रे, मैं ढानी टुलसा लगैलुं ।
तुलसी दास प्रभु साधु कि, सेवा रे लेउ हमार ॥१४॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

४८. मुरला सजना

यि सजनामे चिरैंचुरुङ्गनके बोल ओ डुख बिरना बखानल बा । जेकर सुन्डर बोलसे

प्रकृटि मुस्कुराइठ। मनो उहे चिरैचुरुङ्गनके आपन डुख विपट इ गितके भावमे उटारल बा।

कहाँ बोलै हनसा कुरिलवा रे, कहाँ बोलै घाँघर।
कहाँ बोलै बनिक मुरिलवा, कि टोर बोलिया सोहावन ॥१॥
चेरिया बोलै हनसा कुरिलवा रे, लडिया बोलै घाँघर।
बन बोलै मुरिलवा, टोर बोलिया सोहावन ॥२॥
एक वन नाँघल मुरिला रे, डुइ रे वन चाँपै।
टिसरे वन कह बिच, मुरिला एक नाचै ॥३॥
भोरहिक नाँचट मुरिला रे, खर रे डुपहरीया।
पानी कइ पियासल मुरिला, लपस अइची-खइची रि आवैं ॥४॥
अरे-अरे कुइयाँ पनभरनी रे, टोर नाउँ नहीं जानटुँ।
बुँडा एक पनियाँ डेउ, कि मोर हिरडा जुराइ ॥५॥
नहीं होवै कुइयाँ मन पनियाँ रे, नहिँ कलसा डोरिया।
कैसे भरुँ रे जुर पनियाँ, टोर हिरडा जुराइ ॥६॥
लिहुरी हेरुँ कुइयाँ मन पनियाँ रे, मौला रे कलसा डोरिया।
अइची-खइची भरो जुर पनियाँ, मोर हिरडा जुराइ ॥७॥
अरे अरे बटकि बटोहिया रे, टोर नाउँ नहीं जनटुँ।
जो हुइबो पानी के पिहासल, उँजरा डोगे आउ ॥८॥
उँजरा टे डोगल झिझरिया रे, पानी टुरुक चुहै।
नाहीं छैला पानीक पिहासल, मोर जोबना निहर्लो ॥९॥
पनियाँ पिवैले टैं गोरिया रे, मोर हिरडा जुरैले।
एक बचन टुहिँसे पुछुँ, कहाँ टोर सेज-पठरिया ॥१०॥
जहाँ बाटैं सोर सय पहरु रे, नौ सय डिबिया।
जहाँ बाटैं सखुली कुकिनयाँ, जहाँ रे सेउ नरिया ॥११॥
मरबुँ मैं सौर सय पहरु रे, फोरबु नौ सय डिबिया।
मारी डरबुँ सखुली कुकनियाँ, टोही रे ढानी बेलसुँ ॥१२॥
अँगनम बाटैं कुट-लहरी रे, ओसर पिस-लहरी।
हर्की डेबुँ बजरा-केवँरिया, बेलस कैसे पैबो ॥१३॥
अँगना मरबुँ कुट-लहरी रे, ओसर पिस-लहरी।
फोरी डरबुँ बजरा-केवँरिया, टोही रे ढानी बेलसुँ ॥१४॥
भागो-भागो टुँ मुरिला रे, कजरी बन भिटर।

मोर पिहा बाट रे सिकरिया, टोर जिउ मरी डरहीं ॥१५॥
मैं कैसे भागुं गोरिया रे, बन कइ रे मुरिला ।
मैं हुइटुं जाट्टिक मुरिला, बन फुला लोर्हठुं हो ॥१६॥
हाँठ लेबैं गुरटा गुलेलिया रे, काख रे भिरैं जविया ।
चोलो छैंला चिरिया सिकार, कि राज फुलबरिया ॥१७॥
डाँरा-डाँरे नाचैं मुरिला रे, पाट रे पाट छिपैं ।
डाँरिया भुकाइ छैंला मरहो, मुरिला भुँइया गिरैं ॥१८॥
चिरिया उठाइटल छैंला रे, छैंइलक पास जावैं ।
लेउ छैंली आपन चिरिया, मारी मार डेहनुं ॥१९॥
मारेक मरलो टुं छैंला रे, मार रे नहीं जनलो ।
मारी डरलो सुघरी चिरैयाँ, डरड महीं लागे ॥२०॥
गोरा टे डेखुं न लोहगिया रे, डइना रे सोनपङ्खी ।
अँखिया टे डेखनुं रटमुल, कन्ठा बिन्द्रा बन ॥२१॥
भौना घुमन अइल महाडेउ रे, मिरटी भौवना ।
कौन मनुखवा जे रोइल, ओही बन भिटर ॥२२॥
भौना घुमन आइल महाडेउ रे, मिरटी भौवना अमृट घरिया ।
महाडेउ, मुख हो लगाइल बाभन बेनिया महाडेउ, कि डेहनै डोलाइ ॥२३॥
भौना घुमन कि महाडेउ रे, मिरटी भवनवैं ।
वेटुक डन्डा महाडेउ, कि ढुनी जगावैं ॥२४॥
बरहु बरस निड मैं सुटनुं मुरिला रे, कजरी बन भिटर ।
कौन अस पापी रे महाडेउ, कि डेहनै जगाइ ॥२५॥
भौना घुमन कि मै महाडेउ रे, मिरटी भवनवैं ।
मैं अस ढर्मी महाडेउ, कि डेहनुं जगाइ ॥२६॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

४९. लडाइ सजना (क)

यि गितमे आपन राज्य बचाइक लग राजा ओ प्रजा बिचके चिन्टन भाव प्रस्टुट हुइल बा । जहाँ घोरी, हाँठी लगाके सवार ओ जनटनके भारी हाँठ रहल भाव यि सजनामे बा ।

छोटी मोटी बुकरी सुहेलनी रे, खेलुइया अठ्कार ।
पौवा लागल कठकौरा, लाठी रे बोझा बाँढी ॥१॥

खेलना ट खेलेउ टुँ छैला रे, जानि रे बुझी खेलेउ ।
जानी डरहीं भारट सुब्बा, पकरी मँगैहीं ॥२॥
जानी बुझी खेलेउ टुँ भइयो रे, राज गोर्खाली ।
जानी डरहीं भारट सुब्बा, पकरी मँगैहीं ॥३॥
अटना बचन सुनल सुब्बा रे, पकरी मंगावैं ।
डेस डेसके रे उढरी, कि पकरी भगावैं ॥४॥
डाँर कुँर लेवैं सुब्बा रे, अरे महल उठावैं ।
महल पर सुटल रनियाँ, सपना एक पावैं ॥५॥
सपना मैं पैनुं सरुपवा रे, सपना अजगुट ।
रजवा जैहीं लराइ, पुरुब कइ रे डेसवा ॥६॥
अरे-अरे भइया सइसवा रे, टोर नाउँ नाहीं जानौं ।
मोर लाग कारी रे बन्दुकिया बनाइ डेउ, मै लरे रे जैबुं ॥७॥
अरे-अरे सगुनी लोहरवा रे, सुनो रे मोर बिनटी ।
मोर लाग ढाल टरवलवा बनाइ डेउ, मै लरे रे जैबुं ॥८॥
अरे-अरे भइया ठनहेर्वा रे, सुनो रे मोर बिनटी ।
जल्डिसे घोरिला पलाङ्गी डेउ, मैं लरे रे जैबुं ॥९॥
कगनी छोर बरा चलिन रे, बौखी चलन हि पावैं ।
नल घोरिला डेउ रे पलाङ्ग, मै लरे रे जैबुं ॥१०॥
अरे-अरे भइया ठनहेर्वा रे, सुनो रे मोर बिनटी ।
जल्डिसे घोरिला पलाङ्गी डेउ, मैं लरे रे जैबुं ॥११॥
लाली घोरिला पिठ-कब्रा रे, जौन घोरिला मोर ।
जौने घोरिला डेहु रे पलाङ्ग, मैं लरे रे जैबुं ॥१२॥
सँपरो-संपरो बकुल बोलनै रे, सँपरो मोर भरिया ।
मोर राजा जैहीं रे लराइ, पुरुब कइ रे डेसवा ॥१३॥
फाँड कसैं ढाल टरवलिया रे, काँढ लेवैं कारी बन्दुकिया ।
हाँठ रे लेवैं राजा घोरिया, चलनै पुरुबक डेसवा ॥१४॥
बाउँ ओरसे फट्कल रजुवा रे, बाउ न होइ जाइ ।
डाहिन ओरसे फट्कल रजुवा, भइलाँ सवार ॥१५॥
लेंरियासे मारल रजुवा रे, कोंररा डुइ मारे ।
चिरिया बनी उरैं घोरिला, उरटी बन फहरावैं ॥१६॥
गिढनी बनी घोरिला रे, रन फहरावैं ।

गिढनी बनी घोरिला, परलँ फौजकै बिच ॥१७॥
घोरवा टे बाँढै घोरसार रे, हँठिया बाँढल महुल पर ।
अपने टे बैठल कचेहरी बिच, राजा करल लराइ ॥१८॥
घोरवा टे रोवैं घोरसरिया रे, हँठिया रोवैं महुल पर ।
टोर राजा अपने लरुइया, भागे रे नहीं पावैं ॥१९॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५०. लडाइ सजना (ख)

यि सजनामे एक उर्हरा ओ बिहना बिचके लराइके बर्नन कइल बा । जहाँ उर्हरा छप्पन हजार जारी सुनाइठ मनो बिहना मन्जुर नै होके आपन जन्नी टरवालसे लरके फेन जै जइम कना सहास भावके गित हो ।

पैयाँ टुहीं लागु कारी बडरिया रे, टोहरे गोडिलमे ।
रिमझिम रिमझिम डयवा बर्से, मोर पइला मेटैहो ॥१॥
पैंया टुहीं लागु कुसमी भवानी रे, टोहरे गोडिलमे ।
मोर खोजलह्रा जे अइहीं, मोर बटिया भुलैहो ॥२॥
पुरुबसे चलल उर्हरा रे, पस्छिउँसे बिहना हो ।
बिच रे डग्गर भैलाँ भेट, कि करल लराइ हो ॥३॥
एक हे बचन सुनो अरड रे, सुनो मोर बिनटी
गनी डेबु छप्पन हजार, मोर जिउ रे बचाउ ॥४॥
एक हे बचन कहे बिहना रे, सुनो रे मोर बिनटी ।
नहीं लेबुं छप्पन हजार, टोर जिउ रे मेटैबुं ॥५॥
मरबु बन्धुकिया कै जोखा रे, डयवा असक गरजैं ।
मरबुं ढाल टरवलिया, बिजली असक ठर्के ॥६॥
फारि से काहैं टरवलिया रे, चमकि चमकी पारैं ।
चमकी रहल टरवलिया, घेंचा रे डोगी डेबइं ॥७॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५१. जोगिया सजना

यि सजनामे एक जोगियैसे मैयाजालमे फँसल छाइ ओ डाइक गहिंर सुर्टा बखानल

बा । जे आपन सुन्डर छाइ, कोखीसे जलम डेहल डाइ ओ बर्हाइल पौरहाइल छाइ एक जोगियैसे बाझ्क गइलक ओरसे बहुट डुखी हुइटी डाइ बाबा, डाडु रोइठाँ । मनो भौजीहे कौनो सुर्टा नै हुइलक थारु समुडायके सही चित्रन कैल बा ।

जोगिया बजावैं सोनक बसिया रे, रुपन लागल डोरी ।
अइसा मन लागल मयरी, जोगिन होइ जैबुँ ॥१॥
जोगियक सँग टैं लगबे ढियरी रे, कि जोगिन बोलैबे ।
सटरङ्ग गोंडरी बिछैबे, कि गजवा ढुंगरबे ॥२॥
जोगियक सँग टैं लगबे ढियरी रे, जोगिन बोलैबे ।
घर-घर अँचुरा पसरबे, कि कुकरा भुकैबे ॥३॥
सोर सय बाटैं जोगिया रे, एक रे जोगी सुन्डर ।
अइसा मन लागल मयरी, जोगिन होइ जैबुँ ॥४॥
जोगियक सँग लगबे टैं ढियरी रे, जोगिन बोलैबे ।
रन बन घुमबे ढियरी, टपसी बोलैबे ॥५॥
एक हे बचन बोलै मयरी रे, सुनो रे ढिया मोर ।
डइ जाउ डुढ कइ डाम, गँवना चली जाउ ॥६॥
झोरिया मनसे निकारल जोगिया रे, कि पाँचहे रुपैयाँ ।
लेउ सासु मोर, कि डुढ कइ डाम ॥७॥
केकर डेखुँ उचरि मरैया रे, पुरुब मुह छाजन ।
केकर हुइटै पुटरी टपसिया, अँगना बिच टपसे ॥८॥
भिटरसे निकरल डुलहिक डाडु रे, ढाल टरवलिया भाँजै ।
भागो ससुर पुटरि टपसिया, टोर मुरवा कटबुँ ॥९॥
भिटरेसे निकरल भौजी रे, लालरी-पियरी होइके ।
नाहीं मारो पुटरी टपसिया, टोहार लागे पहुना ॥१०॥
सटरङ्ग गोंडरी बिछावैं रे, आउर करैयक मडिया ।
जाँघ जोरी रे मडिया पियने, जोगी रे मनहावैं ॥११॥
मैयाँ रोवैं ओनटी ओ कोनटी रे, बाप रोवैं चौ-महल ।
डाडु रोवैं डोलिया पकरिकैं, भौजिक जिउ आनन्ड ॥१२॥
मैयाँ डेवइं अब ढन सोनवा रे, बाप चर्हनी घोरिला ।
डाडु डेवइं चरन पटिरके, भौजी रे डुइ बाट ॥१३॥
कहाँ जैहीं अब ढन सोनवा रे, मरहर जैहीं चर्हनी घोरिला ।
फाटी रे जैहीं चरन पटिरके, भौजी रे डुइ बाट ॥१४॥

भिटरेसे निकरल भौजी रे, बहरी भइल ठाढ़ी ।
पखुरा पकरिके घिसियावैं, कि डोलिया बैठावैं ॥१५॥
एक वन नाँघल बहिनी रे, डुइ रे वन चाँपल ।
अब टे परलो बहिनी, कि डुर ससुरार ॥१६॥
अटना बचन बोलै बहिनी रे, सुनो रे मोर डाडु ।
फेरवामे गुरहि बिसरी गैल, डेहु रे समुझाइ ॥१७॥
एक वन नाँघल ढियरी रे, डुइ रे वन नाँघल ।
डोलिया उभकिकै हेरल, बाप परल बरा डुर ॥१८॥
अरे-अरे बापकी कहनवाँ रे, सुनो रे मोर बिनटी ।
मैयाँ आगे कही डेउ सन्डेस, गुरहि बिसरी गैल ॥१९॥
रोइ मैयाँ गुरही उठावैं रे, भौजी रे छिट्कावैं ।
परटी असार ढियरी अइहीं, कि गुरही खेलैही ॥२०॥
अटना बचन बौलैं मयरी रे, सुनो रे ढिया मोर ।
परटी असार ढियरी अइहीं, कि गोंरिया ना बिने ॥२१॥
लटपट पगिया परनै रे, अल्लि रे गल्ली घुमल ।
चोलो जाइ गाउँकी महटौ, कि बहिनिहे लेहे ॥२२॥
आगे चल्नै डुलहिक डाडा रे, पाछे रे चलै महटौ ।
टेकर पाछे चलै संगलगवा, कि बहिनी लेहे जावैं ॥२३॥
झिलमिल खटिया बिछावैं रे, आउर सटरङ्ग गोंडरी ।
हुँकवा डेहटी बहिनी भेटनै, कि कुम्हवाँ पकरिके ॥२४॥
सटरङ्ग गोंडरी बिछावैं रे, आउर करैक मडिया ।
जाँघ जोरी मडिया पियने, कि बहुट बट्वावैं ॥२५॥
आगे चलल डुलहिक डाडु रे, पाछे रे पाछे महटौं
टेकर पाछे चलै सँगलगुवा, कि बहिनी लेके आवैं ॥२६॥
टब टे रहली डुल्हिनियाँ रे, पटुरिया असक घुमली ।
मचिया वैठी गोंरी बिननुँ, कि हुइल खर डुपहरीया ॥२७॥
डुसरे डिन जब आइल रे, टिसरे डिन आइल ।
चउठे डिन पर पिहा आवैं, पुठवा पकरी झस्कावैं ॥२८॥

स्रोत : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५२. किस्न औटार सजना

यि सजनामे किस्न (कृष्ण भगवान्) आपन मामक आरजीसे फुला टुरे जैठाँ। जौन फुले टुरेबेर कारी नागिनके फुफ्कारसे मुर्छा परठाँ, टब्बो हिम्मट कैके फेन फुला टुरके नन्लक हिम्मटवाला किस्नक बखान बा।

बिन्द्रा बन कही गोकुल रे, किस्ना लिहल औटार।
अवढनगर किस्ना लिहल औटार, कि नगरी सोहाबन ॥१॥
अटना बचन बोलै कन्सा रजवा रे, सुनो रे किस्ना भैने।
कारी नाग फुला टुरी लायौ, मैं पुजा करबुं ॥२॥
यहिसे चलैं किस्ना रे, घरही भइलाँ ठार्ही।
कारी नाग फुला टुरबुं, मामा रे पुजा करहीं ॥३॥
सुनो रे भैया किस्ना रे, सुनो रे मोर बिनटी।
कारी नाग फुल टुरबो, नागिन टुहिँन डसहीं ॥४॥
अटना बचन सुनैं किस्ना रे, चलै रे पटाल।
कारी नाग फुला टुरबुं, मामा रे पुजा करहीं ॥५॥
सुनो सुनो किस्ना भाइ रे, टोर गौवा हेरानी।
कहाँ अइलो मोर डुवारे, कि टोर रहिया भुलानी ॥६॥
ना मोर गौवा हेरानी रे, ना मोर रहिया भुलानी।
कारी नाग फुला टुरबुं, मामा रे पुजा करहीं ॥७॥
एक हे बचन बोलै नागिन रे, सुनो रे किस्ना भैया।
झरल-परल फुला लैजाउ, मामा रे पुजा करहीं ॥८॥
झरल-परल फुला काम नहीं लगहिं रे, पुजा नहीं चरहीं।
डँरिया लागल फुला टुरबुं, मामा रे पुजा करहीं ॥९॥
अटना बचन सुनै नागिन रे, कि नगवा जगावैं ।
नगवाँ छोरल फुफुकार, कि किस्नाहे डाँसे ॥१०॥
हाँठ जोरी भैने किस्ना रे, कि सुनो गरुला बिरबाबा।
आज मोर काम परल, कि लागो हो सहारा ॥११॥
सोरगसे छुटल गरुला बिरबाबा रे, कि डइख-पइख छोरल।
चली गइल रे पटाल, कारी नाग फुला नठनै ॥१२॥

कुसवा उखारी किस्ना भैने रे, छरकी ना बटैं ।
नगवै लैहनै डोरियाइ, किस्ना चलै रे फुलवार ॥१३॥
डँरिया लप्काइ फुला टुरलाँ रे, कि झोलवा भरावैं ।
नगवै पिठ फुला लड्लाँ, कि चलै रे किस्ना घरे ॥१४॥
अटरा बचन बोलै किस्ना रे, सुनो कन्सा मामा ।
कारी नाग फुला लेके, पुजा रे करी डारो ॥१५॥
नगवै टो बाँढल किस्ना रे, कि अँगना कइ खुँटिया ।
कारी नाग फुला उटरल, मामा पुजा करी डारो ॥१६॥
लहाइ-खोरी सेकैं कान्हा रे, कि सुरुज हाँठ जोरैं ।
करी डरनै डेवी कइ पुजा, मामा पुजा करी डारो ॥१७॥

स्रोत : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५३. सजना (क)

यि सजनामे एक औरक जन्निन्संगे लागल आरोपमे ठर्वा-मेहर्वक बिचके लराइ ओ कार बाहीके लग सिपाहीहे साँखी ढैके छिनफर्छिन कैना एक सामाजिक घट्नाके बखान बा ।

कहोरिसे छुटल सिपहिया रे, हरीडहुवा भइलाँ ठाहीं ।
छोरो छैला अपने हरोटी, कि सुब्बाके बलुवावैं ॥१॥
हर टे छोरल हरोहिया रे, कि बरडा डोँह्करनै ।
पैना लिहल सिपहिया, कि सिपहिया गुवानी ॥२॥
ना मै करलुँ हार बिगार रे, कुछु रे नहीं करलुँ ।
कौने कारन सिपहिया, कि सुब्बाके बलुवावैं ॥३॥
ना टुँ करलो हार बिगार रे, कुछु रे नहीं करलो ।
औरक टिरियक संग भुललो, डाँर-कुर लिहीं ॥४॥
छटरी टे ढारल ओसरवा रे, पैना कोनवम ढारैं ।
छैला टे बैठल बहरी, बैठी मन मारे ॥५॥
भिटरेसे निकरल ढानी रे, बहरी भइलाँ ठाहीं ।
लेउ छैला आपन लर्का, चफला बुहें मुनै ॥६॥
भिटरेसे निकरल ढानि रे, बहरी भइलाँ ठाहीं ।
लेउ छैला आपन लर्का, कि मैं सगरा लहाइ जैवुँ ॥७॥

५४. सजना (ख)

यि सजनामे महाडेउ कर्निडिया निडमे सुटल बेर बहुट कोसिस कैके जगैलक भाव बा ।

गजहे पाट गजमोटी रे, पान फुला छाजन ।
जिही टर सुटहीं महाडेउ, कि टुलसिके सिरहनियाँ ॥१॥
गौरी टे चलल जगाइ रे, उठो हो महाडेउ ।
टुहिंन बिना हाँठ नहिं पसरी, सुरुज नहीं उघरैं ॥२॥
जो टैं टुलसी विरुवा रे, सौटी लागो हमार ।
टुहीं उखारी लेहबुं, कि लडिया बगैबुं ॥३॥
जो टैं लडिया बगैबे रे, मै घाट लागी जयबु ।
जहाँ जैहीं महाडेउ, लहाइ काँढ चरहीं अयबुं ॥४॥
जो टैं काँढ चरहीं अइबे रे, मैं डेखी भला डरबुं ।
टुहीं उटारी मैं लेहबुं, कि मैं घुरौरै बगैबुं ॥५॥
जो टैं घुरौरै बगैबे रे, मैं बेल-बबुर होइ जयबुं ।
जिही टर सुटहिं महाडेउ, कि टुलसिक सिरहनियाँ ॥६॥
गौरी टे गइल जगाइ रे, उठो हो महाडेउ ।
बसहर बरडा बेचि डारो, छिन भर सुटो ॥७॥
बेटुक डन्डा मारी जगैबुं रे, उठो हो महाडेउ ।
टुहिंन बिना हाँठ नहिं पसरी, सुरुज नहीं उघरी ॥८॥
सोइ कइ जागैं महाडेउ रे, हाँठ मुँह ढोवैं ।

नहीं बेचबु बसहर बरडा, कि छिनभर सुटबुं ॥९॥
बाउँ लट्टा डेहलाँ छिरकाइ रे, हाँठ भला पसारैं ।
डाहिन लट्टा डेहलाँ छिरकाइ, सुरुज भला उघरैं ॥१०॥

स्रोत : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५५. सजना (ग)

यि सजना आपन साजनके बियोगमे, आट्मासे निकरल पुकार हो ।

बनवैं सिरिजल चन्डन लकरिया रे, अउर सिरजल छैला ।

मैंया कोंखी सिरजल साँवर ढानी, कि नगरी सोहावन ॥१॥
कुहारे कटैबु मैं चन्डन लकरिया रे, पुरब करे डरियाँ ।
बसुला चँछैबु मैं खराउ, छैला घाली डरहीं ॥२॥
गोरे पहिरे चन्डन खरउवाँ रे, काँढ रे पिरी ढोटी ।
मोरे अँगना होके गैलो छैला, महीं नै जगैलो ॥३॥
डुवारे टोर बाटै सग्गे ससुरवा रे, बहरी टो जेठवा ।
सेज पठरी बाटै टोर समिया, कैसे रे टुहिंन जगैबुँ ॥४॥
गोरियामे मारी जगैटो रे, हम ढानी जगटुँ ।
छोरी जइटुँ बरे पिहवा, टुहार सँग लगटुँ ॥५॥
टुँ छैला जैबो कुइयाँ लहाइ रे, हम ढानी पनियाँ ।
नजरिक नजरा भिरैबुँ, जिउ रे समुझैबुँ ॥६॥
लहाइ खोरी सेकल छैला रे, कि ढोटिया ना फिचै ।
नजरिक नजरा भिरैनै, मरनै बोल बारी ॥७॥
कुँवासे चलल छैला रे, घरही भैनै ठाहीं ।
ढोटिया पसारै कठवेरुवा, बैठे रे मन मारी ॥८॥
कुँवासे चलल ढानी रे, कि घरही भैलाँ ठाहीं ।
कहो छैला अपने खबरिया, कौने रुप जैबो ॥९॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५६. सजना (घ)

यि सजना आपन मनरख्नीक् बखान हो । यम्ने भरल जवानीमे बिगटके डिन ओ समस्याके बखान बा ।

गोडिया सुमिलिया फुला झरनी रे, ओही टिनु बाठिन ।
बाठिन बखानु मैं सुबरनी, डरजीसँग भुले ॥१॥
करैला डहकटी सुबरनी रे, डरजी घाट छेकैं ।
डरजी टे मारल मुसकिया, काका रे गोहरावैं ॥२॥
गाउँ बखानु कटनिया रे, डरजी बहुट बैठैं ।
बाठिन बखानु मैं सुबरनि, डरजी सँग भुले ॥३॥
झिलिमिल खटिया बिछावैं सुबरनी रे, डरजी भैया बैठैं ।
चोलियामे फुन्ना गहाइ डेउ, सुबरनी मुस्कि मारै ॥४॥
सटरंग गोंडरी बिछावैं रे, डरजी भैया बैठैं ।

सुटुर-सुटुर डरजी सियैं, कि सुबरनी मुस्की मारैं ॥५॥

स्रोत : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५७. सजना (ङ)

यि सजना कुवाँ पानी भरे गइल एक सयान छाइसे कइल सवाल जवाफ हो । जहाँ पानी भरे गइलक खास अर्ठ इ सजना बोलठ ।

सनकु-सनकु घोरवा रे, कि सरग मेररावैं ।
चिल्हरी बरन होइके घोरिला, छुट्यो कुँवक ठाहीं ॥१॥
केकर लागो बर ढियरी रे, केकर लागो पटोह ।
केकरे कारन पनियाँ भरलो, कि ठाहीं डुपहरीया ॥२॥
आपने बाप कइ ढियरी रे, सासुक लागु मैं पटोह ।
पिहवक कारन पनियाँ, भरनु खर डुपहरीया ॥३॥
सबहे सखी मैं जोरनी जोरनु रे, जोरी सुनाउ ।
माठक जोरनी मैं जोरनु, माँठ रे नेवारु ॥ ४॥
सनकु-सनकु घोरिला रे, सगर मेररावैं ।
चिल्हरी बरन होइके घोरिला, छुट्यो कुँवक ठाहीं ॥५॥
कौने डेस कइ रे जाडु रे, कि जडुनी चलावैं ।
लोटियक पनियाँ सामी, रकट होइ जावैं ॥६॥
कौने डेस कइ जाडु रे, जडुनी चलावैं ।
टसलक पनियाँ सामि, रकट होइ जावैं ॥७॥
कौने डेस कइ जाडु रे, जडुनी चलावैं ।
टठियक भाट सामी, रकट होइ जावैं ॥८॥
कि टुँ मरलो पालल पेरखुवा रे, कि गाइ बिरजलो ?
कि कुँवा पनभरनी टिरियवा हे, बाट डइ अइलो ॥९॥
ना मैं मरनु पालल पेरखुवा रे, ना मैं गाइ बिरजनुँ ।
ना कौनो कुँवा पनभरनी टिरिया, बाट फे नै डेहनुँ ॥१०॥
सनकु-सनकु घोरिला रे, सगर मेररावैं ।
चिल्हरी बरन होइके घोरिला, छुट्यो कुँवक ठाहीं ॥११॥
कौने जिन कइ रे सुट रे, कि केकर उरहरे ।
टोरे धलुइया कहाँ गैनै, मौला रे मुरझावैं ॥१२॥
रेसमिकाट कइ रे सुट रे, डरजी कइ रे सियल ।

मोरे घलुइया डुर भइनै, मौलारे मुरझावैं ॥१३॥

स्रोत : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५८. सजना (च)

यि सजनामे एक गयर्बक जिन्गिक् बखान बा, जेम्ने डिनभर बरडा चर्हाइबेर उठल बैठल सन्डर्भ जोरल बा ।

बरडा चर्हावैं बरिडवा रे, ओंही रे पौरुक डँरवा ।
कमरी बिछावैं माटी पुरवा, सुटैं रे जगटिया ॥१॥
उटरे डखिने कइ नगरी रे, कि बिजली टोरङ्गन् ।
सकिरे नगरी छोटे डेउरा, मरहीं बोलवारी ॥२॥
अलिया-गलिया ठुरवा चम्कावैं रे, पपर टन्की रहैं ।
सकिरे नगरी छोटे डेउरा, मरहीं बोलवारी ॥३॥
साँझ भइल डिन बुरवा रे, बरडा करियावैं ।
बरडक नाउँ छबेलिया, छबेली बरडा नाहीं ॥४॥
भिटरेसे निकरल ढनियाँ रे, कि डियवना लेके ।
लेउ रे बरडिबा आपन डिया, बरडा गनी डारो ॥५॥
घारी बैठै बरडिवा रे, बरडा गनी डारो ।
बरडक नाउँ छबेलिया, छबेली बरडा नाहीं ॥६॥

स्रोत : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

५९. सजना (छ)

यि खासमे मैयाँ प्रेमके गहिंर भाव बोकल सजना हो, जेकर नापटौल नै रैहके भावनाले टिकल रहठ् कना भाव बोक्ले बा ।

कौने काठ कि बकुलिया रे, कौन सिरिजावैं ।
कौने नगर कलवरनी, मडिया चुहावैं ॥१॥
पाँडन काठ कि बकुलिया रे, राम सिरिजावैं ।
अवढनगर कलवरनी, मडिया चुहावैं ॥२॥
मडिया भरन गैनै पिहवा रे, उचि रे ढौराहरा ।
चुभुर चुभुर रस लिहलाँ, पिया रे डुबरावैं ॥३॥

नानो, नानो सोन कि टराजु रे, रुपन कैरे पसरी ।
जोखी डारुँ पिहा आपन, टिल भर आगर हो ॥४॥
अरे नोन टेल हुइटै जोखटुँ रे, पिहा कैसे जोखौं ।
मोर पिहा मरड भँवरवा, छट्रिस फुला लोरहीं ॥५॥
गोरु भैंस हुइट बँढटुँ रे, पिहा रे कैसे बाँढु ।
मोर पिहा मरड भँवरवा, छट्रिस फुला लोरहीं ॥६॥
मुरगी चिँगना हुइटै छोप्टुँ रे, पिहा रे कैसे छोपुँ ।
मोर पिहा मरड भँवरवा, छट्रिस फुला लोरहीं ॥७॥

स्रोत : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

६०. सजना (ज)

यि सजनामे लटपटावन सम्बन्धके बखान बा, जहाँ सयान ठर्यनके आगे आपन जोवन सौप्लक गहिँर भाव इ गितमे मिलठ ।

भोर भइल भिनसरिया रे, मुरगा बाँग बोलै ।
छोरो हो बरडिबा आपन बरडा, मैं पनघट जयबुँ ॥१॥
बरडा ट छोरल बरडिवा रे, खेटुवम पुगैलाँ ।
लेउ हो हरोहियो आपन बरडा, मैं घाट छेके जयबुँ ॥२॥
घाट ट छेंकनै घटोरिया रे, पानी रे नहीं डेवइ ।
लै लेउ मोर लहुरी ननडिया, महीं रे पानी डेउ ॥३॥
ना लेबुँ टोर लहुरी ननडिया रे, न मैं पानी डेहबुँ ।
टोर मोर जुरली स्नेहियाँ, घइला भरी डेबुँ ॥४॥
घइला ट ढरनै ओही ढिकवैं रे, स्नेह जोरी लेवैं ।
ननडी टे पुछै रे भवजिया, कहाँ रे चोट लगनै ॥५॥
आँघ-जाँघ सब बँचनै रे, आठु आँग बँचल ।
छाटी कइ जोवना मिरोर, पेरु रे चोट लागल ॥६॥

स्रोत : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

६१. सजना (झ)

यि सजना दुइ परानिक बिच हुइल संवाड हो, जहाँ सुन्डर घर बनाइक लग भौटिक सामाजामा बारे व्यवस्थापनके बखानल बा ।

केकर होवै लाली रंग बचेरिया रे, चरनै सुर्खेट ।
केकर डेउरा झलरी छटरिया, उपरे पावन डोलै ॥१॥
मोर हुइटै लाली रंग बचेरिया रे, चरनै सुर्खेट ।
मोर डेउरा झलरी छटरिया, उपरे पावन डोलै ॥२॥
अरे टुहुँ पिहा मन्डिल छँवइहो, हम ढानी हेरबी ।
बिना कोरै, बिना बाटिक, मन्डिल छवायो हो ॥३॥
टुहुँ ढनी मन्डिल निपायो रे, हम पिहा हेरबुं ।
बिना गोबर, बिना पानीके, मन्डिल निपायो हो ॥४॥
अरे जिट्यौ रे पिहा जिट्यौ रे, टुँ जिटलीमे सोयो ।
टुहुँ पिहा बैठ्यो गुर्वारी, गुडरी हिलैहो ॥५॥
अरे जिट्यो रे पिहा जिट्यो रे, टुँ जिटलीमे सोयो ।
टुहुँ पिहा सोयो लाली पलङ्ग पर, मइ गुरवारी ॥६॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

६२. सजना (ब)

यि सजना पिहा खइयर सुपारी बेचे बजार गइल मनो बजारमे बहुट सांसटसे बिक्लक बखान बा । मनो बेचे गइलक सामान जब बिकठ टे मनमे बहुट ढेउर सपना बनठ कना प्रसंग बा ।

नाटा निकरी पिहा जोटैं रे, बयल बरडवा ।
लाडी चलो पिहा मोर रंग, डख्ने बनजियाँ ॥१॥
कौने बरडा मैं लरबुं खिर्चा मिरचिया रे, कौन बरडा मजिरा ।
लाडी चलो पिहा मोर रंग, डख्ने बनजिया ॥२॥
एक टे बजार घुमल पिहवा रे, डुइ टे बजारे ।
नै बिकल खयर सुपरिया, डबल भरल पाने ॥३॥
टिन टे बजार घुमल पिहवा रे, चार टे बजारे ।
नै बिकल खयर सुपरिया, डबल भरल पाने ॥४॥
सहरे सहरे घुमल पिहवा रे, सहरे पुकरलाँ ।
बिकी गैलाँ खयर सुपरिया, डबल भरल पाने ॥५॥
मयरिक टन ननबुं मैं अरहनियां रे, बहिनीक टन चोलिया ।

ढानिक टन ननबुं, टिकुलिया बरी सुन्डर ॥६॥
बारा बरिस पुगलाँ पिहवा रे, मैं टुलसा लगैबुं ।
टुलसा टे गैलाँ हरीयाइ, पिहा घुमी अइहीँ ॥७॥
बारा बरिस पिहा बहुरै रे, बेला बिरछा टिर ।
गुरिया टे ढलाँ अनरिया, बयल छिर्काए ॥८॥
अरी अरी कुइया पानी भरनी रे, नाउं नै जनटुं ।
ढानी मैं आगे खबर जनाउं, पिहा टोहर अइहीं ॥९॥
मयरी टे निकरल पिरही लेके रे, बहिनी गंगा जुर पानी ।
ढनियाँ टे निकरे बेनियाँ लेके, पवना डोलैटी ॥१०॥
चाँड सुरज हस पिहवा रे, मैं उही पुकारुं ।
कहो पिहवा डेसकी हाले, जिउ सुस्टाइ ॥११॥

स्रोत : गेढुलाल चौधरी
लमही नगरपालिका-३, उत्तर मजगाउँ, देउखुरी-दाङ

६३. सजना (ट)

यि सजना कुवाँ पनभर्निनसे कइल बार्टा हो । अन्जान मनै पानी पिए माँगलमे पानी डे हुइया अप्ने गरिब ओ टरेक जाटके कैह्के बाट टारक खोजठ । अन्टमे उ पियासे घुमके गइलक प्रसंग बा ।

सिरपर ढारे गगरिया रे, हाँठे उबहनियाँ ।
मुस्कि मरटी ढनी चलल हो, पानी घटवरिया ॥१॥
घैला टे ढारे जगट पर रे, बिँरवा मउँला पर ।
हँसटी-हँसटी डोरी फाँसे, डोरिया नही पुगे ॥२॥
सँकिर-सँकिर कुइया रे, पटाल जुर पानी ।
उबहन बहुट समनी डोरिया नहीं पुगे ॥३॥
अरी-अरी कुइया पनभरनी रे, नाउं रे नहीं जनटुं ।
बुडा एक पनियाँ पियाउ मोरे हिरडा जुराइ ॥४॥
जैसिन कली भौरवा रे, ओइसे टुटे छैला ।
मै टे हुइनु सर्किनके बेटिया, पानी कैसे डेबु ॥५॥

अरी-अरी कुइया पनभरनी रे नाउँ रे नहीं जनटुँ ।
मै टे हुइटु सर्किनके बेटवा भरल पानी पियबु ॥६॥
जैसिन कली भौरवा रे, ओइसे टुटे छैला ।
मै टे हुइनुँ कामिनके बेटिया, पानी कैसे डेबु ॥७॥
अरी-अरी कुइया पनभरनी रे नाउँ रे नहीं जनटुँ ।
मै टे हुइटु कामिनके बेटवा भरल पानी पियबु ॥८॥
जैसिन कली भौरवा रे, ओइसे टुटे छैला ।
मै टे हुइनुँ ठारुनके बेटिया, पानी कैसे डेबु ॥९॥
अरी-अरी कुइया पनभरनी रे नाउँ रे नहीं जनटुँ ।
मै टे हुइटु ठारुनके बेटवा भरल पानी पियबु ॥१०॥
ठारही जगट पर छैलाँ रे, कि ठारही पुकारे ।
पापी कुइया पनभरनी कि पनिया नहीं डिह्लाँ ॥११॥

स्रोत : गेढुलाल चौधरी
लमही नगरपालिका-३, उत्तर मजगाउँ, देउखुरी-दाङ

६४. सजना (ठ)

यि सजनामे ढानीक्रे बट्ठा बा, जहाँ पिहा औरे टिरियासे मोहके डुबरैलकमे सुर्टा भाव सजनामे गुँठल बा ।

कौने काठके बकुलिया रे, के रे सिरिजावैं ।
कौने नगरिक कलबारिन, मडिया चुहावैं ॥१॥
पँडनी काठके बकुलिया रे, राम सिरिजावैं ।
अवढ नगरिक कलवारिन, मडिया चुहावै ॥२॥
मडिया भरन पिहा गैलाँ रे, ओहि रे ढौरहरा ।
कौने टिरिया रस लेवै, पिहा रे मोरे डुबरावैं ॥३॥
पाटिर-पाटिर ढनियाँ रे, मुह्कइ सुन्डर ।
उहे रे टिरिया रस लेवैं, पिहा रे मोरे डुबरावैं ॥४॥
नानो-नानो सोनके कँइरवा रे, अउरे रुप गेँडवा ।
बाँढी डाँरु पिहवा जे आपन, कहुँ रे नहीं जैहीं ॥५॥
गाइ, भइस रहटँ बढटुँ रे, पिहा रे कैसे बाँढु ?
मोरे पिहा लाली रे भँवरवा, सइ रे फुला लोर्हे ॥६॥
नानो-नानो सोनके टरुजिया रे, अउरे रुप सेरे ।

जोखी डारु पिहवा जे आपन, टिलभर घटहो ॥७॥
अरे नोन, टेल हुइटँ जोखटुँ रे, पिहा रे कैसे जोखुँ ।
मोरे पिहा लाल रे भँवरवा, सइ रे फुला लोर्हें ॥८॥
करिया ढोखा लड्लाँ लवाङ सुपरिया रे, ढौंरा ढोखा पाने ।
लाडी चललाँ पिहा लवरंग, डखने बनजिया ॥९॥
एक बन नाँघल, पिहवा रे, डोसर बन चाँपल ।
बिचे ठन भइ गैलि भेटे, चलहु सामी घरे ॥१०॥
रिस कइ माटल पिहवा रे, अकिल कइ कटल ।
नाहीं मन्लाँ ढानिके बचनियाँ हो, चलला झुम्का बनजिया ॥११॥
मै ढानी चिटके डुखासल रे, सुस्कटीं घरे अइनु ।
सामी समझी राट नहीं कटल, उठके चकिया घुमैनु ॥१२॥

स्रोट : जीवलाल सत्गौवा थारु
राप्ती गाउँपालिका-५ अरहनपुर, देउखुरी-ढाङ

६५. सजना (ड)

यि सजनामे लावा डुल्ही आपन जलम घर छोरके सस्रार अइलक ओरसे घरके याडमे टरपलक भाव बा ।

डेस गइलुँ डेस डुनियाँ रे, कि छैला पटुरिया ।
कौने बिढी उटरुँ मै पार, नैहर बरी डुसे ॥१॥
नैहर-नैहर जिनी करो ढनियाँ रे, नैहर बरी डुसे ।
डस कोस नडी भरियाइ, चौरासी कोस बनवाँ ॥२॥
काठ कटैबुँ पाँडन फरही रे, लडिया रे बिचे ढरबुँ ।
उटरी जैबुँ लडिया कइ पार्हे, नैहर हिरकी जैबुँ ॥३॥
डस कोस लडिया भरियाइ रे, चौरासी कोस बनवाँ ।
हजार कोस जमिन भरियाइ, जमिन बरी भारी ॥४॥
उटरे-डखिने मोरे खेलना रे, महल मोरे नचना ।
जिनी सम्झो नैहरके हलिया, समझि डुबरैबो ॥५॥
डस बरस कइ लर्का रे, पचिस बरसके लरकी ।
वर्हटी पर्हटी भोज करलाँ, मोर जिनगी बिगरलाँ ॥६॥
पुरुबेसे आँवैं बार्ह लडियै रे, पच्छिवैं चली जावैं ।
पुरुबेसे आँवैं राजक बेटा, कि ललरी छँवइले ॥७॥
काठन के कठ कुँइया रे, सुन्डर पानी भरे ।

बुँडा छाँक पनियाँ पिवाइ डेउ, मोर हिरडा जुराइ ॥८॥
मैं टे हुइटुँ जलमका कुर्मी रे, टुहीं रे राजक बेटा।
कैसिक पनियाँ पिवाइ डिउँ, टोर हिरडा जुराइ ॥९॥
टैं टे हुइटे जलमका कुर्मी रे, मही रे राजक बेटा।
टोरे डेहल पनियाँ जे पियटुँ, मोर हिरडा जुराइ ॥१०॥
उँजरा टे डोगे भिभरिया रे, कि पनियाँ लरिक गैलाँ।
नहीं राजा पानीके पियासल, मोर जबुना निहँरलो ॥११॥

स्रोटः श्रीमती ढेवी चौधरी
लमही नगरपालिका-७, उचानिम्बु, देउखुरी-दाङ

६६. सजना (ढ)

यि सजना रामायनसे जोरल बा। सिता जानकीके मागन अन्सार पिहवा, डेउरा, सास ससुर्वा पैलकमे खुस हुइलक भाव बा।

पहिले माँगना माग्यो सिता रे, जौने रे बिढी पुरवै।
माँगु मैं नगरी अजोद्ध्या, हनुमान जि मिलहीं ॥१॥
डुसरे माँगन माँग्यो सिता रे, जौने रे बिढी पुरवै।
माँगु मैं कौसल्याहस माटा, ससुरा राजा दशरथ ॥२॥
टिसरे माँगन माँग्यो सिता रे, जौने रे बिढी पुरवै।
माँगु मैं लछिमन अस डेउरा, पुरुस सिरी रामचन्द्राजी ॥३॥
भिरखी केबँल टरे हेरे रानी सिता रे, कउने रहिया अइलो।
मचिया पर वैठल राम-लछिमन, सुरुज अस लौके ॥४॥
कैकेही टे कहे राजा दशरथसे रे, भरतहे राजागद्दी डेउ।
सिरी रामचन्द्राजी के बनिवाँसे, लिखलाँ भगुवाने ॥५॥
अटना बचना सुनल सिरी रामचन्द्रा जि रे, भरतके राजागद्दी डेउ।
मोर लिखलाँ भगुवाने, चौढ बरसक बनिवासे ॥६॥
राम चलल बनिवाँसे रे, सेवा ढोग मही रे डेउ।
माटा पिटाजी परल मुरछाइ, राम चललँ बनिवाँसे ॥७॥
सिता लिहल गंगाजल पानी रे, सास ससुराके मुख ढोइल,
मुरछासे उठाइल माटा अस कौसल्या, ससुरा राजा दसरथ ॥८॥
आगे राम चलल पाछे लछिमन भाइ रे, टेकर पाछे सिता।
टिनु बन्ढन चलल बनिवाँसे, मढुरे बन लिहलँ टकाइ ॥९॥
टिनु बन्ढन गइलाँ बनिवाँसे रे, वहि रे मढुवन।

राम बिना नगरी अजोढ्या, भइला सुनसाने ॥१०॥

स्रोतः श्रीमतीढेवी चौधरी
लमही नगरपालिका -७, उचानिम्बु, ढेउखुरी-ढाङ

६७. सजना (ण)

यि सजनामे पसुपन्छिन्के बखान बा । ओस्टक कुवाँ पनभर्निक संवाड बा ।

उक्ठा काठ पर बोले मुरिलवा रे, लडिया हहराए ।
बन बोले बनके मुरिलवा, मोर बोलिया सोहावन ॥१॥
एक बन नँघला मुरिला रे, डुसरे बन चाँपे ।
टिसरे बन कइ बिचे, मुरिला एक नाँचे ॥२॥
नाच कोर सेकलाँ मुरिला रे, कि घामके घमासल ।
पानीके पिहासल मुरिला, न लहकट जावैं ॥३॥
अरी, अरी कुवाँ पनभरनिउ रि, बचना मोर सुनो ।
बुँडा छाँकी पानी पियाइ डेउ, मोर हिरडा जुराइ ॥४॥
ना मोरे कुइयाँ पनियाँ रे, नहीं रे कलस डोरी ।
कौने बिढी पनियाँ पियाइ डिउँ, टोर हिरडा जुराइ ॥५॥
कुइयाँ मन पनियाँ जे बावै रे, कलस लागल डोरी ।
उहे बिढी पनियाँ पियाइ डेउ, मोर हिरडा जुराइ ॥६॥
उँजरा टे डोगे भिझरिया रे, कि पनियाँ लरिक गैलाँ ।
मुरिला नहीं पानीके पिहासल, मोर जोबना निहरलो ॥७॥

स्रोत : श्रीमतीढेवी चौधरी
लमही नगरपालिका -७, उचानिम्बु, ढेउखुरी-ढाङ

६८. सजना (त)

यि एक ढानी आपन पिहवक् आनबानके बारेम बखानल गित हो ।

सोइ कइ उठल पिहवा रे, जुलफी फिट्कारे ।
रिसकइ माटल पिहवा, ढानी रे नाहीं चिन्हे ॥१॥
जौ ढानी जैबो नैहरवा रे, सेजिया बिछाइ जायो ।
चोलियक ढाऱ्यो सिरहनियाँ, डेखी जियरा बुझैबुं ॥२॥
बाबा मोरे पुर्खा पुरनियाँ रे, भाइ मोरे छोटे ।
डाडु मोरे जलम हरुइयाँ, लेहे नाहीं आवइ ॥३॥
घुरवैं चौहीं चौहीं चिटावैं बहिनी रे, नैहर कइ बोटिया ।

नाहीं डेखे नैहर कइ लोग, घरही घुमी आवइं ॥४॥
परी गइल जेठ असार रे, भरि गैलाँ नडी नारा ।
हुइही सब डटकरल, लेहे रे नाहीँ आवइं ॥५॥
अरे अरे भैया बरडियो रे, बिनटी सुनो मोर ।
कही डेहे घरवा सन्डेसवा, गुरहि माने जयबुं ॥६॥
झरही झरही नडी बहै रे, गोरी मछरी मारे ।
टोर बहिनी कहला सन्डेसवा, गुरही माने जयबुं ॥७॥
अटना बचन सुनल डाडु रे, गली रे गली घुमे ।
घर घर खोजे सँगलगवा रे, बहिन लेहै जयबुं ॥८॥

स्रोत : ईश्वर (सागर) चौधरी
लमही नगरपालिका-१ नर्ती, देउखुरी-ढाङ

६९. सजना (थ)

यि सजनामे एक ढानी आपन सुन्डर घरके परिकल्पना कैके आपन पिहाके बखान कैले बा ।

चारु कोने कलसा ढरैबु रे, कि मै कलसा छुआइटुं ।
हाँठ जोरी बिनटी सुरुजा डेउटा, मै बर्खा मनाइटुं ॥१॥
पवन वहल पुरुइया रे, पच्छिवै चली गैलस ।
पच्छिउ ओरसे उमरल कारी बडरिया, पुरुइया डइबा बस्यौं ॥२॥
बाँस कटैलुं बाँसवरिया रे, कटैलुं जिभवरिया ।
टरे छाटी कुटरी परेउना, झुमुक डइबा बस्यौं ॥३॥
खेटवा टे जोटल मुरसुवा रे, कि कोडरा छनाछन ।
कब अइहीं लौली डुल्हनियाँ, टिकुली चम्कोइटी ॥४॥
जोटेउ रे पिहा जोटेउ रे, डग्गर जिनी जोटेउ ।
सुटरी नमाइल पिहा जोटेउ, सिरिजा जिनी बोयौं ॥५॥
हाँठिमे लिहलो गुरटा गुलेली रे, काँढे रे लिहलो जबिया ।
चोलो छैला रानीके फुलरियामे चिरिया सिकारे ॥६॥
हाँठिमे चिको मिको घरी रे, काँढे रे लिहल रेडी ।
गोझुमे डेखी फुन्ना-टेनी, आँखी रे लागल चस्मा ॥७॥
डेस बखुना डेस दिल्ली रे, बखुना रे पुरुइया ।
बाठिन बखुना रे पुरुइया, फुन्फुन्नी ढोटी छल्के ॥८॥
अरी, अरी घरके गढुनियाँ रि, पहुना पुछे निकरो ।

लोटा टे मिसे बलुरी ढैके, निर्जुल पानी नानो ॥९॥
आघे आघे चलट महरंगी रे, पिछे रे, चलल टुलरंगी ।
कौने बहाना ढैके निकरु, मैं पछ्ली डबरिया ॥१०॥
भाँटा टे फुलल भँटरंगी रे, करैला फुले बाँझी ।
दिल्ली सहरके स्कुलियन, बाँझी रे फुला लोह्वलाँ ॥११॥
डरि-डरि पाटे-पाटे छप्कल सुगुना रे, उपरे मेरखिया ।
मारो सारे डरियाँ झुकाइके, कि सुगुना गिरिजाइ ॥१२॥
भाग्यो रे सुगा भाग्यो रे, कजरी वनमे भाग्यो ।
गोहिक पिहा बटाँ रे सिकरिया, बट्टिस गोली मरहीं ॥१३॥
जाग्यो रे पिहा जाग्यो रे, बैसाख भर जाग्यो ।
चली जैबुँ गोहुँके लवाँगी खाए, पाछे रे पस्टैबो ॥१४॥
जायो रे ढानी जायो रे, टिकुली छोरी जायो ।
टिकुली हेरी-हेरी जियरा बुझैबुँ, सिरहनी ढैके सुटबुँ ॥१५॥
हारक हरले रे बाबा रे, अइसन डुर हरले ।
गंगामे कुडी मरी जयबुँ, खबर नहीं पैबे ॥१६॥

स्रोत : कल्पना चौधरी
लमही नगरपालिका-६ लंगडी, देउखुरी-दाङ

७०. सजना (द)

यि सजनामे एक ढानी आपन पिहा ओ सुन्डर घर के परिकल्पना कैल बा ।

छोटी मोटी जमुनिक रुखवा रे, लुहुर लुहुर करै ।
जिही टर बैठे ननडिजीके भइवा, कि बेनियाँ डोलावै ॥१॥
किहिंसे कटैबुँ जमुनियाँ रे, कि किहिंसे चँछैबुँ ।
किहिंसे खोलैबुँ मैं जमुनियाँ, कि मचिया सलैबुँ ॥२॥
कुह्वारी कटैबुँ जमुनियाँ रे, बसला चँछैबुँ ।
रुखनी खोलैबुँ जमुनियाँ, कि मचिया सलैबुँ ॥३॥
अरे अरे भइया बह्वैया रे, लागो रे मोर मिटवा ।
अस कइ मचिया सलाउ, कि नउना चलैबुँ ॥४॥
मचिया बैठी सावर ढनियाँ रे, अरे बेनियाँ डोलावै ।
बेनियाँ डोलावट ढनियाँ, कि गइलैं अलसाइ ॥५॥
बेनियाँ डोलाइल ढनियाँ रे, गइल अलसाइ ।
सासु नन्ड गोहरावै करेजा मोर सलै ॥६॥

अनडी ढनवाँ कटैबुं रे, कि भुजवा भुजैबुं ।
भेली मिठैया फोरी, गबरु डग्गर बिचे खयबुं ॥७॥
हाँठ टे लेहल टेकुनियाँ रे, सिर रे पर मोटरी ।
छइवलक पटरी छँयलिया, गइल रिसियाइ ॥८॥
एक वन नाँघल ढनियाँ रे, डुइ रे वन नाँघल ।
टिसरे बन कइ बिचे, मुरिला एक नाचे ॥९॥
नाच कोरी सेकल मुरिला रे, खर रे डुपहरीया ।
पनियाँ पियासल मुरिला, लस्कट आँवइ ॥१०॥
अरे, अरे कुइयाँ पनभरनी रे, नाउँ नाहीं जनटुँ,
बुँडा एक पनियाँ पिवाइ डेउ, मोर हिरडा जुराइ ॥११॥
न मोर कुइया मन पनियाँ रे, न कलसा डोरिया ।
कैसिके पनियाँ पिवाइ डिउँ, टोर हिरडा जुराइ ॥१२॥
न टोरे कुइया मन पनियाँ रे, न कलसा डोरिया ।
बुँडा एक पनियाँ पिवाइ डेउ, मोर हिरडा जुराइ ॥१३॥
उँजरा टे डोगल झिझरिया रे, टुरुक पानी लर्के ।
न छैलाँ पनिया पियासल, मोर जोवना निहर्लो ॥१४॥
हाँठ टे लेहल टेकुनियाँ रे, सिर रे पर मोटरी ।
छइवलक पटरी छयलिया, गइल रिसियाइ ॥१५॥
एक बन बाँघल ढनियाँ रे, डुइ रे बन नाँघल ।
टिसरे बन कइ बिचे, एक सुरहुर लडिया ॥१६॥
झिरिहर-झिरिहर बहे लडिया रे, गोरी रे मुस्की मारे ।
जौने घाट गोरी रे लहाबैं, सुगुना बोली मारैं ॥१७॥
भागो टुं भागो सुगुना रे, कजरी बन भागो ।
मोरे पिहा बटाँ रे सिकरिया, गुरटा गोली मरहीं ॥१८॥
हाँठि लिहल गुरटा-गुलेलिया रे, काख रे सुट जबिया ।
चलैं छैला चिरिया सिकारे, कजरी बन बिचे ॥१९॥
डरि-डरि नाचल सुगुना रे, पाट हो पाट छप्के ।
डँरिया झुकाइ छैला मरहो, सुगुना गिरी जाइ ॥२०॥
मार किहे मरलो छँइलवा रे, मारे नहीं जनलो ।
मारी डरलो सुघरी चिरैयाँ, महिन डरड लागे ॥२१॥

स्रोत: चम्पा चौधरी
कैलारी गाउँपालिका-८, डख्खिन टेँही, कैलाली

७१. गैया बेंढ्ना सजना

यि सजना गैया बेर्हेबेर गैना सजना हो । यि सजनामे गैया बेर्हेबेरिक सक्कु क्रियाकलापके बारेम बखान बा ।

अलिया-गलिया घुमल चौकिडर्वा रे, कि छोरल पुकार ।
चोलो जाइ गाउँ कि महटिनियन, गाइ रे बेर्हे जाइ ॥१॥
भिटरेसे निकरल महटिनियाँ रे, गलिया भइल ठार्ही ।
चोलो जाइ गाउँ कि लंवरियो, गाइ रे बेर्हे जाइ ॥२॥
एक बन भागल गाइ रे, डुइ रे बन भागल ।
भागी गैलाँ कजरी बनभिटर, गाइ रे नहीं पावैं ॥३॥
एक गाइ भागल रे, डुइ रे गाइ भगलाँ ।
गाँसी लेउ गाँउ कि महटौं, गाइ रे नहीं पावैं ॥४॥
ठार्ही डुपहरीया गाइ बेर्हनु रे, गाइ रे नहीं पावैं ।
छुटी गैलाँ डेह कि पसिनवा, कि चोली रे बन्डा भिजे ॥५॥
चारी कोना चौ-गिर्डा रे, डयवा रे नहीं बरसैं ।
चिरिया चिघार मनुवा भाट, पानी रे बिना टर्से ॥६॥
कुइयाँ झडखैं कुइयाँ पनभरनी रे, रहिया झडखे बटोहिया ।
डसु सखी सुहरैनी, पानी रे बिना टर्से ॥७॥
पुरुबसे आवइं आँढी पानी रे, कि पठरा परटी आवैं ।
भरी गैलाँ टाल पोखरिया, भरही भुइ सागर ॥८॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

७२. बुढनी-बटसिया सजना (क)

यि सजना खाख कैके डुइ सखिया गोहियनके संवाड हो । जहाँ फुलवारी, पोखरी, टलुवक बखान बा ।

केकर बाटैं बारी फुलवरिया रे, केकर बाटैं पोखरा ।
बुढनी-बटसिया डुनु गोहिया, सगरा लहाइ जावैं ॥१॥
बापके लगाइल बारी फुलवारी रे, पिटुरी कइ रे पोखरा
बुढनी-बटसिया डुनु गोहिया, फुला रे घाले आवैं ॥२॥
अटना बचन सुनैं डुनु गोहिया रे, चोलो रे फुला घाले ।
फुला घाले रे झोग्डार, कि उही डुनु कान ॥३॥
फुला टे डुनु गोहिया रे, घालै रे डुनु कान ।

लइ अँचला मुस्कि मारैं, छइला कइ रे पास ॥४॥
साँझ भइल डिनबुरवा रे, गइया रे करियावैं ।
बुढनी-बटसिया डुनु गोहिया, चुरवा न मासैं ॥५॥
चुरवा टो मासल ढानी रे, छैला कइ रे हेरैं ।
छैला टे मरलाँ मुसकिया, कहो रे ढानी हाल ॥६॥
भुसेल्हामे बैठल छैला रे, मन रे मन सोचल ।
टुहिन असक सुग्घर ढनियाँ, पाइ मै गइलुँ ॥७॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

७३. बुढनी-बटसिया सजना (ख)

यि सजना डुइ सखिया गोहियनके सिंगार बखान हो । जहाँ जवानी उपलके सक्हुनके आँख डेख्ना ओ लोभ लग्लक बखान बा ।

गंगा-जमुना डुनु भाइ रे, पुरुब मुह बाटैं ।
बुढनी-बटसिया डुनु गोहिया, पहिरैं रेसम चोलिया ॥१॥
कहाँ फटैलो ननडी नेंहगा रे, कहाँ फटैलो अँचला ।
कहाँ फटैलो झिन सुट चोलिया, निकरे डुनु जोवना ॥२॥
बेन्ह्वाँ फाँड टे फाटल मोर नेंहगा रे, चोली बन्डा टुटे ।
बटला मिसट कर्खा लागे, मोर चोली बन्डा टुटे ॥३॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

७४. सिंगरु सजना (क)

यि सिंगरु सजनामे बालापन बिटल डिनके बखान कैल बा ।

एक पन्ना हेरल बभना, डुइ पन्ना हेरनै ।
हरे उनको ढरनै, सिंगरु रे नाउँ ॥१॥
अरे-अरे सिंगरु रे, सुनो हे मोर बिनटी ।
अरे मनरुचि छैला, ननहो रे बेसाइ ॥२॥
हरे परगा न डारल सिंगरु रे, आगे सुर नेंगल ।
डेखी डारल, हाँठि रे चर्हइया ॥३॥
अरे-अरे भैया रे, हाँठी चर्हइया ।
अरी कुम्हरा अवरिया, डेहो रे बटाइ ॥४॥

मैं नाहीं जनटुं सिंगरु रे, कि कुम्हरा अवरिया ।
अरी आगे जाइ, पुछो रे उंट चर्हइया ॥५॥
परगा नमाइल सिंगरु रे, आगे सुर नेंगल ।
डेखी ट डारल, उँट रे चर्हइया ॥६॥
अरे-अरे भैया रे, उंट चर्हइया ।
कुम्हरा अवरिया, डेहो रे बटाइ ॥७॥
मैं नै जनटुं सिंगरु रे, कि कुम्हराा अवरिया ।
अरी आगे जाइ, पुछो घोरी चरवा ॥८॥
परगा नमाइल सिंगरु रे, आगे सुर नेंगल ।
डेखी टे डारल, घोरी रे चर्हइया ॥९॥
अरे-अरे भैया सिंगरु रे, घोरी चर्हइया ।
कुम्हरा अवरिया, डेहो रे बटाइ ॥१०॥
मैं नै जनटुं सिंगरु रे, कुम्हरा अवरिया ।
अरी आगे जाइ, पुछो भैंसा चर्हइया ॥११॥
परगा नमाइल सिंगरु रे, आगे सुर नेंगल ।
डेखी टे डारल, भैंसा चर्हइया ॥१२॥
अरे-अरे भैया रे, भैंसा चर्हइया ।
कुम्हरा अवरिया, डेहो रे बटाइ ॥१३॥
मैं नहीं जनटुं सिंगरु रे, कुम्हरा अवरिया ।
अरी आगे जाइ, पुछो गोरु चर्हइया ॥१४॥
अरे अरे भैया रे, गोरु चर्हइया ।
अरे कुम्हरा अवरिया, डेहो रे बटाइ ॥१५॥
मै नहीं जनटुं सिगरु रे, कुम्हरा अवरिय।
अरी आगे जाइ, पुछो भेरी चर्हइया ॥१६॥
परगा नमाइल सिंगरु रे, आगे सुर नेंगल ।
अरे डेखी ट डारल, भेंरी चर्हइया ॥१७॥
अरे-अरे भैया रे, भेंरी चर्हइया ।
कुम्हरा अवरिया, डेहो रे बटाइ ॥१८॥
मै नहीं जनटुं सिंगरु रे, कुम्हरा अवरिया ।
अरी आगे जाइ, पुछो छेगरी चर्हइया ॥१९॥
अरे अरे भैया रे, छेगरी चर्हइया ।

कुम्हरा अवरिया, डेहो रे बटाइ ॥२०॥
मैं नहीं जनटुँ सिंगरु रे, कुम्हरा अवरिया ।
अरी आगे जाइ, पुछो सुवर चर्हइया ॥२१॥
परगा नमाइल सिंगरु रे, आगे सुर नैंगल ।
डेखी ट डारल, सुवर चर्हइया ॥२२॥
अरे-अरे भैया रे, सुवर चर्हइया ।
कुम्हरा अवरिया, डेहो रे बटाइ ॥२३॥
जहवै टे पुगवे सिंगरु रे, ठपक ठुइयाँ ।
जौने टे घरवा, कुम्हरा कइ हो ॥२४॥
निक भली मन छैला रे, सिंगरु कोनवै लगाइल ।
निक निक छैला रे, लेहल बेसाहा ॥२५॥
परगा नमाइल सिंगरु रे, आगे सुर नैंगल ।
चली भइलाँ रे सिंगरु, अपने मकाम ॥२६॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

७५. सिंगरु सजना (ख)

यि सिंगरु सजनामे गंगा अस्नानसे लेके जिवनसैलीके बारेमे बखानल बा ।

छोटी मोटी सिंगरु रे, सुटिया डगमग ।
छलकट सिंगरु, पनियाँ के जाए ॥१॥
डेउ-डेउ मायर मोरे रे, पिरी ढोटिवा ।
मैं चली जैबुँ, गंगा रे असनान ॥२॥
सबहुंक डिनवा रे, पुट घरही लहैलो ।
आजुक डिनवा, गंगा रे असनान ॥३॥
डेउ-डेउ मायर मोरे रे, सबुन पैटरवा ।
मैं चली जैबुँ, गंगा रे असनान ॥४॥
सबहुंक डिनवा रे, पुट घरही लहैलो ।
आजुक डिनवाँ, गंगा रे असनान ॥५॥
डेउ-डेउ मायर मोरे रे, चन्डन खरौवाँ ।
मैं चली जैबुँ, गंगा रे असनान ॥६॥
सबहुंक डिनवाँ रे, पुट घरही लहैलो ।
आजुक डिनवाँ, गंगा रे असनान ॥७॥

हाँरी से कार्हल चेपवा रे, छुरिया कटरिया ।
चली टे भइलाँ चेपवा, गंगा रे असनान ॥८॥
सिर घाट चेपवा रे, करे असनान ।
अटघाट सिँगरु, पनियाँ के जाइ ॥९॥
कोछवैं से कार्हल चेपवा रे, छुरिया कटरिया ।
बेली चम्पा फुलवा, काटी रे पुहाइ ॥१०॥
निक-निक फुलवा रे, सिँगरु कनवै फुलाइल ।
भलमन फुलवा, कोछवा भरावैं ॥११॥
काहेक टुँ चेपवा रे, पानी ढिंगुलैलो ।
पुग रे घैला, ना भराइ डेउ ॥१२॥
नाघ कइ सिखल रे, मोर गुन बिड्या ।
जौने टे बिड्या, डेबुं रे चलाइ ॥१३॥
जौ टुँ छैला रे, ठेहुनी लगैबो ।
हेनवाँ कुमइवक, लगबो सराप ॥१४॥
जौ टुँ छैला रे, ठेकने जे चर्हबो ।
हेनवाँ कुमइवक, लगबो सराप ॥१५॥
जौ टुँ छैला रे, सिरही चहैंबो ।
हेनवा कुमइवक, लगबो रे सराप ॥१६॥
पुरुबे चिटाइल सिँगरु रे, पच्छिउँ चिटाइल
नहीं टे डेखल, मनुखा रे सरुप ॥१७॥
डख्खिन चिटाइल सिँगरु रे, उट्टरे चिटाइल ।
डेखी टे डारल, चेपवा स्वरुप ॥१८॥
अरे-अरे भैया रे, नगरिक चेपवा ।
हमरे घैला न उठाइ, भला रे डेउ ॥१९॥
उठाइक उठैबु सिँगरु रे, टुहरे घैला ना ।
हमरिक मगनवाँ, कुछ रे भला डेउ ॥२०॥
डेहक डेहबु चेपवा रे, हाँठ कइ मुडरिया ।
और डेहवुँ, गजमोटी हार ॥२१॥
सिँगरु चेपवा रे, लटर-पटर हुइल ।
सुटबुट अरुवा, चलै रे रिसियाइ ॥२२॥
जौ टुं सुटबुट अरुवा रे, घरही बटैबे ।

अइसा सरपबु, हुइबो रे जरा उठ ॥२३॥
भोरिहक निकरल सिंगरु रे, खर डुपहरीया ।
कौने करिनयाँ, लगैलो अटी बेर ॥२४॥
टुहँरिक डेसवा रे, सासु बुहीं बँडरवा ।
जौने बँडरवा, लगैलाँ, अटी बेर ॥२५॥
टुहिंरक डेसवा रे, सासु रैनी मछरिया ।
रैनी मछरिया पानी रे, ढिंगुलाइ ॥२६॥
नाइ टे डेख्नु सिंगरु रे, रैनी मछरिया ।
कौने मछरिया, पानी रे ढिंगुलाइ ॥२७॥
टुहँरिक डेसवा रे, सासु आँढी रे बौखिया ।
कौने बौखिया, लगैनै पिठी ढुर ॥२८॥
नहीं टे डेख्नु सिंगरु रे, आँढी ओ बौखिया ।
कौने बौखिया, लगैलाँ पिढी ढुर ॥२९॥
जैसे टुँ सासु रे, अपने छिनारी ।
ओइसे लगैलो, महीं बेबहार ॥३०॥
टुँहरे बइसवा रे, सिंगरु मैं जब रहनु ।
सटरङ्ग गोंडरी, अटरी रे बिछाइ ॥३१॥
टुँहारे बइसवा रे, सिंगरु मै जब रहनु ।
पाँडन नुगरवा, अटरी रे ढइआउ ॥३२॥

स्रोट : कुलप्रसाद थारु
राजापुर नगरपालिका-२, गुवारी, बर्दिया

७६. चढी उद्रा सजना

यि सजनामे आपन पिहवाहे बिना कैंजाके घोरी डगुरैनासे लेके मेरमेरिक अर्कोसा डारल बा । हाजिरी जवाफ सैलीके गित हो इ ।

जौ पिहा घोरी डगुरैबो रे, हमहीं ढानी हेरबी ॥
बिना रे लगाम, बिना कैंजा, टुं घोरी डगुरैहो ॥१॥
जौ ढानी माँग चोंचैबो रे, हमहीं सामी हेरबी ॥
बिना रे ठंकरा, बिना कंकही टुं माँग चोंचाउ ॥२॥
जौ सामी मन्डिल बनैबो रे, हमहीं ढानी हेरबी ॥
बिना रे कोरैया, बिना बाटी, टुं मन्डिल बनायो ॥३॥
जो ढानी मन्डिल लिपैबो रे, हमहीं सामी हेरबी ॥
बिना रे गोबर, बिना पानी, टुं मन्डिल भल लिप्यो ॥४॥

सजनी बिरहनी पिहा गइलो रे, गाइभर डरलो ॥
बिना गाँठ, बिना पोघा, टुँ पैंरवा बटाउ ॥५॥
सजनी बिरहनी ढानी गइलुं रे, गाइभर डरलुं ॥
बिना रे गाँठ, बिना पोघा, कटरगोंड रहठ ॥६॥
सजनी बिरहनी पिहा गइलो रे, गाइभर डरलुं ॥
बिना रे डाँट, बिना जिभके, खरभर चबावैं ॥७॥
सजनी बिरहनी ढानी गइनु रे, गाइभर डरलुं ॥
बिना रे डाँट, बिना जिभके, अगिना भर रहठ ॥८॥

स्रोत : टिकाराम चौधरी
लमही नगरपालिका-४, छुट्की घुम्ना, देउखुरी-दाङ

७७. मुरिलवा सजना

चिरैचुरुङ्गनके आपन डुख बिपटसे लेके ठँरियनके मैयाप्रेम इ गितके भावमे उटारल बा । यि सजना खभ्भरार बा ।

कँहवै बोले हंसा कुरिलवा रे, कहवैं ब्रोले घाँघर ।
कँहवै बोले बनके कोइलिया, टोर बोलिया सोहावन ॥१॥
डरुवा बोले हंसा कुरिलवा रे, लडिया बोले घाँघर ।
बनवा बोले बनके कोइलिया, टोर बोलिया सोहावन ॥२॥
एक बन नाँघल मुरिला रे, डुइ रे बन नाँघल ।
टिसरे बन कइ हो बिच, मुरिला एक नाचे ॥३॥
हरी नाची-कोर कैके सेकल मुरिला रे, कि घाम कि घमासल ।
पानीक पियासल मुरिला हो, लसकट आवैं ॥४॥
सुनो सुनो कुइयाँ पनभरनी रे, सुनो रे मोरे बिनटी ।
बुँडा एक पनियाँ पिवाइ डेउ, मोर हिरडा जुराइ जाइ ॥५॥
नाहीं होवैं कुइयाँ मन पनियाँ रे, नाहीं कलस नामल डोरी हो ।
कौने बिढी पनियाँ पिवाइ डिउँ, टोर हिरडा जुराइ जाइ ॥६॥
कुइयाँ मन बावैं कलस जुर पनियाँ रे, कलस नामल डोरी बावैं ।
यिहे बिढी पनियाँ पिवाइ डेउ, मोर हिरडा जुराइ जाइ ॥७॥
मैं टे हुइटुँ जलमक कुर्मी रे, टुहीं रे राजा बेटा ।
कैसिके पनियाँ पियाउँ, टोहार हिरडा जुराइ जाइ ॥८॥
टैं टे हुइटे जलमक कुर्मी रे, महीं राजा बेटा ।
टोरे हाँठ पनियाँ जे पियबुँ, मोर हिरडा जुराइ जाइ ॥९॥
उँजरा टे डोगल झिंझरिया रे, कि पनियाँ लरकी जाइ ।

नाहीं छैला पानीके पियासल, मोर जोबना निहरलो ॥१०॥
अरे पनियाँ टे पिबाइल बठिनियाँ रे, मोर हिरडा जुरैले ।
कहाँ बावै सेज रे पठिरया, टुहीं रे ढानी बेलसुँ ॥११॥
मोरे बावैं सोन कुटलहरी रे, सोनहु पिसलहरी ।
मोरे बावै बजरा केवरिया, नाहीं रे पिहा पइबो ॥१२॥
मरबुं मै सोन कुटलहरी रे, सोनहु पिसलहरी ।
चिरी फरबुं बजरा केवरिया, टुहीं रे ढानी बेलसुँ ॥१३॥
मोरे बटाँ सोरा सय पहरु रे, नौ सय डुटे ।
मोरे बावै सखली कुकनियाँ, नाहीं रे पिहा पइबो ॥१४॥
मरबुं मै सोरा सय पहरु रे, कि नौ सय डुटे ।
मारी डरबुं सखली कुकनियाँ, टुहीं रे ढान बेलसुँ ॥१५॥
अरे टुहु पिहा घोरी डगुरायौ रे, हमहुँ ढानी हेरब ।
बिना रे लगाम, बिना कइजा, टुँ घोरी रे डगुरायो ॥१६॥
टुहु ढानी मुरिया ना चोंचेउ रे, हमहुं पिहा हेरबी ।
बिना रे ठँकरा, बिना कंकही टुँ माँग भर फार्‍यो ॥१७॥
जौ पिहा मन्डिल छायौ रे, हमहुं ढानी डेखबी ।
बिना रे कोरैया, बिना बाटी, टुँ मन्डिल भर छायो ॥१८॥
टुहु ढानी मन्डिल निपायो न रे, हमहुं पिहा हेरबी ।
बिना रे गोवर, बिना पनियाँ, टुँ मन्डिल भर निप्यो ॥१९॥
जिटलो हो पिहा जिटलो रे, हमहुं ढानी हरली ।
टुहु पिहा सोइबो लाली रे पलङ्गपर, हमहुं ढानी गुवाँरी ॥२०॥

स्रोत : टिकाराम चौधरी
लमही नगरपालिका-४, छुट्की घुम्ना, देउखुरी-दाङ

७८. हरिनियाँ जलम सजना

यि सजनामे परडेसमे रहल पिहवाके सम्झनामे ढानी सेजमे सुटके कइल मेरमेरिक कल्पनाके भाव बा, जहाँ बहुट मेरके पसुपन्छिन्के बिम्ब बेल्सल बा ।

कहवैं जलम लिहल हरिनियाँ रे, कि कहवैं मजोरवा ।
कहवैं जलम लिहल बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१॥
खोल्हवै जलम लिहल हरिनियाँ रे, कि बनवैं मजोरवा ।
डरवैं जलम लिहल बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥२॥

किहीं से मरैबु हरिनियाँ रे, किहिले मजोरवा ।
किहिले मरैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥३॥
बन्दुके मरैबु हरिनियाँ रे, कि लब्डे मजोरवा ।
गुरटे मरैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥४॥
कैसे बोकैबु हरीनयाँ रे, कि कैसे मजोरवा ।
कैसे बोकैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥५॥
साँगे बोकैबु हरिनियाँ रे, कि कँढिया मजोरवा ।
कर्ढनी बोकैबु बलरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥६॥
किहींले भुजैबु हरीनयाँ रे, कि किहींले मजोरवा ।
किहींले भुजैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥७॥
ठेंगरे भुजैबु हरिनियाँ रे, कि बँडियै मजोरवा ।
कुर्कुटी भुजैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥८॥
किहींसे कटैबु हरिनियाँ रे, कि किहींसे मजोरबा ।
किहींसे कटैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥९॥
कुर्हारी कटैबु हरिनियाँ रे, कि मुँडारी मजोरवा ।
अरि हँसियै कटैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१०॥
किहींमे ढरैबु हरिनियाँ रे, कि किहींमे ढरैबु मजोरवा ।
किहींमे ढरैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥११॥
सँठरे ढरैबु हरिनियाँ रे, कि कोसवै ढरैबु मजोरवा ।
चुँडियै ढरैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१२॥
कँहवैं पकैबु हरिनियाँ रे, कि कँहवैं मजोरवा ।
कँहवैं पकैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१३॥
अँगने पकैबु हरिनियाँ रे, कि भिटरे मजोरवा ।
कोनटी पकैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१४॥
किहींमे निढैबु हरिनियाँ रे, किहींमे निढैबु मजोरवा ।
किहींमे निढैबं बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१५॥
बटले निढैबु हरिनियाँ रे, कि टसले मजोरवा ।
चुंडली निढैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१६॥
किहींहि खवैबु हरिनियाँ रे, कि किहिंहि मजोरवा ।
किहींहि खवैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१७॥
ससुरा खवैबु हरिनियाँ रे, कि सासु मजोरवा ।

पिहवै खवैबु बलुरिखिया चिरैयाँ, पिहा रे परुडेस ॥१८॥

स्रोत : टिकाराम चौधरी

लमही नगरपालिका-४, छुट्की घुम्ना, देउखुरी-दाङ

७९. बरमासा सजना

यि बरमासा गितमे बाह्र महिनाके बाह्र मौसमके बारे बखानल बा ।

जेठ असार कइ महिना रे, बडरी घाम घेरल
अइ, उटरे डखिने मेघ गर्जे, बरसे झिन बुँडिया ॥१॥
साउन सजनी बरसे झिन बुँडिया रे, टुटै बजरा केवँरिया ।
अरे, रानी भिजै रङ्गी रे महलिया, पिहा हो परडेस ॥२॥
भडौं मास कइ महिना रे, निसु हो अँढियार ।
पिहा मोरे भुलनी अरुसन, कि कुम्ह्रा अवारियै ॥३॥
कुँवार मास कइ महिना रे, जलमे कुवाँर कन्हैयाँ
अरे, आउ जन्मे एक मिट्रा, होइ रे डुइ भाइ ॥४॥
काट्टिक मास कइ महिना रे, कन्ठा करेवा ।
अरे, माटा पिटा गुरु साढु, सेवा भला लेउ ॥५॥
अगहन मास कइ महिना रे, कि आगु रे सालके ।
पिहा मोरे हुइटै, कि गउना लेहे अइहीं ॥६॥
पुस मास कइ महिना रे, जार भइल बहुट
आज पिहा मोरे रहटँ, कि अग्नि जलैटाँ ॥७॥
माघ मास कइ महिना रे, पाला परल ढुसाल ।
आज पिहा मोर हुइटँ, कोना लइकै सुटटुँ ॥८॥
फागुन मास कइ महिना रे, सखी घोरैं अबिर रङ
आज पिहा मोर हुइटँ, अबिर रङ्ग खेलटुँ ॥९॥
चैट मास कइ महिना रे, चन्चल जियरा हमार ।
आज पिहा मोरे हुइटँ, कि बङ्गला छँवैटुँ ॥१०॥
वैसाख मास कइ महिना रे, ढुर रे ढुप चले ।
आज मोरे पिहा हुइटँ, कि बेनियाँ डोलैटुँ ॥११॥
बारा पुगल बारा महिना रे, ढानी टुलसा लगाइ ।
अरे टुलसा टे गइल हरीयाइ, पिहा रे परुडेसे ॥१२॥
काट-खोंट कइ टुलसा रे, टुहिन गङ्गा परोहबुँ
जौं टुलसा टैं हरीयइबे, पिहा रे परुडेसे ॥१३॥

जौ गौरी गङ्गा टै परोहबे रे, लगबुँ बरैयाघाट रे ।
महाडेउ टे अइहीं लहाइ, काँढे रे चह्री जयबुँ ॥१४॥

स्रोत : विक्रम चौधरी
भजनी नगरपालिका-१, कैलाली

८०. मैना

मैना गित बन बनेर गइलबेर जन्नीनके गैना गित हो । थि गितमे आपन ननडिया एक जोगियैसे हुइल मैया से चिन्टिट भौजी जोगियाहे छोरो कना ननडियैसे कइल अरजी बा ।

हरी मैना, कहियासे कहलो जोगी, भोरिया न मन्ट्रा हो मैना,
भोरिया से कहलो जोगि, बिरहुल बसिया हो मैना ॥ १॥
हरी मैना, हाँठे लिहलो जोगी, बिरहुल बसिया हो मैना,
फुकी न डारो जोगी, बिरहुल बसिया हो मैना ॥२॥
हरी मैना, सोन कइ बसिया, रुपन कइ भलरी मैना,
बसिया बाजल ननडी, उही लडिया पार हो मैना ॥३॥
हरी मैना, रिमझिम रिमझिम, बसिया न बाजल हो मैना,
घरहीं से सुनली मोहल, बसिया ननडी हो मैना ॥४॥
हरी मैना, जंगल जोगी ढारी कै बसिया लिहल मैना,
हरी मोहल ननडी मोह लागे हो मैना ॥५॥
हरी मैना, टुँहु टो लेहबो भौजी, खोरिन घैला हो मैना,
लेहबु मैं भौजी, पाट सुटबिरा हो मैना ॥६॥
हरी मैना, लेहबु मैं भौजी, पाट सुटबिरा हो मैना ॥
चली जाइ भौजी, कुवाँ पनघाट हो मैना ॥७॥
हरी मैना, अगसुर नेंगो भौजी, परगा नमाउ हो मैना,
अगसुर नेंगो भौजी, परगा नमाउ हो मैना ॥८॥
हरी मैना, परगा नमाउ ननडी, अगसुर नेगो हो मैना,
पुगी न गैली ननडी, कुवाँ कइ जगट हो मैना ॥९॥
हरी मैना, घैला न ढारो ननडी, कुइया के जगट हो
मैना बिरा न ढारो ननडी, मैना सर उपर हो मैना ॥१०॥
हरी मैना, घैला टे ढारो ननडी, कुइया माभ ढारो हो मैना ॥
लपकी-भपकी ननडी, पानी खिचो हो मैना ॥११॥
हरी मैना, एक घैला ननडी, हाँठ मुख ढोइल हो मैना ॥
डोसर घैला ननडी अंचला मुख ढोइल हो मैना ॥१२॥
हरी मैना, भरो हो ननडी इ घैला पानी हो मैना ॥

लपकी झपकी ननडी पनियाँ खिंचो हो मैना ॥१३॥
हरी मैना, टुँ टे भरो भौजी डुइ घैला पानी हो मैना ॥
महीं टे लागल भौजी झारा पेसाब हो मैना ॥१४॥
हरी मैना, घर घुमी जाउ भौजी, सिरमल जोगियक बसिया ना सुने हो मैना
हरी मैना, टुंहु टे भौजी मोर घर घुमी जाउ हो मैना ॥१५॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी सिरमल जोगियक बसिया न सुने हो मैना ॥
टोही से सुघर टोहार डाडु के बसिया हो मैना ॥१६॥
हरी मैना, डाडुक बसिया सुनटी भँयावन हो मैना ॥
जोगियक बसिया भौजी सुनटी सोहावन हो मैना ॥१७॥
हरी मैना, जिनी जाओ ननडी जोगिया के बसिया न सुने हो मैना ॥
घरहीं रिसैहीं ससुरा हमार हो मैना ॥१८॥
हरी मैना, घरहीं घुमी जाउ भौजी घरहीं घुमी जाउ हो मैना ॥
मै टे जैबु भौजी जोगियक बसिया न सुने हो मैना ॥१९॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी जोगियक बसिया न सुने हो मैना ॥
घरहीं रिसैहीं ननडी सासु हमार हो मैना ॥२०॥
हरी मैना घरहीं रोवट हुइहीं बालख टुहार हो मैना ॥
मैना जिनी जाउ ननडी जोगियक बसिया न सुने हो मैना ॥२१॥
हरी मैना जिनी जाउ ननडी, घरहिंसे रिसैहीं डाडु टोहार हो मैना ॥
मैना घरहीं घुमी जाउ ननडी घर घुमी जाउ हो मैना ॥२२ ॥
हरी मैना, घर घुमी जाउ भौजी घर घुमी जाउ मैना,
मै टे जाइटुं भौजी जोगियक सँगे हो मैना ॥२३॥
हरी मैना, जोगिया जोगिया जिनी कहो ननडी हमार हो मैना ॥
जोगियक संग लगबो ननडी जोगिनिया बोलैबो हो मैना ॥२४॥
हरी मैना, कैसी के भौजी जोगिन बोलैबु हो मैना ॥
करम के लिखल भौजी पुरुस बोलैहीं हो मैना ॥२५॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी हो जोगियक सँगे हो मैना ॥
जोगियक जाट हो ननडी रहला घिनाहुन हो मैना ॥२६॥
हरी मैना, घरहीं टे छुटल रोज पठरिया हो मैना ॥
जोगियक जाट ननडी रहला घिनाहुन हो मैना ॥२६॥
हरी मैना, घरहीं टे छुटल ननडी सेज पठरिया हो मैना ॥
डाइ बाबा आपन सुग्घर हो मैना ॥२७॥

हरी मैना, आँखी कै आँस आँखी बिल्लाइ हो मैना ॥
करमक लिखल भौजी पुरुवे जलम हो मैना ॥२८॥
हरी मैना, जिनी रोउ भौजी जिनी आँसु डारो हो मैना ॥
मै टे जैबुँ भौजी जोगियक सँगे हो मैना ॥२९॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी जोगियक सँगे हो मैना ॥
मोरे बचन ननडी टुहुँ मानी डारो हो मैना ॥३०॥
हरी मैना, अटना बचना भौजी ढारी सोंची राखो हो मैना ॥
मै टे रि जैबुं भौजी जोगियक सँगे हो मैना ॥३१॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥
मैना कुठिलक पैसा ननडी कोलका टुहार हो मैना ॥३२॥
हरी मैना, कुठिलक पैसा भौजी घरहीं सोंची राखो हो मैना ॥
मैना मै टे रि जैबुं भौजी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥३३॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥
मैना भौकक लुगा ननडी कोलका टुहार हो मैना ॥३४॥
हरी मैना, भौकक लुगा भौजि पहिरी भल डारो हो मैना ॥
मैं टे रि जैबुं भौजी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥३५॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥
ठँरियक भैंस ननडी कोलका टुहार लगही हो मैना ॥३६॥
हरी मैना, ठँरियक भैस भौजी ठरियैं राखो टुहार हो मैना ॥
मैना मै टे रि जैबुं सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥३७॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥
मैना घारिक् गोरु ननडी कोल्का टुहार लगहीं हो मैना ॥३८॥
हरी मैना, घारिके गोरु भौजी मोर डुही ढारी खाउ हो मैना ॥
मै टे रि जैबुं भौजी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥३९॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी, जोगियक सँगे हो मैना,
छेगरिक बगाल ननडी, कोल्का टोहार हो मैना ॥४०॥
छेगरिक बगाल भौजी, मारी डारी खाउ हो मैना,
मैं टे रि जैबुं भौजी, जोगियक सँगे हो मैना ॥४१॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी, जोगियक सँगे हो मैना,
भेंरी बगाल ननडी, कोल्का टोंहार लगही हो मैना ॥४२॥
हरी मैना, भेंरी बगाल भौजी, मारी मारी खाउ हो मैना,

मैं टे रि जैबु भौजी, जोगियक सँगे हो मैना ॥४३॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥
हनसी बगाल ननडी कोल्का टुहार लगहीं हो मैना ॥४४॥
हरी मैना, हनसी बगाल भौजी मोर मारी मारी खाउ हो मैना ॥
मै टे जैठु भौजी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥४५॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी सिरमल जोगियाक सँगे हो मैना ॥
बंढुवा सुरा ननडी मोर कोल्का टुहार लागी हो मैना ॥४६॥
हरी मैना, बँढुवा सुरा भौजी मारी खाउ हो मैना ॥
मैं टे रि जैबुं भौजी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥४७॥
हरी मैना, जिनी जाउ ननडी मोर सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥
मुरगी बगाल ननडी कोल्का टोहार लगही हो मैना ॥४८॥
हरी मैना, मुरगी बगाल भौजी मोर पहुना खवायो हो मैना ॥
मैना मैं टे रि जइबु भौजी सिरमल जोगियक सँगे हो मैना ॥४९॥
हरी मैना, जिनी मन मारो भौजी निढी मोह राखो भौजी हो मैना ॥
करमक लिखल हो इ जोगियक सँगे हो मैना ॥५०॥
हरी मैना, चारी चौंडिसा भवन घुमी अइबो हो न लडिया हो मैना ॥
लडियक ढिक ढिक चुल्ही चौका हो मैना ॥५१॥
हरी मैना, झाँगा पाटा कटबो हो ननडी सेजिया बिछैबो हो मैना ॥
सुटबो ननडी आपन अंचला पसार हो मैना ॥५२॥
हरी मैना, गली गली ननडी मोर कुकरा भुकइबो हो मैना ॥
घर घर ननडी मोर अलखा जगैबो हो मैना ॥५३॥
हरी मैना, लडियक टिरे टिरे ननडी भन्सा करैबो हो मैना ॥
ठाउँ ठाउँ टे ननडी मोर ढुनियाँ लगइबो हो मैना ॥५४॥
हरी मैना, टारे ढारु सोनवा उपर ढारु टिल चाउर हो मैना ॥
इहे रे लेउ जोगी भिछिया हमार हो मैना ॥५५॥
हरी मैना, इहे रे भिछिया मै नाहीं लेबु हो मैना ॥
मै टे डिहबुं ननडी हिरा मोटी माला हो मैना ॥५६॥
हरी मैना, करमक लिखल भौजी पुरुव जलम कइ हो मैना ॥
हुइ गैलु मै भौजी जलमक जोगी हो मैना ॥५७॥
हरी मैना, बोइहो भौजी मोरे सरसोंक रुखवा हो मैना ॥
जिनी टुऱ्यो जिनी बाल्यौं सरसों जिनी टे टुऱ्यो फुल्यो हो मैना ॥५८॥

हरी मैना, बरहु बरस भौजी मोर भवना घुमी अइबुँ हो मैना ॥
बरहो हो बरस टुहार डिया सरसों फुले हो मैना ॥५९॥
हरी मैना, बनवा जरी टे भौजी मोर सब कोइ डेखल हो मैना ॥
मन जरी टे भौजी मोर कोइ नाहीं डेखल हो मैना ॥६०॥
हरी मैना, डाइ मोर पापी भौजी मोर बाबा मोर बैरी हो मैना ॥
जलम से भैलु भौजी जोगियक संगे हो मैना ॥६१॥
हरी मैना, न पुरवा बयाल बहल न मोर पवन डोलल हो मैना ॥
अगली डुवरिया भौजी मोर बालु घहराइल हो मैना ॥६२॥
हरी मैना, उटरक बयाल बहल पवन डोलल हो मैना ॥
पछली डुवारिया भौजी मोर बालु घहराइल हो मैना ॥६३॥
हरी मैना, पच्छिओंक बयाल बहल भौजी पवन डोलल हो मैना ॥
घरके डुवरिया भौजी मोर बालु घहराइल हो मैना ॥६४॥
हरी मैना, डखनक बयाल बहल पवन नाहीं डोलल हो मैना ॥
घरके डुवरिया भौजी मोर बालु घहराइल हो मैना ॥६५॥
हरी मैना, एक महिना बिटल डुइ महिना बिटल हो मैना ॥
रैमल राजा कइ गरभ न रहल हो मैना ॥६६॥
हरी मैना, डुइ महिना बिटल टिन महिना महिना लागल हो मैना ॥
टिनी महिना बिटल चारी महिना लागल हो मैना ॥६७॥
हरी मैना, रानी कौसिल्या होइ लागल मलिन हो मैना ॥
बिटी गैला पाँचही न महिना लागल हो मैना॥६८॥
हरी मैना, बिटी गैला पाँचही न लागल मैना ॥
छठही महिना लागल हो मैना ॥६९॥
हरी मैना, छठही महिना लागल हो मैना,
रानी कौसिल्या भइला अनमन हो मैना ॥७०॥
हरी मैना, छवो महिना बिटल साट महिना लागल हो मैना ॥
रानी कौसिल्या हुइली मलिन हो मैना ॥७१॥
हरी मैना, साट महिना बिटल आठ महिना लागल हो मैना '
रानी कौसिल्या भइला मलिन हो मैना ॥७२॥
हरी मैना, आठ महिना बिटल नवो महिना बिटे लागल हो मैना ॥
रानी कौसिल्या अब टो भइला ठकान हो मैना ॥ ७३॥
हरी मैना, नवो रे महिना लागल डस महिना बिटल हो मैना ॥

जलमी गइल राजा कि रगट हो मैना ॥ ७४॥
हरी मैना, पुरबक बयाल बहल पवन न डोलै हो मैना ॥
डिन डिने रैमल राजा मुह डेखी हाँसै हो मैना ॥७५॥
हरी मैना, उटरक बयाल बहल पवन न डोलल हो मैना ॥
डिने डिने रैमल राजा खटिया पकरी ठाढ़ होइ हो मैना ॥७६॥
हरी मैना, पच्छिवक बयाल बहल पवन डोलल हो मैना ॥
डिने डिने रैमल राजा गोली डन्डा खेले हो मैना ॥७७॥
हरी मैना, डखनक बयाल बहल पवन न डोलल हो मैना ॥
डिने डिने रैमल राजा होइला सयान हो मैना ॥७८॥
हरी मैना, सुनो सुनो भैया गाउँ कोटवलवा हो मैना ॥
गाउँ के गँवलिया भैया खेले बलाउ हो मैना ॥७९॥
हरी मैना, गाउँ के गँवलिया खेले बन अइला हो मैना ॥
कौने अरठ किह समुझाइ हो मैना ॥८०॥
हरी मैना, सुनो सुनो गाउँ के गँवलिया हो मैना ॥
चोलो न जाइ भैया हरना सिकार हो मैना ॥८१॥
हरी मैना, झलरी मकुनियाँ कै भाट निढाउ हो मैना ॥
उरडक मुंग कै डाल हो पकाइ हो मैना ॥८२॥
हरी मैना, रोहुवा भगुरा कै मुरिया पकाइस हो मैना ॥
अगरा छेगरा कइ मसवा पकाइस हो मैना ॥८३॥
हरी मैना, डाखी डरिउना कइ साग हो मैना ॥
मन चिट ढारो हो परोरी कै साग हो मैना ॥ ८४॥
हरी मैना, भाट भटिगर सब भइला टैयार हो मैना ॥
कब जैबो रैमल राजा हरीन सिकार हो मैना ॥८५॥
हरी मैना, गाउँके गँवलियाँ भैया लेहो ढाल टलवार हो मैना ॥
रैमल राजा लिहल करिया बन्ढुकिया हो मैना ॥ ८६॥
हरी मैना, गाउँ के गँवलियाँ भैया पाखा लगाउ हो मैना ॥
रैमल राजा लगही डुइ खोल्हवा के मुहान हो मैना ॥ ८७॥
हरी मैना, गाउँके गँवलिया मरहीं टिटरा मजोर हो मैना ॥
रैमल राजा मरहीं सुरा डन्टारा हो मैना ॥८८॥
हरी मैना, आउ आउ भैया गाउँके गँवलिया हो मैना ॥
आइ जइबो भैया डुनु खोल्हवा मुहाने हो मैना ॥८९॥

हरी मैना, फाँरी सेकल राजा सोन मुठ छुरिया हो मैना ॥
अंग अंग रैमल राजा डेहल कटारी हो मैना ॥ ९०॥
हरी मैना, कोइ भैया लागो रे, काठी पाटा हो मैना ॥
कोइ भैया लागो, सलगी न काटे हो मैना ॥९१॥
हरी मैना, कोइ भैया लागो, आगी सुँगाइ हो मैना ॥
कोइ भैया लागो, पकवा पकाइ हो मैना ॥९२॥
हरी मैना, पकवा पकाइ जब, सेक्लि हो मैना ॥
लेहु लेहु रैमल राजा, पकवा न पुजो हो मैना ॥९३॥
हरी मैना, पकवा न पुजी जब, डारल हो मैना ॥
हाली न खाउ भैया, पकवा न पुगाउ हो मैना ॥९४॥
हरी मैना, लेहु रे लेहु रैमल राजा पकवा न खाउ हो मैना ॥
खाउ खाउ रैमल राजा, पकवा न खाउ हो मैना ॥९५॥
हरी मैना, सुनो सुनो भैया, गाउँके गँवलिया हो मैना ॥
चोलो जाइ गाउँके गँवलियो, आव घरे हो मैना ॥९६॥
हरी मैना, एक बन चाँपल रैमल राजा, डुइ बन नाँघल हो मैना,
लागी गैलाँ रैमल राजा, हौका पियासे हो मैना ॥९७॥
हरी मैना, चारी बन नाँघर रैमल राजा, पाँचवा बन चाँपल हो मैना,
कब रे पुगैबो भैया, सुरहुल लडिया हो मैना ॥९८॥
हरी मैना, कटी डुर बाट रे भैया, सुरहुल लडिया हो मैना ॥
पुगी टे गैलाँ भैया, सुरहुल लडिया हो मैना ॥९९॥
हरी मैना, अरी अरी कुइया पनभरनी हो मैना ॥
बुँडा एक बहिनी पनियाँ पियाउ मोर हिरडा जुराइ हो मैना ॥१००॥
हरी मैना, मोर हाँठ पानी कैसे पिबो हो मैना ॥
मै टे हुइठु लोहारिनके बेटी हो मैना ॥१०१॥
हरी मैना, टु टो ननडी मोर अँगिया छिपैलो हो मैना ॥
टुहुँ टे जे हुइटो बासडेउ राजा हो मैना ॥१०२॥

स्रोत: वीरबहादुर चौधरी
राप्ती गाउँपालिका-८, पिपरी, देउखुरी दाङ

८१. बिया-बैठौनी गित

सङ्कलन : बमबहादुर थारु
कन्चन गाउँपलिका-१, बकुलगाढ, रुपन्देही

परटेक महिना नइहर जैनासल, बिया बैठाइबेर जन्नी मनै गैना गित ।

जेठमे जाब असारे नाइ आइब
सावन गुडिया खेलब नइहरवे ।
सावन जाब भादो रे नाइ आइब
भादोमे बरत भुखब नइहरवे ।
भादोमे जाब कुवाँरि नाइ आइब
कातिक दियना जराइब नइहरवे ।
अगहन जाइब पुस नाइ आइब
माघे रे जाब तिरबेनी नहरवे ।
माघे रे जाब फागुन नाइ आइब
फागुन होरी खेलब नइहरवे ।

स्रोत-शालिक प्रसाद थारु,
सैनामैना नगरपालिका-७, देउवापार, रुपन्देही

८२. झर्रा गित (क)

झर्रा गित मुसलमानके टिउहार मुहर्ररममे तहजिया बाबाके बारेमे गैना गित हो । जोस बह्राइक लग उलारा फेन गा जाइठ । मुसलमान समुदाय ओ थारु समुदाय संगे रहल गाउँमे थारु यि गित गैठाँ ।

हरे पवन बहे पुरवइया रे बाबा, आडन लागे काइया-२
अरे हमरे अङनवा चननेक पेँडवा, दुधवासे सिंचाइ देहला-२ ॥
अरे चन्नन पेँडवा पालिके, जरियासे कटाइ देहला-२
अरे दखिनसे बढैया बोलाके, पलङा रे सहलाइ देहला-२ ॥
अरे झिनझिन सुतवा काटिके, पलङा रे बिनाइ देहला-२
अरे चारु मचौवा चारु घुघुर लागे, पटियम इङुर धराइ देहला-२ ॥

८३. झर्रा गित (ख)

हरे गेहुँवा फुले गेहुँ खेतमे, सुगना हरैया लिहे जातु है-२
अरे उडी-उडी सुगा डरिया पर बैठे, हरीयर बदन मुख लाल है-२ ॥
अरे आओ रे बधिका उस बगियामे, गुडता गुलेलिया तानिके-२ ॥
अरे मारत चोंच भुवा उडी गैलैं, सुगना गिरल मुरझाइ रे हाँ-२ ॥

स्रोत-नाथु प्रसाद कठरिया/जेम्स थारु,
सैनामैना नगरपालिका-७ देउवापार, रुपन्देही

८४. उलारा गित

भाइ आगे आगे चलला निसान रे भाइ-२
भइ तेकरे पिछे चलला हुसेन रे भाइ-२ ॥
भाइ घोडा दौराला असमान रे भाइ-२ ॥

८५. झुमरा गित

(राग-चौपाइ)

झुमरा नाच नाचेबेर झुमरा गित गा जाइठ । यम्ने प्रेमिकाके प्रसंसा करल बा ।

ए हाँ हरे, फुला रातरनिया ते महके, रतिया बिरतिया ।
हरे रात-दिन गमके हो गोरी तुहरे जवनिया ॥ १ ॥
ए हाँ हरे, ताजमहलिया ते जनलुं, साहजहाँ बनुवइला ।
हरे कौने भगनवा बनैला, तोहरे सुरतिया ?। २ ॥
ए हाँ हरे, गलवा गुलाबी हो देखुँ, नैना सराबी ।
हरे लटकल केसिया हो लागे कारी बदरिया ॥ ३ ॥
ए हाँ हरे, ओठवा बोलत सुने कुहुके कोइलरिया ।
हरे रुपवा तोहारे लेखा छिरकल अँजोरिया ॥ ४ ॥
ए हाँ हरे, मोहिए बकसी हो देतो इहे दौलतिया ।
हरे जिनगी भर पुंजतुं सुघरी तुहरे चरनिया ॥ ५ ॥
ए हाँ हरे झरिजाइ फरवा हो कँटवे आइ हाथे ।
हरे नहको लोभैलो छयला, ललरी बइरिया ॥ ६ ॥

स्रोत-थारु जनकवि बमबहादुर थारु,
कञ्चन गाउँपलिका-१, बकुलगाढ, रुपन्देही

८६. नरसिंह जेठवा-बिया बैठौनी गित

यि गितमे बहुरियकमे आँख गराइल जेठवा सिकार खेल्ना बहानामे अपन भइवैहे मारडेहठ । मने बहुरिया भइवक चिटामे जरके मुँ जैठिस ।

नरसिङ्ह जेठवा हो पोखरा खनैला, सुनवा ए भवँरा ।
हरी मोर घाट ए बन्हैलाँ, सुनवा ए भवँरा ॥ १ ॥
देहु न सासु हो कचोरा मधु खरिया, सुनवा ए भवँरा ।

हम जैब सगरे मथवा मिजे, सुनबा ए भवँरा ॥ २ ॥
लेहु न बहुबर कचोरा मधु खरिया, सुनबा ए भवँरा ।
जाउ बउहर सगरे मथवा मिजे, सुनबा ए भवँरा ॥ ३ ॥
मथवा ते मिजे धानी मारेला डुबुकिया, सुनबा ए भवँरा ।
अब धनी केसिया रे फैलैला, सुनबा ए भवँरा ॥ ४ ॥
उँचवा हीं चढी चितवे नरसिंह जेठवा, सुनबा ए भवँरा ।
केकर धानी केसिया रे फैलैला, सुनबा ए भवँरा ॥ ५ ॥
आँख तोर फुटल जेठउ बाँहिं घुन लागल, सुनबा ए भवँरा ।
हम होली भयहु तोहारे, सुनबा ए भँवरा ॥ ६ ॥
उहवांसे चलल नरसिंह जेठवा, सुनबा ए भवँरा ।
हँकरल गौंवाँ चौकिदरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ ७ ॥
हँकरहु हँकरहु गौंवाँ चौकिदरवा, सुनबा ए भवँरा ।
छोटेबडा चलो जंगले सिकरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ ८ ॥
चलहु न भैया रे खेलने सिकरवा, सुनबा ए भवँरा ।
दुनु भाइ खेलल जाइ सिकरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ ९ ॥
देहु न धनिया रे हमरे हीं तेगवा, सुनबा ए भवँरा ।
दुनु भाइ खेलब बन सिकरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ १० ॥
जो तुहुँ जैबा सामी खेलने सिकरवा, सुनबा ए भवँरा ।
हमके दैदा कुछु अपन निसनवा, सुनबा ए भवँरा ॥ ११ ॥
हतवा जे बाटे धानी संख रे चुरिलवा, सुनबा ए भवँरा ।
माथे बाटे माङके सेनुरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ १२ ॥
देहु न धनिया रे गोडेके पनहिया, सुनबा ए भवँरा ।
हम जाब खेलने सिकरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ १३ ॥
जो तुहुँ जैबा समिया खेलने सिकरवा, सुनबा ए भवँरा ।
अउरो निसनवा दैके जैबा, सुनबा ए भवँरा ॥ १४ ॥
अङना जे बाटा धनिया तुलसीके गछिया, सुनबा ए भवँरा ।
उहे बाटे हमरे निसनवा, सुनबा ए भवँरा ॥ १५ ॥
आगे-आगे चलल, नरसिंहके घोडवा, सुनबा ए भवँरा ।
पाछे घोडा हरी असवरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ १६ ॥
एक कोस गइला रे दुइ कोस गइला, सुनबा ए भवँरा ।
तिसरेमे खेलल सिकरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ १७ ॥

सबकेउ खेलल् उड़वासे भ्रुडवा, सुनबा ए भँवरा ।
नरसिंह खेलल मैदनवा, सुनबा ए भवँरा ॥ १८ ॥
सबकेउ मारल हरनी सउजवा, सुनबा ए भवँरा ।
नरसिंह मारल छोटे भयवा, सुनबा ए भवँरा ॥ १९ ॥
डँड्वा हीँ मारल रे खल्हवे गिरवला, सुनबा ए भवँरा ।
चनने बिरिछिया ओइठैला, सुनबा ए भवँरा ॥ २० ॥
आजुवे रात जेठउ माफ कइदेता, सुनबा ए भवँरा ।
बिहान होइब बियही तोहारे, सुनबा ए भवँरा ॥ २१ ॥
घरी रात बितल पहर रात बितल, सुनबा ए भवँरा ।
होइगैला भोरवा भिनहिया, सुनबा ए भवँरा ॥ २२ ॥
मरबुं रे घोड तोके दुइ खन्डा करबुं, सुनबा र भवँरा ।
देखा घोडवा आपन असवरवा, सुनबा ए भवँरा ॥ २३ ॥
आगे-आगे चलल हरीजीके घोडवा, सुनबा ए भवँरा ।
पाछे-पाछे नरसिंह जेठवा, सुनबा ए भवँरा ॥ २४ ॥
एक कोस गइला रे दुई कोस गइला, सुनबा ए भवँरा ।
तिसरे कोस हरी जी के लोथिया, सुनबा ए भवँरा ॥ २५ ॥
इहे होला भैहु तोहर सामीके लहसिया, सुनबा ए भवँरा ।
देखलेहु सामी जी के लोथया, सुनबा ए भवँरा ॥ २६ ॥
जाहुन जेठउ घरेसे अगिया लियाना, सुनबा ए भवँरा ।
हम बिनब बनके लकडिया, सुनबा ए भवँरा ॥ २७ ॥
समियाके सतिगती करब हम जेठउ, सुनबा ए भवँरा ।
तब होइब बियही तोहारे, सुनबा ए भवँरा ॥ २८ ॥
नरसिंह जेठवा घरे अगिया लहे गइला, सुनबा ए भवँरा ।
सति आपन सत्तके सुमिरला, सुनबा ए भवँरा ॥ २९ ॥
जो तुहुं होइबा मोरे बारे हो बिहौता, सुनबा ए भवँरा ।
फुफुनीसे अगिया धधकैबा, सुनबा हो भवँरा ॥ ३० ॥
फुफुनीके सत्तसे सतिया अगिया धधकैला, सुनबा ए भवँरा ।
दुनु जरी भैला अब कोइलवा, सुनबा ए भवँरा ॥ ३१ ॥
घरसे जब जेठउ रे अगिया लैके अइला, सुनबा ए भवँरा ।
दुनुक देखे जरल रे कोइलवा, सुनबा ए भवँरा ॥ ३२ ॥
एतना जे जनती भइहु, हमसे छल करबा, सुनबा ए भवँरा ।

नहको मरती आपन छोटे भयवा, सुनबा ए भवँरा ॥ ३३ ॥
भैहुक मरती, भयहुवा पाइजैती, सुनबा ए भवँरा ।
भैया मरले अपने टुटल बहिँया, सुनबा ए भवँरा ॥ ३४ ॥

स्रोत-सोमनी थारु/बलराजी थारु,
कञ्चन गाउँपलिका-१, बकुलगाढ, रुपन्देही

८७. रावल जोगिया साउनी गित

यि गितमे आपन डाइक भेंवटमे लागके एक मरद अपन गोसिन्याहे मारडेहठ ओ छ मैन्हक छावाहे अन्जान मनैन्हे सौंप डेहठ । उहे लौंरा भारी होके अपन डाइहे जियाके बुही (बुडी) हे मारके बडला लेहठ ।

सिभ्कत-सिभ्कत भैला खडी दुपहरीया हो राम, मोरे मुह
ढुरल पसिनवा हो राम मोरे मुह ॥ १ ॥
पैयां तोर लागुं मैं सैयांसे गोसैयां हो राम, मोरे मुह
बेनिया डोलैबो हो राम, मोरे मुह ॥ २ ॥
बैठहु धनिया रे हमरे पलङिया हो राम तोरे मुह
बेनिया डोलैबुं हो राम, तोरे मुह ॥ ३ ॥
भितरेसे निकरल मैया बढैतिन हो राम, देखे मैया
बेनिया डोलैते हो राम, देखे मैया ॥ ४ ॥
बेनिया डोलात देखे मैया बढैतिन हो राम, जरी मरी
भैला अङरवा हो राम, जरी मरी ॥ ५ ॥
चढिके धौराहर सुतल पलङिया हो राम, गोडे मुडे
तनला चदरिया हो राम, गोडे मुडे ॥ ६ ॥
लोटवाके पानी लैके पुतवा जगावे हो राम, उठ मैया
कर दतुइनिया हो राम, उठ मैया ॥ ७ ॥
अगिया लगैबुं पुता लोटाभर पनिया हो राम, बजरा परे
तोर दतुइनिया हो राम, बजरा परे ॥ ८ ॥
हमहुं ते खैबुं पुता बउहरके करेजवा हो राम, नैते पुता
तेजबुं परनवा हो राम, नैते पुता ॥ ९ ॥
लेहु न धनिया कचोरा मधु तेलवा हो राम, लेहु धनिया
मुडी गँठियैबा हो राम, लेहु धनिया ॥ १० ॥
पहिरा न धनिया रे रेसमी चोलियवा हो राम, पहिरा धनिया
नैहर पठाआइं हो राम, पहिरा धनिया ॥ ११ ॥

पहिरा न धनिया रे कुसुम रङ सडिया हो राम, पहिरा धनिया
अपने लैहरवा हो राम, चला धनिया ॥ १२ ॥
करहु न धनिया रे सोरहो सिङरवा हो राम, चल धनिया
अपने नैहरवा हो राम, चल धनिया ॥ १३ ॥
सोरहो सिङार करी भैला तैयारे हो राम, देखो मैया
धनिया जैसे लागे कठपुतर हो राम, देखो मैया ॥ १४ ॥
तोरे लेखा पुता रे लागे कठपुतर हो राम, मोरे लेखा
महुरेक गँठिया हो राम, मोरे लेखा ॥ १५ ॥
मोर पिछ्वरवा कहँरवा भैया मितवा हो राम, फान कहँरा
लाली रङ डोलिया हो राम, फान कँहरा ॥ १६ ॥
आगे-आगे चलल लाली रङ डोलया हो राम, पाछे सामी
घोडा असवरवा हो राम, पाछे सामी ॥ १७ ॥
एक कोस गइला हो दुइ कोस गइला, हो राम, तिसरे कोस
घोडा ठिहनइला हो राम, तिसरे कोस ॥ १८ ॥
कउने कारन सामी घोडा ठिहनैला हो राम, कउने कारन
डोलिया थम्हैला हो राम, कउने कारन ॥ १९ ॥
हरीयर दुबा देखी घोडा ठिहनैला हो राम, छाँह देखी
डोलिया थम्हैली हो राम, छाँह देखी ॥ २० ॥
आउ-आउ धनिया बइठ मोर बगलिया हो राम, देखुं धनिया
तोहरे चिलरवा हो राम, देखुं धनिया ॥ २१ ॥
पुरुवा बयरिया हो अब बइरडिया हो राम, अब धनिया
गइला अलसाइ हो राम, अब धनिया ॥ २२ ॥
चिलरा हेरात सामी हनी तेगा मरला हो राम, हनी तेगा,
धनियाके मारी देहला जनवा हो राम, हनी तेगा ॥ २३ ॥
एक हाथे लेहल छ महिनाके बलकवा हो राम, एक हाथे
धानी के करेजवा हो राम, एक हाथे ॥ २४ ॥
सहरे-सहरे अब घुमल समिया हो राम, के लेइ
छ महिनाके बलकवा हो राम, के लेइ ॥ २५ ॥
केहु जो लैलेता छ महिनाके बलकवा हो राम, हम होइब
रावल जोगिया हो राम, हम होइब ॥ २६ ॥
अपने महलियासे बोलल बहिनिया हो राम, हम भैया

लेब उ बलकवा हो राम, हम भैया ॥ २७ ॥
उहवाँसे चलल रावल जोगिया हो राम, चली भैला
अपने महलिया हो राम, चली भैला ॥ २८ ॥
लोटवाके पानी लैके मैयक जगावे हो राम, उठ मैया
कर दतुइनिया हो राम, उठ मैया ॥ २९ ॥
लेहु न मैया रे धानी के करेजवा हो राम, अब मैया
धनियाके खावा तुं करेजवा हो राम, अब मैया ॥ ३० ॥
अपने हीं धानी पुता लैहर कइ अइला हो राम, इ ते होवे
हरनी करेजवा हो राम, इ ते होवे ॥ ३१ ॥
खाइलेवा मैया रे धानी के करेजवा हो राम, हम भैली
रावल जोगिया हो राम, हम भैली ॥ ३२ ॥
जब रे बालक भैला बरहे बरिसके हो राम, अब बालक,
खेलल बहरबा हो राम, अब बालक ॥ ३३ ॥
सबकेउ कहलँ डाइसे बाबा हो राम, अब बालक
करेला बिचरबा हो राम, अब बालक ॥ ३४ ॥
अङुरी पकरी बालक लागे छयलाए हो राम, बता फुवा
मोर डाइ बाबक नमवा हो राम, बता फुवा ॥ ३५ ॥
तोरे डाइ ते भतिज मरि-हरी गैला हो राम, तोरे बाबा,
भैला रावल जोगिया हो राम, तोरे बाबा ॥ ३६ ॥
अङ्गुरी पकरी बालक लागे छयलाए हो राम, चिन्हा दे फुवा
हमार बावक हो राम, चिन्हा दे फुवा ॥ ३७ ॥
खोजत-खोजत जब खोजी जे लेहला हो राम, इहे होवे
तोहार बाबा हो राम, इहे होवे ॥ ३८ ॥
अङ्गुरी पकरी बालक लागे छयलाए हो राम, बता बाबा
हमार डाइक हो राम, बता बाबा ॥ ३९ ॥
तोर महतारी पुता मरी-हरी गैला हो राम, कैसे पुता
हमहुँ बताई हो राम, कैसे पुता ॥ ४० ॥
अङ्गुरी पकरी बालक लागे छयलाए हो राम, बता दे बाबा
डाइके मटिया हो राम, बता दे बाबा ॥ ४१ ॥
पुरबेके पानी आइला पछिवेंके आन्हिया हो राम, उडिगैला
डाइक तोहार रखिया हो राम, उडिगैला ॥ ४२ ॥

अङ्गुरी पकरी बालक लागे छ्यलाए हो राम, बता बाबा
डाइक मोर मटिया हो राम, बता बाबा ॥ ४३ ॥
एक कोस गइला हो दुइ कोस गइला हो राम, तिसरा कोसे
देखल डाइक मटिया हो राम, तिसरे कोसे ॥ ४४ ॥
हाडगोड पुतवा बिटोरन लागे हो राम, आडे-आडे
जोरन लागल हो राम आडे-आडे ॥ ४५ ॥
अङ्गुरी चिरिके पुता अमितिर चुवैला हो राम, राम राम कैके
उठिगैला डाइ हो राम, राम राम कैके ॥ ४६ ॥
कैसेके डाइ तोहर भइला मिरतुवा हो राम, बिरिया जङ्गल
मिलल हाडगोवा हो राम, बिरिया जङ्गल ॥ ४७ ॥
तुहरे हीं बुही पुता मइला करेजवा हो राम, तोरे बाबा
मोर जान मरलाँ हो राम, तोरे बाबा ॥ ४८ ॥
चलहु ना डाइ रे अपने महलिया हो राम, हम बुहिक
बदला चुकाइब हो राम, हम बुहिक ॥ ४९ ॥
मोरे पिछवरवा लोनियवा भैया मितवा हो राम, खोदे लोनिया
भारी के गडहवा हो राम, खोदे लोनिया ॥ ५० ॥
खोदी के तयारी कैला भारी के गडहवा हो राम, चलो बुही
हेरे तुँ गडहवा हो राम, चलो बुही ॥ ५१ ॥
भारी के गडहवा बुही हेरे चली अइला हो राम, अब बालक
देहला ढकेली हो राम, अब बालक ॥ ५२ ॥
जा अब बुही तैं भारीके गडहम हो राम, डाइक अपन
चुकैली बदलवा हो राम, डाइक आपन ॥ ५३ ॥

स्रोत-सोमनी थारु/बलराजी थारु,
गाउँपलिका-१,, बकुलगाढ, रुपन्देही

८८. बिपतल ननदी (निरौनी गित)

यि गितमे छोटेम भोज करल एक डुखियक पिहवा परडेससे नै आइलमे घरक मनै निकार डेठिस । लैहर गइलबेला भौजी मजा नै मन्ठिस । डुखिया लैहरसे निकरके खेटवम चाना खाइबेर चाना सोन बनजैठिस । घरबंगला बनाइठ, भौजी हे बलौवा पठाइठ ओ बचनके टिरले मारठ ।

नन्हवेमे बाबा मोर कैला बियहवा कि दिनवे चारी ना
पियवा कैला मोर गवनवा कि दिनवे चारी ना ॥ १ ॥

गवना कराइ पियवा घरे बइठैला हो कि पने पियवा ना
गैला बनके गैला परदेसिया कि अपने पियवा ना ॥ २ ॥
रहिया ताकत मोरी नैना पिराइला कि दिनवा गनते ना
मोरे घिसला अङ्गुरिया कि पियवा दिनवा गनते ना ॥ ३ ॥
सासुजी के चोरी-चोरी चनवा हम भुजैली हो ननदिया बैरी ना
रच-रच लहरा हो लगावला ननदिया बैरी ना ॥ ४॥
सासु जे मारे मोके ननदी गरियावेला, देवरवा पापी ना
हमके घरवासे निकाराला देवरवा पापी ना ॥ ५ ॥
ससुरेके बिपतल गोरिया पुरबेके देसवा अब चली देहला ना
अपने नैहरेके रहिया गोरिया चली देहला ना ॥ ६ ॥
एक कोस गैला रामा दुइ कोस गैला हो तिसर कोसवा ना
देखे नैहरके हो नगरिया कि गोरिया तिसर कोसवा ना ॥ ७ ॥
जाइके पुगे आपन गाँवेके गोयँडवा कि देखे गोरिया ना
अपने सग्गे हो भयवाके देखे गोरिया ना ॥ ८ ॥
कहँवा चलाइ तहीं कैले रे बहिनिया कि बोले बहिनिया ना
घरके हलिया अरे हवलिया रोइ-रोइ बोले बहिनिया ना ॥ ९ ॥
सासु जे मारलाँ ननदी गरियैलाँ कि देवरवा पापी ना
हमके घरवेसे निकाराला देवरवा पापी ना ॥ १० ॥
बैठा न बहिनी कदम जुर छहिया कि पुँछी लेइँ ना
अपने धानी जी से बतिया हो कि पुँछी लेइँ ना ॥ ११ ॥
कदम जुर छहिया बावे बिपतल मोर बहिनिया कि दैदेव धनिया ना
पियक लोटा भरके पनिया धनिया दै देव धनिया ना ॥ १२ ॥
लोटा भरके पनिया रहे लैका ढरकैलाँ कि बिपतल ननदी ना
मरबु बाँसेके बढनिया कि बिपतल ननदी ना ॥ १३ ॥
दैदेव धनिया रे जरली खोँटरवा कि बिपतल बहिनी ना
खाइ जरली रे खोँटरवा कि बिपतल बहिनी ना ॥ १४ ॥
जरली खोँटरवा खैलाँ कुकरा बिलरवा कि बिपतल ननदी ना
खैहीं लाटे-लाटे मरवा कि मोरे बिपतल ननदिया ना ॥ १५ ॥
दै देव धनिया रे फटही लुगरिया कि मोरे बिपतल बहिनिया ना
पहिरी फटही लुगरिया की मोरे बिपतल बहिनिया ना ॥ १६ ॥
फटही लुगरिया सामी चेरिया पहिरलाँ कि मोरे बिपतल ननदिया ना

मरबुं लठिया ओ मुडठडिया कि मोरे बिपतल ननदिया ना ॥१७॥
दै देब धनिया रे टुटही खटोलिया कि मोरे बिपतल बहिनिया ना
सुती चारी पहर रइनिया कि मोरे बिपतल बहिनिया ना ॥ १८ ॥
टुटही खटोलिया समिया लैका हो सुतैली कि मोरे बिपतल ननदिया ना
मरबुं बचनके कटरिया कि मोरे बिपतल ननदिया ना ॥ १९ ॥
नैहरके बिपतल बहिनी ससुरेके बिपतल कि चली न भैला ना
गोरिया पुरुबेके देसवा बहिनी चली न भैला ना ॥ २० ॥
एक कोस गैला कि दुइ कोस गैला कि तिसर कोसवा ना
देखे चनवाके खेतवा तिसर कोसवा ना ॥ २१ ।
एक गाल खाइला दुसर गलवा खाइला तिसर गलवा ना
भइला सोनवाके इँटवा तिसर गलवा ना ॥ २२ ॥
तुहँके ते देबुं थबइ कानेके लुरुकिया उरेही देबो ना
मोरे पक्की रे महलिया उरेही देबो ना ॥ २३ ॥
तुँहँके देबुं ठठहेर हाथेके मुनरिया कि दैना देबो ना
हमके झँझँरे गेडुववा कि दै ना देबो ना ॥ २४ ॥
तुहँके ते देबुं बढइ दाँतेको बतिसिया के गढी न देबो ना,
हमरे लाली रे पलडिया कि गढी ना देबो ना ॥ २५ ॥
मोरे पिछवरवा कहँरवा भैया मितवा कि जैबो कहँरा ना
हमरे भौजीके बोलुओइया कि जैबो कहँरा ना ॥ २६ ॥
कैसेके जाइं तोहरे भौजीके बोलुओइया कि कौने देसवा ना
तोहार भौजी ठेकनवा कि कौने देसवा ना ॥ २७ ॥
उज्जैन सहरीया बाटं मोरे हो भौजिया कि दुबरिया बाबे ना
एक असोकवा पेंडवा दुबरिया बाबे ना ॥ २८ ॥
लाली रङ डोलिया फनैला भैया कंहरा कि चली भैला ना
कंहरा भौजी बोलुओइया कि चली भैला ना ॥ २९ ॥
जाइके पुगल कंहरा भौजीके महलिया कि चलबो भौजी ना
तोहरे ननदी बोलैलां कि चलबो भौजी ना ॥ ३० ॥
हमरे ते बाबे समिया फटही लुगरिया कि कि कैसे जाइं ना
आपन ननदी के महलिया कि कैसे जाइं ना ॥ ३१ ॥
लैदेबो समिया हो मोटा सुत सरिया ननदिया हमरे ना
हमके कैलां बोलुओइया ननदिया हमरे ना ॥ ३२ ॥

कैसेके किनी धानी मोटा सुत सरिया करमवा तोहरे ना
धानी लागल बावे अगिया करमवा तोहरे ना ॥ ३३ ॥
लाली रङ डोलिया रे बइठल भउजिया कि चली भैला ना
भौजी ननदी नगरिया कि चली भैला ना ॥ ३४ ॥
एक कोस गइला रे दुई कोस गइला तिसर कोसवा ना
पुगला ननदी नगरिया तिसर कोसवा ना ॥ ३५ ॥
बहरे बाटो गोरिया कि बहरे बाटो गोरिया कि आइगैलाँ हो
तोहार सग रे भउजिया कि आइगैला हो ॥ ३६ ॥
निकरो न भौजी हो लाली रङ डोलिया कि चलो भौजी ना
हमार पक्की हो महलिया कि चलो भौजी ॥ ३७ ॥
बैठो न भौजी हो लाली रे पलङिया समझलेव भौजी हो
अपन टुटही खटोलिया, समझलेव भौजी हो ॥ ३८ ॥
पिइ लेव भौजी हो गेडुवा जुर पनिया समझलेव भौजी हो
आपन लोटवाके पनिया समझलेव भौजी हो ॥ ३९ ॥
जेइँलेव भौजी हो दही दुध भोजना समझलेव भौजी हो
अपन जरली खोँटरवा समझलेव भौजी हो ॥ ४० ॥
पहिरो न भौजी हो झिन सुत सङिया समुझलेव भौजी हो
अपन फटही लुगरिया समुझलेव भौजी हो ॥ ४१ ॥
ननदी जे मारल बचनेके मरवा भउजिया अब ना
जैसे फाटल करेजवा भउजिया अब ना ॥ ४२ ॥
बचनेके मार मारे सग रे ननदिया ननदी बोलिया
मोरे सलला करेजवा ननदी बोलिया ॥ ४३ ॥

स्रोत-सोमनी थारू/बलराजी थारू,
गाउँपलिका-१, बकुलगढ, रुपन्देही।

८९. करैलादह

खेटिपाटिक यि गितमे हर नैचलल्मे परेउना, मुर्गा, छेग्रा, सुरा लगायट बली डे गैल बा, टौन हर नै चलठ। भुवर छाइ डहिक भरवा लेके जैठिस, टब बल्ले वर चलठ।

दस हर चलल पचिस हर ठाढी, बेटी दस दिसा ठाढी रे कुदरिया,
मानी ढारु बावा रे जोडी रे परेउवा, बावा रे तब हरवा चली रे करैलादह।
मनलुं रे बेटी री जोडी रे परेउवा, बेटी री तबहु ना चले रे करैलादह ॥ १ ॥

मानी ढारु बाबा रे बोलनी मुरुगवा, बाबा रे तब हरवा चली रे करैलादह ।
मनलुँ रे बेटी री बोलनी मुरुगवा, बेटी री तबहु ना चले रे करैलादह ॥ २ ॥
मानी ढारु बाबा रे बगरा बोकउवा, बाबा रे तब हरवा चली रे करैलादह ।
मनलुँ रे बेटी री बगरा बोकउवा, बेटी री तबहु ना चले रे करैलादह ॥ ३ ॥
मानी ढारु बाबा रे सुवरा दन्तरवा, बाबा रे तब हरवा चली रे करैलादह ।
मनलुँ रे बेटी री सुवरा दन्तरवा, बेटी री तबहु ना चले रे करैलादह ॥ ४ ॥
मानी ढारु बाबा रे भुवरी बिटिउवा, बाबा रे तब हरवा चली रे करैलादह ।
मनलुँ रे बेटी री भुवरी बिटिउवा, बेटी री तब हरवा चले रे करैलादह ॥ ५ ॥
आगे-आगे चालल दहियाके भरवा, बाबा रे पाछे चले भुवरी बिटिउवा ।
बाबा रे तब हरवा चली रे करैलादह । बेटी री तब हरवा चले रे करैलादह ॥ ६ ॥

स्रोत : जानकी थारु
बुटवल उप.म.न.पा.-१८ सौरहिया, रुपन्देही

९०. चाँचैर लोकगित

यि गितमे अकेली जन्नी मनै डेखके घटुरिया (केवटा) उही लडिया नघैना बहानामे अपन मेहरारु बनैना जाल रचठ । मने जन्नी मनै पिपरक जर पकरके लडिया पार कइ लेठी ।

उ पार खडी गोरी पार पुकारे, केवटा न रे, केवटा नैया लैके धावे
नैहरवा मोरे दुरे बसे ॥ १ ॥
आजुके रइनिया रहि बसी जाहु गोरी, भोरवे न रे, भोरवे उतारी देबुं पार गोरी,
नैहरवा तोर दुरे बसे ॥ २ ॥
काउ बिछैबे केवटा काउ खवैबे, काउ न रे, काउ करैबे जेवनार केवटा रे
नैहरवा मोरे दुरे बसे ॥ ३ ॥
जलिए बिछैबुं गोरी जलिए सुतैबुं, मछरी न रे, मछरी करैबुं जिउनार गोरी
नैहरवा तोर दुर बसे ॥ ४ ॥
नदिया किनारे संख पिपरा हो, छछन-बिछन भैल डार, डरवे पकर गोरी पार
उतरी गैला, केवटा गइल खिसियाइ केवट रे,
नैहरवा तोर दुर बसे ॥ ५ ॥

स्रोत : जानकी थारु
बुटवल उपमनपा-१८ सौरहिया, रुपन्देही

९१. पटेवा (चौपाइ)

यि गितमे भोजमे आइल बरटिया पहुनन् कहाँ कसिक वैठैना कना बर्नन बा । यि लोक नाटकके गित हो ।

पोखरा के ढिके-ढिके आइला बरतिया
अरी हो आइ गइला गौंवाँ के गोइडवा ओरी हाँ ॥ टे. ॥
कइ लाख आवला अजना बजनिहा ।
अरी हो कइ लाख सजना समाज ओरी हाँ ॥१॥
एक लाख आवेला अजनी बजनिहा ।
अरी हो सवा लाख सजना समाज ओरी हाँ ॥२॥
अपने दमाद देखी सासु मगन भैली ।
अरी हो दुधवा के अदहन देली ओरी हाँ ॥३॥
कहवाँ बैठावल अजनी बजनिहा ।
अरी हो कहवा ते सजना समाज ओरी हाँ ॥४॥
बगिया बैठइबुं मैं हथिया से घोडवा ।
अरी हो दुवरे पर सजन समाज ओरी हाँ ॥५॥
मडवे बैठैबुं मैं पतरे समधिया ।
अरी हो कोहबर दुलरु दमाद ओरी हाँ ॥६॥
उरुदे से मान देबुं पतरे समधिया ।
अरी हो खोइवे मैं दुलरु दमाद ओरी हाँ ॥७॥
दान दहेज देबुं पतरे समधिया ।
अरी हो बेटी देबुं दुलरु दमाद ओरी हाँ ॥८॥

स्रोत : रामचन्द्र थारु,
सैनामैना नपा, सेह्रवा, रुपन्देही

९२. झिझिया (चौपाइ)

झिझिया नाचमे यि गित गा जाइठ । मुरिम कलस लेके सामुहिक रुपले जन्नी मनै यि गित गैठाँ । जेकर घर नाच कैजाइठ, ओइने कलसमे चाउर भरके डेहे परठ ।

हँसत खेलत अइली तुहरे अङनवा न रे सुगा ।
महतो के दरबार रे सुगा ॥
बैठे के देहल झारी जजिमवा न रे सुगा ।
उठत डब्बा भर पान रे सुगा ॥१॥
से हो पान खाइल महतो बेटउवा न रे सुगा ।
भिनल बतिसो दाँत रे सुगा ॥२॥
गउँवा के पछिवा एक निबिया के पेडवा न रे सुगा ।
तेही परे डारला हिंडोल रे सुगा ॥३॥

एक ओर झुलला सखिया सहेलिये न रे सुगा ।
एक ओर कृष्ण अकेल रे सुगा ॥४॥
कृष्ण के टुटल मोहर माला न रे सुगा ।
सखियन के फाटे झिन सारी रे सुगा ॥५॥
देहु न बउहर धनवा न रे सुगा ।
धन बाढे पलिवार रे सुगा ॥६॥
देहु न बउहर चउरा न रे सुगा ।
चौदह पुत्र पतोह रे सुगा ॥७॥
देहु न बउहर तेलवा न रे सुगा ।
दियवा झमकी मांगे तेल रे सुगा ॥८॥
जे मोर फोरल झिझिया न रे सुगा ।
तेकर कंडरी चबाये रे सुगा ॥९॥
जे मोर दिहल झिझिया न रे सुगा ।
जुग-जुग जिए पलिवार रे सुगा ॥१०॥
जे मोर दिहल झिझिया न रे सुगा ।
धन बाढे पलिवार रे सुगा ॥११॥
जे मोर दिहल झिझिया न रे सुगा ।
कोठवा महल उठिजाए रे सुगा ॥१२॥
जे मोर दिहल झिझिया न रे सुगा ।
चौदह पुत्र पतोह रे सुगा ॥१३॥

स्रोत :- कुमारी थारु उमेर १०३ वर्ष/डुठिया थारु उमेर ७० वर्ष ।
रेशमी थारु उमेर ५५ वर्ष/असिया थारु उमेर ४५ वर्ष ।
सैनामैना न.पा. कुसुमहा, रुपन्देही

९३. खेलनी

साँझ साँझके लवन्डिन सामुहिक रुपमे खेलनी गित गैठाँ । यहाँ ३ ठो खेलनी गित बा । पहिल गितमे जस्टे करैला टिट रहठ, ओस्टक घरक मनैन्के बोली टिट रहठ । मने पिहवा ठिक रहलेसे सब मिठ हो जाइठ कना बा । डोसर गितम आम लगैलक, मने फरल डेखे नैपाके सस्रारसे बलौबा अइलक प्रसंग बा ।

(क) तित लौकिया तित पतवा, तित रे ससुइयाजीके बोलिया रे सोहान ॥ १ ॥
तित करैली तित पतवा, तित रे ननदियाजीके बोलिया रे सोहावन ॥ २ ॥
तित कोहँडवा तित पतवा, तित रे जेठनियाजीके बोलिया रे सोहावन ॥ ३ ॥

तित भँटवा तित पतवा, तित रे देवरिनियाजीके बोलिया रे सोहावन ॥ ४ ॥
तित खिरवा तित पतवा, तित रे ससुरवाजीके बोलिया रे सोहावन ॥ ५ ॥
तित कुनरुवा तित पतवा, तित रे भसुरवाजीके बोलिया रे सोहावन ॥ ६ ॥
मिठ करैली मिठ पतवा, मिठ रे बिहौताजीके बोलिया रे सोहावन ॥ ७ ॥

(ख) अङना बहारी मैया घुरवा लगैली, जामी गैला आम अमोल ।
अबकी सनेस मैया भेजी पठैवा, देखी लेती आम अमोल ।
आम अमोल मैया देखहु ना पैली, आइगैला ससुरा सनेस ॥ १ ॥
अङना बहारी मैया घुरवा लगैली, जामी गैला आम अमोल ।
अबकी सनेस मैया भेजी पठैवा, देखी लेती आम अमोल ।
आम अमोल मैया देखहु ना पैली, आइगैला भसुरा सनेस ॥ २ ॥
अङना बहारी मैया घुरवा लगैली, जामी गैला आम अमोल ।
अबकी सनेस मैया भेजी पठैवा, देखी लेती आम अमोल ।
आम अमोल मैया देखहु ना पैली, आइगैला देवरा सनेस ॥ ३ ॥
अङना बहारी मैया घुरवा लगैली, जामी गैला आम अमोल ।
अबकी सनेस मैया भेजी पठैवा, देखी लेती आम अमोल ।
आम अमोल मैया देखहु ना पैली, आइगैला सजना सनेस ॥ ४ ॥

(ग) रैयाके हँसुली तुहैं देबुँ बैधा,
मोरे रैया देहु ना जियाइ कहाँर बिना डाभा गडे ॥ १ ॥
रैयाके नथिया तुहैं देबुँ बैधा,
मोरे रैया देहु ना जियाइ कहाँर बिना डाभा गडे ॥ २ ॥
रैयाके टँडिया तुहैं देबुँ बैधा,
मोरे रैया देहु ना जियाइ कहाँर बिना डाभा गडे ॥ ३ ॥
रैयाके कङना तुहैं देबुँ बैधा,
मोरे रैया देहु ना जियाइ कहाँर बिना डाभा गडे ॥ ४ ॥
रैयाके टिकुली तुहैं देबुँ बैधा,
मोरे रैया देहु ना जियाइ कहाँर बिना डाभा गडे ॥ ५ ॥
रैयाके बाजु तुहैं देबुँ बैधा,
मोरे रैया देहु ना जियाइ कहाँर बिना डाभा गडे ॥ ६ ॥

स्रोत : खिचडी थारु
कञ्चन गाउँपालिका-१, बकुलगाढ, रुपन्देही

९४. बिरहनी

यि गितमे टीका छेडैना नेटुवाहे भौजी टीका छेडैलक बापट अपन नन्डिया डैडेठी। बाहरसे आइल डाडु बहित्याहे खोजे चल्ठाँ। दाङदेउखरसे पस्चिउँओर गैना सजना गित हस हो बिरहनी।

सखिया हे, गलियाके गलिया रे घुमेला नेटुववा
केउ साँवर गोदना गोदाला रे ॥ १ ॥
सखिया हे, भितरेसे बोलल रानी महरनिया
हम नेटुवा गोदना गोदाव रे ॥ २ ॥
सखिया हे, कि लेबे नेटुवा रे, सौवाँ कोदौंवाँ
कि लेबे ननदी हमार रे ॥ ३ ॥
सखिया हे, नाही लेब रनिया रेसौंवाँ कोदौंवाँ
हम लेब ननदी तोहार रे ॥ ४ ॥
सखिया हे, हर जोती अइली, कोदार कोडी अइली
पैना देहली ओड्ठाइ रे ॥ ५ ॥
सखिया हे, मैयाके देखली, तिरियवाके देखली
कहाँ गैला बहिना हमार रे ॥ ६ ॥
सखिया हे, तोहरे बहिन स्वामी नन्हवेक छतिसिया
चलिगैला नेटुवाके साथ रे ॥ ७ ॥
सखिया हे, देहु ना मैया रे, ढाल तरवरिया
हम जैबा बहिनी खोजन रे ॥ ८ ॥
सखिया हे, एक कोस गैली, दुसर कोस गैली
पाइगैली नेटुवाके घर रे ॥ ९ ॥
सखिया हे, लै लेहु नेटुवा रे, डाली भर सोनवा
दै देहु बहिना हमार रे ॥ १० ॥
सखिया हे, जुट्टा मोर खैला, सेजरिया मोर सुतला
कैसन बहिना तोहार रे ॥ ११ ॥

स्रोत : सिताराम थारु
बुटवल उपमनपा-१८ सौरहिया, रुपन्देही

९५. भादो (बरमासा)

बरमासा साढारन अर्ठमे बाह्रोमास गैना हस डेखाइठ। मने इ खेटिपाटिम गैना गित हो। नाउँ भादो रलेसे फेन यम्ने बाह्र महिनक् प्रसंग बा। यि बरमासा खासकैके भादोमा गा जाइठ।

असरन मासे, अपन रितु धाए, बरी बरी बुँद
बुँद चौदिसा बरिसे ऽऽ, भरिगे नारा...
भरिगे नारा रे असुवन धारा ।
बैरी चढे दैबा मास असारा, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैबा भादोके राती ॥ १ ॥
सावन मासे, सावन मासे बरिसे घन देवा
अकसर भिजे दुसर कोइ नाईं, भिजत बस्तर
भिजत बस्तर दुइ धन हारा
सामीके तिलक भिजे माथ लिलारा, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैबा भादोके राती ॥ २ ॥
भादो मासे, भादो भवँरा गुजारे निसुराती
कली ना परे दैबा भादोक राती ।
तडकत बिजुली, होत अँजोरा,
हम जानी कन्ता बा आवत मोरा, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैबा भादोके राती ॥ ३ ॥
कुवाँर मासे, कुवाँर मासे बरत एक रहिहो,
सिर भर सेनुरा, नैन भर काजर, पेन्हत कामिन
पेन्हत कामिन दुइ धन हारा,
हम ते अभागिन पाइब कहवाँ, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,

कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ ४ ॥
कातिक मासे, कातिक मासे लगे सोहराइ
हरसित नन्हुवा चरावे धेनु गाइ, ठोकत मानर,
ठोकत मानर, नाचत कन्हाइ ।
बिना पियवाके मोर झुठ सोहराइ, जैहौं द्वारे...
जैहौं द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ ५ ॥
अगहन मासे, अगहन मास बिप्र लेत अवतारा
छुधा भर अन्न खात संसारा ।
छुवत कबिला, छुवत कबिला रे औरो धेनु गाइ
पियवाके भुख त रहलो ना जाइ, जैहौं द्वारे...
जैहौं द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ ६ ॥
पुस मासे, पुस मास पुसवन्ती नारी,
झिने भैला कपड़ा बैस भैल भारी ।
फुकत बेदना, फुकत बेदना लेत हिलोरा,
जैसे ढुरे बन बिच मजोरा, जैहौं द्वारे...
जैहौं द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ ७ ॥
माघ मासे, माघ हीं मासे जार गम्भिरा,
काँपत आङ्ग थहराई, काँपत कामिन
काँपत कामिन सेज फुहराइ,

बिना पियवाके जाडो ना जाइ, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ ८ ॥
फागुन मासे, फागुन मास बहे फगुनी बियारे
तरिवर पात भुइयाँ गिरजाइ
जो हम जनती बही फगुनी बियारा
पियवाके धरती हम भर अँकवारा, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ ९ ॥
चैत मासे, चैत मास फरे बन टेंसु
बनवा पैंठके रोदना पसारे, हमरे पियवा
हमरे पियवा सनेसा अरजाइ,
बिरही अगिन दुख सहलो ना जाई, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ १० ॥
बैसाख मासे, बैसाख मास मंगलचार गावा
सोचल लगन करे ना बियाहा, छावत माडो...
छावत माडो, गावत गिता
बिना पियवाके लगे अनरिता, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दवन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ ११ ॥
जेठ मासे, जेठ मास पुगे बरहो मासा
टुटी गैल दैवा मनवाके आसा, छिर्कत चन्नन,

छिर्कत चन्नन बोल गम्भिरा
चितवा सजावे धना जमके दुवारा, जैहों द्वारे...
जैहों द्वारे पुकारे तिरिया साधु,
समिया दबन दैके रहिगैला भादो,
भादो भवँरा गुजारे निसुराती,
कैसे कटे दैवा भादोके राती ॥ १२ ॥

स्रोत : श्याम बहादुर थारु,
ओमसतिया-६, रुपन्देही

९६. चिरइ : हेना

यि डँर्‍या चिरैनमे समर्पित गित हो । सुख्खा अकालमे पानी-बरखा कामनाके लग यि गित गा जाइठ ।

झन्झा परवत सुख गैल हे,
सुखी गैल सतनी पताल हे ।
सवा लाख डँर्‍या चिरैया,
पानी बिनु मरत पियास हे ॥ १ ॥
मुनिया रौतवाके नेवता पठावे,
हाथमे लेके बिरा पान हे ।
जहाँ कहाँ बैठे मुनिया रौतवा,
राजाके लागे हँकार हे ॥ २ ॥
किया राजा मरहीं किया राजा डँरही,
किया देहीं देसवा निकार हे ।
किया राजा देहीं घोडवा चढनके,
किया राजा दिहें रनिवास हे ॥ ३ ॥
नाहीं राजा मरहीं नाहीं राजा डँरही,
नाहीं देहीं देसवा निकार हे ।
नाहीं राजा देहीं घोडवा चढनके,
नाहीं राजा देहीं रनिवास हे ॥ ४ ॥
चुनी-चुनी पगडी बान्हे मुनियवा,
फुला खोंसी करत सिङ्गार हे ।
हरसित मुनिया चले कचहेरिया,
दुरहींसे करत सलाम हे ॥ ५ ॥

स्रोत: श्याम बहादुर थारु,
ओमसतिया-६, रुपन्देही

९७. सावन बलहा गित

गुडिया पन्चमी (गुरही) के रोज ओ ओकर आसपास गित गैटी बहला झुल्ठाँ । यि गितमे लैहरसे भइवा लेहे आइल, ओकर लग मिस्ठान्न भोजन बनैलक प्रसंग बा ।

उँचवे अमर चढी बैनी जे चितवे, बिरन सावन रे,
नैहरेक लोग नाही आवे, सावन रे सुहावन रे ॥ १ ॥
पिसहु रे मैया बिरहन सतुवा, बिरन सावन रे,
हम जाब बहिनी बोलावे, सावन रे सुहावन रे ॥ २ ॥
अडना बहारत लौंडिन चेरिया, बिरन सावन रे,
भौजी तोरा भैया बोलावे, सावन रे सुहावन रे ॥ ३ ॥
घोडवा बान्हहु भैया, ओही घोडसरिया, बिरन सावन रे,
बैठा भैया लाली पलडिया, सावन रे सुहावन रे ॥ ४ ॥
मचिया ही बैठल सासु बढैतिन, बिरन सावन रे,
काउ बनैबुँ जेवनार, सावन रे सुहावन रे ॥ ५ ॥
डेलवामे बाय बहुवर सौवाँ कोदौवाँ, बिरन सावन रे,
खेतवा गेडुलियाके साग, सावन रे सुहावन रे ॥ ६ ॥
अगिया लगैबु सासु सौवाँ कोदौवाँ, बिरन सावन रे,
बजरा गेडुलियाके साग, सावन रे सुहावन रे ॥ ७ ॥
कुठली मे बावे सासु झिनहर चौरा, बिरन सावन रे,
उरदा मुनियवाके दाल, सावन रे सुहावन रे ॥ ८ ॥
घुरना परेउवा सासु पकरी लियाना, बिरन सावन रे,
अगडा छेगडवाके मास, सावन रे सुहावन रे ॥ ९ ॥
उठहु ना सार चलहु जेवना जेवे, बिरन सावन रे
तोहर बहिन सिझली रसोइया, सावन रे सुहावन रे ॥ १० ॥
लेहु ना भैया रे अपने भैनवा, बिरन सावन रे,
सासुके गोड लागी आइ, सावन रे सुहावन रे ॥ ११ ॥
जियहु ना बहुवर अमर होइजावा, बिरन सावन रे,
भैया बहिनी उतरहु पार, सावन रे सुहावन रे ॥ १२ ॥
लेहु ना भैया रे अपने भैनवा, बिरन सावन रे,
ससुराके गोड लागी आइ, सावन रे सुहावन रे ॥ १३ ॥
जियहु ना बहुवर अमर होइजावा, बिरन सावन रे,
भैया बहिनी उतरहु पार, सावन रे सुहावन रे ॥ १४ ॥

लेहु ना भैया रे अपने भैनवा, बिरन सावन रे,
सौतिनके अगिया लगाइ, सावन रे सुहावन रे ॥ १५ ॥
जाहु ना सौतिन अपने नैहरवा, बिरन सावन रे,
भैया बहिनी होइबा तरबोरवा, सावन रे सुहावन रे ॥ १६ ॥

स्रोत : सिताराम थारु
बुटवल उपमनपा-१८, सौरहिया, रुपन्देही

९८. मेडरी नाचक गित (भवरा)

संकलक: हरीमाया थनेत
मध्यबिन्दु न.पा.-३, रतनपुर, नवलपरासी पूर्व

मेडरी नाच यगतिहीसे नावुचलल नवलपरासी ब.सु.पु बरी जिल्लाक लल्पुरक थरुवाहमाते नाचे- गावके यगुडा बेगरे खानिकी नाच हखयी । यियनाचमा देवी- देवताक पुजा पाठ बहाँसे परकिरितीसे मिललजुलल बुड्हवनियन्सारे देवी-देवताकसकत भेलसे डबुलाहे नाचेन्गावके गाह्र लगलही सुन्ते । खासकके यिय नाच हरीबोधनी एकादसियामा लल्पुरक गुन्राही लदियाक तिरवामा बजार (मेला जात्रा) लागके पहिनही यिय नाचहेरे सकबहु । यिहेनाच मा महाभारत, सिताहरन रामायन यबरो थारुकु यितिहासिक गित सबहढोलक, मानरी, करताल सबह बाजाकतालसे सम्हेडमा नच्सयी- गवसयी/यखनी यिय नाच लल्पुरकदु गोडा गावुँमा मातेपबबहु बाँकी यबरोगावुँमा सस्जाम हसेपयिसा नयिखो पुग्लेगुने बिलायिली (लोपो भेल बड्यी) भेलहुँसर्जाम पटोरले (थन्क्याएको) बड्यी ।

भवरा यिहे नाचमा फेनिगवसयी । देली गितवामा सिरिकिरिस्न भगवान बिरिदाबनमा गायी चह्रोयिकी गितहिंसे यिय खन्डावमा दियायिल बड्यी । हाथमालाठी, पावुमा खरावुं- पेदहाहसे मुहमे बसुली किमधुर धुनमा सडहतियानिसाडे, बिरिदाबनमा गोकुल लगरिकी गायी बस्तु चह्रोयिकी भावु यिय गितवासे बुझे सकेतयी ।

अरी हे छोनलरे भवरा कइ देसे
हो धइ गेलरे आ हे रे रे भवरा कन्हैया के देसे
हो धइ गेलरे आ हे रे रे भवरा कन्हैया के देसे
हो धइ गेलरे आ हे रे रे भवरा कन्हैया के देसे
अरी हे छोनलरे भवरा कइ देसे
हो धइ गेलरे आ हे रे रे भवरा कन्हैया के देसे
अरी हे आधिल रे राती भाव पाछिल राती
हो भाव भिनुसरहरा रे मुरुग देल बोली
हो भाव भिनुसरहरा रे मुरुग देल बोली

अरी हे भाव भिनुसरहरा रे मुरुग देल बोली
अरी हे हाते लेल लौरी रे पेदहा रे मुखे लेल बासी
हो हात लेल रे लौरी रे पेदहा मुखे लेल बासी
अरी हे हाते लेल लौरी रे पेदहा रे मुखे लेल बासी
हो हात लेल रे लौरी रे पेदहा मुखे लेल बासी
हो घरेघर रे आ हे रे कान्हा गइया जे छोरे
उतहेरे ललरी हरे पुरुबे से आवे
हथिया, हाथी सुवदी सयान
हे पछिएसे आवे महाउत
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
उतहेरे ललरी हरे कहवा बैसैबो
हथिया, हाथी सुवदी सयान
कहवा बैसैबो रे महाउत
डार काटन जाई डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
उतहेरे ललरी हरे कहवा बैसैबो
हथिया, हाथी सुवदी सयान
केथिही खिऐबो रे महाउत
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
उतहेरे ललरी हरे डरवा खिऐबो
हथिया, हाथी सुवदी सयान
भतबा खिऐबो रे महाउत
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री

रौरा - वेखा बहादुर महतो थारु - वछर ७७)
रौरिन - छन कुमारी महतो थारु - -वछर ७३)
कावासोती न.पा.- १७ गोछना, नवलपुर
- रौरा र रौरिन श्रीमान र श्रीमती हुन)

९९. ललनारी गित

ललनारी यगहन महिनामा गवसयी । यिय लाला नहियाँ बड्यी । बाँकी गितवाक लय-

बाजा बेगरेखालक हसयी । ललनारी गित जन्लाहर मन्सेपावके गार्हे बड्यी । गितवामा यगहन महिनामा गहनी जाड हसयी । जडवामा मन्सावह ठिठुरके मुठी बान्हेक येते-बो ते बुल्सयी यतुरेमा यगुडा छवुँडीके टोनमारके दियायिल बड्यी ।

हो घरेघर रे आ हे रे कान्हा गइया जे छोरे ।
अरी हे घरेघररी आ हे रे कान्हा गइया जे छोरे ।
हो हाकी देल रे गइया रे बिटोरी लेल बछरु
हो हाकी देल रे गइया रे बिटोरी लेल बछरु ।
अरी हे बृन्दावन रे आ हे रे कान्हा गइया चरहउले
हो वृन्दावन रे आ हे रे कान्हा गइया चरहउले ।
अरी हे बृन्दावन आ हे रे कान्हा गइया च-हावे
हो गइया च-हावे कान्हा बसिया बजावे
हो गइया च-हावे कान्हा बसिया बजावे ।
अरि हे गइया च-हावे कान्हा वसिया बजावे
हो मचिया बैसलरी राधी सुनल धिमी स्वेर
हो मचिया बैसलरी राधी सुनल धिमी स्वेर ।

रौरा - मोहनलाल थनेत थारु -७३ वछर)
मध्यविन्दु न.पा. वडा नं. - ४ मदनपुर
नवलपरासी पूर्व

१००. लाला गित

लाला गित कुबार-कातिक महिनामा गवसयी । यि लाला गितमा हिरीत-पिरितक, धरमक, बिरहक काथा-व्यथाके गिलक लयसे मथुरा लगरमा जाके हाथिकीगदरी काटे जायिकी मान भावुके गितवामा दियायिली बड्यी ।

उतहेरे ललरी हरे कहवासे आवे
हथिया, हाथी सुवदी सयान
हे कहवासे आवे महाउत
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
डार काटन जाइ डुली परे मेथुरानगरी मधुरपुर री
जान हे तरुनी केकुरी लगौले
दुनु बाहिया जान हे तरुनी
केकर अडना मे आवा जाही करइक,
केकर अडनारी आवा जाही करइक
केकर अडनामे जान बहुत री

जान हे तरुनी केकुरी लगौले
दुनु बाहिया जान हे तरुनी
कम्हरा क अडनामे जान बहुत री
जान हे तरुनी केकुरी लगौले
दुनु बाहिया जान हे तरुनी

रौरा - बेखा बहादुर महतो थारु -७७ बछर)
रौरिन - छन कुमारी महतो थारु -७३ बछर)
कावासोती न.पा.- १७ गोछना, नवलपुर
- रौरा र रौरिन श्रीमान र श्रीमती हुन्)

१०१. मघौ गित

यि गित खास कके पुस-माघमा गवसयी यियजुन सबहुं खेती-पातिकी काम धान्हा बरासकायिली हसयी । पहिन-महिन भाँजा मिलके (समुह बनाएर) कुलिहेरी, घरटह, तोरिकटनी यसने यवरो काम करयिरहयी । बकरसे कमायिली पयिसासे गाबुघरहींमा भोजखायके हसे साँझखुनी माँजाक गित गवसयी यकराहिंके मघौ गित फेनिकहसयी । यिया गित डँफुकुतालमा दुपातिमा गवसयी । थरुवानी यिय सँस्करिती फेनी विलायिली बडयी ।

सखी सिता री - २ जोहत बाटेरे हरे खबरी भेजल रघुनाथ री
सपन सपन कइ उठले मन्दोदरी री - २
सपन देखल अजगोत री हरे खबरी भेजल रघुनाथ री
सखी सिता री - २ जोहत बाटेरे हरे खबरी भेजल रघुनाथ री
करले हरन राबन री हरे सिताकइ डनिया - २
हरे हमहू कलस भरे पानी री, खबरी भेजल रघुनाथ री
एकही बनरवा री लंका गनी जारले
अइले बानर सरचारी रे हरे खबरी भेजल रघुनाथ री
सखी सिता री - २ जोहत बाटेरे हरे खबरी भेजल रघुनाथ री
तिरियाक जात री रानी मन्दोदरी री
अनचित घेलहु डेराइ रे खबरी भेजल रघुनाथ री
लंका ऐसन कोट री समुन्द्र ऐसन खावा री
कुम्भकरन ऐसन भाइ रे खबरी भेजल रघुनाथ री
सखी सिता री - २ जोहत बाटेरे हरे खबरी भेजल रघुनाथ री
एक लाख मोर री बेटा बनइरी
सवा लाख मोर नाती रे खबरी भेजल रघुनाथरी

मेघानाथ ऐसन बेटा जे बनी अरी
इनरके देले जिती री, खबरी भेजल रघुनाथ री
सखी सिता री-२ जोहत बाटेरे हरे खबरी भेजल रघुनाथ री

रौरा - मोहनलाल थनेत थारु -७३ वछर)
मध्यविन्दु न.पा. वडा नं. - ४ मदनपुर
नवलपरासी पूर्व

१०२. फगुनहटी गित

क) फगुनहटी (बैठकी)

यि गितवा फगुनावामा गावके भेलेसे फगुनहटी कहसयी । यिय गितवा फगुवा पबबनियाक यवसरमा हप्तादिन लयी गावके चलन हलयी । यखनी यिहे लोपहखयी बडयी। यिय गिल- नाचडफुकु तालमा दुनुहुहसयी। देली गिततवामा राधा-रुक्मिनी जमुना लदीमा जाके जल स्नान करयी खुनिकी बेहोरयसोधाक लधिजाके किरिस्नक करल धरलबात मिलावलगेल बडयी ।

हरे राधा ए रुक्मिन बाह रे जोरे
राधा ए रुक्मिन बाह रे जोरे
चल गेल जमुना असलान
उपर कृष्णा की मोर मन जाने री
चिरलइ गेल रे कृष्ण जसुधाकइ
ठावे री, चिरलइ गेल रे कृष्ण
हरे चिरलई खोली ए राधी जलमै पैसे
चिरलइ खोली ए जलमै पैसे
चिर खोली ए जलमै पैसे
करे असलान, उपर कृष्ण की मोर मन जाने री
चिर लइ गेल रे कृष्ण जसुधा कइ
ठावे री चिर लइ गेल रे कृष्ण
हरे दिजहु कृष्ण हमरी रे चिरे
दिजहु कृष्ण हमरी रे चिरे
हे जोवन रे अनु हा री जोवन भइले उघार
उपर कृष्ण मोरे मन जाने री
चिर लइ गेल रे कृष्ण जसुधा कइ

ठावे री चिर लइ गेल रे कृष्ण
हरे जवली के राधी जलसइ निकने
जवली के राधी रे जलसइ निकने
तमली करे अनु हा री तवली नाही देवो
चिर लइ गेल रे कृष्ण जसुधा कइ
ठावे री चिर लइ गेल रे कृष्ण

रौरा - वेखा बहादुर महतो थारु -७७ वछर)
रौरिन - छन कुमारी महतो थारु -७३ वछर)
कावासोती न.पा.- १७ गोछणा, नवलपुर
- रौरा र रौरिन श्रीमान र श्रीमती हुन)

(ख) फगुनहटी (पोहपट)

दरवे-दरवे डफुकु तालमा गावे-नाचेपरसयी। फगुनहटीमा जनी नैखो परसयी। फगुनहटी गितमा बयिठकी पोहपट, भरभरिया, सहरुवा यवरो खानिकी गित - नाच नच्सयी। यिय गितवामा जनिकी सिडार यबिर, कजरा, सिनुर-टिका यवरोक बयेन करते रड वुल्हास करल बात दियायिलीवाडी।

सासुक कचोरिमा अविराजे घोरवो
सासुक कचोरिमा अबिराजे घोरवो
अरी अबिरा अनु हो री अबिरनके
भरी लाइ री छोटी ननदी
अबिराकइ लवलिमा री ठिक री
छोटी ननदी अबिरा पर
सासुक कचोरिमा कजिला जे घोरवो
सासुक कचोरिमा कजिला जे घोरवो
अरी कजिला री अनु हो री कजिलानके
भरी लाइ री छोटी ननदी
कजिलाकइ लवलिमा ठिक री
छोटी ननदी कजिला पर
सासुक कचोरिमा सिनुरा जे घोरवो
सासुक कचोरिमा सिनुरा जे घोरवो
अरी सिनुरा री अनु हो री सिनुरानके
भरी लाइ री छाटी ननदी

सिनुराकइ लवलिमा ठिक री
छोटी ननदी सिनुरापर

रौरा - मोहनलाल थनेत थारु -७३ वछर)
मध्यविन्दु न.पा. वडा नं. - ४ मदनपुर
नवलपरासी पूर्व

१०३. झुमरा गित

झुमरा गित बहुते बड्यी । सडरावेसकले यगुडा जबडाहेन किताव बन्तयी । बुहेमधे यहवायगुडा छोटे गितलियायिल बडयी । जाकर भावुमा दुलरठाहर जोडी भेटहखके गाह्र हसयी । खानी खानिकी बाजाके मनकबात कहेखोज्लेबाडी । जसने रेवुनी हसे बसुलीसे । बोतेसिन्हिनिया फेनी सिनिहावाके चुरी-पयेरिकी यिसारामा बजाके यापन व्याकुलमनके भडास मेटावके गितवामा दियायिली बड्यी ।

अरे बजवे त बजाए रे रेवनिया
काहे लगावे मायाँ मोर
अँ अ ह री बजवे त बजाए रे रेवनिया
काहे लगावे मायाँ मोर
ऐ हो रौरे दहिनी दयाल
काहे लगावे मायाँ मोर
ऐ हो रौरे दहिनी दयाल काहे ।
अँ अ ह री बजवे त बजही ए रे मोर पायल
काहे लगावे मायाँ मोर
अँ अ ह री बजवे त बजही ए रे मोर पायलिया
काहे लगावे मायाँ मोर
ऐया हो रौरे दहिनी दयाल
काहे लगावे मायाँ मोर
ए हो रौरे दहिनी दयाल काहे ।
अँ अ ह री बजवे त बजही ए रे मोर कंगन
काहे लगावे मायाँ मोर
अँ अ ह री बजवे त बजही ए रे मोर कगंन
काहे लगावे मायाँ मोर
ऐया हो रौरे दहिनी दयाल
काहे लगावे मायाँ मोर
ए हो रौरे दहिनी दयाल काहे ।

रौरा - शिवराज महतो -५५वछर)
मध्यविन्दु न.पा. वडा नं. - १५ प्रसौनी
नवलपरासी पूर्व

१०४. खेतगायिन झुमरा

खेत कमोयिकी जुनवामा फेनी दिनक पहरे-पहरे यन्सार वेहना, दिन हसे साँझ खुनी बेगरे-बेगरे लयक खेतगायन गित गावके चलनरहलयी । यिय गितवाक भावुमा भादो वराके कुंवार महिना पर्ते बरखा वरायिलिहसयी । काम धान्हा वरायिलिफेनी हसयी । पावनी तिहारक सुरसार भेलहसयी समी परदेससेघर यवयिकिमाहा यगुडा बरहा यान देले हखबिय । वुहे वरहहामा सङसहेलरी किसाङे झुलके रङवुल्हा सकरके भावु यिय गितवामा बडयी ।

उतरल भादो रे चनहले कुवाँरि ए हो
हरी खुली री गेल खुली गेल रे देस त
दुअरिया ए हो खुली री गेल ।
जौ सामी जैवे पुरुवे बनिजिया
ए हअँ ह री हमराके लइ देहु रे रामाके हिनोलवा
ए हअँ ह री हमराके हे अ चाहु के सलिआ
धानी पतरमा भेलइ ह री लइ लागो
रिस लाइ देवो रामाके हिनोलवो
ए हअँ ह री आवे लागो रिस ।
जवली कइ अइहे आगो रे सलिया
ए हअँ ह री तवली, तवली की धनी मरी जइवो
ए हअँ ह री तोर कौने रे तोर झुलिहे हिनोलवा
ए हअँ ह री तोर कौने रे तोर ।
पाट लेहे गेल वाही रे पटहेर घर
ए हअँ ह री खाम्हा लेह
खाम्हा लेहे वाही रे बढैया घर हे
ए हअँ ह री खाम्हा लेहे ।
एक खाम्हा गनेले लगरी गोरखपुर
ए हअँ ह री दासरी, दासरी उतरे देस चउपारन
ए हअँ ह री झुलन गइली हे रानी श्री ओचनी
ए हअँ ह री झुली गवले, गवले बिरोगे
ए हअँ ह री झुली री झुली ।

रौसा - बेखा बहादुर महतो थारु -७७ बरष)
रौरिन - छन कुमारी महतो थारु -७३ बरष)
कावासोती न.पा.- १७ गोथला, नवलपुर
(रौसा र रौरिन श्रीमान र श्रीमती हुन)

१०५. खेतगायिन

सारोधानकमोयिकी साँझखुनी लय मिलाके गावे जोकर यिय यगुडा गित हखयी । यिय गितवा यसनहन गित हखयी की गवयिकी सुनके पनिहरनिही पानिभरके बिसरा के गित हिंकी धुनमा मुलल रहसयी । भन्सेहरीही भात डहयिकी महतरी याहछोकनी कनयिकी थाहेन पवसयी कहके दियायिल बडयी ।

अ री हे उ हा रडी-चडी गेलिय की पटी सटी
बिनवा सवरी चलल पनिहार
अ री हे उ हा रडी-चडी गेलिय की पटी सटी
बिनवा सवरी चलल पनिहार
अ री हे उ हा घोलियत भरलिय कुवाके जगतिया
बिनवा खुटवा चनाइ
अ री हे उ हा घोलियत भरलिय कुवाके जगतिया
बिनवा खुटवा चनाइ
अ री हे उ हा अरे सड नाही देखु सहिली
नाही देखुकहा सडभागे अलगाइ
अ री हे उ हा अरे सड नाही देखु सहिली
नाही देखुकहा सडभागे अलगाइ
अ री हे उ हा अरे लाज बरु लगइक काज बरु
छनकइक लाज .छानी माडी अलगाइ
अ री हे उ हा अरे लाज बरु लगइक काज बरु
छनकइक लाज .छानी मागी अलगाइ
अरी हे उ हा अरे नाक हात काने री धैले
अलगाइ दोसरी आचल देले हात
अरी हे उ हा अरे छोनो छोनो काने री हिया मोर
आचल बहिया हम घर बालखा रोवाइ
अरी हे उ हा अरे छोनो छोनो काने री हिया मोर
आचल बहिया हम घर बालखा रोवाइ
अरी हे उ हा सासु मोर आनेहर ननदी मोर
चकचोन्हँर खेलत बलखा रोवाइ

रौरा - पनमतिया थारु -६८ वछर)
मध्यविन्दु न.पा. वडा नं. - ४ मदनपुर
नवलपरासी पूर्व

१०६. जोगेडा नाचक गित

(क) मर्दाना किर्लनिया बनके खानी- खानिकी बाजाक तालमा नच्सयी । जुन यन्सारे यिय नाच भुलयिले जायिबडयी फेनियिय नाचके मन्सावह खुभे मनचोपलगाके हेर्सयी । यियनाचक मान-भावु बड्यी यवहुँलयी । यिय गितवामा यगुडी लवठी दुल्हिया वर्खामा तुरतुर झुर-झुर भिजलदेही जाडर भेले फेनी लेहरा जायके जोड्बलकरले रहबिय ।

बरखाक मारे लेहरा जायेके कतुरो लजिकेक लेहरा गावुँ घर भेल फेनी कयिन कोस तनावुँ भेलक भावु गितवामा दियायिली बडयी ।

रिमिझिमी रिमिझिमी देवा हो बरिसले ए
हरे रिमिझिमी रिमिझिमी देवा हो बरिसले ए
कि ए हो रामा हो हरे बहहो रे पिपर तर
भिजल कामिनए राम ।
कि ए हो रामा हो हरे बरहो रे पिपर तर
भिजल कामिनए राम ।
सबतन भिजि गइले मुडिया बँचु बाँकी गइले
हरे सबतन भिजी हो गइले मुडिया बँचु बाँकी गइले
कि ए हो रामा हो हरे नयना रे टपसवा
नवरंड भिजल ए राम
कि ए हो रामा हो हरे नयना रे टपसवा
नवरंड भिजल ए राम
सब तन भरी हो गइले तलवा भव हो मानी गइले
हरे सब तन भरी हो गइले तलवा भव हो मानी गइले
कि ए हो रामा हो हरे नियरेहो नैहरवा
मोर लेखे दुर भैले हो राम ।
कि ए हो रामा हो हरे नियरेहा नैहरवा
मोर लेखे दुर भैले हो राम ।

रौरा - शिवराज महतो -५५ वछर)
मध्यविन्दु न.पा. वडा नं. - १५ प्रसौनी
नवलपरासी पूर्व

(ख) जोगेडा-उदास खन्ड पहिला भाग

बुदासक बहुते खन्ड बाडी । छाटी खन्ड गहयिकी नम्हर हतयी कहके पहिलोठी खन्डके माते गहलबडयी । यिय खन्डमा भर्खेवियाह दुल्हा- दुल्हिकी जोडी बाडी । जुनकी सपनामा जगरनाथक पुजा-पाठ करयिकी देख्सयी । दुल्हाबादुल्हियासे छोकनी पावके यासामा करायिली बाडी । छोकनिकी बाप-महतारी बनेके कमसे कमबर्स दिन लग्बे कर्तयिनान् । सपनामा देखलनहिया जगरनाथ परिछे जायके हसे सन्तान पावके पुराकरके दर्बे यगुडा पुतरफल पावके भाबु यिय गितबामा बडयी ।

पिपर पाता यती धन तरकुट
सुतल दुनहु पराने ए २
कि ए हो रामा ऐसन सपना कबहुन देखले
पोरछे जइबो जगरनाथ ए २
गवना करल स्वामी बैठवले
नाहितो पवस पुत्र फल ए २
कि ए हो रामा हो दिन चार नैहरदिन चारी
सासुर दिनचार आइलोन भेल ए २
गवनाके धोतिया धुमिल नाही भैले
अखनिही खोजसो पुत्र फल ए २
कि ए हो रामा जौ तोही धानी ए पुत्र जौ खोजे
सेउलेही बाह्रो महिना ए २

रौरा - हुम नारायण महतो थारु -६० वछर)
टिका राम थनैत -६१ वछर)
हुम बहादुर महतो थारु -६५ वछर)
मध्यविन्दु न.पा. वडा नं. - ३ लेढा नवलपरासी पुर्व

१०७. रसधारी नाचक गित

क) रसधारी नाचक गित (सोरठी)

रसधारी नाच फेनी मेड्हरी नाच नहिया भुलायिलिजायी बड्यी । यि नाचक महता लल्पुरमा खुभेनिभेलेफेनी रौराहरक कमी गुने सर्जामक कमिगुनेहसे पयिसाक कमी गुने भुलायिलजायी बड्यी । यि नचबाके लल्पुरक धरुवाह सुख-दुखमा बाट्सयी । काजक खबुरावक दिनबामा हसे भोजव्याहक हसेगड भोजमा यिय नाचके नचोसयी ।

यि नचबामा बहुते खानिकी गित हसयी । जाहिमा सोरठी गितक बुदासखन्डलेल

बडयी । यिय गितवामा मर्दावा परदेस गेले जवुँ जन्या व मर्दक सम्झानामे माकर लाहायेके बिल्खाना बिरोगक भाव् बड्यी ।

धनी मोर करमकी अभागी, हरी जोरली रे सेनहिया
पिअवा मोर बिदेसलइ...२
खोलु धनी खोलु धनिरी हरी बजाराके केवरिया
हरी नरे...२
ऐहो आइगेले कराइक मोर हो बजराके केवरिया
हरी नरे...२
ऐहो आइगेले कराइक मोर हो निदिया, हरी जोरली
रे सेनेहिया पिअवा मोर बिदेसलइ ।
सुतल रहली रामा एक साडे रे सेजिया हरी नेर ...२
ऐ हो जडहवामा लइके सिरहनिया, हरी कबउठे न
आजु पिअवा मोर बिदेसलइ ।
धनी मोर ...
सुतल रहली ...
ऐ हो अङ्गुरी दतवाँ दवाइके , हरी कब उठी
आजु पिअवा मोर बिदेसलइ ।
धनी मोर ...
सुतल रहली ....

रौरा - पुरन राम गुरौ--६२ वछर)
कावासोति न.पा. वडा नं. - १४ त्रिभुनी नवलपरासी पुर्व

(ख) रसधारी नाचक खेम्टा

रसधारी नाचक यिहे- यगुडा खन्ड हखयी । यि गितबामा यगुडी दुल्हियाक यापन बाप-महतारिकी भायी भवुजायिकी, मोहमाया भयिवहुकु यादरके यगुडा गाछक छाँहरी किरुप जोगले बडी । यगुडा सामरथ बेटी व्याहकके, कन्यादान कके, जन्मोती घरसे विदायिकके कर्मघर पठोसयी । हसेवोकर संसार-दुनिया बहवही लवठा घर जलमक जोडी हतयी । यापन जलमक जोडीसे हसी-ठाठा रङरौसमा यापन सिनुर-टिका मेटल हसे दुल्हात्रा फेनी हसिमस्खेरिमा कानक मुनरा टुटलहसे भुलायी लिबात बिर्तन यि गितमा दियायिल बड्यी ।

केकरी अङ्नीया निमी घन गछियन हो नरे,

केकरी अङ्निया निमी घन गछियन....२
बाबाके अङनी निमी घन गछियन हो नरे,
दाबके अङ्निया जुनी छहिया...२
आबे सुनर नरे दाबके अङ्निया जुनी छहिया...२
केकरी अङ्निया चानरचपर गछियन हो नरे,
केकरी अङ्निया सितली बयान...२
आबे सुनर नरे केकरी अङ्निया सितली बयान...२
भैयाके अङनिया चनन चपर गछिया हो नरे,
भौजीके अङ्नियामे सितली बयार....२
आबे सुनर नरे भौजीके अङनिया सितली बयार...२
केकरी अङ्निया बेलत बबुर गछियन हो नरे,
ताही तर खेलले झकझुमर....२
आबे सुनर नरे ताही तर खेलले झकझमर...२
सैयाके अङनिया बेतल बबुर गछिया हो नरे,
ताही तर खेलले झकझुमर....२
झकझमर खेलत मोर हरी माथेके सिनुरवा
आजु सब गेलई धोवाइ...२
आबे सुनर नरे माथेके सिनुरवा गेलइ धोवाइ...२
झकझुमर खेलत मोर हरी माथेके टिकुलिया आजु
सब गेलई हेराइ...२
आबे सुनर नरे माथेके टिकुलिया आजु
सब गेलई हेराइ...२

रौरा - कमलराज गुरौ
कावासोती न.पा. वडा नं. - १४ त्रिभुनी नवलपरासी पूर्व

१०८. सोहरायिकी बयिठकी गित (क)

सङ्रावन: कारी महतो- खयिरहनी न. पा. १ बेहरा, चितोन
लछुमन प्रसाद चौधरी- खयिरहनी न.पा.५ सिमलटाँडी, चितोन
मंगल महतो- खयिरहनी न.पा. ७ मझुयी, चितोन

चितोन जिल्ला कथारु संस्कृतिमा सोहरायिकी महता बहुत बड्यी सोहरायी पाबनी तिहार तिन चार दिन मान्सयी निज सोहरयिकी साँझ खुनी बाठिनी - ढोट्हनिया हसे बयेसक जनिये- मर्दे मिलके यापन गबुवाक घरे घर गित गवते झमटा पारते सोहरायी खेसयी । यि गितवा बसरामा सबहूँ जन्ह बयिठीके गवसयी । यगती रात भरी तिन-चार दिन मसने सोहरायी खायी रहयी । यि गितवा डफु कु तालमा गवसयी । दोसर बाजाकिहो

नाहीं चाहीं ।

हमरी यडनयिया भाभर पिपरक गाछी
तहवँही बठिनी की री ठाट
यहिरे गवालिनी मन हारले ।
मन हारी चित हारी, चित डोले याधी राती
याहिरे गवालिनी
हारे पियारी पनिया नाही भरतु रे....
यही रे गवालिनी मन हारले ।
मन हारी चित हारी, चित डोले याधिराती
यही रे गवालिनी....
हारे गोरटिय पनिया नाही भरतु रे याहेरे गवालिनी....२
हारे लालिय पनिया नाही भरतु रे याहेरे गवालिनी...२
हारे करकिय पनिया नाही भरतु रे याहेरे गवालिनी...२

रौराहर - मंगल महतो
खयिरहनी न.पा. ७ मझुयी, चितोन

१०९. सोहरायिकी बयिठकी बिरहनी गित (ख)

गावँु घरक सबहु ढोट्हनिया बाठिनी, बयेसक जनिये-मर्दे मिलके साँझ से रात भरी घरे-घर झमटा पार्ते बसरामा बयिठी के बयिठकी गित गवसयी । यसही तिन-चार दिन लयी सोहरायी खेसयी । यिय बिरहुनी गितवा फेनी बेगरे खानी की बडयी । यि बयिठकी गितमा डँफुकु बाजा माते चाहीं । दोसर किहो बाजा नाही चाहीं ।

हाँरी पाकल याम गिरी परल रे
याहो हमारी यडनयियाँ....।
हाँरी यायी गेल काग जुठायी देल मुतका करनरे..?
डोबढिनी बाटे कयिसिमरा पनी घट बडादुर
हिलयिकी याबे दुनुजोबन छतिया पर डिठे ।
सातकोस बलुरेत रे बलुबा जब वुडे । हिलयिकी....२
पाकलबेल गिरी परलरे
याहो हमरी यडनयियाँ...... ।
हारे यायिल काग जुठायी देल, मु त का करनरे....?
डोबटिनी बाटे कयि सिमरा पनिघट बडा दुर । हिलयिकी...२

हरि पाकल क्यारा गिरी परलरे
याहोहमरी यडनयियाँ...।
यहो यायिगेल हिरामन सुगवा जुठायिदेल, मु त का करनरे...?
सात कोस बलुवा जब बुडे डोबिटनी....२
हाँरी पाकल कटहर गिरी परलरे
याहो हमरी यडनयियाँ...।
यहो यायिगेल कागजुठामिलदेल मु त का करन रे...?
सात कोस....२
हरि पाकल यमरुद गिरी परल रे
याहो हमरी यडनयियाँ...।
यहो यायिगेल काग जुठायी देल, मु न का करन रे...?
सात कोस बलुवा जबबुडे । डोबटिनी २

रौराहर - मंगल महतो
खयिरहनी न.पा. ७ मझुयी, चितोन

१११०. बारमासा गित

बारमासा गित यगुड़ा बेगरे खानिकी गित हखयी । यि बारहमासा गित सुनले जबुँ बोरा पेन्ह सुनके चाही । खास क के गरभ यसरा भेल जनी यि बतवा लागु हतयी । नाहीं डवुल हतयी । बारहमासा गित बयिठकी लिरगुन गित हखयी । गावुँ घरक सबहु घेडोडा टोट्हनिया, बाठिनी जनिये -मरदे मिलके तिन-चार दिन लयी घरे-घर झमटा पारते बयिठकी गित गवासयी । बयिठकी गितवा साँझ से रात भरी गवते झमटा पारतेँ याही घर सोहरायी खयिते रहसयी । यि गितबामा फेनी डँफुक बाजा माते चाहीं । दोसर बाजा किहो नाही चाही ।

कातिक येहो कातिक परमयकादसी
यगहन येहो यगहन बगिनी धनायी
पिया मोर भरहर काँपे यगहन....२
पुसनी ये हो पुस-पुस नवुनारी बहेली सुगा...
चड़ही लयी जयिहे बही बिरिजा बन....
यलध डहर चड़िही लयी जयिहें खायी जयिहें पुसनी....२
माघिनी येहो माघनी माकरा लहाये
सखी सब तिलका चड़हावे माघनी...२
फागुन येहो फागुन चड़हल चयागुन

पियामोर यडिया सियावे फागुन...२
चयितनी मासे बनडाइहे
पिया मारे देस निछाये चमितनी....२
बयिसाखनी येहो बयिसाखनी बहले बयारे
पिया मुहबातोन यावे बयिसाखनी...२
जेठ महासे घाम चुवे...
चिर चोली खोलक याइन धावे जेठनन....२
यसरहनी मासे यसरहनी मासे घनघोर
ठनकी बिजुली तरसाये यसर् हनी...२
सावन येहो सावन सरवे सोहावन
पिया मोर यधिका सोहावन सावन...२
भादोनी येहो भादोनी भरली भयावन
भरले जबुना लदी तिर भयावन । भादोनी...२
कुँवरानी ये हो कुँवरा कन्हयिया घटरोके
सखी सब जोहत बाटे । कुवरानी...२
पुगल येहो पुगल बारह मासे
सखी सब लिरगुन गांवे । पुगल....२

रौराहर - मंगल महतो
खयिरहनी न.पा. ७ मझुयी, चितोन

१११. कवल दयिया फगुवाक झडझडिया गित

फगुवा पबनिकी यवसरमा गावुँ-घरक सबहु घेडोडा, ढोटहनिया हसे बयेसक मर्दाना माते, मेड्रही बान्हेक, यिय झडझडिया गित गवते फगुवा खेलेसयी । यि नाच गितमा जनी (छवुडी) की सहभागिता नायिखो हसयी । यि गितवामा जनिकी विरोग पुरा बडयी । यिय नाच गितमा सबहुँ जन्ह डँफुलेके घेरामा नच्सयी । यि मा झाली डँफु माते बाजा चाहीं ।

हो कहबही बेटी हाटन - पाटन ?
हरी कहबट्टी राजा दलम सेन हाँ ? बहिबटी...२
हो हाजिपुर बेटी हाटन - पाटन ।
हरी पटनाही राजा दलिम सेन हाँ हाजिपुर...२
हो पटनाही बेटी राजा दलिमसेन ।
याजु बेटी मडल छाडु दानरी हाँ । हो पटनही...२
हो मुयी जयिबो बावा सयर यसलाने ।
याजु घामें सुखयिब नामी केसरी हाँ । हो मुयी जयिबो...२
हो भिन जाहु बेटी सयर यसलाने ।
याजु घरहीं सुखयिहें नामी केसरी हाँ । हो भिनजाहु...२

हो कपडाक लोते बेटी करे यसिलाने ।
याजु घरहीं सुखयिहें नामी केसरी हाँ । हो कपड़ाक...२
हो कुँयबाक पनिया कुँयही बिलयिहें ।
हाँरी पोखराक झाँसी - फाँसी केसरी हाँ कुँयबाक ...२
हो मिलहुरी सखिया सहेलरी दयिया ।
याजु चलहु सयर यसलानेरी हाँ । मिलहुरी...२
हो लेहुरि चेरिया तेल मधुखेरिया ।
याजु चलहु सयर यसलानेरी हाँ । लेहुरी...२
हो दस सखी यागे दस सखी पिछे ।
दस - बिसिलेले सङलायिरी हाँ । लेहुरी...२
हो वहबहुँ सयी बुठी चलिभेल बेटी ।
याजु डोबटिनी बाटी भेल ठाइहरी हाँ । बहबहुँ...२
हो वहबहुँ सयी बुठी चली भेल बेटी
याजु लगर-बहर भेल ठाड्हरी हाँ । वहुवहुँ...२
हो वहबहुँ सयी बुठी चली भेल बेटी ।
याजु सखही सिमर भेल ठाइहरी हाँ । बहुवहुँ...२
हो वहबहुँ सयी बुठी चली भेल बेटी ।
याजु पोखरानी याँटी भेल ठाइहरी हाँ । बहबहुँ...२
हो तुहुँ तक चेरिया भिजावे मधुखेरिया ।
याजु मुयी घुमी ययिबो चारु याँटेरी हाँ । तुहुँतक...२
हो भिजलिय खरिया माथही चड्हबले ।
याजु जल पयिसी करे यसलानरी हाँ भिजलिय...२
हँरी पिछेलवटी जब हेरल बेटी ।
यायी पुगल हाथिसाररी हाँ । पिछे...२
हो घरिमक दादा हाथिया बिलमवही ।
याजु झिलिया बहावे मोरके देबे देहुरी हाँ । घरियाक...२
हो यरी बहिनी कुयाँ पनिहरनी ।
हरी तुही-मोर धरमक बहिनिरी हाँ । यरी - यरी २
हो हाथी मोर बडिहे पानीके पियासल ।
याजु पानिया पियावे मोरके देवे देहु हाँ । हाथी मोर...२
हो हाथियोन माने यँकुसियोन माने ।

याजु तुही -मुही लगहुँ सिनिहरी हाँ । हथियोन माने...२
हो दावोके लागे लागे जेठ भयिया ।
याजु बाबा कलागे जेठनहररी हाँ । दाबोके लागे...२
हो मोर त लगबे धरम कयी मामा ।
याजु यँखियोन फुटले तोहाररी हाँ । मोइत लगबे...२
हो धुरुकत - चली भेल बेटी ।
याजु बसले पिताजिके कोरारी हाँ । धुरुकत - धुरुकत...२
हो काहेके बाबा मोगल हाथे सपले ?
याजु लयिचलु यमर राजिरी हाँ । कवुनेसे...२
हो कवुनेस बेटी मती - बुधी देलवु ?
याजु कवुने दिहल बुपदेसरी हाँ । कवुनेसे...२
हो नेकर मुयी सुनेजे पवतो ।
याजु देतहीं देस निकालरी हाँ तेकर नावुँ ...२
हो सातु भवुजी मोर मती बुधी देलवु ।
सातु देलवु बुपदेसरी हाँ । सातु भवुजी...२
हो सातु भया मोर करत लड्यिया ।
हाँरी यपने जिबुवा कुसलायिरी हाँ । सातु भया ...२
हो पयिसहु बेटी सिरी बसहर घर वा ।
याजु लेहु यगिनियाक धाहरी हाँ । पयिसहु बेटी...२
हो हटन - पटन बेटी जरन लागे ।
हाँरी हरीयर डोंडवा भटकेरी हाँ । हाटन - पाटन बेटी...२
हो.. जरन लागे कवल दयिया बेटी ।
याजु तिड्का भयिल बटवारी हाँ । जरन लागे...२

रौराहर - बुधन महतो

११२. यमोसाक बयिठकी गित बिरहुनी

यि यमोसा पावनी की बयिठकी गितमा सोहरायी नहियां ढोटहनिया (बाठिनी), जनियें-मर्दे गावुँ-घरक सबहुँ जन्ह मिलके साँझ से रात भरी बसरामा बयिठ के गवासयी । डँफुलेलेके बजोते गित गवसयी । दोसर बाजा किहो नाही चाहीं ।

गाछ मधे नारियररी.........
पात मधे पान
तिरिया मधेरी राधिकारी ...

पुरुखा भगवान ।
धनिरी सुनरिरी ....
मुयी तेजी गयिलो परथमे बयेस ।
बालकरी धयिरी गेल.......
जिबुवाके सन्ताप । धनिरी सुनरीरी २
बनमे यगि निरी लागे सबकुन देखे ।
मनमे यगिनिरी लागे कोयी नाही देखे ॥ धनिरी सुनरिरी २
कान्हे त कमरी विधना
हाथे लेले ठेइहनिया
चली भेलरे याहेरे विधना
यपने ससुरारी । धनिसुनरिरी २
चलते - चलते रे विधना, थलसी गेल जाइह
वाही कुंज बनबामे लेले बिसराम । धनिरी सुनरिरी २
तर कयी डासल भाडिरी पाती ।
बुपर बेभिया यघरान । धनिरी सुनरिरी २
भिँडवासे निसके कारिरे लगिनियाँ
डाँसिदेल यडुरिकी पोर .....? धनिरी धनिरी..........२
बुठु पराभु- बुठु पराभु बरही निजोर
केथिहीं डँसल मोर यडुरिकी पोर । धनिरी २
तिरियाक जाती यति सुकुवार
चिहुँटिकी बिन्हली वुठले चिघारी । धनिरी २
बुठु पराभु- बुठु पराभु बरही निजोर
रोधिल भिजल मोर बेभिया यघरान
धनिरी मुयीं तेजलो परथम बयेस । धनिरी २
दिया नाही तेलवा, बोरसी नाही यागी
कथी लयिरी धनी मुयी बारबो निजोर ? धनिरी २
दिया भरी तेलवा, बोरसी भरी यागी
सेहे लयी परभु मोर बरही निजोर । धनिरी २
राम - राम कयी तेजले परान
धनिरी मुयी तेजिगयिलो परथम बयेस । धनिरी......२
सात कोस पुरुबे विधना, पछियें गेल धायी

वतहुन मिलले झार पुकार
सात कोस पुरुबे विधना, पछिये गेल धायी
वतहुन मिलले झार पुकार। धनिरी.........२
यिन्दर लोहोक सेयावे येक बराम्हन
बयेसी गेल याहे बराम्हन कुसके पिड्हियवा
यमिरिती छिनी - छिनी मुखमे डालल
बेंत डन्टा मारी रे जगावल
राम - राम कयी भयिगेल ठाड्ह
धनिरी मुयी तेजी गयिलो २

रौराहर - रामेसर महतो

११३. लगनी - बिरहनी/बिरहैन

संकलक: मधुसुदन चौधरी,
जितपुर सिमरा उ.म.न.पा.-५, छातापिपरा, बारा

लगनी बिरहनी बहुत पुरान पौरानिक लोक गाना बाटे। यि गाना पुर्वी धुन मे गावे वाला गाना बा। थारु मे लगनी के "प्रेम" अउर बिरहनी माने "वियोग" होखेला। ऐकरा जनी/मरद दुनु कोइ गावेला। ई दुपरहरीया मे गावेबाला गाना बा। ललना हो रे गाना मे सुनर लय बनाएला थारु भसाके बोल बा। "ललना" देवर अउर लइका के सम्बोधन बा।

ललना हो रे
कात्तिक अधिक पियार, सैयाँ सङे खेलबो जुवारी
अगहन अग्र सोहावन, भला रे तिरिया ऐसा सुर जाय रे
ललना हो रे
पुस पुसवरती नहाए, सारो से सुगा बाल लेले जाए
माघ हि निपुपरी ढारह, बिना रे पिरती जाढ न जाए रे
ललना हो रे
फागुन पसेया बहे हहराइ, तरिबर पाता सबेरे झरी जाए
अगती न जनती फगुनी बेहार, पिअवा के धरती न भर अकवार
ललना हो रे
जेठ तना रे तन, चुवे गोरी के अङ, चिरो न सोहाए रे
असार मासे घनघोरी, पियाके माथे छत्र विराजे
सावन रचत हिरोला, सखि रे सब झुलन जाए रे
ललना हो रे
भादो मास भरली भेआवन, दोसर अन्हरीया के रात रे

आसिन आस लगाइ, पिया रे परदेस से आइ रे
ललना हो रे धुन-पुरबी

११४. पराती

"पराती" माने एकदम भिनसर । यि पराती भगवान रामके भजन बा । खलिहानमें भिनसरे हरबासब दौनी करईत गावेबाला भजन बा । यि पौरानिक लोक गाना बा । एकरा खाली मरद लोग गावेला । जैसे भगवान रामके समय बहुत पुरान बा ओईसने इ भजन बरसो पुरान बा ।

प्रात समय रघुवीर के, जगावे कोसिला महतारी
उठ हे भरत जी लखन मधुसुदन, जागहुँ जनक दुलारी
सुर नर मुनी देवता सब जागे, सरजुग पंच निहारी......२
इन्द्रजित के ब्रहमाजी के, देवता सनमुख दिए मुनीचारी
वानी बेद विमल जस गावे, रघुकुल जस बिसतारी
जागु जागु हे जनक दुलारी ....
इन्द्र सहित आएल सब देवता, जय-जय करत पुकारी
सैना सहित सिव दुआर पर नाचे
बाजत कतोहल भारी
भोरे भोरे जागहु हे जनक दुलारी............
प्रात समय रघुविर के जगावे............

११५. जँत सारी विरहनी

यि गाना ऐतिहासिक पौरानिक लोक गाना बा । सिम्रौनगढ बारा जिलाके ऐतिहासिक सांस्कृतिक बहुत प्राचिन सहर बा । उहे सिम्रौनगढके राजा सिव सिंह से जुडल जाँत घरके दुःखवाला गाना बा । गहुँ जाँतमे दरैइत जनीके दरदवाला गाना बा ।

मोरङ्ग के तिरिया दाँत सोभे बिरिया
मुख सोभे पानवा न रे
हा रे
कते दुरा सिकइ, नग्र बिजइपुर
जंतवा बेसाहलो राजा हे
हाजिपुर हटिया बारा के बजरिया न हे
तिरिया जागे हाथारा सिकइ बिजइपुर हे

कौने देले गहुँवा, कौने चडेलिया, कौने दउरिया न रे हा रे
कौने बरहनिया भेजावे जंतसारी घर रे
सासु देलइ गहुँवा, ननदी चडेलिया
ननदी दउरिया न हे
हा रे
गोतनी बरहनिया भेजावे जंतसारी घर रे
जंतवे न डोलइक, मेखरियो न हिलइक
चिकसोन खसइक हे
दादा मोरा भुखल आवे, मोरा पाहुन हे
घोरवा चढ्ल आवइक राजा सिवइ सिंह, राजा उदइ सिंह हे
हा रे
केकर तिरिआवा रोवइत जाँतसारी घर रे
घोड्वा त बन्हले राजा हे, बेल रे बबुर तर हे
बबुर त रे
धइके पइसल ओही जाँतसारी घर
चुपहोरव चुपहोरवु पातर तिरिअवा, पातर बहिनिया न हे
अपन अंचरवा नयन लोर पोसब हे
तोरो चदरिया राजा हे करकचहेरिया दरदरवजवा
अपन अंचरवा नयन लोर पोंसब हे।.................

११६. गोसाइ के गित (सैवसे पैहने)

संकलक: निर्मला देवी थरुनी
सम्भुनाथ नगरपालिका-५
मोहनपुर, सप्तरी

कोनो भि नाच या गित गावै से पैहने अपना के या आपन ठाम मे कोनो भि प्रकार के दोस नै लागे तैदुवारे देवता के बोधहैके लेल यि गाबल जाइछै।

कथी दाये बोधवै महसी गोसावन, कथी दाये बोधवै हलुवाने
कथी दाये बोधवै राजाजी गोसावन, कथी दाये बोधवै डिहवारे
पानफुल दाये बोधवै महसी गोसावन, लरु दाये बोधवै हलुवाने
खिर दाये बोधवै राजाजी गोसावन, रोट दाये बोधवै डिहवारे
आजु से महसी गोसावन भेल प्रचार हे, चोवा चनन गन्ह धुप जरै॥

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

११७. स्तुती गित (साँखी)

माने या गावै के समयः -धुमरा नाच, चोरखेली नाच, धामी नाच या और दोसरो नाच मे नाच करैसे पैहने देवी देबता के पुकाइर के यी दोहा कहल जाइछै ।

सदा भवानी दाहिनी, सनमुख रहे गणेस,
पाँच देब मिली रक्छा करे, ब्रम्हा बिष्णु महेस ।
काली असुर संहारिनी, जहाँ भेजे तहाँ जाये,
जो सन्तनके निन्दा करे, ताही कालिका खाये ।
सन्त सरोवर गंगाजल, ताहीं पखारहु अंग
सो देहिया नित निर्मल भए, साधु से सत्संग ।
रामनारायन बोन गए, पल्लव झरी झरी जाय,
सिता यैसी सुन्दरी, रावन हरने जाय ।
बन्सी बट सन बट नही, नन्दग्राम सन ग्राम
बृन्दावन सन बन नही, कृष्ण नाम सन नाम ।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

११८. स्तुती गित

धुमरा नाच, चोरखेली नाच, धामी नाच लखा दोसरो नाच मे देवी के दर्सन के लेल या आपनमा स्यहा हैके लेल यि गित गावल जाइछै जैसे नाच मे कोनो किसिम के बाधा अड्चन नै आबै ।

भगता- हे महामाया काली, हमरा दर्सन द्या तोहर रुप अनन्त छौ ।
काली- आरे आरे भगता पुछैचियौ तो कोन कोन रुप मे देखल मे मोरा ?
भगता- कखनो काली के रुप त कखनो दुर्गा के रुप धारन करैवाली,
कखनो बाँसी ल्याके बजाबै वाली चहक, दुनियाँ के सब गुन तोरे मे छौ ।
काली- रे भगता हम तोरा पुछैचियौ, तो हमरा कोन कोन रुप मे देखने चिही ?
भगता- हे काली मैया काली मैया काजर भान, मैया काजर भान
दिगदर्सन मैया दिगदर्सन मैया बँसिया मसान, मैया बँसिया मसान ।
पहिलु पहर राती चिल्का के रुप मैया चिल्का के रुप,
बाली कुमारी हे बाली कुमारी हे देखलु स्वरुप मैया देखलु स्वरुप ।
दोसर पहर राती युबती के रुप मैया युवती के रुप,

हाथ खडग सिर हाथ खडग सिर अरहुल फुल मैया अरहुल फुल ।
तेसर पहर राति जोगनी के रुप मैया जोगनी के रुप,
सिंह चढल मैया भमे चारु दिस ।
चारिम पहर राती बुढिया के रुप मैया बुढिया के रुप,
हाथ ककही सिर हाथ ककही सिर थकरल केस ।

स्रोतः भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

११९. महादेवी गित

इसर महादेव के बखान स्वरुप यि गित गावल जाइछै ।
महादेव चलली गङ्गा अस्लाने, गौरी लेल अङ्गुरी लगाये ।
एक कोस गेल हे महादेव गेल दुइ कोसे, आवी गेलै झाँट त बिहाइर
ककरा के भिजलै जटा रे मटुकिया, ककरा के भिजलै नाम्ही नाम्ही केसे
महादेव के भिजलै मे जटा रे मटुकिया, गौरी के भिजलै नाम्ही नाम्ही केसे-२
कथी से सुखायेतै जटा रे मटुकिया, कथी से सुखायेतै नाम्ही नाम्ही केसे-२
रौद से सुखायेतै जटा रे मटुकिया, हवा से सुखायेतै नाम्ही नाम्ही केसे-२
माघ लहायह हे गोस्याँ गुँरगजरा जनुहे खाइह, सुपा काये छौंर जनु फेकिह
सासुके निपलहे गोसइयाँ, पेरो जनुहे दिहे, भगिनाके लात जनु मारिह,
बालक दियोराके ठुनका जनुहे मारिह, येहो तिनु चियै बराभन देवा-
पुस मास घेरा जनुहे खाइह-२

स्रोतः भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१२०. रासलिला गित

दुइ प्रेमी के बिच मे प्रेमलाप के प्रतिक के रुपमे कृष्ण या राधा बिच के रास बर्नन यै गित मे करल गेलछै ।

बाजत बँसिया मुरली मुख चान, पाउँ के नेपुर खिनखिन बाज
पाउँ के नेपुर खिनखिन बाज, पाउँ के नेपुर खिनखिन बाज
दौरल आवै नन्द के लाल, नन्द के लाल
सब सखियन मिली हर्स मनाइ, हर्स मनाइ । १
जात जमुना तट मटुकी चमके, धिरमिकी धिरमिकी मृदङ्ग धमके
ताथैया ताथैया तत नेपुर झमके,
हे सखी मिलन के आवै हे सखी हे नाचत आवै गोपाल बन मे
त्याँ हो रे, हो न्या हो रे हो, यता हो रे हो ऐना होरे हो-२ ॥

स्रोत: भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१२१. दलसिंह धामी के गित

कोनो किसिम के सुभकाम, धुमरा नाच, चोरखेली नाच, धामी नाच के सिलसिला मे सिर हा जिल्ला मे जनमलहा दलसिंह धामी जे देवता के समान अखैन तैक प्रकट हैछै ओ करे बखान यि गित मे करल गेलछै।

दलसिंह धामी थरुनियाँ के पुत, अलप बयेस धामी सक्ति बहुत हे
दलसिंह धामी धामी रे बरु भेल, बाघ बरद हर जोतन गेल हे
बमा लेल बरद दहिन लेल बाघ, उत्तरे दक्छिने धामी धैलन चास हे
खोली देल बरद हकारी देल बाघ, चली भेल याहे धामी बिजुबोन सिकार हे
हरीनो ने मारै धामी तितिरो ने मारै, बिछी -बिछी मारै धामी मेजुरा पुछारे हे
काटिये खोटिये धामी कैल कोरहार, छपन करोटी देब दिहल जमाइ हे। दलसिंह
धामी थरुनियाँ के पुत ...

स्रोत: भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१२२. भागिरथ बिरहैन गित

भागिरथ और गङ्गाके बर्नन केल्हा गित।
बडा तप कैल बाबा हो भागिरथ, याब गुरु कैल मे दया हो
हाँ हाँ रे शिवजी के जटा से गंगा बहिये गेलै तारल जग संसारे हो।
हाँ हाँ रे शिवजी के जटा से गंगा बही गेलै
आगुआगु चललै हे बसिस्ट मुनि, पाछु-पाछु लछुमन राम।
हाँ हाँ रे देखन चललै हे जनकपुर, चली भेलै धनुसा के धाम
हाँ हाँ रे देखन चललै हे जनकपुर, छोटे, छोटे सखी सब है जनकपुर मे
सियाजी से पुछै सब बात, हाँ हाँ रे कौने पुरुस सखी तोरा मनभावौ।
ओढना मे सोभै छै हे पिताम्बर, गला मे सोभै रुद्रमाल
हाँ हाँ रे स्याह्या पुरुस सखी मोरा मनभावै।
ओढना मे सोभै छै हे पिताम्बर, गला मे सोभै रुद्रमाल
हाँ हाँ रे कान कुन्डल सखी मोरा मनभावै
हाँ हाँ रे स्याह्या पुरुस सखी मोरा मनभावै।

स्रोत: भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१२३. जय स्याम नटा गित

इसर महादेव के बखान करल यी गित चोरखेली के समय मे गावल जाइछै।

जय स्याम नटा, जय स्याम नटा।
मृग मधुरी लाये मृदङ्ग बजावत, नन्दी के नेपुर झरी झम्टा
जय स्यम नटा, जय स्याम नटा।
तासुत मोरा लाये हरी गुन गावल, संगहीं नारदजी मुनी बिसिस्ट
जय स्याम नटा, जय स्याम नटा।
चन्द्रकला लाये चुमे अमिरस, वही जुगुतले अनुज फटा
जय स्याम नटा, जय स्याम नटा।
बाघसिंह देखी दुरहीं परावल, सहजही लाज गौरी निगटा
जय स्याम नटा जय स्याम नटा।
मनायत मान जटा उर झापल, गगन लागल जलद घटा
जय स्याम नटा, जय स्याम नटा।
गंग तरंग अंग- भरी पसरल, नैना चम्के जैसे बिजुली छटा
जय स्याम नटा, जय स्याम नटा।
भवतनना भजैची शिवा तोंही
गजमुखी समुखी सहित रही सोइ
भिखम विलोकती जय मटुक
तापर सारिमता बाल बटुक
आक चढल शिवा चकमक चन्दा
बिघनी विनासित अतितर लिन्हा
केकर कमल अभै बर दिन्हा
सुन्दर सहित दमोदर लिन्हा
नन्दी पती कवी हरनु क्लेस
हरनाटक देव लेल परभेस।

स्रोतः भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१२४. मेजुरा बखान गित

अपने आप के मेजुर के रुपमे कल्पना कैरके प्रेम के बर्तालाप करलहा गित यि गित नाच के साथै साथ पुजा या धार्मिक उत्सव के अवसर मे गावल जाइछै।

तोंहे असगुनिया हे माधव करल बखान

बरी बरी निरपती के हे माधव हरल गियान
हे माधव मेजुरा बखान, हे माधव कुहुकै मेजुर ।
तोहे बुढ मेहरा हे माधव मेजुरा पुछार
हम त नेरुरनी हे माधव बिनुरे पुछार
हे माधव कुहुकै मेजुर हे माधव मेजुरा बखान ।
दुवो मिली खेलबै हे माधव चान चकोर
हे माधव कुहुकै मेजुर हे माधव मेजुरा बखान ।
रैजन खैजन हे चरैया चकेबा के जोरी
रैनी विलगी रहु दिन ठोरा-ठोरी
हे माधव कुहुकै मेजुर हे माधव मेजुरा बखान ।
सिसरी ने धान फुटै बिनु बरसाते
बिनु परसङ्ग हे माधव पिया परदेसे
सुन-मसान हे माधव घर भेलै सुने
हे माधव कुहुकै मेजुर, हे माधव मेजुरा बखान ।

स्रोतः भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१२५. पराती (क)

गरिब के जिवन मे येलाहा कठिन मोड दुःख दरद से भरल गित जे कि बडका भिनसरे गावल जाइछै ।

हे...बिनु गुन धनुसी बाँह बिनु विहुन
याहे वेद बिनु विप्र बिहुन
विही हे निर्धन जलम किये देल ।
हे...बस्ती भुवंकर पर बिनु बिहुन
याहे जल बिनु मिन विहुन
विही हे निर्धन जलम किये देल ।
हे...घर नहीं खरचा, पैंचो नहीं मिलैये
याहे साहुओने ऋण पतियावै
विही हे निर्धन जलम किये देल ।
हे...भाई सहोदर सेहो बेगराये गेलै
याहे दुस्ख घरी केयोने सेहाइ ।
हे...बस्तरहिन तन काँपैये सगर निसी
याहे कोमल हिया जैसे फाटै

विही हे निर्धन जलम किये देल ।

स्रोतः भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१२६. पराती गित (ख)

एक नारी के जिवन मे प्रेम विना भेलहा बेदना से भरल पराती गित । यि गित भिनसरे काम करैत काल गावल जाइछै ।

माधव हे दुःख मोरा रहिये रहल ।
हे.... बहुत दिवस हम दुःखित गमावल
याहे सुख सपनो नही भेल
माधव हे दुःख मोरा रहिये रहल ।
हे.... मन के मनोरथ मनही मे रहिगेल
याहे भाये गेलै हे यानै से यान–२
माधव हे दुःख मोरा रहिये रहल
हे.... गुरु मुख सखी सब पार उलरी गेलै
याहे हम धनी हे धुनैची कपार
माधव हे दुःख मोरा रहिये रहल ।

स्रोतः भुलीढेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१२७. पराती गित (ग)

मन गदगद भेलहा समय मे परातै पहर आपन पिया के साथ मे सुख भोग के बखान करल गित ।

हे.... प्रेम के डोरी हे गगन सुल लागल
आहे पिया संग हे बान्हलु सिनेह–२
हे.... मन हरी लाये गेलै आहे पिया रङ्गरसिया हो
आहे पुर्बिल जलम के सिनेह–२
हे.... पिया हमे एकेसंग आहे बसलु मे साहेब
आहे एकही पलङ्ग रहुँ सोइ–२
हे.... पिया के पियारी हम आहे पिया के सोहागिनी
आहे प्रिती मे रहलु हे भुलाइ–२
हे.... एक सखी पुछल आहे पिया के प्यारी हे
आहे कहु सखी हे पियाहु के भेद–२

हे....जही पिया संगे आहे तोंहे सुख बिलसल
आहे सेहो जनु हे राखहु गोइ–२
हे.... जे सखी बिलसल आहे से सखी जानत
आहे और जानत नही कोइ–२
हे.... साहेब कबिर संगे आहे हम सुख बिलसलु
आहे अजर- अमर घर होइ–२ ।

स्रोतः भुलीढेवी चौधरी
कनघिरा, सप्तरी

१२८. पराती गित (घ)

रामायण मे मन्दोदरी के देखलहा सपना से डर्या के रावन से सिता के घर लौटाबैके लेल बिन्ति करलहा गित । जै मे रावन या मन्दोदरी के बिच मे सवाल जावाफ हैछै ।

मन्दोदरी- हो सुतली मे छेलियै सपना एक देखली, याहे देखली मे वडा अजगुते-२
हो किनकर तिरिया याहे लावल उठाये हो किनकर तिरिया लावल उठाये-२
याहे तकरहु दुत चलिआवै हो-२, याहे अमृत फल बाग उजारै-२
हो लछमी सरोसती धानो ने कुटै, याहे इन्दर पानियो ने भोरै हो
हे आजु पवन सुत याहे अङ्गनोने बहारै हो, याहे झड्डैये मंदोदरी रानी-२
हे कहत मंदोदरी, याहे सुनु पिया रावन, याहे केयो तोरा कुमती चढावै-२
हे काटहक चनन बनावहक दोलिया हो, याहे सियाजी के लाये पहुंचाव हो-२
हे हम हेबै नोकनैत, याहे तौंहे पिया कहार हेबु, याहे सियाजी के लाय पहुंचावहु हो -२

रावन- हे तिरिया के जाती आहे अजिव लागै ओछ हो-२, आहे नर के करैये बराइ-२
हे कहत अखनी पकरी मङ्गयेबै हो-२ उन तपसी दुनु भाइ
हे मेघनाथ सन के याहे बेटाछै जिनकर-२, याहे कुम्भकरन सन बिर भाइ-२
हे रावन सन के याहे पतिछै जिनकर-२, याहे सेहो तिरिया कैसन डेराइ-२
मन्दोदरी- हे जम्बन्द सन के याहे मन्तरी छै हुनकर-२, याहे बिर लछुमन सन के भाइ
हे हनुमान सन के याहे सेवक छै जिनकर-२, याहे छनही मे लाङ्का जराइ-२ ॥

१२९. पराती गित (ङ)

ननैद या भौजाइ अनगुते पाइन भौरैले जाइत काल चकेबा उंडैत देख के घरवला के याद करैत ननैद के कहैछै तोहर भैया रहतियौ त चकेबा के सिकार करतियौ ।

हे...... ननदी भौजैया हे मिली आहे पनिया के गेलियै हो,
आहे चकेबा उड़ल चारु घाटे ।

हे..... तोरो भैया रहती हे ननदो आहे रसा फना जोरतियै,
आहे मारतियै हे धनुसी चढाये ।
हे..... चकेवा के मारने हे भौजी आहे पापो ने पुने हेतौ,
आहे चकेवी के मारने दह हेतौ सुने,
ननदी हे तोरो भैया हे बड़ा अमरुखे ॥

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१३०. बृसकुट गित

पिया परदेस से घर लौटलहा अवसर मे मन पुलकित भेलहा समय के बखान करलहा गित । यि गित खुसी के समय मे गावल जाइछै ।

आजु श्रवन गुन सुभ दिन पावल प्रसन्न होय ब्रजराय
सुदिन नयन मोरा त फर्कल आयेल पहुँ के समाद
आनन्द हृदय पुलकित भरु हे दिन दोखन्ड दुरी गेल
अनख दिवस हरी दर्सन देल जलम कृतारथ भेल
लाये फुल-जल समारव हे बाँसुरी कर्पर अनमोल
भाव भगती करी राखबै हे , बोलबै बचन अनमोल
प्रेम बान्ह बान्ही राखबै कौसली करतै उपाय
पल भोरी आसोनै छोरबै राखबै हृदय लगाय ।

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१३१. साँझ गित (साँझु पहर मे गवैवला गित)

साँझ पहर कन्हैया घर नै येला के चलतै महताइर के मुह से निकलल गित यि गित कृष्ण लिला, मान या और अवसर मे गावल जाइछै ।

ओ हो रे साँझ परलै घर हे नाही येलै कन्हैया,
केदुली के बोन मे माइ हे छुटल गैया ।
ओ हो रे घर रोबै बछरु हे बहार धेनु गैया,
देहरी बैठल रोबै जसोमती मैया । ओ हो रे साँझ परलै .....
ओ हो रे हाथ लेल लठुरी पहिरी लेल बदहा,
हिया हिया करै माइ हे केदुली के बोन-२ ।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१३२. चौमासा लम्पट गित

चैत महिना से ल्याके फागुन तैक के बखान करलहा गित जेकी सैब महिना गावल ज्या

सकैछै ।

चैत ही चैत बितिये गेलै सगरे, मास बैसाख के यादो ने याबै, जेठपेट,
जेठपेट भरी भर्म भुलाइ, बिना यदु नन्दन के कुमर कन्हाइ, मन लम्पट,
लम्पट सम्पट हरी बिसराइ, कौने जवाव दियबै हम जाय, मन लम्पट ।
आइ अखार घटा घनघेरे, सौनही पवन बहे चौयारी, भादव भुली,
भादव भुली रहे यदुनन्दन, विना यदुनन्दन के कुमर कन्हाइ, मन लम्पट,
लम्पट सट हरी विसराइ, कौने जवाव दियवै हमजाइ, मन लम्पट ।
आसिन हरी जी से आस लगाइ, नित दिन कात्तिक कलपैत जाइ, अग्रे अगहन,
अग्रे अगहन निको नही लागै, बिन् पिया अगहन मोहिने सोहाबै, मन लम्पट ।
पुसही मुस गृही सुख किन्हा, माघ बसन्त कुपन्थ के जेना, फागुन रङ्ग,
फागुन रङ्ग रचे दरोपती जी, बिना दरोपती जी के कन्तोने आवै, मन लम्पट,
लम्पट सम्पट हरी बिसराइ, कौन जवाब दियबै हम जाइ, मन लम्पट ।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनविरा, सप्तरी

१३३. एकादसी व्रत गित

एकादसी पाबैन के अवसर मे गाबैवला गित जैमे बाराह धाम के बर्नन करल गेलछै । यि गित कोनो पाबैन नाचगान या भिनसर के गावल जाइछै ।

आसिन कात्तिक केरी याहे बरत एकादसी,
आहे बाबा बराहजी के धाम ।
जाहक हे लछुमन याहे फल तोरी लाव
बरत एकादसी बड भारी ।
डारी लिबाये लिबाये आहे पाँच फल तोरल
हनुमन्त देल ललकार आहे युद्ध परल बड भारी
बरत एकादसी बड भारी ।
कैलासपुरी से आहे आयेल महादेव
अङ्गही बिभूत लगाइ ।
आसन मारी आहे अलग भाये वैठल
सुनु प्रभुजी बचन हमार ।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनविरा, सप्तरी

१३४. गौरा के गित

प्रेम के प्रतिक के रुप मे रहलहा गौरा या शिव के बिच मे प्रमे सहित अनवन भरलहा गित । यि गित खास क्याके समा चकेवा लगायत के और उत्सव मे गावल जाइछै ।

सोना केरी डाली हे गौरा-२
रुपा केरी अंकुसी हे, फुल लोढे गेल हे गौरा माली फुलवाइर,
खौछा भोरी लोढल हे गौरा, डाली भोरी लोढल,
आबी गेलै आहे गौरा, फुल रखबार-२
फुल जनु तोरही गे गौरा हमरो दोहाये हे,
सब फुल छिनिये लेबौ बसहा लधाये-२
रोक रोकैत हे गौरा गेल रिसियाये हे
खौछाहु के फुल हे गौरा देल छिरियाये-२
मैयो तोरा पुछौ गे गौरा, बड साधु भाव हे,
कौने त पुरुस हे गौरा, पढल गारी-२
सनेसन के केस गे आमा सनेसन के दाँत हे
सह्या त पुरुस गे आमा पढल मे गारी-२
जलम जे देलियौ गे गौरा, करम आपन हे,
लिखल छेलौ गे गौरा तपेसी भिखारी हे-२ ।

स्रोत: सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१३५. मेघ मलार गित

परदेस मे रहलहा पिया के याद मे मन मे बहौत किसिम के बात खेलाइत दरद से भरल गित । यि गित बरसात के समय मे बिरह के रुप मे गावल जाइछै ।

हाँ हाँ रे उत्तर बरसे मेघ हे सखी गावै मेघ मलार
हम धनी भिजै गृही अपना, पिया भिजै परदेस
हाँ हाँ रे पाहु पन्थ हेरी हेरी हो हृदय उठे धाहे
हाँ हाँ रे धनुधाये रहलु हो हर्स लाये ठार, धनुधाये रहलु हो-२
हाँ हाँ रे विसहरी डाँसल हे सखी नहीं सिखाब कोइ
पिया बसे गरु आसन मे सम्पति हाइ दुर देस
हाँ हाँ रे दुर देस बसै छै हो रावन हमार
हाँ हाँ रे स्याम चतुर गुन हो बरसै अमार - २
हाँ हाँ रे बिरही ने बाँटल हे सखी बिपती ने बाँटै कोइ
बाँझी ने जाने बेदना परसोतीके दुःख होइ

हाँ हाँ रे येहो दुःख दारुनी हो लिखल कलंक
हाँ हाँ रे मान करैत हो डाँसल भुवन - २
हाँ हाँ रे मानिक दियरा बारीके हे सखी बैठल चनन तर
हम धनी बैठलु मानिके अरह बिरह रस थोर
हाँ हाँ रे बिरह के मातल हो चिरो ने सोहाबै
हाँ हाँ रे हृदय के हार हो लागल अती भारी - २
हाँ हाँ रे उड़ी उड़ी कागा सगुन बिचारै हे सखी फरकत्वमा अङ्ग
अङ्गनाही काग उछड़ी गयो, सगुन सहित सुख बाइन
हाँ हाँ रे दुधहके भरम ही पियल पिठार
हाँ हाँ रे कोइली के भरम ही पोसल डार काग - २ ।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनथिरा, सप्तरी

१३६. सिता के बरियाती येलहा गित

बियाह के लेल बरियाती येलहा समय के बखान करल गित । यी गित बिहाय के समय मे गावल जाइछै ।

हथिया झुमैत आवै घन्टा घहरावैत आवै,
ऊँटवा पर लगेरा बाजै झन्डा फहरावैत आवै,
साजी लेल डलाहरा नेसी लेल दिप हे,
सासु सुनैना दुलहा आरती उतारै हे ।

१३७. सिताहरन के गित

दुइटा धनुसधारी रहलो पर सिता के हरन भेलहा बात के ल्याके गावलहा गित । यि गित रामलिला मे या दोसरो कोनो धार्मिक उत्सव के अवसर मे गावल जाइछै ।

केकै, कौसिला हे रानी, रानी सुमित्रा,
राजा दसरथजी के येहो तिनु नारी, रावन सिता हरने जाय ।
साधु निर्गनी नही जानै, सिता हरने जाय .....
दह भेलै ननुमी रोपल बिट बाँसे
तही चढी चकेवा कुरुरै राज हाँसे, सिता हरने जाय .....
करिया पेरवा हे सिता कचोरा सन आँइख
भुटुकी भुटुकी हे सिता लेल पाहु कोर
मारल मृग हे लछुमन लिधुरी मुख चुवै
मारल मृग हे लछुमन बोलै श्रीराम, सिता हरने जाय .....

साधु निर्गनी नही जाने, सिता हरने जाय .....
चिकन घाट सरोबर बाट यही ठिना छैके चकेवा के ठाठ
हमहुं जे पुछियौ रे चकेवा बरी साधुभाव
यही पन्थे देखल मे सिया सुकुमारी, सिता हरने जाय .....
दुइ त मनुस दुइ धनुसधारी जोगाहुने सकल्या सियासन नारी, सिता हरने जाय .....
याहे याहे ददाजी जोरहै सरफाने चकेवा रार बोलैछौ निर्धने
चकेवा के मारने हे लछुमन पापो नाही पुन
चकेबी के मारने दह हेतै सुन, सिता हरने जाय .....
चिकन घाट सरोबर बाट यही ठिना छैके बकुला के ठाठ
हमहुं जे पुछियौ रे बकुला बरी साधुभाव
यही पन्थ देखल मे सिया सुकुमारी, सिता हरने जाय .....
देखलु मे देखलु सिया सुकुमारी, अकासही देखलु रवना हरने जाय, सरन सरन गोहराइ,
किनकर बंस के केकर तोहें नारी किये तोहर नाम चियौ के हरने जाय,
सुरुज बंस के राजा नृप दसरथ ताही सुत रघुराइ
तिनकर हम नारी, नाम मोरा जानकी, रावना हरने जाय, सिता हरने जाय .....
यतबे बचन जब सुनल जटायु उठल मे पंख फहराइ
चरै मे चोंच महायुद्ध किन्हा युध कियो बर भारी
मन भरी आसिक दिय हे माता जानकी घन्ट लागी रहतै पराने
यही पन्थे येतै राम लखन दुनु भाइ कहबै कथा सम्झाई सिता हरने जाय .....
साधु निर्गुनी नही जानु, रावन सिता हरने जाय ।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनथिरा, सप्तरी

१३८. बेटी के बिदाइ करैत चित्त भरोस गित

बेटी के चित भरोस दैले बाबा से गावल गित जेकि कनिया बिहाद हैत काल गावल जाइछै ।

अङ्गना मे नटुवा हे नाचै, दुवारा ही बाजन बाजै हे,
बेटी गै मगहा मुङ्गेर तोरा ससुरारी कि कानु बेटी धैरज धाये हो ।
साँठल जेतौ गै बेटी थारी लोटा, साँठल जेतौ बेटी सठनी रजनी हे,
बेटी गै डोली लागल जेतौ धेनु गाये की कानु बेटी धैरज धाये हो ।
फुटी जेतै गे बाबा थारी लोटा, फुटी जेतै गे बाबा सठनी रजनी गौ,
बाबा गौ ठेसिये खसतौ येहो धेनु गाय कि धैरज कैसे हम बान्हबै गे,

सङ्गे जेतौ बेटी नोकनैत-२ हे, सङ्गे जेतौ सहोदर भाइ कि कानु बेटी धैरज धाये हे। घुरिये येतै गे बाबा नोकनैत-२ हे, बाबा गै घुरिये येतै सहोदर भाई कि धैरज कैसे हम बान्हब गे।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनथिरा, सप्तरी

१३९. झुलन बरमासा गित

थारु जनी जाइत सब खेत रोपैतकाल बारहो मैहना मन मे येलहा बात के बखान करलहा गित गाबैछै। जैमे मन के राजकुमार से ल्याके पिया बिना मन उदास केनाखै हैछै सेहो गावल जाइछै।

प्रथम कात्तिक राजकुमार मोही तेजी कन्त चललै बनिजवा कि मैना रे जइहे
झुलना झुली जाहु सबेरे सखी मैना रे जइहे।
दोसर मास अगहन चढी गेल नैहर से गोरी सासुर गेल कि फुलेसेपाने
फुलेसेपाने तापर करत सिंगार अमरुख कन्त दैबारे दुःख देल कि मैना रे जइहे।
पुसहीं मास दोपख भेलै जार अंग हीं अंग योबन भेलै ठार कि काँपत गेरुवा
काँपत गेरुवा यारो रे सुख सेज बिनु पिया काँपत धनी के कलेज कि मैना रे जइहे
झुलना झुली जाहु सबेरे सखी मैना रे जइहे।
माघ हीं मास शिब बर्त तोहार हम सत्वतीमे पाँचो अतवार कि पुजतौं मे गौरी,
पुजतौं मे गौरी शिब दिहल आसिस जिवु कन्त जिवु कन्त लाख बरिस कि मैना रे जइहे।
फागुन मास सखी फगुनी बिहाइर, तरुवर पत्र सबेरे झरी जाय
कि येहो हमे जानितु, येहो हमे जानतु मे फगुनी बिहाइर
पिया संगे रहितु मे भोरी एकबाइर कि मैना रे जइहे।
चैतहीं मास बोन फुलले गम्हिर, सेह्या फुल तोरी हम भेंजतु सनेस
कि जो रेसमदिया,
जो रे समदिया पिया के कहिहे बुझाय, बिरहा अगिन दुःख सहलो ने
जाये कि मैना रे जइहै।
वैसाख मास सखी लगन उचारे, सोंचैये लगन वियाहे कुमार
कि छारत मरबा, छारत मरबा सखी सब गाबल गित
बिनु पिया लगन लागै अनरित कि मैना रे जइहे।
झुलना झुली जाहु सबेरे सख मैना रे जइहे।
जेठही मास बर्सावत निर, नित उठी अर्क सुरुजवा के देल कि मैना रे जइहें।
झुलना झुली जाहु सबरे सखी मैना रे जइहं।

असार मास असार हीं रोप, नरतन खरही काटल सब लोक कि चरै मे चोचा,
चरै मे चोचा रस खोंता लगाय अमरुख कन्त रहल गरछाय कि मैना रे जइहे ।
सौनहीं मास झलामली, निर खोली देल कुसुमी पहिरी लेल चिर
कि बैठी झरोखा, बैठी झरोखा पिया के हेरल मे बाट
सासु कहैछै गोरी नैहर जाहु , कि मैना रे जइहे ।
भादव मास भियावन राइत, सेजिया छोरी गोरी बैठल बसरबा
कि ठनका जे ठनकै, ठनका जे ठनकै गरजत मेघ
बिनु पिया धनी रहल निठो हर, कि मैना रे जइहे ।
आसिन मास सखी आस लगावल, सखी सब कहैछै पिया येलौ तोहर
कि आइब गेलै पियबा, आइब गेलै पियबा पुरी गेलै मास
भनही विद्यापती बारहो मास, कि मैना रे जइहे,
झुलना झुली जाहु सबेरे सखी मैना रे जइहे ।

स्रोत: सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१४०. जगरनाथी बरमासा गित

(सिद्धार्थ -भगवान बुद्ध) गृह छोड़ैतकाल घरवाली, महताइर के बिचम मे भेलहा करुनामय वर्तालाप से भरल गित । यि गित कोनो समय कोनो भि उत्सव मे गावल जाइछै ।

घरवाला- श्री जग्रनाथ जगत के ठाकुर, देस ओरै से चारु धाम,
तहमा जाय चरन गही पुजबै, पुरतै सकल मन काम,
इन्दु बदन हे धनी गजमुक्ता के सुन्दरी, सुवर्न कलस लेहो हाथ,
बिरस्पती पुर्निमा सुनु सिव सुन्दरी, आहे हमरी गमन जग्रनाथ,
प्रथम ही गणेस चरन हितु बान्हबै, मती दिह अगम गमहिर,
नौ सय विघिनियां सुमरी लेबै हे सरस्वती, कन्चन हेतै सरिर । सखी हरी हरी

घरवाली- नैना से निर ढारै कोरकरु कामिनी, प्रभुजी से कहैये लजाय,
जकरहु घर हे सामी नाथ हमर सन के सुन्दरी, आहे सेहो कैसे परदेस जाय,
जकरहु घर हे सामी नाथ हमर सन के हे सुन्दरी, आहे तरुन बान्हु सिनेह,
मास असार हे सामी पन्थ जनु हे चढहु, आहे चौदिस गरजै छै मेघ । सखी हरी हरी

घरवाला- रँगल धोतिया हे उजरी पेछुरिया कि करिया कमर लेबै कांध,
रमैते भमैते हमे पंथ हे चढबै, आहे सुखही जेबै जग्रनाथ । सखी हरी हरी

घरवाली- असार ही मास हे सामी नाथ भैसी धन ननुमी, कि और करेर कुसियार,

बालक पुतर हे सामी अधबोलियो ने हे सुनल, आहे जनम अकारथ जाय,
पुरुस पुरन्ता कि तोहें गुनमन्ता, सुनु सामी बचन हमार,
खैंची कटारी हमर जीव हे हांती देहु, ताब तोंहे जाइहे परदेस,
तेजल तातुल नैहर कुल आपन, सामी जी से बडमन लागै
सरस सिनेह सावन बरु तेजल, आहे मरबै जहर विख खाय। सखी हरी हरी

महताइर- कथी ले लगैल हे बाबु घन अमरैया, आहे कथी ले लगैल देव फुलबाइर,
कथी ले बान्हल हे बाबु श्री बसहर घर, आहे कथी ले जे कइल बियाह। सखी हरी हरी

बेटा- कोइली ले लगैलियै गे आमा घन अमरैया, आहे देव ले लगैलियै फुलबाइर, सुतै ले बान्हलियै गे आमा श्री बसहर घर, आहे जग ले जे केलियै बियाह। सखी हरी हरी

महताइर- खायेलिहो आहे बाबु आम के टिकुलबा, पुजिलेहो देव फुलबाइर,
सुती लेहो आहे बाबु श्री बसहर घर, आहे भोगी लेहो तिरिया कुमाइर। सखी हरी हरी

बेटा- नही हम खेबौ गे आमा आम के टिकुलबा, आहे नही हम पुजबौ देव फुलबाइर,
नही हम सुतबौ गे आमा श्री बसहर घर, आहे नही हम भोगबौ तिरिया कुमाइर। सखी हरी हरी

घरवाली- भादब मास हे सामी नाथ, भोरल लदिया भवजल लागैछै भियौन,
भुसावन लदिया पार कैसे उतरब, आहे कोमल स्याम सरिर,
सुखही से सुतिह सुखही से बैठिह, कि सुखही से सुतिह चौपाइर,
दछिन के बटिया बिसम बड़ा हे सामी नाथ, आहे जनुजाहु भादब मास,
भादब भोग बिलोकित स्वामी, कि रसचियै पुरुस के नारी,
रसहीं से आहे प्रभुजी बेरस भए जाएतै, आहे भोरली जमुना देबै धस। सखी हरी हरी

घरवाला- भोग बिलोकित मोही नही भावै, कि भावैये श्रीजग्रनाथ
सेवा भक्ति हुनको बरु हे करबै, आहे सुफल हेतै श्रीजग्रनाथ। सखी हरी हरी

घरवाली- केकरी से याहे सामी नाथ येहो ढलागिरी धुरहर, केकरी से टेन्सल खाट
प्रातः उठी हे सामी किछु सामर हे लिहे, आहे हम पन्थ हेरब बाट। सखी हरी हरी

घरवाला- जो धन अरजी हे दस ले जे पालब, सेहो धन लागुने काम,
सेहो धन अरजिहे ठामै हे तेजै, आहे अवसर हेतै पछताय। सखी हरी हरी

घरवाली- आपनै देने दया धरम हेतौ, कि आपनै जे देने हेतौ पुन,
कोन बैरिनियाँ सतरु भाये हे लागल, आहे उधर बस्ती नगर,
पहिने ही आये प्रथम ही जाये, हरयत हरल ग्यान,

डाँरहु के डोरी तोरी नरावल, उपर बस्तर पुरान । सखी हरी हरी

घरबाला- तोंहे नबी नागरी अती रुप आगरी,
कोटी पाप भला हेतौ सुन्दरी, होयब मे पुतर बिहुन । सखी हरी हरी

घरबाली- घरही हे माता घरही हे पिता, घरही सहोदर भाइ,
घरही हे आहे प्रभुजी हमर सन के सुन्दरी, सेहो कैसे परदेस जाय । सखी हरी हरी

घरबाला- केकरी से माता केकरी से पिता, केकरी सहोदर भाइ,
मोरन के बेरिया कोइ संगो ने जेतौ, हंसा अकेली रमी जाय । सखी हरी हरी

घरबाली- आसिन मास हेतै पन्थ उजियारा, कामिनी कहैछै बुझाय,
कतहेक जुगुती पिया लाये बोधबै, आहे नित उठी रचैये उपाय,
जाब तोंहें जेब हे सामी नाथ दछिन के बटिया, आहे हमरो लेहो संग लगाय,
पन्थ चलैत हे सामी नाथ चरन दुवो दाबबौ, आहे रौदल हेबौ जुरी छाह ।
सखी हरी हरी

घरबाला- तिरिया के जाती संग नही लेबौ, कि असगुन भाखैत जाय,
अछैत औरदा माथ मुरैबे, आहे तोरा नही लेबौ संग लगाय । सखी हरी हरी

घरबाली- कातिक मास हे सामी नाथ दिवस भावे निर्मल, नित उठी करिह असलान,
मातुपिता के चरन हे मनाबिह, आहे जनम सुफल होय जाय । सखी हर हरी

घरबाला- केकरी से माता केकरी से पिता केकरी से कुल परिवार
मोरन के बेरिया कोइ संग नही जायेतौ, हंसा अकेली रमी जाय । सखी हरी हरी

घरबाली-अगहन मास हे सामी अधिक सौरभ लागै, रसैया अधिक पियार,
छत्तिस प्रकार के रसैया बनैबै, तोंहे प्रभु बैठिह जमाय,
घरहीं से आहे प्रभु घृतमधु भोजन, परदेस सुधे गरास,
पहिनु के बास कुम्हार केरी आँगन, घुरी-फिरी बनियाँ दोकान । सखी हरी हरी
कथिये सोहाबन तितिर मेजुरनी, कि कथिये सोहाबन धेनु गाइ,
कथिये सोहाबन येहो लवी हे कामिनी, आहे जनम अकारथ जाय ।
बोन ही सोहाबन तितिर मेजुरनी कि डगरे सोहाबन धेनु गाइ,
तिरिया सोहाबन येहो लवी हे कामिनी, आहे जनम सुफल होए जाय । सखी हरी हरी
अगहन मास अधिक सुख सामी, रसैया बहुत प्रकार,
खाइह पिबिह प्रभु मन हेतौ हरसित, पलङ्ग अङ्ग बरु देब,
सोलहो सिंगार काये हम धनी आएबौ, अधुरी मधुरी रसदेब ।

घरबाला- मैलही बस्तर चुन पान बिना, बिना चिकनियाँ देह,
भला भला लोक सब कहत कैहनियाँ, जतरा कैसन सिनेह । सखी हरी हरी

घरबाली- पुस मास जौं प्रभु जायेब, सुनिलेहु बचन हमार,
अठिया मठिया तारिमल कुटिया, यी सब लेहु उताइर,
पन्थ चलैत कया जनु साधहु, जनु मोरु भुख पियास,
नगर मे जाइ बास बरु खोजिह, यह्या बेची करिह आहार । सखी हरी हरी

घरबाला- बहुत के पिन्हिह अठिया मठिया, थोर के करिह सिंगार
सोना चिकनियाँ दुरही नराबिह, जो कुल राखिह हमार । सखी हरी हरी

घरबाली- जो मोही सोभै अठिया मठिया, सो प्रभु चलल बिदेस
कौन बैरनियाँ सतरु होए लागल, जो पिया के देल उपदेस । सखी हरी हरी
माघ प्रयाग तिरिवेनी सागर, गंगा मकर स्नान,
तेंतिस करोटी देव कुल अवतारे, तहाँ तहाँ प्रभु परिकक्छन जाय,
जो कुछ मागब सो कुछ पायब, बच्चा स्याम सरिर,
भुसहुल लदिया पार कैसे उतरब, कैसे बिधी लागब तिर । सखी हरी हरी

घरबाला- तिरिया तिरिया के बेगर बेगर के की परिक्छन फल पाइ
हमहुं जायब देवाकुल नन्दन कासी उरिसा बैजनाथ । सखी हरी हरी

घरबाली- फागुन मास सबे रितु स्वामी सखी सब पहिरन चिर
चिर करपुर तमौलिन पिरुवा सखी बिरझे सब लोक
सखी सहेली मिली फगुवा खेलावल केयो चित कैल बिरोग । सखी हरी हरी
फागुन मास गोनमा जे कैल की रस बुझल मोर
गोनमा के सरिया मलिनो ने भेलै, किये चित्त कैल बिरोग
आम पलावल ओ घन तरुवर, सिमर लागु आकास
चैत मास जे प्रभु पानी जे लागतै तोहीं दर्किछन पन्थराज ।
निचे ऊँचे ढलागिरी पर्वत निचे ऊँचे बाट खम्भा
खन्धक कैसे प्रभु टपब मोही जीव लागै तरास । सखी हरी हरी

घरबाला-आहे आहे सुन्दरी करुना मत करहु ,जनु चित करहु उदास,
घुमी जे आएब तोहरा से दरसन घुसत भवन गिरही चोर । सखी हरी हरी
बैशाख मास बिप्र हंकार पोछी लेल दाहिन हाथ, दिन रे सुदिन मोरा
गुनी देही ब्राहमन, हमहुं जायबै जगरनाथ । सखी हरी हरी
हथिया चित्रा ओ सन्यागत, सनमुख उगल भान,

गोधन के बेरिया जतरा रे करिह, चौदिस हेतौ समाधान । सखी हरी हरी

घरवाला- यि मत जानिह पुतर प्यारी घर मे तारिह तों
चलैके बेरिया काहुधनी करिह सब से असगुन होय । सखी हरी हरी

घरवाली- चानन सरस अंग बरु लेपल मोही पर तेजल जेठ
अंक मनायी पिया पर बोधब, सामी भेल कुलहु के हेठ ।
बोने बोने जायह बोन फल खाइह लागतौने भुख पियास
आमा के हाथे भोजन बरु सुमरिह, सुमरिह धनी के कोर । सखी हरी हरी

घरवाला- बोने बोने जायेबै बोन फल खायबै बोनपत्र करबै सेज
आमा के हाथे भोजन बरु बिसरब, बिसरब नही धनी के कोर । सखी हरी हरी

घरवाली- कनक डन्ड धुजा बरु सामी ताहां ठाकुर स्थान
नङ्गी नारी उपर नही बिस्तर ताहां दृढ राखिह ग्यान । सखी हरी हरी

घरवाला- मारब खन्डे खन्डा माथ मुरायब समुन्दर लहरीया लेब
असोक बिरिछ छहारी जुरायब यम से टक्कर लेब
भनही नाम सुनु शिव सुन्दरी चित्त जनु करहु उदास
अैगला जनम गौरी अबतरिह हमहीं पुरुस तुंही नारी । सखी हरी हरी

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१४१. साँची बरमासा गित

घरवाली (साँची) के आपन पिया परदेस गेल समय मे अपने घरवाला (लोग्ने) साहु के रुप धारन कैरके फुसियाबै के प्रयास करलहा गित जैमे उ सफल नै हैछै या पाछे चिन्हैछै या मिल जाइछै ।

साहु- प्रथम कात्तिक गे साँची साहु पारै हाक, साँची के यौवन देखी साहु धरै आसे
हिनिखिनी करै गे साँची करपुर मैनामन्ती, निसित सपना देखनु साँची के यौवन हो

प्रथम कात्तिक ....

साँची- येहेन बचन हे साहु की बोलै छ निधाने, साहु के सौहनी हेतै सामी के पराने
हम कुलमन्ती हे साहु नै करबौ प्रेम, येहेन बचन ....

साहु- अगहन मास गे साँची हेमन्चल राती, नव फुल मधुरी तिरकुटिल पुराने
तोहरा के देबौ गे साँची अगिन पटोरे, कान कुन्डल देबौ गला गिरमहाले
अगहन ....

साँची- निर्धन कथनी हे साहु की बोलैछ निधाने, सामी के घटित हेतै सत मे हमारे
पन्थ चलैत साहु मन्डिल नैहेतौ बास, निर्धन....

साहु- पुस मास हे साँची सुन तोरा मन्डिले,
सुन मन्डिल देखी मन कैसे भावौ
यौवन बदन साँची राखबै कैसे छपाइ
पुस....

साँची- सत सुहवी कन्या बचन हरे तिरिया
तिरिया ओछी लोभी सुबधी सियान योहो दुन यौबन
योहो यौबन चियै मालती समाने
भमरा के रुप मे मोरा सामी घर येतै
सत सुहबी ......

साहु- माघही मास हे साँची पुरतै चारु मासे
इन्द्र भमैबौ साँची भमैबौ तारा मने
चारी त महिना साँची हरबौ ग्याने
माघही ....

साँची- माय तोहर दोचरनी हे साहु तनी कोने ग्याने
अतित चलितर साहु के व्यबहारे
सामी के कटारी लेबै तोहर सिरहाने
तिरिया बध देबौ साहु तोहर उपरे
माइ ....

साहु- फागुन मास हे साँची मजरै तरुवरे
मजरल जाही जुही गुरुत गुलावे
मजरल मैना मन्ती सुबुधी सियाने
पुर्विल सुदिस्ट साँची किछु करी लेहुहो
फागुन .....

साँची- सुबुधी कन्या बचन के ठिके
तिरिया ओछी लाली सुबुधी सियाने
योहो दुनु यौबन चियै मालती समाने
भमरा के रुप हे साहु घुमी घर जाहु
सुबुधी ....

साहु- चैत मास हे साँची भमरा के रुपे
राजा त कञ्चन सोभे देहरी दुबी धाने
पुर्बिल सुदिस्ट साँची किछु करी लेहु
चैत.....

साँची- ढेपा चोपा फेकने मरम चोट लागै
कहाँ गोटा मारने सेबती पुइर जेतै
सिया के दुवारे जैसे भुखे कुकुर सियार हे
ढेपा चोपा......

साहु- बैसाख मास हे साँची जिरा सुबिदारे
भारे भारे दही देबौ फुल देबौ सेज हे
अनुप सनेस देबौ गला गिरमहाल
बैसाख ......

साँची- हमारी गोठ साहु लाख लाख गैया
झुनकी चरैया बेटी दहियो ने खाइछै हे
टुनकी चरैया बेटी पिनहै लहर पेटार हे
हमरी सुसार करै मालिन के बेटी हे
हमारी.....

साहु- जेठ मास गे साँची भरलै नदी-नाला
तोरो सामी देखलियौ कन्टकपुर राजे
घाट के घटवारे मारलकौ साहु-महाजने
ताहीं से ने येलौ गै साँची सामी तोहारे
मेटियो नै भेलौ गे साँची सिर के सिनुरे
जेठ .....

साँची- हमरी के सामी हे साहु भारी महाजने
हमरी के दाये गेलै अन्तर के हारे
यही राज ओही राज सामी मोरी जेतै हे
ससरी खसत साहु अन्तर के हारे
हमारी .....

साहु- असार मास गे साँची भोगै पद्मिनी
भारे भारे आम देबौ केरा कटहरे
अनुप सनेस देबौ डोमा फल नरियर

असार ....

सॉंची- हमरी के सामी हे साहु भारी सौदागरे
भारे भारे आम भेजै केरा कटहरे
अनुप सनेस भेजै सुरुज फल नरियर हे
हमारी ....

साहु- सौन ही मास गे साँची वर्से रिमिझिमी मेघ
छटकै बिजुली वर्से घनघोरे
साँची के यौवन देखी तरसै मोरा जिव हे
साउन ....

साँची- कोढिया जे हेब हे साहु बैल किसाने
तोरो घरवाली बियौहवा के भोगतौ याने
लामेलुमे जेतौ साहु मुन्ढ जेतौ गमार हे
कोढिया .....

साहु- भादव मास गे साँची निसी अन्धी राती
आजु के रैनी साँची यौवन जेतौ चोरी
आजु केरी जतरा कालु लादव बैल हे
भादव ....

साँची- अनकर नारी हे साहु निन झुरमैये
खेलिन खुलिन मे भुलिनै परिहे
हाथ लेबै खड्ग छुरी डौढी पहरदारे
सेजिया बिछाये लेबै दिप लेबै बारी
बैठिये गमैबै साहु चारु पहर राती
अनकर ....

साहु- आसिन मास हे साँची पुरलै बारहो मासे
श्रीमन्ती श्रीमन्ती साहु पारै हाके
जब साँची सुनलकै श्रीमन्ती के नामे
औरी पौरी झापी लेल घोघ लेल तानी
बाया हाथे पटिया दाया हाथे पानी
खुसी ये चललै साँची सामी के मनाबे
आसिन ....

साँची- बारहो महिना हे सामी बारहो गारी देलियौ

सेहो अपराध हे सामी बकसी देहु मोरा
बमा बैठे सामी दहिना बैठे साँची
जैसन के उगै पुरनिमा के चान हे
आसिन मास गावल गुबल श्रीकन्ठ लिहे बासे
नवम महिना मनुस अवतारे
दसम महिना पसु अवतारे
पौस परानी सब सुनल भोरी कान हे ।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१४२. खेत रोपनी गित (छमासा)

यि छमसा गित मे पिया छोइर के परदेस गेल अवस्था मे पिया विना असार महिना से अगहन मैहना तैक केनाखे जिवन गुजारलकै तेरक दरद भरल गित, जैमे एकटा सन्तान के सेहो कल्पना करनेछै ।

असार समैया हे ऋतु जलथल जलथल
जलथल मोही ने सोहाबै कि आब सखी हेक
प्रान आधार सामी नाथ दाये गेलै अपना हे गोकुल नगर
हाँ प्रान आधार सामी नाथ दाये गेलै ।
सौन समैया हे ऋतु सरधे सोहावन
रिमी-झिमी बरसैछै बुन्द कि आब सखी हे
हमरी मन्डिलवा हे चुवन लागै,
एकही हे पुरुस बिनु हाँ हमरी मन्डिलवा हे चुवन लागै
एकही पुरुस बिनु ।
भादव मास हे सखी भोरली भियावन दोसर अन्धेरिया के राती
कि आब सखी हे डाँसली सेजिया हे भियावन लागै
एकही बालक बिनु ।
आसिन मास हे सखी आस लगावल आसो ने पुरलै हमार,
कि आब सखी हे झिली-मिली केसिया हे सम्हारी बान्हु,
छतिया हे अगिन जरै ।
कातिक मास हे सखी कन्त दुरन्त गेलै मोरा किछु कहियोने गेल,
कि आब सखी हे सङ्गहु के सुद्धी रतन जरिये गेलै
सुद्धी बुद्धी एको नही भेल ।
अगहन मास हे सखी सारी लुबुधी गेलै, फुटी गेलै सबरङ्ग धान

कि आब सखी हे धान फुटिए सिस बरु लुबधल
पुगी गेली सखी छवे मास ।

स्रोत: सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१४३. सितल चनन (बरमासा गित)

पती परदेस या लडाइ मे गेलहा समय मे घरमे पिया के याद करैत सिंगार पटार करैत महिने महिना मे पिया के खाँहिस महसुस करैत, प्रेम कल्पना करलहा गित । यि गित बारहो महिना सुबह साँझ गाइब सकैछै ।

सितल चनन आङ लगाबल, कामिनी करैये सिङ्गार,
प्रिती लगावल वही रे चनन तर, तेजी गेलै मास अखार ।
सौन ही मास हे सखी सरधे सोहावन, बिजुबोन कुहुकै मेजुर,
मेजुरा जे कुहुकै हिया मोरा सालै, नैना बहैये जलधार, सखी हरी हरी ।
भादव मास हे सखी भोरली भियावन लागै, दोसर अँधेरिया के राती,
लौकाजे लौकै बिजुली जे छटकै, केकरी सरन हेबै ठार ।
आसिन मास हे सखी आस लगाबल, आसो ने पुरलै हमर,
एक त उधबजी हे बारी बयेस छैके, आहे दोसर पिया प्रदेस, सखी हरी हरी ।
कात्तिक मास हे सखी पुरनिमा के चाँने, सखी सब गङ्गा असलाने,
सब सखी पहिरल पाट पटम्बर, हम धनी गुदरी पुराने, सखी हरी हरी ।
अगहन मास हे सखी सारी लुबुद्धी गेलै, सखी सब कुटैये पिठार,
पौर परेबा जोरा येहो केल करै, हाँसिन यसुरा लौटाय, सखी हरी हरी ।
पुस ही मास हे उधो कुहेस लगावल, जगत भयेलै अन्हार,
श्रीवृन्दा बोन बाँसी एक बोलैये, मोरा चित लागलै बिरोग, सखी हरी हरी ।
माघ ही मास हे उधो नित खसै ठार कि काँपत जाँघ जमुन,
पियवा जे रहतियै सिरक भोरेतियै, बिनु पिया जारो नही जाय, सखी हरी हरी ।
फागुन मास हे सखी फगुवा खेलावल, अधिक के घोर तु अबिर,
रङ्ग अबिर सिर ढारतु, हँसी उरायतु अबिर, सखी हरी हरी ।

चैत ही मास हे उधो बेली फुलिये गेलै, फुली गेलै लाल कुसुम,

सेह्या फुल तोरी हम मलवा बनैतियै, भेंज तुं मे पिया के सनेस, सखी हरी हरी ।

बैसाख मास हे सखी बँसवा कटावल, उँच केरी बङ्गला छराय,

वही हे बङ्गला मे खिरकी बनावल, वही चढी हेरबै प्रभुजी के बाट, सखी हारी।।।।

जेठ ही मास हे सखी हेठ भेलै बरसा, पुगी गेलै बारहो मास,

आबी जेतै प्रभु जी सरनमे, पुगी जेतै हमरो आस, सखी हरी हरी ।

स्रोतः सनिचरा चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१४४. हरबाहा गित

हरबा सब खेत जोतैत काल बहौत श्रद्धा या प्रेम से गाबैबला गित जैमे हर बरद से ल् याके माया प्रेम के बखना करल गेलछै ।

पर्वत अगिया लागल रे पटना मे भायेगेल इजोते
चुरिया झलकी सन बछबा हरकी गेलै पालो नराये देल रे ।
कौन ही काठ के हरबा ने रे कौन ही काठ के पालो
कौन ही बाँस के पेनठिया की खोला जोला हर बहु रे ।
चनन काठ के हरबा ने रे सखुबा ही काठकेरी पालो
मलियाही बाँस के पेनठिया की पर्वत हर बहु रे ।
छोटी-मोटी गाछ महेलिया रे तकरहु नाम्ही नाम्ही पाते
तही तर बैठल कुबरी हरीनियाँ रे की मने मने झुरमै छै रे ।
हरीनी जे झुर मै हिरन बिनु रे, बाँझी जे झुरमै एक पुतर बिनु
हम धनी झुरमैची एक रे छहेला बिनु बारी बयेस छैके रे ॥
केदली के बोन मे बाघ गुजरी गेलै
खेत बरु गुजरै हरबाह बिना रे
छतिया के उपर यौवन गुजरी गेलै
मोही त किछु ने सोहाबै हे ।
रारी फुलाये गेलै यारी रे यारी,
चिकना फुलैलै कचनार हे,
तिरिया फुलाये गेलै अपनी नैहरबा,
यौवन फुलैलै ससुरार हे ।
अलकी ने है हे छौंरी छलकी ने हैहे,
उँखरी मे कुटी हे पिठार हे,

पिठार कुटैते छौंरी चोलिया मसकी गेलौ,
यौवन देखै छौ गमार हे ।

स्रोत: भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१४५. भिभास गित

पिया परदेस गेलहा बोहौत दिन भेल रहैछै । पिया के याद मे भोइर राइत के पहर पहर मे मनमे कल्पना करहलहा के बर्नन गित । कोनो भि थारु नाच मे यि बिरह के सन्दर्भ मे गावल जाइछै ।

हे पहिलु पहर राती अरुना करुना हो, रगरी चनन भोरलुं लिलार
जायेबै करबै मे पियाके उदेस, सखी हम जायेबै हो ।
हे दोसर पहर राती सेजिया ओछायेलुं हो,
सुतिये बैठिये हेरब प्रभुजी के बाट, कखनी से आयेतै हमरी बालमु हो ।
कोरा पैसी सुतबै सिरहोना लेबै हाथ,
जायेबै करबै मे पिया के उदेस, सखी हम जायेबै हो ।
हे तेसर पहर राती सुतलुं निभोर हो,
पिया केरी केचुली यौवन परै मोर-२
जायेबै करबै मे पिया के उदेस, सखी हम जायेबै हो ।
हे चारिम पहर राती भायेगेलै भोर,
सखी सब कहैये पिया येलौ तोर,
पानी पिढिया लाये भयेलुं बहार हो,
नैये देखुं पिया के खसल मुरुछाय हो ।
हे येहेन सखिये सब चितहु के भोर हो-२
बिसरल सोग सखी देल मनपाइर-२
जायेबै करबै मे पिया के उदेस, सखी हम जायेबै हो ।

स्रोत: भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१४६. हाँजीपुर हटिया हे ननदो के गित

भौजाइ ननैद के जवानी के बर्णन करलहा गित जेकरा हटिया के सौदागर के रुपमे ले नेछै । यि समा चकेवा के साथै खेत रोपैत काल गावल जाइछै ।

हाँ हाँ रे हाँजिपुर हटिया हे ननदो, लागलै बजरिया
हाँ हाँ रे बिचै ठिना आहे ननदो छानल दोकान आहे-२

हाँ हाँ रे किये देखी आहे ननदो सुगा मड़राबै आहे किये देखी,
हाँ हाँ रे किये देखी आहे ननदो लौटलै सौदागर आहे किये देखी-२
हाँ हाँ रे सारी देखी आहे ननदो सुगा मड़राबै,
उमत बदन देखी हो लौटलै सौदागर-२
हाँ हाँ रे घटी तोहर सेरबा आहे ननदो घटी बैटखरबा
हाँ हाँ रे घटी तोहर आहे ननदो उमत बदन-२
हाँ हाँ रे आनहक सेर आहे ननदो औरो बैटखरबा,
हाँ हाँ रे जोखी लेहु आहे ननदो उमत बदन-२ ।

स्रोत: भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१४७. गोरना के गित

बौसली के माध्यम के रुपमे ल्याके एक दोसर के उपर देखेलहा प्रेम प्रस्ताव भरल गित । यि गित कोनो नाच मे प्रेम बर्तालाप के समय मे गावल जाइछै ।

लडकी- आहे किये देखी आरे गोरना टेकल बथनमा ओ हो रे किये रे देखी
आहे बँसिया बजावल ओ हो रे किये रे देखी ।
लडका- आहे घाँस देखी आगे समरो टेकली बथनमा ओ हो रे तोरा गे देखी आहे
बँसिया बजावली ओ हो रे तोरा गे देखी ।
लडकी- आहे बँसिया बजावल रे गोरना मन मोरा हरले
ओहो रे तोरा रे हमरा आहे लागलौ प्रितिया-२ ।

स्रोत: भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१४८. बिरहैन गित

पिया परदेस गेला बहौत दिन के बादो नै येलापर मन मे उठलहा बहौत बात या जवानी के बखान करलहा बिरह के गित । यि गित कोनो नाच मे बिछोड के समय गावल जाइछै ।

दिन- दिन बदन हे मलिन भेलै, कतेक रहबै मनमारी
हाँ हाँ रे बाल पैरुख ये हो सब घटी गेलै, जैसन काठ लागै घुन हो
करुना करबै कतेक दिना, कतेक पन्थ रहबै निहारी हो
हाँ हाँ रे माधब हमरा हे कठोर भेलै, येहो जिव ने लाये गेलै मारी
हाँ हाँ रे माधब हमरा हे कठोर भेलै, पिया बिनु देहिया हे झामर भेलै कतेक सुमिरबै गुन
जिवन हमरा हे बेरथ भेलै ऐसन मोरन भला हो,

हाँ हाँ रे येहो दुःख कहमा हे बुझाएबै, केयो मोरा बुझत दुःख
येहो जिब ने लायेगेलै मारी,
केकरा कहबै के दुःख बुझत, केयो मोरा हेतै सेहाये हो,
हाँ हाँ रे येहो दुःख कहमा बुझायेबै, जैसन आवा लागै आगी हो ॥

स्रोतः भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१४९. पहु मोरा गेलै कुन्ज बोन गित

घरवला घरवाली के बिच मे मायामोह के लेल भेलहा अनवन से भेल गित । थारु के बहौत किसिम के नाच मे यि गित गावल जाइछै ।

हाँ हाँ रे पहु मोरा गेलै कुन्ज बोन बिसम विदेस
हाँ हाँ रे नैना से बरसल हो मघा असरेस –२
हाँ हाँ रे अनख दिबस सन हो हरी पहु येल
यानी सिंहासन हो हरी बैठक देल–२
हाँ हाँ रे पहु- मोरा माँगी लेल हो मधुरी के रस
हाँ हाँ रे मधुरी के रस हे पहु भेलै जिब काल–२
हाँ हाँ रे यतबे बचनियाँ सुनी पहुँ हो गेल रिसियाये
हाँ हाँ रे करधाये राधिका हो राखल बिलुमाय–२

स्रोतः भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१५०. बिछुरन गित

पहु से बिछोड़ भेला के बाद के दरद भरल परातै काल गावैवला गित । यि गित परातै काल पिया के विरोग मे गावल जाइछै । येकरा कोनो नाच मे सेहो गाइब सकैछै ।

येहेन बिछुरन केहुके ने होइ
एक त विछोड भेलै आहे ननदी भौजाइ हो
आहे दोसर बिछोड़ पिया प्रदेस
हे.... तेसर बिछोड़ भेलै आहे हँसा-चकेबा जोड़ा
येहेन बिछुरन केहुके ने होइ
हे.... चारिम विछोड़ भेलै आहे चाँन-सुरुज जोड़ा
आहे लगे लग कहियोने होइ,
येहेन बिछोड केहुके ने होइ ।

स्रोतः भविलाल चौधरी (पटवारी)
कनचिरा, सप्तरी

१५१. सलहेस के गित

बेटी के वियाह मे बेना नै देला के चलतै बेना पठाइ के लेल बटोही से सम्वाद करलहा गित। ससुरा मे भेलहा बाल के बखान करैत लैहर के याद करल गेलछै। कोनो भि नाच मे यि गित गाइब सकैछै।

कनिया- बाट रे बटोहिया कि तोही मोरा भैया ने रे
आहे हमरी समाद बाबा लागी कही दिहे, बेनी बिनु सौतिन हैछै हे।
बटोही- तोहरो बाबा के रि चिन्हियौ ने जानियौ ने गे
आहे कैसे के कहबौ समाद बुझाइ के कि बेनी बिनु सौतिन हैछौ हे।
कनिया- हमरो बाबा के रि उँची - उँची हबेलिया ने रे
आहे पुरुबे दुवार चनन बिरिछिया कि सेहा हेतै बाबा के दुवार
मचिया बैठल हे आमा चिरैत नाम्ही केसियाने हे
आहे सोभुवा बैठल बाबा हमार हेतै कि कही दिहे हमरी समाद,
बेनी बिनु सौतिन हैछै हे।
बाबा- आगु - आगु सखारी के भार, पाछु - पाछु पेटारी आबै हे
आहे बिचै ठिना आबै बेनिया के भार कि खेह उड़ियावैत हे
कनिया- राखहक राख हे सासु , सखारी पेटारी के भार हे
आहे औरो राखहु बेनी के भार, कि बेनी बिनु सौतिन हैछै हे।

स्रोत: भुलीढेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१५२. चन्द्रावती के गित

जसोदा मैया पाइन भोरैले जाइत समय कन्हैया पछा लाइग जाइछै त जसोधा मना करैछै। ओइ समय मे जसोधा या कन्हैया के बिच के सवाल जवाफ गित।

जसोमती- हे... ललित कलित सखी चन्द्रावती,
याहे जसोमती पनियाँ के जाये
हे... घुरह घुरहक आहे तोहे पती बालक, याहे घोघरो घाट मे आये
कान्हा- हे... मिन रुप हम जौघरी छेलु, आहे अगम जल मे रहिया
अगम पताल से माटी आनलु धरती श्रृजल तहिया।
माइ हे घोघरो ने देखलु तहिया १
कौछ रुप हम जौघरी छेलु, नाग के फेन मे रहिया
तिन कोन पृथ्वी पिठ धाये टेकलु, धरती थिर भ्याल तहिया
माइ हे घोघरो ने देखलु तहिया १

बराह रुप हम जौंघरी छेलु, गिरी पर्वत मे रहिया
दुई दाँत से धरती गहलु, धरती थिर भ्याल तहिया
माइ घोघरो ने देखलु तहिया १
राम रुप हम जौंघरी छेलु, नर-बाँनर मे रहिया
रावन मारलु लंका जारलु, राज विभिसन पाया
माइ हे घोघरो ने देखलु तहिया ।
कृष्ण रुप हम जौंघरी छेलु, ग्वाल - बाल मे रहिया
सखियन के जे गोपियन करलु, गोपियन के निर्माया
माइ हे घोघरो ने देखलु तहिया ।

१५३. पृथ्वी नारायण शाह के गित

रजा पृथ्वी नारायण या काठमाण्डौ के बखान करलहा गित ।

धिरे चलु धिरे चलु संगहु, हे सखी सब आब जेबै चन्द्रागिरी पार हो
हाँ हा रे.... ताब जेबै थानकोट चौकिया हो पुगी जेबै नेपाल सहर हो
नेपाल पुगिये बागमती असलान करबै, पुजी लेबै पसुपती नाथ
हाँ हाँ रे.... पसुपती गुहेश्वरी के पुजी लेबै हो
सब देव पुजिये सम्भुजी के दर्सन, पुजी लेबै बुढानिलकन्ठ हो
हाँ हाँ रे.... पृथ्वी नारायण बडा प्रतापी छेलै, जिती लेल सगरे नेपाल हो
नेपाल जितिये राज बनावल कैलनी बड़ा बिस्तार हो
हाँ हाँ रे.... गोरखनाथ जी के आसिक भेटल पृथ्वी नारायण शाह हो
जहाँ पाउँ राखे पृथ्वी नारायण तहाँ होबे बड़ा जोरगर हो
हाँ हाँ रे.... पाउ परी गोर लागु एहेन राजा के हो करैछै जे सब के कल्यान हो
हाँ हाँ रे.... जुग-जुग हेबे येकरे राज्य हो हम हेबै बड़ा भाग्यमान हो ॥

स्रोत: भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१५४. महुथिया या बठनिया के गित

महुथिया या गाम के बठनिया के बिच मे भेलहा प्रेम भाव भरल गित ।

चिन्हियौ ने जानियौं महौथिया रे नामो ने जानियौ तोहार
तिलभरी हाथी बिल्माइदे कि अँचरा समारबै रे-२
चिन्हियौ ने जानियौं बठिनियाँ गे नामो ने जानियौ तोहार
मोरा हाथी पानी के पियासल अंकुसियो ने मानैछै गे-२
गाछ चढल बुढ बाँनर रे मने - मने भुरमै छै रे,

येहेन अन्चित हम कतहुने देखलुं जहर कैने जाइछै रे-२ ॥

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१५५. खेतरोपनी बिरहैन गित

जोगी के भेस मे येलहा एक अपरिचित जुवक या पाइन भरैले येलहा छौरी के बिच के प्रेम वर्तालाप गित ।

जोगी- पुरुब भुवन सन जोगी एक आवी गेलै
बैठी गेलै नेमुवा के बिरिक्छी तर
जोगिया पियासल मोरै हो
समरो - कुइयाँ नही पनियाँ रे जोगी कलस नही डोरिया
कैसे विधी पनियाँ पियाये देबौ हिरदे जुराये जेतौ रे ।
जोगी- कुइयाँ छौके पनियाँ गे समरो कलस छौ डोरिया
चुरुक से पनियाँ पियाये देहु हिरदे जुराये जेतै रे ।
पनियाँ जे पिलियै हे समरो हिरदे जुराये गेलै
पुछे लागल दिलहु के बतिया कि तोहर सामी कहाँ बसु रे ?
समरो - ससुर गोरखपुर भैंसुर हे चम्पारन
सामी मोरा बसै श्री त मोरंगराज कि हम धनी सासु लागी घर बसु रे ।
जोगी - यतवे बचन जब सुनल नि जोगिया हे
खोले लागल दक्छिन के चिरवा कि पहिरु विरान धनी हे ।
समरो - पिन्हिये ओढिये समरो अङ्गना मे ठाड़ भेलै
जकहरु चियै अती बरी सुन्दरी सेहो कुँवर चलियाबै रे
भागल भागल रे जोगी ठार भेल बबुर तर
मनेमने बँसिया जे बजाबै कि ठकी लेब विरान धनी हो ।

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१५६. बिरहैन गित (क)

एक मस्त जवानी से भरल नवयुवक से हाथी, मेजुर, या छौड़ी के कल्पना कैरेक अपने आपन के माया के बन्हन मे पाइर के हाथी, मयुर, तरुनी कोने कोने भेटैछै या केनाखे बस मे करबै तेकर कल्पना करलहा प्रेम से भरल गित ।

कहमाही कुहुकै दैवारे हाथी जोड़ा, कहमाही कुहुकै मेजुर,
कहमाही कुहुकै सुन्दरी धनी, सुनी-सुनी हिया मोरा सालै हो ।
कहमाही कुहुकै छौरी जे बठिनियाँ, सुनी-सुनी हिया मोरा सालै हो ।

खोला-जोला कुहुकै दैबारे हाथी जोड़ा, बिजुबोन कुहुकै मेजुर,
तिरहुत कुहुकै हे सुन्दरी धनी, सुनी सुनी हिया मोरा सालै हो ।
तिरहुत कुहुकै छौरी गे बठिनियाँ हो सुनी सुनी हिया मोरा सालै हो ।
कथी से बझैबै दैबा रे हाथी जोड़ा, कथी से बझैबै मेजुर,
कथी से बझैबै हे सुन्दरी धनी, कथी से बझैबै छौरी गे बठिनियाँ हो,
सुनी - सुनी हिया मोरा सालै हो ।
रसा से बझैबै दैबा रे हाथी जोड़ा, फन्ना से बझैबै मेजुर,
सिनुरे बझैबै सुन्दरी धनी, सिनुरे बझैबै छौरी गै बठिनियाँ हो,
सुनी - सुनी हिया मोरा सालै हो ।
कहमाही राखबै दैबारे हाथी जोड़ा, कहमाही राखबै मेजुर,
हकमाही राखबै सुन्दरी धनी हो, सुनी सुनी हिया मोरा सालै हो ।
हाथीसार राखबै दैबा रे हाथी जोड़ा, चौपाइढ राखबै मेजुर,
कोहबर घर राखबै हे सुन्दरी धनी हो, कोहबर घर राखबै हे छौरी गै बठिनियाँ,
सुनी - सुनी हिया मोरा सालै हो-२ ।

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१५७. बिरहैन गित (ख)

घरवला के सल्लाह बेगर राइत के घरवाली राजा के हवेली मे भ्या रहल नाच देखैले जाइछै। घुइर के आबैछै त घरवला केबार लग्या के दोसरे संगे सुतल रहैछै ओइ अवस्था मे दुनो के बिच मे भेलहा बातचित से भरल गित ।

घरवाली- हाँ हाँ रे बाजन बाजै मधैयापुर हो सुनैत सुहान लागै,
हाँ हाँ रे राजा के हवेलिया नटुवा जे नाचै हो हम जेबै नाच देखे-२
घरवाला- हाँ हाँ रे जाब तोंहे जेब धनी मोरा नाच देखे हो, छुटतौ पिरितिया
हाँ हाँ रे ठोकी लेबै बजर हे केबरिया हो सुतबै रयनी घर-२
घरवाली- हाँ हाँ रे नाच देखिये हमधनी लौटली हो अँङ्गिना मे ठार भेलु,
हाँ हाँ रे खोलु पिया खोलु बजर केबरिया हो हम निन भुरमेची-२
घरवाला- हाँ हाँ रे जाब तोंहे हेव निनहुके मातली हो, अँचरा बिछाये सुतु,
हाँ हाँ रे तोहरो से सुन्दरी अतिरुप आगरी हो कोरा पैसी सुतल-२
घरवाली- हाँ हाँ रे बिधाता दैबा हो बिही मोरा हो बाम भेलै,
हाँ हाँ रे गाम के पछिम बसै एक मालिन हो, सेहोरे सौतिन लागै-२
हाँ हाँ रे अङ्गिना जे लागै मोरा लेखे बिजुबोन हो, ओसरा पहाड़े लागै,
हाँ हाँ रे कैसे हम सुतबै अँचरा बिछाये के हो, मोरा जिव डर लागै-२ ।

स्रोत: बुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१५८. बिरहैन गित (ग)

एकटा धनिक जमिनदार आपन बेटी के बियाह मे धन सम्पैत हाथी देने रहैछै लेकिन उ ओइ देस के रजा हाथी के ल्या जाइछै। तहै दुख के समय मे बबा या बेटी के बिच सवाल जवाफ गित।

कहमाही पोथिया उचरी गेलै, कहमाही भये गेलै सोर
हाँ हाँ रे कहमाके राजा बेमुख भेलै
कथीले जे बाबा हौ देल अनधन, कथीले जे देल येहो राज
हाँ हाँ रे कथीले जे देल बाबा हौ नेपाली हाथी-२
खाइले जे देलियौ बेटी गै अनधन, भोगैले जे देलियो येहो राज,
हाँ हाँ रे चढ़ैले देलियौ बेटी गै नेपाली हाथी-२
खाइयोने जे भेलै बाबा हौ अनधन, भोगियो नै भेलै येहो राज,
हाँ हाँ रे चैढियो नै भेलै बाबा गौ नेपाली हाथी-२

स्रोत: बुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१५९. बिरहैन (घ)

एक सुन्दर मालिन के फुसियाइले एक परदेसी के राखलहा प्रेम प्रस्ताव से भरल गित।

पातरी छितरी गे मालिन-२
मुठी एक डाँर, अलप बयस गे मालिन,
भुइयाँ लौटै केस, सुनु मालिन हे-२
कृपिनी ने हैहे गे मालिन, हेतौ अबगुन-२
साँचली यौबन गे मालिन लागी जेतौ घुन, सुनु मालिन हे-२
भुखल जमाइह गे मालिन, हेतौ बड़ी पुन,
जेबै देस आपन देस गे मालिन सुमिरबौ तोहर गुन, सुनु मालिन हे-२

स्रोत: बुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६०. बसन्त ऋतु गित

मुगलान गेलहा पिया के घर लौट के आबैले बटोही के हाथै समाध पठेलहा गित।

लडकी- फागुन बितिये गेलै, आहे चढलै बसन्त ऋतु
आहे किये लाये खेलबै ऋतु बसन्त हो २।
आपनो ने आबै हो पिया आहे चिठियो ने भेजै पिया हो-२

आहे किये लाये खेलबै ऋतु वसन्त हो-२
बाट रे बटोहिया कि तोंहे मोरा भैया लागु हो-२
आहे हमरो समाद बालमुजी के कही दिहु हो-२
बटोही - तोहरी बालमुजी के आहे चिन्हियौ ने जानियौँ हो-२
आहे कैसे के कहबौ समाद बुझाये के हो-२
लडकी - हमरी बालमुजी के आहे लटी-पटी पगिया हो-२
हमरी बालमुजी के आहे बडी - बडी अँखिया हो-२
आहे जैसे के रहतै मे मोगल मतमुवाँ हो-२
बटोही - देखलु मे देखलु बहिनी, आहे हाँजिपुर हटिया मे हो-२
आहे लबे रे बङ्गालिन छौंरी सँगे खेलै जुवासरिया हो-२
लडकी - मोरी हौ बङ्गालिन छौंरी गै, तोरो जेठ भैया हो-२
आहे हमरो बालमुजी के राखल लोभाये के हो-२
बङ्गालिन - राखबौ मे राखबौ गे बहिनी, चारु रे चौमास दिन हो-२
आहे कातिक मास बहिनी देबौ गे पठाइ के हो-२ ।

स्रोत: भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६१. मधवा लाल के गित

बियाहित नारी के पिया छोडइ के बिदेस गेलै, मगर घुइर के नै येला के कारन मनमे उबलजहा बात से भरल गित ।

माधव मास पिरती छेलै माधव, अवधी कहिये पाहु गेल,
किछ दिन सामु परसे हंसी कैलन, तही पर तित मोही भेल
अवधी के ओर छेलै समैया निराये गेलै,
मोरा जिव रहिये गेलै आस, अखनी से जसोमती विरहे मोरी जायेतै,
कि करबै माधब मास,
आँम मजरी गेलै हे मन करै गहगह, कोकिला सबद करु मान,
येहेन बयेस पिया तैयो नही आएल, कुसुमी पियल मकराम,
येहेन बयेस पिया तैयो नही आएल, कुसुमी फुल आहे सेहो झरी गेल-२ ।

१६२. मेघा स्तुती गित

भर्खर बियाह भेलहा पिया छोइर के मोरडराज जाइले लागै से समय मे एक नारी मेघ से पती के रोकैले बर्सा करैले अनुरोध करल गित ।

तोहरा के देबौ रे करिया मेघ, आगर रे छागर,

आजु के रैनियाँ झरी लादहु, कुमर मोरा बिलमी जेतै हो ।
पातरी तिरिया मनहुने भावै हो, हमहुं त जेवै श्री त मोरङ्ग राज,
करबै मे दोसर धनी ।
जाब तोहि जेब हो कुमर श्री त मोरङ्ग राज,
हमहुं त जेबौ तोरे सङ्गसाथ कि करबौ मे बिराज कुमर हो ।

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६३. किरवा राजा के गित

किरवा राजा या एकटा मदिरा बेचैवाली के बिच मे मदिरा ओरेला के बहना मे भेलहा प्रेम वर्तालाप गित ।

छोटीमोटी किरबा राजा कमली कटोरिया
माथा सोभै घाघर टोपी हो, सुनु किरबाहौ राजा-२
मदपिये गेल किरबा मधपुर के हटिया-२
सब मद गएलै बिकाय हो सुनु किरबा राजा-२
याक - धथुर के किरबा भठिया लगाबल-२
हाली रे हाली मधवा चुवाबै हे, सुनु किरबा हौ राजा-२
मधवा जे पील किरबा भेल मतवलवा-२
दमसी पैसल सुरिन घर हे सुनु किरबा हौ राजा-२
काने लागल खिजे लागल सुरिन के हौ बेटिया
फुटिये गेलै तारी के तरकिया हे सुनु किरबा हौ राजा
माथ सोभैये घाघर टोपी हे सुनु किरबा हौ राजा,
जनु कानु जनु खिजु है सुरिनके बेटिया,
किनिये देबौ तारिके तरकिया हौ सुनु किरबा हौ राजा
माथ सोभै छै घाघर टोपी हे सुनु किरबा हौ राजा ।

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६४. नङ्ग के बनिज गित

नङ्ग के बेपार करैवला व्यपारी बहौत दिन के बाद घर येलै घर मे घरवाली के नै देखलापर से पुछैछै त बहैन घरवाली के बात लयादेछै । तै प्रसंग मे दुनो के बिच मनावैके गित ।

नङ्ग के बनिज कुमर मोरा गेलै हो, बितलै बहुत दिना ।
आपनो ने आबै चिठियो ने भेजै हो ठाढ भेलै बबुर तर-२

अङ्गना पैसैत पैर धोबैत बहिनी से पुछल हो, मोरा धनी कहाँ बसु हो ।
आहे तोहरो के तिरिया बिरह के मातल हो, पर घर रिझलौ हो ।
आहे बिट पैसी काटबै कैरची हो, धनी पिठी झाटबै हो,
हेकची हेकची धनी मोरा जे रोबैछै हो, धनी के मनायेबै हो-२
आहे गाम के पछिम बसै एक सोनरा हो, पुर्बिल के हित छेलै हो ।
धनी जोकर नथिया गढिये दिबै हो, धनी के मनाये लेबै-२ ।
गाम के पछिम बसै एक कमिया हो, पुर्बिल के हित छैके ।
धनी जोकर हौंसली हे गढीये दिय हो, धनी के मनायबै हो ।

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६५. मालिन के गित

भरखर बियाह बेलहा लडका आपन घरवाली के घर से बहार बोलबैले ताकैछै लेकिन अंगना मे थाल छै या देहरी मे भेसुर बैठल छै त केनाके बहार येबै से बर्नन करलहा गित ।

घरवाली - अमल कलम हे फुल, मालिन गुथै हार हो
तोरा बिनु आहे रसिया लागै छै उदास, आस हमरा लागल हो,
नये मन नये खन नये जामुन गाछे हो,
किये देखी आहे रसिया बान्हबै धैरज, आस हमरा लागल हो-२
आइछ मन आइछ खन आइछ जामुन गाछ हो,
पर त पुरुस हे देखी बान्हबै धैरज, आस हमरा लागल हो-२
घरवाला - देहु दर्सन हे धनी, देहु दर्सने हो,
तोरा बिनु आहे धनी बेकल पराने हो, आस हमरा लागल हो-२
घरवाली - अङ्गना मे थाल-खिंच देहरी भेसुरे हो,
कैसे के बहार हेबै बाजतै नेपुरे हो, आस हमरा लागल हो-२
घरवाला- घरही मे छौके गे धनी मगहा सिलौठे हो,
नेपुर फोरिये हे धनी, देहु दर्सने हो, आस हमरा लागल हो-२
तोरा बिनु आहे धनी बेकल पराने हो, आस हमरा लागल हो-२
घरवाली - काटी देबै थाल-खिंच, टारबै भेसुरे हो,
धिरे से बहार हेबै, नै बाजतै नेपुर हो, आस हमरा लागल हो-२ ।

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६६. चाँचैर गित (क)

बयस सब के हरदम एके नै रहैछै । एक दिन सब के बुढ हैले परैछै से सिक्छा देलहा गित ।

बयेस हे मोही तेजी कहाँ चली गेल
आपुर चापुर कापुर बैठल
केस फुललै बोन काँस हो
केस फुललै बोन काँस
बयेस हे मोही तेजी कहाँ चलिगेल
ललना हो पेट भेलै खला मुर भेलै डला
निच उपर भेलै हेठ, निच उपर भेलै हेठ
यह देहिया छेलै आतर-चातर
सेहो देहिया भेलै हिन
बयेस हे मोही तेजी कहाँ चली गेल
आँखी मलामली कानो ने सुनै
कतेक सुमिरबै पैछला गुन
कतेक सुमिरबै पैछला गुन
बयेस हे मोही तेजी कहाँ चली गेल ।

स्रोत: बुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६७. चाँचैर गित (ख)

एकटा कनिया के सैया बहौत दिन से घर नै येला पर गुनगुनेलहा गित पर एकटा बटोही टोन धाके लोभ देखाइत फुसियाइके प्रयास करैछै लेकिन सफल नै हैछै । तेकर बखान करलहा गित ।

लडकी-अकी ललना रे हो बाबा गयो रे परदेस
बडा रे सुख देने गयो रे सुख देने गयो
दुवार मे चनन बिरिछ हिरुलवा, लगाके गयो रे ।
अकी ललना रे हो पिया गयो परदेस
बडा रे दुख्ख देने गयो रे दुख्ख देने गयो,
छतिया मे बजर केवार, जन्जिरवा भोराके गयो रे ।
अकी ललना रे हो आम के पात भलामली
चम्पा मौली रहो चम्पा मौली रहे

तही तर गोरिया ठाढ़ नैना से निर ढारी हो
मने रे मने मने, झुरमी रहे हो ।
बटोही- अकी ललना रे हो किये तोरा लैहर दुर की सासु बैरन भेलौ हो ।
कौने दुःख परलौ तोहार कि मने रे मने झुरमी रहे हो ।
लडकी- अकी ललना रे हो नही मोरा लैहर दुर कि
सासु मोरा बैरन नही हो,
फुलवा जैसन सुकुमार पिया परदेस गयो हो ।
बटोही- अकी ललना रे हो देबौ धनी गै तोरा चिरवा हो
मोती माङ्ग भरी रे मोती माङ्ग भरी
छोरहु बियहुवा के आस, बटोहिया कि साथ चलु हो ।
लडकी- अकी ललना रे हो झाँटबौ बढनी तोहर
चिरबा रै मोती माङ्ग भरी मोती माङ्ग भरी
ताकबै बियहुवा के आस बटोहिया के लात मारी हो
ताकबै बियहुवा के आस बटोहिया के लात मारी हो ।

स्रोत: भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६८. मुखवन माधव लाल के गित

बहुपावती नगर के राजा मानिकचन्द्र के बखान करलहा गित ।

(क) हाँ हाँ रे जगपति राज हो करोटी जग किन्हा
हाँ हाँ रे साहेब लाल के हो छतरपती दिन्हा साहेब लाल के हो
हाँ हाँ रे उँची त लिलार हो बाँह सुत नाम्ह
हाँ हाँ रे जैसन झलकै हो कन्चन गढ के खाम्ह
तैसन झलकै हो माधव लाल के पाग तैसन झलकै हो
हाँ हाँ रे पुहुपावती चियै हो नगर के नाम
हाँ हाँ रे मानिकचन्द्र चियै हे राजा जी के नाम
मानिकचन्द्र चियै हे राजा जी के नाम
मानिकचन्द्र चियै......

(ख) माधव लाल के गित
विहान सबेरै उइठ के माधव लाल से करलहा नित्य कर्म या ओइसे सखीसव मे पर लहा असर के बखान करल गित ।

हाँ हाँ रे होयत भिनसर हे माधव कोइली घमसाने

हाँ हाँ रे कोइलिया सब्द सुनी हो माधव लाल जागै
कोइलिया सब्द सुनी हो माधव लाल जागै
कोइलिया सब्द सुनी
हाँ हाँ रे हाथ दतुवाइनिया हे माधव काँख जोड़ा धोती
हाँ हाँ रे चलि भेलै याहे माधव सैर असलान
चली भेलै याहे माधव सैर असलान
चली भेलै याहे माधव
हाँ हाँ रे लहाये सोनाये हे माधव तिलक चढावै
हाँ हाँ रे हाथ मुरली मुख हो बिन्द बजावै
हाथ मुरली मुख हो बिन्द बजावै
हाथ मुरली हे मुख
हाँ हाँ रे बिन्द सब्द सुनी हो कुइयाँ पनिहाइर
हाँ हाँ रे सिर के गगरिया हो भुइयाँ देल ढाइर
सिर के गगरिया हो भुइयाँ देल ढाइर
सिर के गगरिया हो
हाँ हाँ रे एक सखिया के हो दुइ दुइ नैन
हाँ हाँ रे पात छोरी रसैया हो भुइयाँ देल ढाइर
पात छोरी रसैया हो भुइयाँ देल ढाइर
पात छोरी रसैया हो
हाँ हाँ रे जनु मारु जनु काटु कहब बुझाय
हाँ हाँ रे मोरा मन बसी गेलै हो माधव संगे जाय
मोरा मन बसी गेलै हो माधव संगे जाय
मोरा मन बसी गेलै हो
हाँ हाँ रे यतबे बचन सुनी कानु गेल रिसियाये
राजा दरबार मे गेलै माथ लगाये २
हाँ हाँ रे आजु त मोहलकौ हे राजा कुइयाँ पनिहाइर
हाँ हाँ रे कालु त मोहतौ हे रानी त कुमाइर
कालु त मोहतौ हे रानी त कुमाइर
कालु त मोहतौ हे राजा
हाँ हाँ रे स्याह्या सुनी राजा हो प्रजा बोलाय
हाँ हाँ रे माधव लाल के हो पकरी मङ्गाय

माधव लाल के हो पकरी मङ्गाय
माधवलाल के हो
हाँ हाँ रे आगु-आगु माधव हो सिर लिबाय
हाँ हाँ रे पाछु-पाछु माधव हो बात बुझाय
हाँ हाँ रे पाछु-पाछु माधव हो बात बुझाय
पाछु-पाछु माधव हो बात बुझाय
पाछु-पाछु माधव हो ।

स्रोतः बुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१६९. सामा के गित

गर्भ देस के राजा एक मालिन के सुन्दर रुप देख के प्रेम प्रस्ताव राखैत बहौत किसिम के गरगहना ले लोभ देखेलहा गित ।

राजा - घर से बहार भेलै गढवा राजा हे, फुल ले बहार भेल मालिन
सुनु सुन्दरी हे चाँन मलिन भेल ज्योती ।
सुनु सुन्दरी देबौ गे मालिन सिथ जोकर सिथिया
बसी जाहु आजु केरी राती, सुनु सुन्दरी हे चाँन मलिन भेल ज्योती ।
मालिन - कैसे हमे बसबौ हे राजा आजु के राती मोरा घर रसिया मलारे ।
राजा - देबौ गे मालिन नाक जोकर नथिया,
बसी जाहु आजु के राती, सुनु सुन्दरी हे चाँन मलिन भेल ज्योती ।
मालिन - कैसे हमे बसबौ हे राजा, आजु के राती मोरा घर रसिया मलारे,
सुनु राजा हे मोरा घर रसिया मलारे ।
राजा - देबौ गे मालिनी गला जोकर हौंसली बसी जाहु आजु केरी राती,
सुनु सुन्दरी हे चाँन मलिन भेल ज्योती ।
मालिन - कैसे हमे बसबौ हे राजा आजु केरी राती मोरा घर.......

१७०. मधवालाल के गित

भवँरा भवँरीके रुप मे प्रमी के प्रेमिका बिछोड भेलापर के बेदना या फेर से मिलन भेला पर भेलहा खुसी के बखान यै गित मे करल गेलछै ।

सुन्दरी-अकी हो हायरे माधवलाल हो, आयेलै हे माधवलाल हो
कि ओ हो रे मोही तेजी माधव गेल
अकी हो जबरे माधवलाल हो, नगर से बहार भेलै हो

अकी हो सुन्दरी रचैये उपाय, अकी हो सुन्दरी रचैये उपाय ।
अकी हो दह रे पुरैनी पातहो, कमल फुलिये गेलै हो,
कि ओ हो रे भवरा चुभुकी रस लेल, ओ हो रे भमरा चुभुकी रस लेल ।
अकी हो सुरुज हे डुबिये गेलै, कमल हे मुनित भेलै हो,
कि ओ हो रे भमरा हे परलै बनिसार, ओ हो रे भमरा हे परलै बनिसार
अकी हो दहरे बुलिये बुलिये भमरी करुना करै
कि ओ हो रे भमरा कवो ने हरी लेल, कि ओ हो रे भमरा कवो ने हरी लेल
अकी हो पूर्बिल जलम छेलु गौरी नही पुजलु हो,
कि ओ हो रे भमरा कवो ने हरी लेल कि ओ हो रे भमरा कवो ने हरी लेल ।
अकी हो सुरुज उगिये गेलै, कमल बिहुसी गेलै हो,
कि ओ हो रे भमरा छुटलै बनिसारे-२
अकी हो भमरा आबैत छेलै हो, भमरी जाइते छेलै हो,
कि ओ हो रे बिच ही दोबटिया भेलै भेंट, ओ हो रे बीच ही दोबटिया भेलै भेंट
अकी हो आमुली - जामुनी तर हो, पलङ्ग ओछावल हो,
कि ओ हो रे ताँही बहु सितली बसात, ओ हो रे ताँही बहु सितली बसाते,
अकी हो आवहु हे माधब लाल हो, बैठहु पलङ्ग चढी हो,
कि ओ हो रे कहु माधब कुसल आपन, कि ओ हो रे कहु माधब कुसल आपन ।

स्रोतः बुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१७१. सलहेस के गित

वन के राजा सहलेस जे अखैन देवता के रुप लेनेछै उ बियाह करैले जाइत महताइर मालिन से भेलहा वर्तालाप या बखान से भरल गित ।

महताइर- अमुबा मजरी हे गेलै कोइलिया कुहुकी गेलै हे
आहे रने-वने पसरी गेलै धेनुगैया तिनु भैया सलहेस दैव हे
काये सय हाथी हे साजु काये सय घोडा साजु हे
आहे काये सय साजु दल बरियात हे कि तिनु भैया सलहेस दैब हे
दस सय हाथी हे साजु बिस सय घोडा साजु हे
आहे लाखे - लाखे साजु दल - बरियात कि तिनु भैया सलहेस दैब हे
अगिला अदल हे करै पछिला मदल करै हे
आहे बिचै ठिना खेह उडियावै कि तिनु भैया सलहेस दैब हे
फुलवारी मलिया हे सुतल मालिन बेटी पलङ्ग चढी हे

आहे मौरी फुल उरही देगे मलिनिया की मौरी फुले कौरिया देबौ हे

सलहेस - ऐसन के उरही हे गे मालिन मौरे फुले कौरिया दैबा हे

आहे देखतै मे नगर के लोक कि देखके छकित हेतै हे

बाटही मे रिफ्तै गे मालिन बाट के बटोहिया ने हो

आहे दुवारही रिफ्तै पर रे परोसनी कि देखके छकित हेतै हे

अङ्गना हि रिफ्तै गे मालिन निज सासु रिफ्तै मे गे

आहे कोहबर घर रिफ्तै साइर त सरहौजनी कि देखके छकित हेतै हे

मालिन - एक कोस गेलै हे सलहेस बाबु गेल दुइ कोसवा ने हे

आहे आगु भाए मालिन और पसारै की मौरी दाम गनिये देहु हे

सलहेस - आगु छोरु पाछु हे छोरु, तोहे त मालिन बेटी हे

आहे हमे जब लौटबै हे बियाह काये मौरे फुले कौरिया देबौ हे

मालिन - अगो नही छोरबौ हे सलहेस बाबु पछो नही छोरबौ मे हे

आहे हमहु त जेबौ तोरा संग-साथ कि देखबौ मे तोहरो बियाह

टिपनी सन के पातर हे हेबै लहरनी सन के चाकर हेबै हे

आहे मौर फुल मे रहबै हे छिपाये कि देखबै मे सलहेस के बियाह

सलहेस - केयो मोरा अरछतै केयो मोरा परछतै हे

आहे केयो मोरा दोलिया उघारी ताकु लाजे से गलित हैची हे

सासु मोरा अरछतै निज सासु परछतै हे

आहे सरहौजनी मोरा दोलिया हे उघारी ताकु लाजे से गलित हैची हे

सासु - कहमा ही हाथी हे राखबै कहमा ही घोडा राखबै हे

आहे कहमा ही राखबै दल बरियात कि तिनु भैया सलहेस देब हे

सलहेस -हथसार हाथी हे राखबै घोरसार घोडा राखबै हे

बसघर राखबै दल बरियात हे

आहे कोहबर घर राखबै सलहेस जमाइ कि तिनु भैया सलहेस दैबा हो ॥

१७२. भजन

जलम से ल्या के मरन तैक के बखान करल गित ।

जब छेलु जननी के ओद्र मे वहाँ से समावहु हो

ललना रे खबरी करहु वही ठाम के गर्ब से उगारहु हो

सुमिरहु तिन जना परिजन कबुल करावल हो

ललना रे होयत परात डेरवा टुटल हटिया उसरी गेलै हो

येहेन सुन्दर देही देखी मती भुलु जिनगी थोरे छैके हो

ललना रे आबी जेतै जम चपरसिया कि कोइयो नही संगे जेतै हो
यही जग छैके मोरा हितवोन कोइयो नही आपन हो
ललना रे फुकी देतै अगिया लकडिया जैसे लकडी जरै हो ॥

१७३. संझा गित

साँझ मे दियारी बाइर के आरती करैत काल गावैबला गित ।

हाँ.... साँझ परलै दिप बरिये गेलै बरी गेलै मानिक दिप
हाँ हाँ रे साँझ परलै दिप बरिये गेलै
हाँ.... यही पार गंगा ओही पार जमुना हो बिचही मे सरजु धारे हो
हाँ हाँ रे साँझ परलै दिप बरिये गेलै बरी गेलै मानिक दिप
हाँ हाँ रे साँझ परलै दिप बरिये गेलै जगमग बरी गेल दिप
हाँ.... छोटी - छोटी नगरी हे गोकुला पुरी तहाँ बसु मदन गोपाल हो
हाँ हाँ रे साँझ परलै दिप बरिये गेलै बरी गेलै मानिक दिप
हाँ हाँ रे साँझ परलै दिप बरिये गेलै जगमग बरी गेल दिप
हाँ हाँ रे साँझ परलै दिप बरिये गेलै ॥

१७४. चोरखेली गित

चोरखेली के समय मे गावैबला प्रेम प्रस्ताव गित ।

सखी हे भाव हे आयल हाँ.... रे एहो बनिजर, हे भाविनी छानल प्रेम दोकान
अमल-कमल मुख तोर हे भाविनी आस लागल जिव मोर
घर-घर आवैछै ब्रजनारी हे भाविनी सब से तुंही पियारी
भाव के भुखल भँमरा भिखारी हे भाविनी भिख देहु भोरी एकबाइर
जेही घर चारी यार हे भाविनी सो घर मोही ने सोहाइ
चित मन भेल उदास हे भाविनी किछ दिय बचन के आस
हम से माडी लेल पहिलु के प्रेम रस देल एलुं तोहर गुन जानी
हे भाविनी तुहुं दिहल जहर विस सानी ।

१७५.बराह जी के गित

बराहजी के दर्सन करैले जाइत काल दुख या रस्ता के बखान करैत एक आपस मे बखान करलहा गित । यि गित कोनो भी समय मे गावल जाइछे ।

हे.... प्रथम ही कातिक याहे पुर्निमा के चाँने

याहे सखी सब बराह जी के दर्सने
हे.... चलैयत चलैयत याहे चरन थकित भेलै
याहे बाट जे लागैछै विखमे
हे..... मुनि उपर मुनि छेलै याहे बाट भुतलाये गेलै
याहे भाये गेलै साँझ अनहरि
हे.... चलैयत चलैयत याहे चरन थकित भेलै
याहे भाये गेलै बराह जी के दर्सने
सखी हे भाये गेलै बराह जी के दर्सने ॥

स्रोत: बुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१७६. बन्हैन गित

कोनो भि नाच सुरु करैसे पैहने या कोनो भि चिज के बान्हैले देवता के पुकार करल के बन्हैन गित ।

आहे पुरुबही बान्है गौहौ मैया आदित्य सुरुज के आहे हुनको चढनियाँ दुधह के ढारे
आहे पछिमहीं बान्है गौहौ मैया मिरासुल थाने आहे हुनको चढनियाँ मुर्गा बलिदाने
आहे उत्तरही बान्है गौहौ मैया राजा भिमसेन के आहे हुनको चढनियाँ गेरुवा और झाँपि
आहे दक्खिनही बान्है गौहौ मैया गंगा हनुमाने आहे हुनको चढनियाँ लड्डु, पान, सुपारी
आहे डिह पैसी बान्है गौहौ मैया डिह डिहबारे आहे गाम पैसी बान्है तेलिया मसाने
आहे ऐनी गुन बान्है गौहौ मैया आहे डैनी गुन बान्है ओझा गुन बान्है मुसुकी चढाये
आहे अकासही बान्है गौहौ मैया एकत कमिना आहे पतालही बान्है बासुछत्री नागे
आहे हितगुन बान्है गौहौ मैया चितगुन बान्है आहे मितगुन बान्है सिर मे लगावै ॥

स्रोत: बुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१७७. झुमैर गित

दसहरा या और दोसर समय मे देवी के पुकारैत गावैवला झुमैर (भगैत) गित ।
झुमरी २ सुनियौ महा गौ मैया झुमरी, कैसन होवेहै झक झुमरी महागौ मैया
तोरो केस भमरा गुजार हे झक झुमरी महागौ मैया, झुमरी खेलाइत मनलागै है झक....
झुमरी खेलाइत खिना टुटलगौ हारवा २ टुटी गेलै गला गिर्महाल, हे झक झुमरी महागौ मैया झुमरी खेलाइत मन लागै है झक....
कोइयो चुनत कोइयो गुथत हारवा २, कौने देवी करतै सिङ्गारे हे झक झुमरी महागौ मैया झुमरी खेलाइत मन लागै है झक....

दादा चुनत भौजो गुथत हारबा, काली देवी करतै सिङ्गारहे झक झुमरी महागौ मैया झुमरी खेलाइत मन लागै है झक....

किनकर घर आगौ मैया झुमरी उपजै २ कौने देवी झुमरी खेलाबै हे, झक झुमरी महागौ मैया झुमरी खेलाइत मन लागै है झक....

महादेव घर गौ मैया झुमरी उपजै २ काली देवी झुमरी खेलाबै हे, झक झुमरी महागौ मैया झुमरी खेलाइत मन लागै है झक.....

जौं दिन झुमरी खेलाइ छ्याल गौ काली २ उगी गेलै चाँन सुरुज हे, झक झुमरी महागौ मैया झुमरी खेलाइत मनलागै है झक....

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१७८. साँझ दियरा गित

साँझ देवी के पुकार करैत सनमुख हैके लेल चिरखा बाइर के आरती दैवला गित ।

आहे साँझ देहु साँझ गौ देहु साँझहु के बेरिया आहे दुर्गामाइ के गहवर छैके अन्हारे २
आहे कथी केरी दियरा गौहौ मैया, कथी केरी गौ बाती, आहे कथी केरी तेलवा,जरै सारी राती २
आहे सोना केरी दियरा गौहौ मैया, रुवा केरी गौ बाती, आहे सैरसो के तेलवा, जरै सारी राती २
आहे केयो देल दियरा गौहौ मैया, केयो देल गौ बाती, आहे केयो देल तेलवा, जरै सारी राती २
आहे सोनरा देल दियरा गौहौ मैया, पतवा देल गौ बाती आहे तेलिया देल तेलवा, जरै सारी राती २
आहे जरे लागल दियरा गौहौ मैया, चम्के लागल गौ बाती आहे खेल्बे लागल भगता, चारु पहर राती २
आहे अबला भगतिया गौहौ मैया, दसोकल जोरै आहे यही बेरा हेब्ने गौ सेहाये २ ॥

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१७९. भगैत गित

माता दुर्गा भगता के घर मे स्यहा (प्रकट) भ्या के समय मे गावैबला भगैत गित ।

आहे इन्द्र भुवन से एलै देवी गौ दुर्गा, आहे ठार भेलै भगता दुवारे २
आहे कहाँ गेल्या किये रौ भेल्या अबला रौ भगतिया, आहे दुबारही एलछौ अनुप मे जमाने २
आहे एक हाथे यारे भगता झारी लोटा रे पानी, आहे दोसर हाथे सिंहासन रे पाटे २
आहे पेर धोबु पाट गौ बैठु तोंहे माता गौ दुर्गा, आहे कहु माता कुसल आपने २
आहे हमरी कुसल रे भगता दस के कुसल, आहे कहु भगता अपनी रे कुसल २
आहे किये तोरा घटलौ रे भगता अन-धन रै लछमी, आहे किये बिनु नैना ढारै लोरे २
आहे नही हमर घटलै गौहौ मैया अन-धन गौ लछमी, आहे पुत्र बिनु नैना ढारै लोरे २
आहे किये तोरा आरे भगतिया मुँहमा रौ मलिन छौ, आहे किये बिनु नैना ढारै छौ लोरे २
आहे जस बिनु आवगौ मैया मुँहमा मलिन छै, आहे पुतर बिनु नैना ढारै लोरे २

आहे जस बरु देबौ भगतिया पुत हमे रौ देबौ, आहे हमरा के किये देब दाने २
आहे जब तोंहे आबगौ हौ मैया पुतर बरु गौ दयेब, आहे सोना से मेरहैबौ आठो हाथे २
आहे जब तोंहे आबगौ हौ मैया जस बरु देब, आहे नितउठी जपबौ तोहर नामे २
आहे अबला भगतिया गौहौ मैया दसोकल जोंरै, आहे यही बेरा हेबुने गौ सेहाये २ ॥

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१८०. भगैत गित (क)

देवी दुर्गा डला ल्याके फुल तोडैले गेल समय मे गाछ से बर्तालाप भ्या के गाली लगौज हैछै। बाद मे माता आपन परिचय दैछै त गाछ माफी मांगैछै तेकर बर्नन करलहा गित।

आहे सिकिया के डलिया गौहौ मैया सिर मे गौ चढेल्या आहे चली भेल्या माली
आहे एक कोस गौहौ मैया कोसत दोसरबा आहे जुमी गेल माली फुलवारी २
आहे खोंछा भोरी लोढ्ल गौहौ मैया, डाली भोरी लोढ्ल आहे आबि गेलै फुल रखबरिया २
आहे केयो तोंहे चिय फुल लोढ्नी दैतिन गै भुतिनियां आहे सब फुल छिनी लेबौ तोहारे २
आहे बहियां छुवइते रखबरिया बाँही घुन लागतौ अँचरा छुवैते होयेब्या छेमाने २
आहे घरही मे मारतौ रखबरिया माये-बाप रौ तोहारे आहे मोरतौ मे कुल परिवारे २
आहे कहां तोहर घर फुल तोरनी किये तोंहर गौ नामे आहे कही दियौ अपनी गौ परिचये २
आहे घर हमर लागै रखबरिया कारी कामुर राजे आहे माये-बाप राखलकै देवी दुर्गा नामे २
आहे गोर हमे लागैचियौ गौ देवी दुर्गा, पैंया हम परैचियौ आहे बकसी दियौ हमरी गौ कसुरे २
आहे गोर हमे लागैचियौ गौ देवी दुर्गा पैया हम परैचियौ आहे बकसी दियौ माये-बाप हमरे
आहे बकसी दियौ कुल परिवारे २
आहे अबला भगतिया गौहौ मैया दसोकल जोंरै आहे यही बेरा हेबुने गौ सेहाये २ ॥

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१८१. भगैत गित (ख)

दसहरा के समय मे पाँच बैहनी देवी के स्वरु के बखान करलहा भगैत गित ।

आहे पांच बहिनियां गौहौ बसै पांचही नगरिया, आहे पांचो बहिनियां पांचही नगरिया २
आहे एक त बहिनियां गौ बसै पुरुबही नगरिया, आहे हुनकर नाम चियै कोसिका माता २
आहे दोसर बहिनियां गौ बसै उत्तर नगरिय, आहे हुनकर नाम चियै मैया बगहेसरी २
आहे तेसर बहिनियां गौ बसै पछिम नगरिया, आहे हुनकर नाम चियै मैया कमलेस्वरी २
आहे चारिम बहिनियां गौ बसै दछिन नगरिया, आहे हुनकर नाम चियै मैया गंगेसरी २

आहे पाँचम बहिनिया गौ बसै बिचही गौ नगरिया, आहे हुनकर नाम चियै देवी दुर्गा नामे २॥

स्रोत: भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१८२. बच्चा के सुतौना गित (क)

कनियेटा धियापुता सब के सुताइतकाल महताइर गाबैवला गित ।

सुत-सुत रे बौवा सुतौना देबौ,
बाघ के बच्चा खेलौना देबौ,
बगरा के बच्चा सिहौना देबौ ।
आरे आरे निनिया बिरिन बोन से
बौवा हमर सुततै निनभोइरके ।
आरे चिरैया रानी डिमापारी दे,
बौवा के देबै भमरा पक्षा ।
बौवा के मैयाँ बौवा के मैया गेल खेजुर बोना,
खेजुरी काटैतखिना एलै मुसलमना ।
बौवा के मैयाँ बौवा के मैयाँ खेत रोपनी,
भोइर खौछा आइन देतै डोक- डोकनी ।
बौवा के मैयाँ बौवा के मैयाँ गेलै लिली हाट,
ओते से आइन देतै सोना के खाट,
ककुर कौवा डुग मारे बौवा ताके बाट ।
बौवा के बाबु बौवा के बाबु गेलै पहाड,
ओते से आइन देतै सोना के हार,
बौवा खौब से लिहार ।

स्रोत: भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१८३. बच्चा के सुतौना गित (ख)

धियापुता के सुताबैले गाबैवला गित ।

हाथी मे हैथ सरियारे भैया, घोडा मे रजपुत,
लहुवा पैर मे घुन लागिह, मोरिह बभनाके पुत,
खटौली मे तिरहुत्नी कनियाँ खोपा वर मजगुत
अइपार ओइपार केदली रे केदली, केदली खेत खरिहान,
बगरा के बच्चा खेती करैये, मैनाजी रखवार,

मैनाजी के सातो पुतहुवा, सातो कुटैये धान,
छोटकी पुतहुवा बिरह के मातल, खोपा बर मजगुत

स्रोतः मुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१८४. बाल गित

धियापुता सब के गाबैवला गित सब ।

बलुवा हाट के चेकी सुपारी,
जमुवा हाट के पान,
कनी - कनी खिली लगाइहे गै भौजी,
पौहना येतौ मेजमान
पौहना के धिया - पुता चेङ्गनी बेङ्गनी,
अङ्गना करतौ खुरदान
एकटा छेलै मैना बेटी,
सेहो गेलै सासुर,
अङ्गना घर रुनुझुनु,
बाबा येतै हाथी चढी,
बैठु बाबा मरबा चढी,
आम के लकडी जारन,
तुलसी के पत्ता लारन,
कोइली बोले कुहु
एक तारा दुइ तारा, मनमा गोपाल तारा
मनमा के बेटी बर बुढियाइर
मामु हौ मामु डरहैये डर, कथी के डर
सिमर के तर मे चौदह घर, तैमे नाचे कनियाँ बर
कनियाँ के लागल दाँती, छुइरे मौकनी हाथी
जोलहा पिटे छाती, चल बरियाती
कत्ते दुर मधवा पुर, मधवा पुर मे के छौ
दैनी छौ कि मैनी छौ, सोनाके लगाम छौ
बोन छौ बगिचा छौ, पोंपों बाला राजा छौ
अटकन मटकन दैया चटकन, केरा कुस महादेव रुस
आगर बागर पुनी के पत्ता हिलोडिलो बाँसकाटे ठाइठुइ

आँम गोटी जौम गोटी तेत्तरी सोहार गोटी
तोहर खेत मे मुर्गा बच्चा बोलै छौ
आफरु कि झाफरु गैयाले दुधारु भैंसीले पन्हारु
सुङ्गी लेव्या कि मुङ्गी माछ

स्रोतः मुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१८५. होरी के गित

फागुन मैहना मे होरी खेलाइत काल गाबैवला होरी गित ।

चलु हे ननदिया कुसुम रखबरिया-२
गरलै अङ्गुरिया मे काँट भला रे लला, गरलै....
केयो मोरा कँटवा निकालिदेत हे ननदो-२
केयो दरद हरी लेत भला रे लला, केयो....
सामी मोरा कँटवा निकाली देत हे ननदो-२

दियोरा दरद हरी लेत भला रे लला दियोरा....
पैसा दाये देगै भौजी जायेबै हटिया ढौवा दाये दे-२
अपनाले लेबै भौजी सिनुर और टिकुली-२
पियबाले लेबै राङ्गल ककही-२
पैसा दाये दे.....
ढौबा दाये दे.....

गहुँमा के खेतबा मे बैठल रे दियोरबा-२
मने मने झुरमैछै हो, कहिया येतै फगुनमा,
गौना करी दे गे भौजी कहिया येतै फगुनमा-२ ॥

हम त गोकुल जाय रहिया बतादे कन्हैया-२
कहमा के तोंहे गोप गुवालिन-२
कहमा तोंहे दही बेचे जाय, रहिया बतादे कन्हैया ।
मथुरा के चियै हम गोप गुवालिन-२
गोकुला मे दही बेचे जाय, रहिया बतादे कन्हैया ।

एक दिसर खेले कुमर कन्हैया-२
एक दिसर राधा प्यारी हो,
कदम बिरिछ मे लागे हिलोरबा,

राधा के उरलै सारी हो,
मोहन खेले होरी हो, रहिया बतादे कन्हैया ॥

स्रोतः भुलीदेवी चौधरी
कनचिरा, सप्तरी

१८६. जोगिरा (क)

होरी खेलाइतकाल बिच बिच मे हंसी मजाक, ग्यान या सवाल जवाफ से भरल ताल मे गावलहा स्लोक ।

छोटी-मोटी काली मैया पिन्हे सबरङ्ग-२
ढाल लियौं तलवार लियौं नाचे छमाछम
जोगिरा सररर ।
कलकत्ता मे देखलियौ काली मैया-२
काली मैया के उपर फुल बतेसा,
कोइ नाचे कोइ गावे कोइ देख तमेसा
जोगिरा सररर ।

१८७. जोगिरा (ख)

होरी खेलाइत काल गित गावैत गावैत बिच बिच ताल से साथ कहैवला या गावैवला स्लोक ।

हरीहर पानी उजर पानी, पानी रे पानी-२
पेटपर के बच्चा कहे नानी रे नानी
जोगिरा सररर ।
कोन छालपर राजा बैठे कोन छालपर रानी-२
कोन छालपर नौरिया बैठे धरती उन्टाबानी
जोगिरा सररर ।
बाघ छालपर राजा बैठे, हरीन छालपर रानी-२
मृग छालपर नौरिया बैठे धरती उन्टाबानी
जोगिरा सररर ॥

स्रोत व्यक्तिसबः- भुली देवी थरुनी, सावित्रा देवी थरुनी,
वालदेव दास चौधरी, बन्हुदास चौधरी, बेचुलाल चौधरी, सप्तरी

१८८. हरी सरन गहुँ प्रभु जलम उवारो

संकलकः भोलाराम चौधरी, बुढीगंगा गा.पा., २ बौराहा मोरङ

यि गित देवता के पुकार से भरल छै जैमे गोविन्द या धेनु गाई के बर्नन करल गेलछै। यि गित कोनो नाच करैत काल, भजन किर्तन, धार्मिक उत्सव या पावैन के अवसर मे खास कैरके बिहा बखत चुटी मुडनमे गावल जाइछै।

॥ दोहा ॥

"एक घडी आधो घडी आधो से पुनी आध
तुलसी संगत साधु कि हरहुँ क्रोटी अपराध"

सरन गहुँ प्रभु जलम उवारो। हे प्रभु
ये सरन गहिये गहिये जलम उवारो
हे हरी सरन गहुँ...
गोप गोविन्द गोवर धेनु गाइ हे
हरी सरन गेहुँ, ये वर्सत इन्द्र सकल
जलधार हे हरी सरन गहुँ...
कारिसे नागिनी कमल उजारो
हे हरी सरन गहुँ, इन्द्र गोविन्द
छाडु कन्सके पछाडु हे हरी सरन गहुँ
तुलसी दास प्रभु तुम्हारे दरस के
हे हरी सरन गेहुँ।

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहवी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१८९. राखी लिये रघुराइ

यैं गित मे ब्याधा जब हरीन के सिकार करैछै त ओइ समय मे हरीन के रोदन भरल छै। यी गित कोनो भि धर्म कर्म, उत्सव, नाच गान लगायत ठाढी ब्रत हे बिहाबारीमे चुटी मुडनमे खसी परिछा नै लेलाके समय मे गावल जाइछै।

॥ दोहा ॥

चित्र कुट के घाट मे रही सन्तान के भिड
तुलसी दास चन्दन घिसे तिलक लेत रघुविर।

राखी लिये रघुराई आज मोही, राखी लिये रघुराइ ।
बच्चा सहित हरनी पढु गाढे
रोदन किये बोन माझै आज मोही ।
राखी लिये बोन माझै
तराही तराही रघुनाथ पुकारे
आजु रैनो हेबु न सहाय
एक दिस अग्नी जलतु बोन आवे
और दिसजाल लगावे
हरना हरनी रोदन पसारे आगु है
प्रभु लिहलेन उबारो कुदो फानो
निकले हरनी,हरना के लाये गले फाँसे
मास काटी के खाइये बेयुधा, खलरी राखिये जोगाइ,
सो खलरी मे साधु बैठत, जलम सुधारथ हो जाइ
विष्णु मगाये हे अग्नो बुताये, पवन हो जाल उडाये,
बेयुधा के डाँसल कारी रे नगिनिया,
सैना के बाधे धारी खाये
पाँचो रोई पाँचो रे पान्डव पाँचो मिलो
रचये उपाय, जहाँ जहाँ गढ परे लोकन
को तहाँ हरी हेबु न सहाइ
महाँ भारत भरत जी के अन्डा गज घन्ट
राखेल छपाय बेवधा के कुल गोबर धनु
धारो हे, धनी राबे दास बिचारो
काहो रे हरनी रोदन करतु है, मन चित
करुन उदास
तुलसी दास प्रभु तुम्हारे दरसको आजु
रैनी हेबु न सहाय

स्रोत: हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. ३, खिसरटोली, सुनसरी

१९०. साख गित (क)

देवी के वन्दना या पुकार गित। यि गित दसहरा मे भगैत के रुप मे पुजा पाठ के समय मे या गोहाइर करैत मरकी काल गावल जाइछै।

॥ साखी ॥
"तन सेवा मन सेवा अपार,
कल जोड़ी विन्ती करछुन सन्हथ महन्थ प्रनाम"

॥ दोहा ॥

सदा भवानी दाहिनी सनमुख रहे गणेश
पाँच देव मिली रछा करे ब्रहमा, विष्णु, महेश।

यातु कलंकी हे रोवे रङ्गी विरङ्गी खेलवै, मे जोगनी के संगे
आहो रमा खेलवै मे....
जोगनी के सँगे। आहो गला सोभे रुन्द
हे माला कजला दहाइ गेल
आहे दाँत करे खट हे खट, जिव करे
लवर लवर.....
ढोको ढोके सोनी पिवतलाइ
घोर...
आहे कौने रुप मडरावे कौने रुप लागे
धुधु मडरावे चिलनी के रुप उपर
मड़रावे, गिधनी के रुप देवो लागे
धुधु मड़रावे....
कहत कविर सुनो भाइ सन्त येहो पद
है निर्गन, जो यह पद के बुझे समझे
पहुँचत मुल ठिकाने।

स्रोत: हरेसलाल हजारी
दुहवी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१९१. साख गित (ख)

दुई परिवार के छुटैत काल,जव परिवार जनमे कख? मोरन हेलापर पार्थिव सरिरके स्मसान घाट ल्याजेके बखत यि मरकी गित गाव गावल जाइछै।

॥ दोहा ॥

"सन्त सरोबर गंगा जल ताहि पखारो
अंग सो देहिया निर्मल भयो करो साधु से सतसंग"

खायेन द्धारिका पाकल पनवा पियारे
सराधे बड़ी दुर भेल भिनसरुवा
डोलिया फनावल जाय परतौ बड़ी दुर गे
सजनी जाय परतौ बड़ी दुर....
ककरा के कानल नदी बही जाइ
ककरा के कानल निर, ककरा के
कानल भिगल चदरिया ककरा के हृदय कठोर.....
आमा के कानल नदी बही जाइ
बाबा के कानल निर, भैया के कानल
भिंगल चदरिया, भौजी के हृदय कठोर.....
काँचही बाँस के खाट खटौला,
सन पटुवा के डोर,
भाइ भतिजा मिली कसी कसी बाँधे
जैसन नगरी के चोर....
चारो जना मिली खटिया उठावल
लाय चलु बुढिगंगा के ओर
उत्तर दछिन के अछिया खनावल
तही पर दिहल चढाय....
सात बनहन के उकुवा बनावल
धुरही धुरही अगिया लगावल,
इस नगरी मे कोही नही अपना
के मोरा अगिया मुझाय ।
कहत कबिर सुनु भाइ सन्त
यहो पद है निर्गुन,
जो यह पद के समझे वुझे
पहुँचत मुल ठिकाने ॥

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१९२.साख गित (ग)

दुइ परिवार के छुटैत काल दुखित भेलाके समय बर्नन करल गित । यि गित केकरो बिहाद दैत काल गावल जाइछै । निर्गुन के रुप मे सेहो गावल जाइछै ।

कजला कतहुन उजला संखा कतहुन श्याम,
दुर्जन कतछुन दाहिनी साजन कतछुन बाम ।
के तोरा संगे जाय भमरवा॥२ धुवा
आवी के बेरिया बड़ा सुख होइ है
देहरी मे बाजे बधैया
जाय के बेरिया बड़ा दुख होइ है हंसा चलल अकेला
के तोरा संगे जाय भमरवा....१
देहरी पकड़ के तिरिया रोवे, बाँह पकड़ के माइ
बिच अगनवा मे पिताजी रोवे, बबुवा के भेल बिदाइ,
भजहु भगवान, कहत कबिर सुन भाइ सन्त, यहो पद है निर्गन
जो यह पढके समझे बुझे पहुँचत मुल ठिकाने....२
चनवा चिकी करैछी दैवा ध्वजा फहराइ
धन धुन के धन बटारैले
सम्पती नही भेल थोर ,
मोरन काल बेरिया कोइ संग नही जायतो
हंसा चलल अकेला, भजहु भगवान हे रम्बे रम्बे ॥

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१९३. साख गित (घ)

रघुनाथ के दिनचर्या बखान करल यि गित नाच गान के साथे कोनो पर्व बिवाह उत्सव या धार्मिक काम के समय मे गावल जाइछै ।

॥ दोहा ॥

"जैसा मुखी आरती, तैसा मुखी भोग
सुमरी सुमरी रघुनाथ पुकारे, आजु रैनी हेबुन सहाये"

भोजन जमहु मनोरथ भाई...
गंगा जल लाये स्नान कराये
माला गिरी घोसी घोसी अंग लगाई.....
स्नान कराये माधव तिलक लगाये

माथे शोभे तिलक गले रुन्दमाला
लडु लाये कैदली घृत मेवा
जमहु माधव जमहु यसोधा
भोजन जमहु मनोरथ माइ
रामे रामे....
खाये सो प्रभु अचल बोन किन्हा
रुकत निकला रुकमनी धावे....
अचल बोन से प्रभु बैठक दिन्हा
आमलेनी तामलेनी पान सुसोर....
अचल बोन से प्रभु सो बन गये
हो सब देवता मिली गये श्री....
कविलास भोजन जमहु मनोरथ माई
जैसा मुखी आरती कि तैसा मुखी भोग
सुमरी सुमरी रघुनाथ पुकारे
आजु रैनी हेबु न सहाय
वारो हे नरसिंह महाप्रभु.....
छप्पन भोजन बतिसो बैगन
नाना विधि करु रंग महाप्रभु बारो हे
नरसिंह महाप्रभु.....
आरती साजो इन्द्रलोक धावे, हे मन मे धरहु ध्यान
महाप्रभु वारो हे नरसिंह महाप्रभु....
ये पनवा लाये नारद मुनि धाये
गावैये दास कल्याण महाप्रभु वारे हे
नरसिंह महाप्रभु....
ये लछमी आये समारो भोजन
जल भोरी लाये गंगा महाप्रभु
वारे हे महाप्रभु....
कन्स के नाम मे चौर डोलावे
गावये दास कल्यान महाप्रभु
वारे हे नरसिंह महाप्रभु....

स्रोत: हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१९४. बिरहैन गित

सिता के रावन हरन करलहा अवस्था के बर्नन गित । यि गित बिरहसे भोरल छे। खास करिके परिबारसे कुनु सदस्य बिछोड भेलापर दुखित अवस्था पर गावल जाइछै।

॥ साखी ॥

"राम राम सब कोइ कहे दसरथ कहे न कोय,
एक बार जो दसरथ कहे कोटी कोटी फल होय"

धनो सुथियार मन्डिल निर्मान धुबा-२
टेरी टेरी धन कोरवा लगावल
धौरल टाटी पितर पानी धनी सुथियार
मन्डिल निर्मान..... १
आवैछी गावैछी बड़ो रो कठिन
माता के उदर मे भक्ति कइलौ नो,
बहार भये हो सुद्धि बिसरावल
धनी सुथियारे मन्डिल निर्मान.....२
कहत कबिर सुनु भाइ सन्त, यह पद है निर्गुन
जो यह पद के समझे, बुझे पहुंचत मुल ठिकाने......

१९५. निरगुन गित

कोनो भि पुजा पाठ या देवता के पुकार के समय मे देवता के भोग लगावैले गावैवला गित ।

॥ दोहा ॥

"लपा लोहिया मौज करे, अनसन भक्ति होय,
भगत करना सुरनर मुनी तनमन लजिया खोय"

मन हो मे राम भजहु भगवान... २
हरीहर सुगना के लाली तोरा ठोर
उड़ी गेल सुगना, सुन भेल पिजड़ा
भजहु भगवान.....२
हरनी एक बेहलिया जो मारे लटफट
मासु बिकाय: हाड़गोड़ सब गनेरा मे

फेके सोहो उठी चरिबा के जाय
भजहु भगबान हे.... २
कहत कबिर सुनु भाइ सन्त, यहो पद है निर्गंन
जो यह पद के बुझे समझे
पहुंचत मुल ठिकाने....२

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१९६. भोग गित

कोनो भि धार्मिक कर्म क्रान्ड मे देवता के भोग लगाबैत काल यि गित गावल जाइछै।

जैसा मुखी आरती कि तैसा मुखी भोग
सुमरी सुमरी रघुनाथ पुकारे आजु रैनो हेवु न सहाय
हरीहर सुगना लाली तोर ठोर
उड़ी गेल सुगना सुन भेल कोर है
भजु भगवान हे....
हाय हाय दैबा किये मोरा भेल हे
बही मोरा नाम भेल दैबा हरी लेल
भजहु भगवान हे....
कविरा गावे राम मुरारी
देवी भगवन्तपुर मन आस हे
भजहु भगवान हे....
कहत कबिर सुनु भाइ सन्त यह पद है निर्गंन
जो यह पद के बुझे समझे, पहुचत मुल ठिकाने ।

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१९७. महादेवी गित (क)

जब देवी देवता के बात आवैछै, ओइ मे महादेब के छुट्टै स्थान छै। महादेवी मे महादेव के पुकार सहैत काम काज या कर्म के बखान करल रहैछै। यी किर्तन भजन के अन्त मे गावल जाइछै।

॥ दोहा ॥

"अंग भंग महादेव के सब देवतन के सरदार,
प्रजा मेरा राखिये बसा पिठी असवार"

हम यती सिया यति रंग रसिया
सुनु सखी बसा पिठी भिरु रे
पलंग करेकी...१ धुवा
रेसम की डोरी बसहा नथावल हे
सुनी सुनी बसहा पिठी भिरु न
पलंग करेकी... २
बसहा बाघ दुवारी मे बानल रेकी
सुनु सखी लाय चलु, इन्द्रा कविलास
भनही विद्यापती सुनु नर लोक
सुनु सखी मानुस तन बड़ो तपो होइ रेकी ॥ ३
कहत कबिर सुनु भाइ सन्त यह पद है निर्गुन
जो यह पद के बुझे समझे
पहुँचत मुल ठिकाने ॥

स्रोत: हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१९८. महादेवी गित (क)

जब देवी देवता के बात आवैछै ओइ मे महादेव के छुट्टै स्थानछै । महादेवी मे महादेव के पुकार सहैत काम काज या कर्म के बखान करल रहैछै । यी किर्तन भजन के अन्त मे गावल जाइछै ।

॥ साखी ॥

"अंग भंग महादेवको सब देवतन के सरदार,
प्रजा मेरा राखिये बसहा पिठी असवार"

टुटली, फुटली मड़ैया, नगर सुहावन हे
हे माइ गे तही तर गौरा धिया टाड़ी भेल, मने मन झुरमै छै हे...
माँगी चागी आनल महादेव तामा दुवी धान हे,
हे माइ गे बाघे छाला पर धनवा सुखावे, बसहा खुली खायल हे....
अधन दिहल गे गौरा चढावल, पैचो खोजे चलल हे
हे माइ गे कैसन नगरी के लोक सब, पैचो नही देलक हे....

अधन दिहल गे गौरा हराई, बैठल मन मारी हे
हे माई गे आयेत गे इश्वर महादेव, किये रे जवाव देव हे....
भनही विद्यापती गावल, गावि के सुनावल हे,
हे माइ गे यहो हर भंगिया नाथ पेट भोरी मागे हे....

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

१९९.महादेवी गित (ख)

जव देवी देवता के वात आवैछै ओइ मे महादेव के छुट्टै स्थानछै। महादेवी मे महादेव के पुकार सहैत काम काज या कर्म के वखान करल रहैछै। यी किर्तन भजन के अन्त मे गावल जाइछै।

॥ साखी ॥

"अंग भंग महादेव को सव देवतन के सरदार,
प्रजा मेरा राखिये बसहा पिठी असवार"

उन्मत महादेव सुमतनी भेल हे हरी सुमतनी भेल हे
कैसे पर खेपेवे अलफनी वैसे हे...
हे हरी अलफनी वैसे हे
फोडवै मे डमरु तोडवै रुन्दमाला
हे हरी तोडवे रुन्द मला
टुके टुके करवै मे बाघे मारी छाला
हे हरी बाघे मारी छाला....
छारवै मे डमरु गुंथवै रुन्दमला
हे हरी गुंथवै रुन्दमाला....
रुची रुची गुंथवै मे बाघे मारी छला
हाथ तिरसुल सोभे चिर बोध्र मारी छला
हे हरी बाघे मारी छाला....
भनही विद्यापती सुन जग माता
हे हरी सुनु जगमाता, यहो नही जोगी छेकै
छेकै तिरिभुवन दाता, हे हरी तिरिभुवन दाता...
गावैये तुलसी दुबो कलजोडी हे हरी दुबो कलजोडी
अंगल मंगल हरी गुन गाइ..... ।

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

२००. गोहार गित

नाह टुटल, लदी मे बहौत पाइन या बाइढ रहलाहा समय मे लदी के ओइ पार जाइले देवता के पुकार करलहा गित । यि गित कोनो भि समय मे देवता के पुकारै के लेल गावल जाइछै ।

॥ दोहा ॥

"सत्य नै धारयेत पृथ्वी, सत्य नै तपते रबी,
सत्य नै बहै वायु, सत्यम शिवम सुन्दरम"

कर धारे करु मोही पारे माधव
मोही भव सागर लागत भयावनु हो
कैसे विधी उतरव पार, जतही देखिये
रमा ततही भयावन हे, कतेर करत मोही थोरे....
फुटली से नैया टुटली से पतवार
कैसे विधी उतरव पारः
सोनाला बनौला झझरी से नैया रुपाला बनौला
टुटली पतवार संकट परल मोरा प्रान, कैसे विधी उतरव पार
सावन भादौ केरी उमरल नदिया कैसे विधी उतरव पार...
लावन बेरिया निकट चली आये
तही चढी उतरव पार,
घर ही खर्च पैचो नही मिलल हो, साहु ऋण नही पत्यार
भाइ सोहदर प्रान से तिरिया हे विपती काल नही कोइ....
एक मन एक चित प्रभु जी से रहतु है, बही हरी उतरत पारः
जो नर यह गावे, मुक्ति फल पावे, सुनने से पाप छमा हो जाये....
तुलसी दास प्रभु तुम्हारे दरस के, आजु रैनी हेवु न सहाय....

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहवी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

२०१. गजपुकार

जाव हाथी लदी मे पाइन पियै जाइछै ताव ओकरा गोइह पकैर लेछै । वोइ समय मे गज भगवान के पुकारैछै या गोइह से छुटकरा पावैछै । यि गित कोनो भि उत्सव मे गाइब सकैछै ।

॥ दोहा ॥

"अकरी बोन मे आग लगी, जरत सकल संसार,
गंधी फिंगा भाग गये चिटीको बड़ा बुखार"

कौने दिना गज हे लेल अवतारे, कौने दिन गज हे फिरये संसारे
सनि दिना गज हे लेल अवतारे, रवी दिना गज हे फिरये संसारे
जब गज भइलन हे सुभद सियेनो
जंगले जंगले आब गज हे कियला पयाने...३
पियासल आब गज हे पैसल धारा
गज केरी ग्रहा हे पावे लपटारा...४
खैचत गज केरी पाँवे हेंकियला हराना
तब गज सुमेरे छे श्री भगवाना....५
असिया कोसके बसे श्री भगवाना
गज केरी सब्द हे गयेल्या प्रभु काने......६
गरुड़ हिरहन्थ हे तुरन्त सजाये जब प्रभु जुमला हे सरयुग धारे
थर थर कांपे ग्राहा के सरिर...७
ग्राहा के मारिहे गज के उबोर...८
गावैये तुलसी हे दुवो कल जोडी
अंगल मंगल हरी गुन गाइ......९

स्रोत: हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २. खिरटोली, सुनसरी

२०२. मंगल गित

राम बियाह उत्सब के समय मे बियाह मे राम के साथ भेलहा बिध के बर्नन करलहा गित । यि गित छौड़ा बियाह के समय के साथे साथ रामनवमी, धार्मिक पुजा, रामलिला लखा समय मे गावल जाइछै । येकरा सोहर मंगल गित भी कहैछै ।

॥ दोहा ॥

"जलको सोभा कमल है, कमल के सोभा फुल,
बिवाह के सोभा आँप है इस मे रहन हम पर भुल"

कौने से दिधिया खनावल घांट बनावल है
कौने मोरा भोरे जुरी पनिया कौने नहावल हे....
राजा दसरथ दिधिया खनावल, घाट बनावल हे,

सखी सब भोरे जुरी पनियाँ को राम जी नहावल हे....
कौने से हरदी गे उखाड़ल, कौने आनत हे
कौने कुटत कसवारे कौने लगावत हे....
राजा दसरथ हरदी उखाड़ल, भरत ही आनत हे
सखी सब कुटत कसवार रे, रामजी लगावत हे...
तुलसी दास मंगल गावल, गावी के सुनावल हे
सिता जी के ऐसन भाग, राम वर पावल हे....

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

२०३. उत्सब गित

बोन मे फुललहा बेली चमेली फुल से मोहित भ्याके फुल तोड़ैत काल राम से भेट भेलहा प्रेम प्रसंग गित । यि गित छौड़ी बियाह के समय, कोनो पुजापाठ, धार्मिक उत्सव मे गावल जाइछै ।

॥ दोहा ॥
"जलको सोभा कमल है,कमल के सोभा फुल,
बिवाह के सोभा आँप है, इसमे रहन हमपर भुल"

बन मे फुलली बेली रे चमेली, फुल आहो बन श्रृतु धावल हे
हे माइ गे मालिनी मन आनन्द भेल, हम फुल तोरबे हे,
फुल तोड़े चलली सुनरी धनी यती रुप आगरी हे
हे माइ गे राम जी बहियाँ पकड़ल येहो धनी हमार हे...२
हम कैसे होयब तोहार धनी, हमहुँ कुमार हे,
घर जाये पुछबै बाबा के, किये बोली हारल हे...३
किये बाबा लिहलनी टकवा, किये बाबा सुकवा हे
किये बाबा खेल दही चुरवा, कि किये बोली हारल हे...४
नही धिया लिहलनी टकवा, नही धिया सुकवा है
नही धिया खेल दही, चुरवा, नही बोली हारल है...५
धिया लाये जायेव अदलपुर, वही रे सदलपुर हे,
आब धिया नही वचत हे...६
किये बाबा जायब अदलपुर, किये बाबा जायब सदलपुर हे
जब बाबा जायब पातालपुर, तैयो धिया नही वचत हे....७

तुलसी दास सोहर गावल, गावी के सुनावल हे
सिता राम जी बिवाह भेल जनकपुर धाम हे ॥

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. १, खिखरटोली, सुनसरी

२०४. आरती गित

रामचन्द्र भगवान के पुकार सहित कोनो धार्मिक कर्मकान्ड के एक प्रमुख भाग के रुप मे रहला आरती मुल पुजा के बाद गावल जाइछै ।

आरती साजो राजा रामचन्द्र जी के
पहली आरती पुस्प कि मनला कारी नागिन
भानु गोपाला आरती साजो राजा रामचन्द्र जी के
दोसरा आरती तिरजुग सोभे
सन्त सिधारे असुर कन्दन....२

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. १, खिखरटोली, सुनसरी

२०५. एकादसी के गित

राम बनवास के बर्नन करलहा गित । यि गित कोनो पुजा पाठ, बर्त, धार्मिक उत्सब, रामलिला, नाच मे सेहो गावल जाइछै ।

रघु के कुल मे राम अवतरी है राजा
दसरथ के पुत बोने बोने जायब बोने फल खायेब
बोनही मे रैन गमाइ मनही मन, राम कहु रामे रामे........
अन विना कृपनु, विष्णु विना मुक्ति
विना ब्राह्मन होम कैसे होइ, विना पुत्र
पिता कैसे तरी है फललाइ एकादसी
होइ मन ही मन राम कहु रामे रामे.......
एकादसी करी है द्वादसी करी है
आलस निन्द्रा सोह तेलिया के घर मे
बैल अवतारी है घुमरी घुमरी वहो जाइ
मनही मन राम कहुँ... २ रामे रामे.....
जो धन अरजे खाये बिला मे जो धन
लागे काम जो धन गड्ल गाड्ल
रहो है मरन काल पछताइ,

मन ही मन राम कहु रामे रामे.....

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. ७, खिखरटोली, सुनसरी

२०६. अर्घ ढारे के गित

प्रकृती पुजारी थारु समुदाय सुरुज के अर्ध दैत जलम सफल के कामना करैत सुरुज के पुजा करैत काल गावल जाइछै ।

गोंड़े लागु पैया परु सुर्य गोसैया गोसाबन हे
हे तिरिया जलम मत दिहे, हे तिरिया जलम मत दिहे ।
यदी तिरिया जलम दिहल गोसावन हो, स्वामी विरोग मती दिहै,
हे स्वामी विरोग मती दिहै ।
गोंड़े लागु पैया परु सुर्य गोसैया गोसाबन हे
हे तिरिया जलम मती दिहे, हे तिरिया जलम मती दिहे ।
यदी तिरिया जलम दिहल गोसावन हो, पुत विरोग मती दिहै
स्वामी हे पुत्र विरोग मती दिहै ।
तुलसी दास प्रभु तुम्हारे दरसके, लिखलो मेटल नही जाय ।
हे लिखलो मेटल नही जाय, हे रामे रामे......

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. ७, खिखरटोली, सुनसरी

२०७. जगरनाथ गित

गुरु के बखान करल गित । यि गित गुरु के समर्पन मे गावल जाइछै । कोनो भि सत कर्म मे यि गावैछै । पुजा पाठ या भजन किर्तन मे सेहो गावल जाइछै ।

हे गुरु गुरु भाउर हे सकले संसारा,
गुरु के अन्तर हे कोय न विचारा.....
हे पहिले गुरु भाउर हे माता पिता
रगत हि बुन्द हे दिहल विधाता......
हे दोसरे गुरु भाउर हे नाम धराये
लाये लौका नाम धराये....
हे तेसरे गुरु भाउर हे दिछा दिन्हा
जिनका नाम सुमिरन किन्हा.....

हे चौथमा गुरु भाउर हे वेद पुराना
पढे लिखे कोइ हो संग्याना.....
हे पाँचमा गुरु भाउर हे मन के दाउ
जनी सब गर्भ ठाम बनाइ.....
हे छठम गुरु भाउर हे भरत के होइ
भरत के टोडु कहाँ सर जोडु......
हे सातम गुरु भाउर हे सिला राखु :
जहाँ के नाम तहाँ पहुँचाउ.....

स्रोत: हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिखरटोली, सुनसरी

२०८. सारंग गित

सिता के रावन हरन करलहा अवस्था के बर्नन करलहा गित । यि गित कोनो धार्मिक मेला, उत्सव, पुजा या नाच गान मे गाइब सकैछै ।

सिया हरी लाय गेल लंका पती रावन
वही रे कुन्ज वन मे....धुवा
छोटी मोटी पोखरा चिकन लाबु
घाटे केली करये चकवा
कुरर मोरा जहाँ से....
आहे आहे ये हंसा पुछत एक बाते
यही पन्थ देखल चकवारे ढाटे...
दुई गोटा ये धनुसधारी एक गोटा नारी
जोगहु नही सकल सिता सन नारी
वही रे कुन्ज वोन मे
देहो देहो ये दादा धनुसी धनुसी सर ये
तोरा चकुवा के मारी चकवी करवे राँड़े ॥
हाँ हाँ छिया छिया ये लक्ष्मन बुद्धि नही ग्याने
चकवा के मारी कौने जस पैवा....
आहे आहे ये हंन्सा हमारे सरापे
दिने दिने जोड़ी जोड़ी राती रहिये बिजोड़
वही रे कुन्ज वोन मे
तुलसी दास प्रभु तुम्हारे दरसके

विपति के बेरा सिया हरी लाय
लंकापती चोर, बही रे कुन्ज बन मे ॥

स्रोतः हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. ७, खिखरटोली, सुनसरी

२०९. सिता हरन गित

सिता के रावन हरन करलहा अवस्था के बर्नन करलहा गित । यि गित कोनो धार्मिक मेला, उत्सव, पुजा या नाच गान मे गाइब सकैछै । सुवह सुवह असगरे सेहो गावल जाइछै ।

सिता हरन भेल भैया लक्ष्मण, सिता हरन भेल
भैया लक्ष्मणः हाँ हाँ मारिच मरिकायेः
आहे फिरबै दोनो भाइ हेः दुर से नजर खिड़ावे
भैया लक्ष्मण...
सिता हरन भेल भैया लक्ष्मण
हाँ हाँ अनन कनन बोन आहे
फिरयेछै आहे कहाँ गेल तिरिया भैया लक्ष्मण....
हाँ हाँ आन दिना आइतो मे जललाय
खडा कहाँ भेल तिरिया भैयन लक्ष्मण...
नेस हौ दियरा खोलु केवाड़े सिता हरन भेल
भैया लक्ष्मण...
हाँ हाँ मन्डिल विलोके सिता नही पावे
धरनी -धरती) खसल मुरछायी...
तुलसी दास प्रभु तुम्हारे दरसके
कर्म के निखल मेटल नही जाय ॥

२१०. मोहन मुरली गित

पिया विना चैत वैसाख के मैहना समय केनाखे विताइवै से कन्हैया के कल्पना से भरल गित । यि गित कृष्ण लिला, नाच, धार्मिक उत्सव के अवसर मे गावल जाइछै त भिनसरे असगरो गावल सकैछै ।

हो हो मोहन मुरली बजैया हो हो
मोहन मुरली बजैया आहो दैया
हाँ हाँ चैत वैसाख केरी आहे धुप लगतु

है सितल बेनिया डोलाय...
मोहन मुरली.....
हाँ हाँ जेठ असाढ केरी बुन्द परतु है
भिगल लाली चुरिया.....
मोहन मुरली.....
हाँ हाँ साउन भादौ केरी उमरल नदिया
तयो नही खेपे कन्हैया....
मोहन मुरली.....
हाँ हाँ आसिन कातिक केरी प्रवल भरतु है
है है सखी सव गंगा नहाये हो दैया....
मोहन मुरली....
माघ फागुन केरी आहे रंग करतु हो हो
सखी सब धुनिया मचाइ हो हो दैया
मोहन मुरली बजैया हो दैया
मोहन मुरली वाला......
तुलसी दास प्रभु तुम्हारे दरसके:
हरी के चरन गुन गायी ॥

स्रोत: हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. ३, सिखरटोली, सुनसरी

२११. बच्छा सिखावे के गित

लब लब बच्छा के हर सिखाबैत काल गावैबला गित ।

हां हां रे........
पर्वत उपर बरत अगेनिया
पाट न बैठे यी जोत हे.......
बसिया सबद सुनी बछिया तरसी गेल
उंची खेत जोतिये किसान हो......
हां हां रे..........
खोलवा मे खोलवा लाइचलु डोलिया
लाइचलु देस वा विदेस हे......
हर बहु हर बहु बच्छा रे बरदिया

हर बहु मनचित लाय हे......
हा हा रे.........
अगला हरुवा के देबै दही चुड़ा भोजन
पिछला हरुवा के बसिया भात हे...........
हर बहु हर बहु बच्छा रे बरदिया
हर बहु मनचित लाय हे............
हा हा रे..........
बछिया ने बुझे रामा बाम रे दहिनवा
तिरिया ने बुझे इसारे हे............
हर बहु हर बहु बच्छा रे बरदिया
साँझ खिना देबौ दाना घाँस हे.......
हा हा रे..............
केदली के बोन मे बघुवा गरेजी गेल
उंची खेत गरजये किसान हे.........
हर बहु हर बहु बच्छा रे बरदिया
साँझ खिना देबौ दाना घाँस हे............

स्रोत: हरेसलाल हजारी
दुहबी न.पा. २, खिरटोली, सुनसरी

२१२. गुरुबन्ही गित

संकलक: प्रेमलाल माझी
ग्रामथान गा.पा.-७, मोरङ

आपन देह या संगी के देह के साथै साथ उ जगह मे कोनो किसिमको दुस्ट आत्मा कुछो नै कैरसके या केकरो कुदृस्टी नै लागै तेकर खातिर गुरु के पुकार सहैत यी बन्हैन गित गावैछै ।

साँखी-"गुरु बिना जी बिना हाँ, राम गुरु से हाँ
पहिले सत गुरु गाइ के, जिन गुरु रचे जहाँ
पानी सो जल पिन्ड रचे, अलखपुर निरमाइ के
अलखपुर निरमाइ के लेतु हरी नहीं नाम
बिना जल के कुयाँ खोंड़ावे सो आवत कौने काम"

हे गुरु देव हि देव बान्हतु हे हरी नामे

हे गुरु देहो सुमती उमती हे हरी नामे -रम्वे
हे गुरु बानिये सरोसती सहलन तेरो
हे गुरु कण्ठही सरोसती देहो न जनाये -रम्वे
हे गुरु बानिये पारवती सिवा हे संक राजे
हे गुरु बानिये ब्रहमा, बान्हतु हे हरी नामे -रम्वे
हे गुरु बानिये मोहन कृष्ण हे मुख मुड़ली
हे गुरु बानिये कानु कमला हे हरीनामे -रम्वे
हे गुरु गोप गुवालेनी सदा रहो दाहेनी
हे गुरु नरसिंह नाम सुनी पाप हे हरी नामे -रम्वे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२१३. गोचर गित

देवी देवता के सुमरैत पन्थ लावैत काल, चैठसार बैठैत काल या चाँड़ परव मे देवी देवता के सुमैर के विन्ती गोचर करैले यि गित गावैछै ।

साँखी-"गुरु बिना जि बिना हाँ राम गुरु से हाँ
खेत बिगाड़े खरबथुवा कि सोभा बिगाड़े कोय
भगत बिगाड़े लालची तिनौ हे समतुल"

हे उस देवी भये रामा सिङह बानम, भगती जन्ना प्रभु सदा हि दाहेनी हे- २
हे असुर अन्जन दुख भन्जन सेम्भु भवानी हे
हे जय कातिक कापड़ लेतु गुवालेनी गला सोभे गृमा सुन्ध माला हे
हे चरन नेपुर ताल घनरन ये काली कामेनी हे
हे जय कृष्ण कविता गावही गोचर हरही दुख भवानी शंकर हे
हे चन्द्रा बदन देवी तिलक तारन दिहे अछेवर हे -रम्वे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२१४. उचारन (क)

पुजा करैके विध सहैत देवी देवता के पुजा करैत काल गावैवला गित ।

साँखी-"गुरु बिना जी बिना हाँ राम गुरु से हाँ
भगत कहना कठिन है दो खन्डे कि धार
जो डगमग करे से गिर पड़े सच्चा उतरे पार

आहो सुनियत आवल हो गिरी दरबारे
गिरिया आङगना मेचनन लाइ छिलके-रम्बे"

आहो तुलसीके पात्र भगत लोक दिन्हाँ
चलहो भगत लोक हरी दरबारे-रम्बे
आहो सबही भगत मिली कयल निहारे
भगत पुकारे खड़े दरबारे-रम्बे
अहो चनन चौका हो उचकी पुराये
सोना रे कलसवा मे दियरा बरावे-रम्बे
आहो चारो कोन लाये केदली गड़ावे
धुप दिप लाये अरपेन दिये-रम्बे
आहो धवेली धानकेरी अछत कुटावे
चलहो साहेब जी पुजवा दराये-रम्बे
आहो झालमे जोड़ी मिरदङग ताल बोले
चलहो भगत लोक आहरम गावे-रम्बे
आहो तुलसी दास प्रभु तिहारे दरसके
हरीके चरन किछु आहरम गावे-रम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२१५. उचारन (ख)

पुजा करैके विध सहैत देवी देवता के पुजा करैत काल गावैवला गित ।

साँखी-"गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
रात गमावे धुमधाम कि दिन गमावे सोय
जो एकोपद हरी नाम नही गावे मुक्ति कैसे होय"

ऐ हे जाँ हाँ हुवत हरी हे नाम उचारे
सकले देबा हे ताँ हाँ पगुढारे -रम्बे
ऐ हे देखहु भाइ हे कनिके बेहवारे
करये कुकरम हे जानये संसारे -रम्बे
ऐ हे सुगा एक हे अमल फल लाये
रात दिवस हरी हे नाम पढाये -रम्बे
ऐ हे पढु भाइ सुगा हे राम जी के नामे

नहित पढेवा सुगा हे जलम गमावे-रम्बे
ऐ हे तुलसी दास प्रभु हे तिहारे दरसके
राम मिलन गती हे होयेते अनमोलेरम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२१६. मंगल गित

रामायन मे राम लक्ष्मण के स्वागत सत्कार के प्रसंग मे गावलहा गित । यी गित सुभ काम हैत समय मे गावल जाइछै ।

साँखी - "गुरु बिना जी बिना हाँ राम नी से हाँ
चिटी चढे पहाड़ मे नौ मन कजला लगाय
हाथी लेल गोद मे उँट लेल लरकाय"

ऐ हे आजु दिन सुभ दिन हे मंगल गाये
राम लखन गृया हे पाहुना आये -रम्बे
ऐ हे आने सिंहासन हे बैठक दिन्हाँ
चरन धोवाये हे चरन गत लिन्हा -रम्बे
ऐ हे पाँच अमृत फल हे हाथ कइ लिन्हा
रुची रुची भोजन हे प्रभु जी के दिन्हा -रम्बे
ऐ हे झुठी फल हे मुठी कइ लिन्हा
प्रभु जी के महिमा हे बरलोनी जाये -रम्बे
ऐ हे तुलसी दास प्रभु हे तिहारे दरसके
अंगल मंगल हे हरी गुन गाये -रम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२१७. रामायन गित (क)

रामायन मे भगवान राम के प्रसङ्ग जोड़ै सिमर के फुल देखके फलके आस करैत रहले लेकिन जाम फल मे लोल मारल कैत पछतेलै । यी गित कोनो नाच, भजन किर्तन के समय मे गावल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
साहेब आये अभिलाससे उठी न कियो प्रनाम

ताही कारन दादुल भयो उल्टे टाड टंगाय"

रमिता रामे हो श्री भगवाने
फेरु गाब हे रमिता रामे -धुवा -रम्बे
सिमर फुले हो पंछी रे सुगा लोभना
फल चाखैते मन पछताना -रम्बे
मारतु लोल रुयाँ उचियाये
सुगा रे मन भइल उवासे-रम्बे
तेरे उपर हो जटा मटोकी सिर सोभे
मुडली रे रामा धुनी सुनी बोले-रम्बे
तही प्रभु अभिगति रनजनी आस
फेरु गाव ये तुलसी दासे -रम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२१८. रामायन गित (ख)

रामायन मे राम के स्वागत करैले करलहा तैयारी के बखान करलछै। यी गित कोनो नाच, भजन किर्तन के समय मे गावल जाइछै।

साँखी - "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
पर्वत उपर तिन गछिया केला, कठहर,आम
तही पर बैठे तिन जना सिता,लछमन,राम"

हाँ हाँ आजु राम मोरा हे पाहुना
ऐ हे आजु दिन सु-दिन हमार-आजु-रम्बे
हाँ हाँ कथी रे बैठक देब श्री राम चन्द्र
ऐ हे किये लइ चरन पखार आजुराम-रम्बे
हाँ हाँ सिंहासन बैठक देब श्री राम चन्द्र
ऐ हे जल लाइ चरन पखार-आजुराम-रम्बे
हाँ हाँ अलस कलस बोन फुल ये हरीहर
ऐ हे मनिक वरे दिन रात-आजुराम-रम्बे
'हाँ हाँ तुलसी दास हरी गुन ये गावल
ऐ हे हरीके चरन हरी गुन गाये-आजुराम-रम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२१९. हरिन गोहार गित

बोन मे हरिन के सिकारी बान मारल समय मे हरिन के देवता से गोहाइर मांगल गित । यि गित रामलिला, रामनवमी, पुजा पाठ, किर्तन या जरुरी मुताबिक दोसरो समय मे गावल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
बिजु बोनमे आग लगे कि जरे चनन के रुख
पाँड़ पेरवा सब उडी गये चिटीके बडा दुख"

ऐ हे राखी लिहे रघुराइ आज मोही राखि लिये
बचा सहित्र हरीनी ये परुगाढे
रोदन किये बोन माझे-रम्बे-रम्बे
त्राही त्राही रघुनाथ पुकारे-आजमोही हउन सहाये
एकदिस अगनी हो जलतु बोन आवे
और दिस जाल लगाये-रम्बे-रम्बे
ऐ हे एक दिस बेउधा धेनुखी सरजोड़े
आज मोही हउन सहाये
सइना के लिहल अगुवाये-आज मोही हउन सहाये
बिष्णु मंगावल हो अगनी बुतावल
पवल ही जाल अधियाये-आजमोही
बेउधा के डांसल कारी भुवंकारे-रम्बे.....
सइना के बाघे धारी खाये-आज मोही हउन
पाँचो पान्डव हो पाँचो भाइ
पाँचो मिली रचये उपाये
जहाँ जहाँ गाढ परे सनतन के यहाँ प्रभु आप सुहाये- रम्बे
भउभउ भरत हो भरत मुनी अन्डा
गज घन्टा राखल छपाइ-रम्बे
तुलसी दास प्रभु तिहारे दरसके-रम्बे
हरनी के बैकुन्ठ पठाये,आज मोही......

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२२०. गज गोहार

हाथी के दह मे गोइह पकैर लेने रहेछै त ओइ समय मे हाथी देवता के पुकार से भरल

गित। यि गित कोनो धार्मिक उत्सव, पुजापाठ, भजन किर्तन या नाचो मे गाइत्र सकैछै।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
उचा उचा सब कोइ चले निचा चले न कोइ
एक बार जो निचा चले सब से निचा होइ"

ऐ हे जब गज जलमल हे सुबुद्ध सियाने
जंगल जंगल गज हे फिरये पयाने- रम्बे
एक समय गज हे अउसर साजे
गज के लागी गेल हो त्रासे- रम्बे
ऐ हे त्रासल गज हे पैसल मझ धारे
गजके ग्राहा हे गले लपटाये -रम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२२१. परिछन गित

हलुबान के भोग लगाइत काल मनाबैले गावलहा गित। यि गित पुजापाठ, भजन किर्तन, हलुमान अराधना या और कोनो धार्मिक महोत्सव मे गावल जाइछै।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
डाली उपर केला, केदली औरे दुब धान
सितामाइ परिछन जाइ महाबिर हनुमान"

आजु हनुमानके परिछन गावो
गंगा असलान करी पिताम्वर पहिराइ
कथी केरी डाली औरे धुप बाती
कउने धनी परिछन जाइ-रम्बे
सोना केरी डाली औरे धुप बाती
सितामाइ परिछन जाइ-रम्बे
केला केदली दुबो धान लाइ
सितामाइ परिछन जाइ-रम्बे
तुलसी दास प्रभु तिहारे दरसके
सब भगतन मिली परिछन गावो-रम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२२२. धुजा हनुमानी गित

हलुमान के बिरता से भरल गित। यि गित पुजापाठ या धुजा राखेत काल, चुमौन हैत खास क्या के गावल जाइछै।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
लदी गये बढाबढी कि तापत लाये बयार
सेत बान दिये रघुनाथ कि कुद गये हनुमान"

मोही गती हनुमानके सन्तो मोही गती हनुमान हे
चउरी लङगुर घयरी बैठे , बिच हि लिये श्री राम के सन्तो
जाहो लंका गढ तोड़े हे मारी किये घमसानके सन्तो
स्वर्ग तुमही पताल तुमही ,तुमही अन्तर जानीके सन्तो
अदुल फुल देखी देवी धावे
छरपी लिये सुर्जमानके सन्तो-मोही गती दास तुलसी सरन तेरो
भगती है डिङजानी के सन्तो-मोहं गती हनुमान हे
वज्र देहमे लंगुर सोभे
दास है श्री राम के सन्तो-मोही गती

स्रोतः कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२२३. चौजुगिया गित

चारु जुग मे भेलहा घटना के बर्नन करल गित। यि गित कोनो महायग्य, पुजा पाठ, या धार्मिक उत्सव मे खास क्याके गावल जाइछै।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
राम राम सब कोइ कहे दसरथ कहेन कोइ
एक बार जो दसरथ कहे करौठी करौठी फल होय"

धरती काहुक न हाय बसुधा धरती काहुक न होय
येहो सतजुगमे हरीसचन्द्र होउ राजा
सत से राज कियो तिरिया बिके घरबार बिके
आप बिके डोम हाथे बसुधा धरती काहुकन होय
येहो तिरतामे हो रावन हउ राजा
सोनाके लंका बनाये बारह लाख नाती, तेरह लाख पोता,

सब दल गइल हराइल हो, बसुधा,धरती
यहो द्वापरमे जिरजोधन हउ राजा, सोनाके छत्र धरे
चौदह भुवन दिहल धहराइ हो, बसुधा, धरती
यहो कलिजुगमे श्री कृष्ण हउ राजा
चन्दन तिलक लगाइ हो, बसुधा, धरती
सतजुग, तेरेता, द्वापर, कलिजुग बिचही मे
चारो जुग जाये हो, बसुधा, धरती काहुकन होये

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२२४. परनादी गित

हिरनकस्यक प्रह्लाद के बध करैले अजमाइत काल भगवान जतै ततै छै कहैछे या नरसिंह अवतार लेलहा बखान करल गित । यि गित कोनो भि धार्मिक काम, भक्ति भजन, पुजापाठ के साथै दोसरो समय मे गावल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
राम नामसे रस उपजे कि कलबिक दारेन कोय
अमृत नाम दयालु है पिवत निर्मल होय"

ऐ हे हरीना कंस एक गुरुवा मंगाये
लड़िका ना के पाट पढाये
ऐ हे गुरुवा पढावे चैला नहि पढे -रम्बे
पढे यछे आने से आन
ऐ हे सब लड़काना के खेलन भुलाये
हरी हे झाइल मिरदङ हो बजाये
ऐ हे कहत निरपती, पिता समुझाइके
गुरुवा पढावे पन्डित थाकल
ऐ हे हरीन कंस कोपित भेल
बानल प्रहलाद खम्वा हो लगाई
ऐ हे अब तोरा राम कहाँबा सोहाई
मोही कोई नही सकतु हो मारे
ऐ हे कहत प्रहलाद पिता समुझाइ
अन्हर पिता तोरा नही सुझे

ऐ हे जल थल मे व्यापत रामे
हम मे तुम मे खर्ग खमे मे हो व्यापत रामे
ऐ हे खम्बा फाड़ी नरसिंह अवतारे
खैंची खर्ग उपर हउ ठाड़े
ऐ हे हरीना कंस के ओद्र बिदारे
भक्त प्रहलाद के सुर स्याम सुहाये

स्रोतः कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२२५. जग सुसार गित

सत के पालन करने से नेत पन्डित नेत बेद पुरान के जरुरी परैछै से बतेलहा गित । यि गित कोनो सतसंध या धार्मिक प्रवचन, पुजापाठ, नाच गान मे सेहो गावल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
राम नाममे अंकित है सोभा बर्नन जाय
संत सरोवर गंगा कि जल मे चरन पखारो
सब सन्त मिलके अपने सवनाम के नाम जपो"

ऐ हे सत नाम जपु हे अमृत बानी
काहे न पन्डित घर हे बेद पुरानी-रम्बे
ऐ हे राजा जुद्धे सरिर हे जग एक किन्हा
काहे न घन्ट बोल लै यही बेरा-रम्बे
ऐ हे जाहो अर्जन हे सुपत जी के पासे
हुनिके आये ते हे होइ ते जग सुसारे-रम्बे
ऐ हे तब अर्जन हे गइले सुपत जी के पासे
चल हो सुपत जी हमरो के दुवारे-रम्बे
ऐ हे गेडुवा बस्त्र हे भेउत रमाये
हुनिके आयेते होइते जग सुसारे-रम्बे
ऐ हे तुलसी दास प्रभु तिहारे दरसके
निचे भक्ति सुपत जी के दिन्हा-रम्बे

स्रोतः कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२२६. भोग गित

नरसिंह भगवान के भोग लगाइवला गित । यि गित कोनो धार्मिक महोत्सवस, पुजापाठ, नाचगान के समय मे गावल जाइछै ।

साँखी-"गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
किजिये आरती किजिये भोग
सुमरी सुमरी रघुनाथ के सब के मुक्ति होय"

हे वारो हे नरसिंह महाप्रभु वारो हे नरसिंह
हे छप्पन भोजन छतिसो व्यनजन
हे नाना विधी हउ सब रंग महाप्रभु वारो हे नरसिंह
हे पनवां लाये नारन्द मुनी धाये
हे कलसा भोरी गंगा जल महाप्रभु वारो हे नरसिंह
हे आरती साजे इन्द्रा लोक धावे
हे खोली दिये पटचिर महाप्रभु वारो हे नरसिंह
हे कंसके नन्दन चौर डोलावे
हे गावये दास कल्यान महाप्रभु वारो हे नरसिंह

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनियामा, मोरङ

२२७. महेसबानी गित (क)

महादेव के बर्नन करलहा गित -महादेवी) । किर्तन भजन करैत काल आरती से पैहने गावल जाइछै यी कोनो झारफुक मे सेहो परहल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
भोला है भंगिया कि भोला हे सब सनतन के सरदार
परदा मेरी राखिये बरदा पिठी असवार"

हाँ हाँ उमत महादेव सुमतन भेल हरी सुमतन भेल
कैसे परी बोधवै बयेसे बही जाये- २
हाँ हाँ फोड़बमे डमरु टोडवै रुन्द माला हो- २
टुके टुके करबैंमे बाघे मोरी छाला हो बाघे- २
हाँ हाँ छारबमे डेमरु हो गुथवै रुन्द माला
धागे पिछु मोतिया गुथवै गुथवै रुन्दमाला- २
हाँ हाँ बाघे छाला ओढना मिरिडग छाला धोती हो- २
ऐगना ऐगना जोगी फेरु माँगे भिछा हो- २
हाँ हाँ भनही बिदापती सुनु जग माता

यो नही जोगी छेको, छेको तिरिभुवन दाता हो- २

२२८. महेसबानी गित (ख)

महादेव के बर्नन करलहा गित (महादेवी) किर्तन भजन करैत काल आरती से पैहने गावल जाइछै यि कोनो झारफुक मे सेहो परहल जाइछै।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
शिव, शंकर,भोला, महेशर सब भक्तजन हरे बिवाद
चारो नाम एक है कन्या दुलहा के दिया आसिर्वाद"

हाँ हाँ टुछली फाटलै मड़ैया नगरी सुहान हे
ऐ हे माई गे इश्वर महादेव पाहुन कइसे मनायेवै हे
हाँ हाँ अधन दियल चढ़ाइ पैचा खोजे जायेल हो
ऐ हे माइ गे अइसन नगरी के लोग कि पैचोन मिलल हे
हाँ हाँ अधन दिहल हराइ बैठल मन मारी हो
ऐ हे माइ गे कैसे बिध मिनायेवै इसरमहादेव पाहुन हे
हाँ हाँ भनही विदापती गावल गाबिके सुनावल हे
ऐ हे माइ गे गौरीके बड़ियेती भाग कि मिलल बर शंकर हे-रम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामशान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२२९. महेसबानी गित (ग)

भजन किर्तन मे महादेवी के आपन छुट्टै ठाम छै। यै गित मे महादेव पार्वती के बर्नन करल गेलछै। नाच गान के साथै पुजा पाठ मे आरती से पैहने यी जरुर गावल जाइछै।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
गौरी है शिव के सेवक करता है उद्धार
शिव है सारा संसारमे अन्न पानीका भार"

नित दिन गौरी,शिवके बुझावन, उचिकाये बानी हे आर
बेल काठके हरवा बनावे है, चनन काठके कनेल
इसपात लोहाके फर्वा बनाव है,घनकाइ जोती हे हर
नित उठी गौरा,शिवके वुझावन, उचिकाइ वानी हे आर
एक दिस जोड़ी हे बसहा बरदिया, एक दिस जोड़ी हे बाघ
नित उठी गौरा शिवके वुझावे, घनकाइ जोती हे हर

एक दिस बुनी हे भाँग धथुरा, एक दिस बुनी हे धान
हरवा ठाड करी शिव धरवा आवी हे, बसाहा बरदके धारिहे बाघ
नित उठी गौरा शिव के बुझावन उचिकाइ
बघुवा मारी हे छाला ही छाली हे बनाबिही आपन बिछान
नित उठी गौरा शिव के बुझावन उचिकाइ
मनही बिदापती सुनहु उमापती बसाहा बरदके करिहे उद्धार

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३०. समापन गित

कोनो भगवान के कथा या किर्तन के अन्तमे हनुमान रक्छा के जिम्मा दैत यि गित गाइब के अन्त करल जाइछै।

साँखी-"गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
कथा समापत होत है कि सुनु बिर हनुमान
राम लखन सिया जानकी सदा राखो कल्यान"

डिमिक डिमिक डमरु बोले सुनु नरमुनी धियान
सब देवता मिली बैकुन्ठ गये भगत रहे भगवान
एक घड़ी से याद घड़ी यादो से पनियाद
तुलसी संगत साधु के हरेक करौठी अपराध

२३१. दधी मंगल गित

राधा जमुना के किनार मे दही बेचेले गेल रहैछै सब बिक्या जाइछै। घोर रैह जाइछै ओहै समय मे कृष्णा से भेट हैछै या एक दोसर से हसी मजाक से भरल गित। कृष्ण जलम अठमी या भजन किर्तन के समय मे गावल जाइछै।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
बिना गाय के दुध दही माखन कैसे होय
पानी मे घी उब्जे रुखा खाय न कोय"

माथे लेल मटोकी हे पहेरी लेल हो चिर
दही बेचे चलली गे राधे जमुनाके हो तिर.रम्वे
दही दुध बिकी गेल हो रामा रही गेल हो घोर
आनहु पुरेनीके पात्र पिबी ले हो हो घोर.रम्वे

माथे लेल मटोकी हे पहेरी लेल हो चीर
दही बेचे चलली गे राधे जवुनाके हो तिर.रम्वे
पुरेनी के पात सेहो फुटी भाडी हो गेल
तोहरे अन्चलवा गे राधे पिवी लेवौ हो घोर.रम्वे
तुलसी दास दधी मंगल गावल
श्री कृष्ण पिवी लेलकै हो घोर.रम्वे
हमरे अन्चलवा हे कना परी गेले लड़िका कानेड कसै कारी पिवी लेवौ हो घोर
बारह ह वरिख हे साधे यही नगरी कहियो न देखिनु तोरा गोद कोर
हरी हरी गकुला श्री कृष्ण पाहुन हे आजु दिन सु दिन हमार.धुवा
गोवर लाई अंगना निपावल गजमती चौका पुरावल.हरी हे
चारो कोन मे केदली गड़ावल हे मानिक दियरा हो वरायइ
तुलसी दास प्रभु तिहारे दरसके जसोमती आरती उतारे ।

स्रोतः कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३२. दसौं अवतार (क)

भगवान के दस रुप मे लेलहा अवतार के बर्नन करल गित । कोनो पुजा पाठ या नाच मे यि गित गाचल जाइछै । खास कैतके सन्तान नै हैवला जनिजाइत के लेल करलहा पुजापाठ या गोहाइर के समय मे सेहो गावैछै ।

साखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
अजेगर न करे चाकरी पंछी न करे व्यापार
बिना डन्टी बिना पलरा तौलत है संसार"

जाया जाया आदी हे मिन अवतारे
जाया काछव बली हे सनसारके भारे
जाया बावुन बली हे छाडुन मुडारी
जाया भिरिङग पती हे गोवर धेनु धारी
जाया राम लखन येहो दोनो भाइ
जाया हल चल हे कुमर कनाइ
जाया प्रसुराम रुप हे बिपतीके ओरे
जाया कलंकी दसौं अवतारे

बालमिकी नारी सुनो बन्दवारी

सन्त जन लिहन उबारी

स्रोतः कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३३. दसौं अवतार (ख)

राम अवतार के बिसय मे राम के गुन गावल गित । यि गित रामनवमी, पुजा या कोनो किसिमक के धार्मिक उत्सव के अवसर मे गावल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ"

राघुके कुलमें राम अवतरी हे, राजा दसरथके पुत
गकुला ओडन बन फुल भोजन, बोनही मे बिपती गमाइ
मनही मनही मन राम कहौ, बिना कृपिनी बिष्णु बिना मुक्ति ,बिना अगनी
होम जाप कैसे होइ
बिना पुताके पिता कैसे तरिहे,मनही मन राम कहो
अनदान, गजदान, धुरनधक कन्या दान कैसे होइ
दछिना दान ब्राहमनको दिन्हा, मनही मन राम कहो
एकादसी करिहे द्वादशी करिहे आलस निन्द्रा मत सोइ हे, मन ही मन राम कहो
तुलसी दास प्रभु तिहारे दरसके,सुनहु सन्त मन लाये
जो नर गावे मुक्ति फल पावे सुनयेत पाप फल पराये, मन ही मन राम कहो

स्रोतः कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३४. गौबधी

मारल गाइ के भगवान आइब के जियाबैछै तेकर बखान करल यै गित मे छै । यि गित भजन किर्तन करैत काल या रामनवमी या कोनो धार्मिक उत्सव के समय मे गावल जाइछै । त केकरो से गोहत्या भेल रहेछै त सुद्धी के लेल करलहा पुजा मे सेहो गावल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ
साहेब आये अभिलास से उठिन कियो प्रनाम
ताही कारन दादुल भये उलटे टाड टडगाय"

खड़े गये असवार पठाये, सोनामा देवा के पकड़ी मंगाये
कहे सुबहु पकड़ी तेल रमैया कैसे होय

मेरे रमैया अइसा होइ,जियत भारी मोरिया जिलाइ
येतना सुनिये पुतना गैया मैगाइ
लेरुवाके बाँधल खुटुवा लगाइ
आनलन छुरिया कुहलन गइया
कहाँ गइलन नाम देवा,जिलाइ देहो गइया
जब न जिलाइन कपली से गइया
अइसा मार मारव सिर उधियाइ
होम जाप अइसा होइ,मोरियासे मुर्दा जिलाबन कोइ
हाड़ गोड़ सब जाहुर किन्हा,करिया कामर झापड़ दिन्हा
खड़े रोवे सुलतानाके माइ,छाडु पुता राम नाम भजहु खुदाइ
हे माता तोहे महलके जाउ,आयेतै राम जी जिलायेते गइया
पांव पैजनी हाथे कटताले, भगती करये नमा मन लाये
पंछी परापत बोलये निसाने, गड़रा चढी आबे श्री भगवाने
कापये मन्ठ धुजा फहराये,उठी काये गइया लेरुवा पिलाये
अल्ला तोवा बोले पैठाने, इस हिनवाके राम सहाये
बिबी बने बुने येछे माला, नेसल दिप दिहल धर्म छाला
गाबये तुलसी दुब कल जोड़ी
सब पर राम हउन सोहाये

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३५. बालिछरन गित

बाली राजा के बिसय मे तयार करलहा गित । यि गित भजन किर्तन भक्ति या रामनवमी के साथै और किसिम के अनुस्ठान मे सेहो गावल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ"

कान्हे कमरिया हाथे डमरु,नेहो नेहा ढारिये छै पामे
कहवाँ से ताही चली आये,बेहोसी पुछये बलिराजा
तिन भुवन फिरी आयल राजा,सर्बन सुनल तोही दानी
हे ब्रहामन हे रुप ब्रहामन हे
तोरा सन दानी येछेनही कोये, रामो हे तुरन्त करहु विदाइ हे रुप ब्रहामन हे
मल मुलुक सेहो हम देबो और देबो दरप दाने

लाख करौठी सेहो हम देवो, हे रुप ब्रहामन हे
रामो हे देतबिल मन होये, हे रुप ब्रहामिनी हे
भल मुल हम नही लेवो, नही लेवो दरबस दाने
अढाइ डेग बसुधा हम लेवो रामे हे
आप गइ गप गुनिन हे रुप ब्रहामन हे
मन जेत कते तक हम देखल, देखल बहुबोधी भाँती तोरासन छिन येछे
नही कोय रामो हे
और ही मे हेछै उतपाता हे रुप त्राही मन हे
कहिये अगरिम सुनहु बली राजा, बसुधा दान न माँगो तोहरे छरी पताल
पठायेल रामो हे
सकल अधिकारी रुप हे ब्रहामिन हे
हटलो न माने राजा निरबुधिया, तिल कुस लिहलनी हाथे लेहो लेहो
ब्रहामन हे राजा बली भाखी रामो हे
देल अरग जल ढार हे रुप ब्रहामिन हे
येक डेग देल आधा राजे, दोसर डेग कैल, तेसर डेग बसोधाही पुगल रामे
हे तु हारल बली राजा हे रुप ब्रहामिन हे
हम कैसे सत हारब रे करता हे पेवो मे सकले
भिखारी राजा बलीके जाँचन आये रामो हे
दिहल आपन पिठ भवाइ हे रुप ब्रहामिन हे
धरमी दास कहे सुनु बली राजा अहिन दान नही छौ
जो छलबल छेल सेहो सपना भेल रामो हे
बली माँगे हरी नित दरिसन हे रुप ब्रहामिन हे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३६. उलकिच गित

राम के जलम से राजा दसरथ के परिवार मे येलहा खुसी मे यी गित छै। खुसी या उल्लास के समय, बहीत किसिम के चाँड पर्व मे येहेन किसिम के गित सब गावल जाइछै।

साँखी- "गुरु विना जी विना हाँ राम जी से हाँ"

कउने बाबा दिधिया खोड़ावल आँट बनाहावल हे
ऐ हे माइ गे कौने भोरे जुड़ी पानिया कउने नहावल हे
बाबा मोरा दिधिया खोड़ावल आँट बनाहावल हे

ऐ हे माइ गे कौसिला भोरे जुड़ी पानिया राम जी नहाबल हे
कउने से हरदी उखाड़ल कउने से आनल हे
ऐ हे माइ कउने कुटयेतै कसैया धान कउने लगावल हे
राजा दसरथ हुनी हरदी उखाड़ल,लछमन आनल हे
ऐ हे माइ गे कौसिला कुटैते कसैया धान राम जी लगाबल हे
तुलसी दास ये मंगल गावल , गावीके सुनावल हे
राम जी सिता के होइछे विवाह जनकपुर आयल हो

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३७. सोहर गित

राम से मिलन के कल्पना करैत बोन मे फुलल फुल के साथ खुसी या उल्लास से भरल गित । यि गित बहौत किसिम के चाँड पर्व या किर्तन के अन्त अन्त मे गावल जाइछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ"

हाँ हाँ बोनही मे फुलल बेली चमेली फुल बोन रितु धावल हे
ऐ हे माइ गे मनही मे आनन्द भेलै अब फुल तोड़ब हे
हाँ हाँ फुल तोड़े चलल सुनरी धनी,येती रुप आगरी हे
ऐ हे माइ गे राम जी बहियौ पकड़ी लेल, येहो धनी हमार हे
हाँ हाँ हम कैसे होइबे तोहार धनी, हमही कुमारी कन्या हे
ऐ हे माइ गे घर जाइ के बाबा से पुछयेबै कोइ नही पतयावल हे
हाँ हाँ किये बाबा खेल दही चुड़बा किये बोली हारल हे
ऐ हे माइ गे नही धिया खेल दही चुड़बा नही बोली हारल हे
हाँ हाँ किये बाबा लिहलन टकबा औरे सुकवाना हे नही बोली हारन हे
हाँ हाँ धिया लाइ जाइब अदलपुर औरे सदलपुर हे
धिया लाइ जाइब अदलपुर, तब धिया बचत हे
तुलसी दास प्रभु सोहर गावल, गावीके सुनावल हे
राम सिता होइछे विवाह जनकपुर आयल हे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३८. चुटिमुड़न गित (क)

जसो मती मैया या कृष्ण बालक के कृयाकलाप से भरल गित । यि गित (भजन) कृष्ण

जलम अठमी के साथे दोसरो धार्मिक काम के समय मे गावल जाइछै त सन्तान नै है बला जनिजाइत के सन्तान हैके लेल करलहा पुजापाठ या धार्मिक काम के समय मे से हो गावल जाइछै ।

सॉंखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ"

राधा ललिता ओ चन्द्रावती ,जसोमती चललन हाये
खेलान छाड़ी बालक लागु पिछे, हे बालक मती जाहो
जमुना के निरे तिरे अगमजल,आहवाँ घोघरके बास
खेलन छाड़ी बालक लागु पिछे, हे बालक मती जाहो
मिन रुप जहिअपतरलम , अगम निगम जल रहलम तहिया हो
पैसी पताल माटी गही आनलम तहिया न देखलम घोघर हो
काछव रुप जहिया अवतरलम धरती भार थमलम तहिया हो
नौ लाख गिरी हम थमलम तहिया न देखलम ,घोघर हो
परसुराम रुप जहिया अवतरलम,फौरसा चापलम तहिया हो
छेत्री भारी निखेत्री कइलम , तहियान देखलम घोघर हो
राम रुप जहिया अवतरलम नर बाँनर संग रहलम तहिया हो
रावन भारी बिभिसन राजे तहिया न देखलम घोघर हो

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२३९. चुटी मुड़न गित (ख)

बच्चा के जलम रकत बिरिज से हैछै तेकर पुकार करल गित । बच्चा नैहेबला जनिजाइत के बच्चा के लेल धार्मिक कर्म के समय मे या देवता के पुकार के समय मे गोहाइर करै त काल यि गित गावल जाइछै ।

सॉंखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ"

बुझी पिउ जल पानी पान्डव, बुझओ पिउ जल पानी- रम्बे
माछ, काछु घरियार बियावल,रक्त बिज बही जाये- रम्बे
हाड़ चुही चुही मासु दुही दुही, येहो दुध कहवाँसे लाये- रम्बे
बुझी पिउ जल पानी पान्डव नदियामे गोही घरियार बियावतु हे
पसु पंछी पिवी पिवी पिवी जाये, पान्डव जी, बुझी पिउ जल पानी
हाड़ गोड़ चुहिये चुही मासु दुही ये दुही
येहो दुध कहवाँसे लाये,पान्डव जी, बुझी पिउ जल पानी
सुरही दास प्रभु निरगुन गावल

गाविके सुनावल हे पान्डव जी, बुझी पिउ जल पानी

२४०. सारङ गित (क)

राम बनवास के समय मे खोजी करैत बिसय मे लिखल गित। यि गित भजन किर्तन भक्ति या रामनवमी के साथै और किसिम के अनुस्ठान मे सेहो गावल जाइछै।

सांखी- "गुरु बिना जी बिना हां राम जी से हां"

हंसा गे के तोही जोड़ी त बिछौड़-धुवा
प्रथम बिछोड़ भेल चाँन त सुरुजे जोड़ी
लग लग कहियो न भेल हंसा गे ....
दोसर बिछोड़ भेल राम, लखन, सिया,बानही मे बिपती गमाइ हंसा गे......
तेसर बिछोड़ भेल येहो माता जानकी हंसा गे रवन हरने नेने जाइ हंसा गे.....
चौथा बिछोड़ भेल नन्द भौजाया जोड़ी हंसा गे एक मत कहियो न भेल हंसा गे........
पंचवा बिछोड़ भेल किरित चिरैया जोड़ी हंसा गे बोनही मे श्री फल खाये हंसा गे.....
तुलसी दास तिहारे दरसके जो नर गावये सुनियत पाप पराये हंसा गे...

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

(ख) सारङ गित

राम बनवास के समय मे खोजी करैत बिसय मे लिखल गित। यि गित भजन किर्तन भक्ती या रामनबमी के साथै और किसिम के अनुस्ठान मे सेहो गावल जाइछै।

सांखी- "गुरु बिना जी बिना हां राम जी से हां"

छोटी मोटी पोखरा बानहल चारो आंटे
केली करे हंसा,कुडुरे हो राज हंस-१
आहो आहो चकेवा पुछवो मे एक बाते
यही पंथ देखला एक सिता सन हो नारी-२
दुइ गोटा ये धनुधारी एक गोट नारी
जोग हुन साकेल्या सिता सन हो नारी-३
देहो देहो दादा तुम्हारे सरये बाने
चकेवा के मारी चकेवी कर वै हो राड़ी-४
छिया छिया लछुमन तोहरे गियाने
चकेवा के भारी कउने फल हे पाइव्या-५

दिल ही मे चकेवा जोड़म जोड़ी
राती चकेवा जोड़ी त बिछोड़े-६
तुलसी दास प्रभु तिहारे दरसके
सिता हरी लाइ गेल लंका के चोरे-

स्रोतः कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२४१. तुलसी चरित्र गित

तुलसी के सेवने से हैवला फाइदा के वर्नन करल गित। यि गित कोनो सतसंग, रामलिला या बिसय किर्तन के समय मे गावल जाइछै।

साँखी- "गुरु बिना जी हाँ राम जी से हाँ"

कउने तारा माता कउने तोरा पिता
कउने बिहावन जाइ मोरी कान्तो-१ रम्बे
धरती तोरा माता, पवनसुत पिता
सिता बिहावन जाइ मोरी कान्तो-२ रम्बे
लिहो लेहो ब्रहमा कान्ह त कोदरिया
चली भेल ब्रहमा जबुना किनारे-३ रम्बे
जबुना के छेवे छेवे बानहलन आँटे
तही पर रोपल हे तुलसी के गाछे-४ रम्बे
जो तुलसी पर हे ढारत पानी
जनम जनम तिरिया होवत रानी-५ रम्बे
जो हो तुलसी पर फोड़त हाँढी
जनम जनम तिरिया होवत राड़ी-६ रम्बे
जो हो तुलसी पर फेकत थुक
जनम जनम तिरिया पावत दुखे-७ रम्बे
जो हो तुलसी पर बारत बाती
जनम जनम तिरिया होवत अहोवाती-८ रम्बे
तुलसी चलित्र जो नर गावे
-बैठी) बैसी बैकुन्ठ अमर पदवावे-९ रम्बे

स्रोतः कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२४२. सिता समर गित

रामायन से सिता स्वंयमवर के समय मे जम्मा भेलहा राजा या राजकुमर के सभा के

बर्नन करल गित। यि गित पुजा पाठ के साथै रामनवमी मे सेहो गावल जाइछै।
साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ"

मेम बरत कयल जानकी माता
राम सन बर मिलाइ देहो बिधाता
राजा जनक जग एक किन्हाँ
देस देस निर्प नेउता दिन्हाँ
नेउतल राज कन्या कुमारा
राम कुमार बर मिले बुद्धि वाला
नेउतल राजा लंकापती रावन
नेउतल छतिस करौठी राजे
लंका सेहो लंकापती रावन चलिआवे
दस मस्तक हे बिस बाँह डोलावे
उठी काये राजा जनक हे आदर किन्हाँ
धेनुखी देखाइ हे रावन जी को दिन्हाँ
बिस भुजा धेनुखी हे घायल रिसियाइ
धेनुखी न उठे हे हाँसे सभा के सब कोइ
माँखके राजा जनम हे मनही बिचारे
यही बिधी जानकी हे रही जेतै कुमारी
बोन से हु लौटल हे राम कुमार
देखन देबा हे सकल मिली धाये
उठी काये राजा जनक हे आदर किन्हाँ
चरन धोवाइ हे चरन गती लिन्हाँ
दुर्वल देहया कोमल सरिरे
हुनबुती धेनुखी हे नही होइते सम्हारे
तखही लछमन हे उठल रिसियाइ
देहो देहो दादा हुकुमे धेनुखी देवै तोड़ी
सुनु भाइ लछमन हे बचन हमारे
बड़की रही जेतै हे छोटे होइते बियाहे
दहिना चरन हे सुभ काये लिन्हाँ
धेनुखी उठाइ बायेकर लिन्हाँ
खैचल धेनुखी हे तोड़ल रिसियाइ

चौद भुवन हे दिहल घहराइ
तव प्रशुराम के हे धेनुखी सवद गेले काने
हमसा बलिमन्त हे कउने होउ राजा
तेजी तुलंग हे पावे चली आवे अव रघुपती जी से हे दर्सन पाये
गले गले मिले हे दन्डवत किन्हाँ
तव रघुपती जी के हे आसिस दिन्हाँ
सिता विहाइ जव श्री राम जी किन्हाँ
तव उर्मिला हे लछमन जी के दिन्हाँ
गाव ये तुलसी हे दुव कल जोड़ी
सिता राम के विवाह जनक पुर मे होइ

२४३. धुजा चुमोन गित

धजा चुमाइत काल यी गित गावल जाइछै जैमे धजा चुमाईत काल के विध सेहो छै । खास कैरके कोनो भि काम मे चुमौन हैत काल यी गित गावल जाइछै।

राजा दसरथ गृह राम जनम भेले
सखीसव मंगल गाये,
जसोमती अयोध्या मे आजु आरती उतारे
हरी हरी गोवर लाइ येङना निपाये
सखीसव अरपेन दिये,जसोमती.......
दुवी लेल धान लेल और लेल दिप
सखीसव हरीके सरन गुन गाये,जसोमती......
सुरही दास प्रभु तिहार दरसके
सखीसव कहे राम दुहाइ,जसोकती............

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२४४. निरगुन गित (क)

राम के भक्ति से भरल गित जै मे उपदेस छै। यि गित कोनो सतसंग या बिसय किर्तन के समय मे गावल जाइछै।

ऐ हे धने सुतियारी याहो रामा मन्दिर निरमाय
भजहु भगवान हो सुमहु गुरु ग्यान

ऐ हे टेड हि टेड याहो रामा घनघोर लगाये
तही बिच राखल याहो रामा रतनकेरी धन,भजहु
कौने घाट बौने बाट याहो रामा आयलमे चोरे
कौने रतन धन याहो रामा लाइ गेल चोरे , भजहु
निचे घाटे निचे बाटे याहो रामा आयलमे चोरे
रतन सहित धन यहो रामा ला गेल चोरे,भजहु
कहत कबिर याहो रामा गायबे निरगुने
बह्री न आयते याहो रामा येहो संसारे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२४५. निरगुन गित (ख)

भक्ति से भरल गित जै मे उपदेस छै। यि गित कोनो सतसंग या विसय किर्तन के समय मे गावल जाइछै ।

हाँ हाँ काँच हि बाँसके याहो रामा खटौला बनाये
हाँ हाँ सन पटवाके याहो रामा सन सुतरीके डोर, धुवा
हाँ हाँ भाइ भतिजा मिली याहो रामा कसी कसी बान्हे
हाँ हाँ जइसन लागल याहो रामा नगरीके चोरे , भजहु
हाँ हाँ चारी जना मिली याहो रामा डोलिया उठाये
हाँ हाँ लाइ चलु याहो रामा जब सनाके किनारे,भजहु
हाँ हाँ जबुनाके तिरे तिरे याहो रामा चिता बनाये
हाँ हाँ तहिपर याहोरामा मृतुक चढाये, भजहु
हाँ हाँ तिन बन्हनके याहोरामा उकवा बनाये
हाँ हाँ घुमी घुमी याहोरामा अगिया लगाये, भजहु भगवान
हाँ हाँ कहत कबिर याहोरामा सुनभाइ साधु
हाँ हाँ सन्तो जानी याहोरामा लिहोन उबारे,भजहु भगवान
याहोरामा सुमरहु गुरु ग्यान

२४६. मरकी गित

मानव सरिर के सृजना केनाके भेलै से यी गित के भाव छै। यि गित सुर ताल मिल्या के फरक समय मे फरक किसिमसे गावल जाइछै। खास क्या के कोइयो मरल रहैछै त ओकरा विहाद करैत काल या कर्म कान्ड करैत काल यी गित गावैछै ।

साँखी- "गुरु बिना जी बिना हाँ राम जी से हाँ

काली असुर संहार के जहाँ भेस्नु ताँहा जाय
सन्तनमे जो निन्दा करे ताँहा काल भउ दाय"

केकराके जलथल केकराके निर
कउने सिरिजल कुमल सरिर, रम्बे
माताके हलचल पिताके निर
दुवो मिली सिरिजल कुमल सरिर, रम्बे
बिरद हि भए रामा पाडुर केस
तयो नही पायन गुरु उपदेस, रम्बे
तुलसी प्रभु तिहारे दरसके
सन्तो जानी लिहल उबारे, रम्बे

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७, बनिगामा, मोरङ

२४७. करु काली असुर संहार

काली देवी के पुकार भगैत गित । यि गित दसैं या कोनो देवता प्रकट भेलहा समय मे गाइब सकैछै येकर अलावा धार्मिक महोत्सव, चान के समय मे सेहो गावल जाइछै । पिया परदेस गेलहा बहौत दिन भ्या गेलछै । ओइ समय मे पिया के याद करैत गावैबला मया प्रेम भरल गित । यी गित कोनो काम करैत काल या नाच के समय मे सेहो गावल जाइछै ।

करु काली असुर संहार करु काली असुर संहार
लिहसी गे चेरिया तेल मधु खौरिया चली भेल सैर असलान, रम्बे
कउने बाटी लेल चेरिया तेल मधु खौरिया, कउने बाटी अगरा चनन, रम्बे
सोना बाटी लिह चेरिया तेल मधु खौरिया रुपा बाटी अगरा चनन, रम्बे
चुरवासे पानी गे चेरिया खौरियोना भिडल आर पानी दिहन लगाइ, रन्बे
पेहिली के खौरी चिरिया सुरुज चढावल दोसरा के खौरी माथा मे लगावल, रम्बे
नहाय सहाये चेरिया चौका चढी बैठल ऐसन चिरु नामी केस, रम्बे

२४८. बिरहैन गित (क)

महताइर या बेटी के विच के होरी के समय मे कपड़ा मे लागलहा रंग के बिसय मे बर्तालाप गित । यि गित फागुन महिना होरी तैक गाबल जाइछै ।

म्याँ- हाँ...कहुँवा लगौ ल्या बेटी तहुँ पिठी धुरा
कहुँवा रडौ ल्या लाली रङ सढिया
हाँ....कहुँवा भिजौ ल्या बेटी तहुँ चोली बन हो -२

बेटी- हाँ...बाबा मोरा बाबा मोरा गे नाच लाये हो-२
तहीं मे लगन्हुँ पिठीमे धुरा
हाँ.....तहीं मे भिजन्हुँ अमा चोली बन हो
म्याँ- हाँ.....यो हो त छपौ ल्या बेटी सामरी हो
कहुँवा रडौ ल्या लाली रड सढिया
कहुँवा चिरौ ल्या बेटी चोली बन हो
बेटी- हाँ........भाइ भतिजा मिली खेली करे हो
तहींमे भिजन्हुँ लाली रड सढिया
तहींमे चिरन्हुँ अमा चोलीबन हो
म्याँ- हाँ....यो हो त छपौ ल्या बेटी गोरी तहीं सामरी हो
कहुँवा रडौ ल्या लाली रड सढिया
कहुँवा रडौ ल्या बेटी सिथी सिन्राहा हो
बेटी- हाँ...फागुन महिना पुरनेवाँ रे मासे
होली खेलते भिजी गेले लाली रड सढिया
साथी सडते लागी गेले सिथी सिन्राहा हो

स्रोत: हेमनारायण चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-५, धोबियारे, मोरङ

२४९. बिरहैन गित (ख)

एक दोसर के माया पिरती के पियास भरल यी गित आपन घरवला के पुकार सुइनतो भि घरवाली बहौत कारन से नै मिल सकैछे बत्याल गेलछै। यि गित नाच के साथै साथ दोसरो समय मे गाइब सकैछै।

छौंड़ा- पुरुवा हि बहे सिरी सिरी हो
उतरा हि बहे सितली बयारे
कतखिना देव्या सामरो दरसन हो
छौंड़ी- हमे कैसे देबु राबुत हो दरसन हो
घरही मे छौक्या सास त ननदिया
दुवारीमे छौक्या ससुर भेसुर मोरा हो
छौंड़ा- वाजन त नेपुर सामरो पहिरीह हो
गागरी लिये सिर चढाये
पनियाँ भरते सामरो दिह दरसन हो
छौंड़ी- हमे कैसे देबु राउत दरसन हो

गोदी मे छौक्या गोदी के बालकुवा
दुवारी मे छौक्या ससुर भेसुर मोरा हो
छौंड़ा- दौरा हो ढकिया सामरो लिह हाथ कयी हो
चली के जा हो गोइठा चुनिये
गोइठा चुन ते सामरो जोड़वो पिरती तोरा हो

स्रोत: हेमनारायण चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-५, धोबियारे, मोरङ

२५०. चाँचैर गित (क)

एक परदेसी या गाम के छौंड़ी के बिच मे भेलहा प्रेम वर्तालाप से भरल गित । यि गित गाम घर के कोनो नाच मे या कामो करैतकाल गाइब सकैछै ।

छौंड़ा- चरखा जे काटल्या के सामरो माला रे घुघुवा लगे
हाँ...सगवा टोड़ते गे सामरो चोली बन घामल गे
छौंड़ी- कहुंवा से ऐले बिदेसिया रे कहुंवा रे चली जाइछे रे
हाँ...कौने नगरिया बिदेसिया तोरा रे गिरी बास हो
छौंड़ा- पछिमे से ऐलो पुरुवे चली जाइछुन गे
हाँ...पुहपी रे नगरिया गे सामरो मोरा रे गिरी बासे हो
छौंड़ी- एक मन होइछे बिदेसिया तोरा रे सङे जाइब रे
औरे मन होइछे बिदेसिया घुरी रे घर जाइब रे
छौंड़ा- ककरा बिरोग गे सामरो मोरा सङे जाइव्या गे
ककरा महोते गे सामरो घुरी रे घर जाइव्या गे
छौंड़ी- सौतिन बिरोगे बिदेसिया तोरा रे सङे जाइब रे
बालके महोते बिदेसिया घुरी रे घर जाइब रे
छौंड़ा- मोरा सङे जेव्या गे सामरो बड़ा दुख पेयव्या गे
रौदे बतासे गे सामरो देह हेतो झाम गे
छौंड़ी- तोरा सङे जेवो बिदेसिया बड़ा रे सुख पायब रे
हथिया चढिये बिदेसिया बिरही गायब रे

स्रोत: हेमनारायण चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-५, धोबियारे, मोरङ

२५१. चाँचैर गित (ख)

पिया परदेस गेलहा बहौत दिन भ्या गेलछै । ओइ समय मे पिया के याद करैत गावै

बला मया प्रेम भरल गित । यि गित कोनो काम करैत काल या नाच के समय मे से हो गावल जाइछै ।

तेतरी से लिती पिती मधुरसें छयाँ
पिया परदेस गेले ककरा कहवो धिया
जेह्त्या बाटे पिया गेले हो, वटिया मलहिने
दुबी लहकी गेले किने के काट्वी दिने
वोन के चिरिया सखी हो ओहो गेले गे मोरा पिया
चिरिया सवद सुनी साले मोरा हिया
पतिया मे लिखे सखी हो दिल केरी बाते
तयो नहीं आवे सखी किने के काटवे दिन राते

स्रोत: हेमनारायण चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-५, धोबियारे, मोरङ

२५२. पराती गित

सुवह सुवह पराते काल बसधरा मे बैठके या कोनो काम करैत काल गाइब सकैछै । यै गित मे राम के बनवास देलहा समय के बर्नन करल गेलछै ।

मारल्या भिखाम सर जोड़ी गे सौतिनया
राजा दसरथ के चार रा ललन छेले हो
तखरु कैल्या जोड़ बिछोड़ गे सौतिनया
मारल्या भिखाम सर जोड़ी गे सौतिनया
राम लखन सिहा प्रान हमार छेल हो
तखरु कैल्या बनबास गे सौतिनया
मारल्या भिखाम सर जोड़ी गे सौतिनया
धनुस कमान रमा कन्धामे लेलके हो
पैदल चलले बनबासे गे सौतिनया
राजा दसरथ राजा महाराजा छेलै गे
तखरु कैल्या स्वर्गबास गे सौतिनया
मारल्या भिखाम सर जोड़ी गे सौतिनया

स्रोत: कुमार चौधरी
ग्रामथान गा.पा.-७,बनिगामा, मोरङ

२५३. धुमरा नाच के गित

राजाके दरवार मे हैत नाच देखेले गेल घरवाली घुइम के येला पर घरवाला केवार बन्द कैरके

दोसर छौरी के सुतल रहैछै। ओइ समय के गित। यि गित धुमरा नाच के साथे परातीयो के रुप मे गाइब सकैछै।

छौड़ी- बाजन बाजत मधैयापुर हो
सुन त सुहागन लागे हो
हाँ..राजाके हवेलिया नटुवा नाचे हो
हमु जेवे कुमर नाच देखे हो
छौड़ा- जब तही जेव्या धनी मोरा नाच देखे हो
छुटी जेतो पिरती जोड़ी हो
हाँ..ठोकी लेबो बजर केवरिया सुतबोमे निस्चिते घर हो
छौड़ी- नाच त देखिये कुमर हम लौटल हो
आड्ना बिचे ठाडी भेल हो
हाँ..खोलु कुमर खोलु बजर केवरिया
कि सुतबो मे निस्चित घर मे हो
छौड़ा- निनहुँ के झुमरल धनी मोरा लौटल हो
अँचरा ओछाये सुतु हो
मोरा कोरा सुतले मल्हेनिया के बेटिया
कि तहुँ बुद्धि आगरी भेल्या हो
छौड़ी- आड्ना हि लागे इजु बोन बिजु बोन
ओसरा हि पहाड़ सन हो
गाँवके पछिमे मल्हेनियाके बेटिया
कि मोरा बुद्धि आगरी भेले हो
हाय रे देवा हाय रे बिधाता किये बिधी बाम भेले हो
गाँवके पछिमे मल्हेनियाके बेटी सेहो मोरा सौतिन भेले हो

।। समाप्त ।।

थारू आयोग

अनामनगर, काठमाडौं, नेपाल

टेलिफोन: ०१-५७०५११८, ०१-५७०५११९, ०१-५७०५०८४

टोल फ्रि नम्बर : १६६०-०१-५७-०००

इमेल : info@tharucommission.gov.np

वेबसाइट : http://www.tharucommission.gov.np